अयोनिजा

19म अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन-2021

आयोजन

22-23 दिसम्बर 2021, श्रीअयोध्याधाम

मुख्य संरक्षक

श्री श्री 1008 गौ संत-महंत श्री कौशल किशोर दास जी महराज

स्वागताकांक्षी

श्री श्री 1008 श्री महंत स्वामी अवधेश कुमार जी महराज

प्रकाशक-सह-महासचिव

डॉ० बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू'

प्रबंध संपादक

डॉ० फूलो पासवान

संपादक-सह-अध्यक्ष

डॉ० महेन्द्र नारायण राम

सहायक संपादक-सह-मीडिया संयोजक

प्रवीण कुमार झा

प्रकाशन

19म अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन- 2021

श्री अयोध्याधाम, उत्तर प्रदेश



अनुक्रमणिका



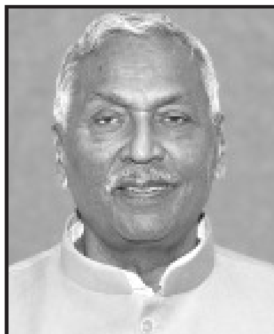
फागू चौहान
PHAGU CHAUHAN

राज भवन
पटना-800022
RAJ BHAVAN
PATNA-800022



राज्यपाल, बिहार
GOVERNOR OF BIHAR

दिनांक:.................................



संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन के तत्वावधान में मैथिली अधिकार दिवस के अवसर पर द्वि-दिवसीय 19वें अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन का आयोजन 22-23 दिसम्बर 2021 को श्रीअयोध्याधाम (उ.प्र.) में होने जा रहा है।

आशा है, मिथिला की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विरासत पर आधारित इस सम्मेलन के माध्यम से बिहार राज्य की भी गरिमा बढ़ेगी।

मैं '19वें अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन' के आयोजन तथा इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका- 'अयोनिजा' की समग्र सफलता हेतु अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

फागू चौहान

(फागू चौहान)

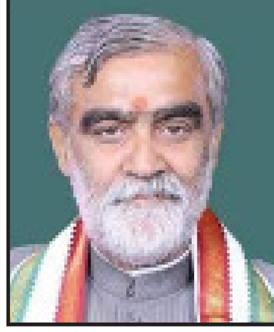
अश्विनी कुमार चौबे

राज्य मंत्री
उपभोक्ता मामले, खाद्य और
सार्वजनिक वितरण
भारत सरकार



30 डॉ. ए.पी.जे.
अब्दुल कलाम रोड
नई दिल्ली- 110011

पत्रांक :.............................. **दिनांक:**



शुभकामना संदेश

ई जानि अत्यधिक प्रसन्नता भेल जे अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन द्वारा गत वर्षक सदृश एहू साल मैथिली अधिकार दिवस अवसर पर दू दिवसीय 19म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, श्रीअयोध्याधाम मे आयोजित अछि। संगहि एहि अवसर पर स्मारिका **''अयोनिजा''** केर संग्रहणीय प्रकाशन सेहो आह्लादकारी अछि।

हम सम्मेलन एवं स्मारिकाक सफलताक कामना करैत छी।

(अश्विनी कुमार चौबे)

मदन सहनी
Madan Sahni



मंत्री
समाज कल्याण
बिहार सरकार

पत्रांक/Ref .... दिनांक/Date ....



शुभकामना संदेश

श्री महेन्द्र नारायण रामजी,

अहाँक पत्र प्राप्त भेल। ई जानि प्रसन्नता भेल जे मैथिली अधिकार दिवसक अवसर पर 19म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन केर आयोजन श्रीअयोध्याधाम (उ.प्र.) में 22-23 दिसम्बर के आयोजित अछि। इहो जनतब भेल जे एहि अवसर पर 'अयोनिजा' नामक स्मारिका सेहो प्रकाशित होएत। सम्मेलनक आयोजन सँ समस्त मिथिलावासीमे अपन अस्मिताक संग मिथिलाक पौराणिक, ऐतिहासिक-प्रागैतिहासिक, सांस्कृतिक-आध्यात्मिक ओ विद्यामूलक अवदानक प्रति नवोन्मेंष, नव-चेतना एवं नव-सांस्कृतिक उत्कर्षमूलक जागरण होएत।

अस्तु, सम्मेलनक आयोजन संग स्मारिकाक सफल प्रकाशन लेल हमर हार्दिक शुभकामना अछि।

असीम शुभकामनाक संग,

(मदन सहनी)

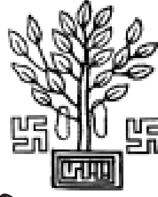
संजय कुमार झा

मंत्री

जल संसाधन विभाग

सूचना सह जन सम्पर्क विभाग

बिहार, पटना



बिहार सरकार

प्रथम तल, सिंचाई भवन,

हार्डिंग रोड, पटना- 800015

0612-2217696 (का.)

फैक्स : 0612-2215331 (फैक्स)

0612-2200371

E-mail : wrdministercell@gmail.com

पत्रांक :.................................   दिनांक:.................................



शुभकामना संदेश

ई अत्यंत हर्षक विषय अछि जे मैथिली के संवैधानिक अधिकार दिवसकेर अवसर पर 22-23 दिसम्बर 2021 केँ श्रीअयोध्याधाम मे दू दिवसीय 19म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक आयोजन कयल जा रहल अछि। मिथिलाक धरती अपन सभ्यता एवं सांस्कृतिक संग लोक परम्परा खान-पान आ मधुरवाणी लेल जगत प्रसिद्ध अछि। एहिठामक मिथिला पेंटिंग विश्वक पटल पर एकटा नव परिचिति देलक अछि। सामा-चकेवा, जट-जटिन जेहन लोक विधा मिथिलाक विरासत ओ लोक संस्कृति के समृद्ध करैत अछि। एहि अवसर पर निकालल जा रहल स्मारिका **'अयोनिजा'**, हमरा निश्चित रूप सँ आह्लादित करैत अछि।

हम अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक सफलता तथा एहि अवसर पर प्रकाशित होमयवला स्मारिकाक सफल प्रकाशनक सुमंगलकामना करैत छी।

(संजय कुमार झा)

डॉ. रामप्रीत पासवान
मंत्री
लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग
बिहार सरकार, पटना



कार्यालय- विश्वेश्वरैया भवन,
बेली रोड, पटना
दूरभाष : (0612), 2547180, 2547181
मोबाईल : 9431801258, 9431402258
ई-मेल : paswanramprit@gmail.com

पत्रांक :................................ दिनांकः



शुभकामना संदेश

ई जानि क अत्यन्त प्रसन्नता भेल अछि जे अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मिथिलाक संस्कृति एवं मैथिली भाषा के संरक्षण तथा संवर्धन हेतु सतत् प्रयत्नशील रहल अछि। अपन गौरवमयी परम्परा के अनुरूप अहू वर्ष 19म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन- 22-23 दिसम्बर केँ श्रीअयोध्याधाम मे मनाबय जा रहल अछि। इ सम्मेलन ताहि दिशा मे महत्वपूर्ण डेग प्रमाणित होयत से विश्वास अछि।

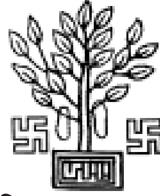
प्राचीन काल सँ महान विभूति सवहक मिथिला के राजा सलहेश, दीनाभद्री, दुर्गादयाल, बंठा चमार सदृश महान विभूति सब अपन अमिट छाप छोड़लनि अछि। मिथिला क धरती राजा जनक, मंडन भारती, गार्गी, मैत्रेयी, कपिल, कणाद, कालीदास, आयाची ज्योतीश्वर महाकवि विद्यापति वाचस्पति सहित अनेक विद्वान क ई जन्म धरती रहल अछि।

एहि अवसर पर सम्मेलन ''अयोनिजा'' नामक स्मारिका केर प्रकाशन के निर्णय सेहो लेलक अछि। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे स्मारिका पठनीय एवं संग्रहणीय होयत। एहि स्मारिका के माध्यम सँ मिथिला आ मैथिली के गौरवमयी इतिहास, परम्परा एवं महान संस्कृति के जानकारी सम्पूर्ण देश-विदेश मे जन-जन तक पहुँचत से आशा अछि।

''अयोनिजा'' केर सफल प्रकाशन तथा सम्पूर्ण आयोजन के सफलता हेतु हमर हार्दिक शुभकामना प्रेषित अछि ।

(रामप्रीत पासवान)

डॉ० आलोक रंजन
मंत्री
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग
बिहार, पटना



Dr. Alok Ranjan
Minister
Art, Culture & Youth Department
Bihar, Patna

पत्रांक :................................ दिनांक:................................



उद्‌गार आ शुभाशंसा

मैथिलीक संवैधानिक अधिकार दिवसर केर अवसर पर आयोज्य द्वि-दिवसीय 19म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक अवसर पर प्रकाश्य स्मारिकाक सूचना ज्ञात भेल। एहि निमित्त सम्पादक आ सहसम्पादकजी कें कोटिशः साध ुवाद।

कोनों समाजक जीवन्तताक परिचय भोजन में निहित्त कैलोरी, वस्त्रक रुप आ अन्तर्निहित बैंड, आवास आ ओकर निर्मितिक अवयव वा अन्यान्य भौतिक उपकरण वा संसाधन मात्रे सँ नहि भेटैत छैक अपितु ओ समाज अपन भाषा, साहित्य, दर्शन, इतिहास, परम्परा, रीति-रिवाज, संस्कृति सभ्यता आ संस्कार-गीत-प्रगीत, अस्तित्व आ अस्मिता आदिक प्रति कतेक सचेष्ट आ संकल्पित अछि आकुल व्याकुल अछि, आ आबद्ध आ प्रतिबद्ध अछि, दक्ष आ प्रवीण अछि..... तदर्थे ओकर घ्राण-प्राण- सम्मानक परिमिति आ परिचितिक प्रमाण बनैत अछि। मैथिल कुल पुरुष विद्यापति, चिति-भित्ति पुरुष विद्यापति, कृतिकार - सरोकार पुरुष विद्यापति, मंत्र-यंत्र पुरुष विद्यापति कृति कीर्त्ति पुरुष विद्यापति, आप्त-व्याप्त पुरुष विद्यापति सम्मान-अभिमान पुरुष विद्यापति....क श्रद्धास्पद स्मरण स्फुरण ओही आत्मावलोकन आ आत्मप्रबोधनक प्रमाण-थिक।

किछु गोटे इतिहास पढैत छथि, किछु गोटे इतिहास बांचौत छथि, किछु गोटे इतिहास में जीवैत छथि, किछु गोटे इतिहास रचैत छथि आ किछु गोटे स्वयं इतिहास पुरुष के रूप में अवलोकित होइत छथि। श्री वैद्यनाथ चौध ारी वस्तुतः मैथिलीक इतिहास पुरुष रुप में स्वतः ख्यात छथि।

शुभकामना संदेश पठेबाक योग्य हमरा बुझलहुँ एतदर्थ हम आभारी छी।

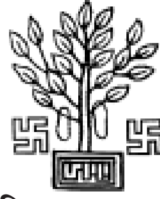
19म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन केर यशस्वी आयोजन आ संग्रहणीय स्मारिकाक प्रकाशन हेतु हम हृदय सँ शुभकामना आ शुभाशंसा प्रेषित करैत छी।

जय मैथिली

आलोक रंजन

(डॉ० आलोक रंजन)

जीबेश मिश्र
मंत्री
श्रम संसाधान एवं सूचना
प्राविधिकी
बिहार, पटना



पत्रांक :...............................   दिनांक:...............................



शुभकामना संदेश

ई जानि प्रसन्नता भेल जे अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन द्वारा आन सालक भांति एहू साल मैथिली अधिकार दिवसक अवसर पर श्रीअयोध्याधाम मे दू-दिवसीय सम्मेलन आयोजित अछि। ई आओर हर्षक विषय थिक जे एहि पुनीत अवसर पर ''अयोनिजा'' केर संग्रहणीय विशेष अंक प्रकाशित करबाक निर्णय भेल अछि।

हम सम्मेलन केर सफल आयोजन एवं स्मारिकाक उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु शुभकामना प्रेषित करैत छी ।

असीम शुभकामनाक संग ।

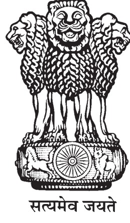
(जीवेश मिश्र)

गोपाल जी ठाकुर

संसद सदस्य–लोक सभा

GOPAL JEE TAHKUR

MEMBER OF PARLIAMENT
(Darbhanga - LOK SABHA)



201, Western Court
Janpath, New Delhi
Mob. : 9473199995
8709784233

पत्रांक :................................ **दिनांक:................................**



शुभकामना संदेश

ई जानि कऽ खूब प्रसन्नता भेल जे 19म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन 22-23 दिसम्बर केँ श्रीअयोध्याधाम मे मनाओल जायत। एहि अवसर पर **''अयोनिजा''** नामक समारिका सेहो प्रकाशित होयत। मिथिला केँ सभ्यता आ संस्कृति केर अपन प्रेरणादायी इतिहास आ विरासत रहल अछि जाहि मे ई सम्मेलन आ स्मारिका केर भूमिका प्रेरणादायक होयत।

हम एहि सम्मेलन आ स्मारिका कऽ सफलताकऽ सुमंगलकामना करैत छी।

असीम मंगलकामना संग-

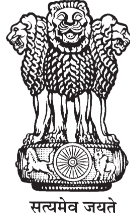
(गोपाल जी ठाकुर)

डॉ. अशोक कुमार यादव

संसद सदस्य

(लोक सभा)

मधुबनी (बिहार)



103, वेस्टर्न कोर्ट

नई दिल्ली

मोबाईल : 9431210204

पत्रांक :................................. **दिनांकः.................................**



शुभकामना संदेश

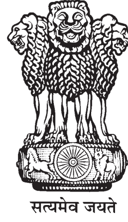
ई जानि प्रसन्नता भेल जे अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन एहिबेर दिनांक- 22-23 दिसम्बर कें मनाव जा रहल अछि। एहि अवसर पर **'अयोनिजा'** नामक स्मारिका सेहो प्रकाशित होयत, ई मिथिलाक सभ्यता एवं संस्कृतिक गौरवशाली इतिहास कें आओर श्रीवृद्धि करत।

हम सम्मेलन एवं स्मारिकाक सफलताक शुभकामना व्यक्त करैत छी।

अशोक कुमार

(डा. अशोक कुमार यादव)

रामप्रीत मंडल
संसद सदस्य (लोक सभा)
झंझारपुर (बिहार)



108, वेस्टर्न कोर्ट एनेक्सी
नई दिल्ली- 110 001
मोबाईल : 9939735375

पत्रांक :................................ **दिनांक:**................................



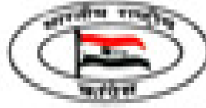
शुभकामना संदेश

मिथिलाक संस्कृतिक इतिहास अति प्राचीन अछि। मिथिलाक गौरव-गाथा शास्त्र सभमे प्रकाशित अछि। मिथिला विद्वान ओ कलाकार लोकनिक भूमि अछि। पर्व समारोहक आयोजन सँ समाजमे सांस्कृतिक चेतना अबैत अछि। स्मारिकाक प्रकाशन सँ सम्पूर्ण बुद्धिजीवि लोकनिक विचार एवं अभिव्यक्ति प्रसारित होइत अछि।

प्रसन्नता अछि जे अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन दिनांक- 22-23 दिसम्बर 2021 केँ **''19म अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन''** अयोध्याधाम केर आयोजन भऽ रहल अछि। आ एहि अवसर पर **'अयोनिजा'** नामक स्मारिकाक प्रकाशन सेहो भऽ रहल अछि।

सम्मेलन ओ स्मारिकाक सफलता हेतु हम हार्दिक शुभकामना दैत छी।

(रामप्रीत मंडल)



दूरभाष / फैक्स : 0612-2262492 (का०)
0612-2262334
मोबाईल : 9431019240

बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी

सदाकत आश्रम, पटना- 800 010

डॉ० मदन मोहन झा, स०वि०प०
अध्यक्ष



शुभकामना संदेश

ई जानि अत्यन्त प्रसन्नता भेल जे अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन केर तत्वावधन मे आने वर्षक सदृश्य 19म द्वि-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, श्री अयोध्याधामक आयोजन 22-23 दिसम्बर 2021 धरि कयल जा रहल अछि।

एहि मैथिली अधिकार दिवसक माध्यमे अखिल भारतीय स्तर के कलाकार, सुप्रसिद्ध कवि आ विभिन्न विषयक विद्वान लोकनिक जुटान होयब आह्लादपूर्ण अछि। एहि आयोजन सँ सामाजिक समरसता मे अभिवृद्धि होयबाक संगहि युवा तुर्क के अपन अमूल्य सांस्कृतिक विरासत सँ परिचित हायबाक सुअवसर सहित मातृभूमि ओ मातृभाषाक संग राष्ट्रप्रेम केर प्रेरणा सहो भेटैछ।

हम 19म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक दू दिन केर कार्यक्रमक सफलता के कामना करैत एहि अवसर पर **'अयोनिजा'** नाम सँ प्रकाशित होयब वला समारिका हेतु अपन अशेष शुभकामना प्रेषित करैत छी।

मदन मोहन झा

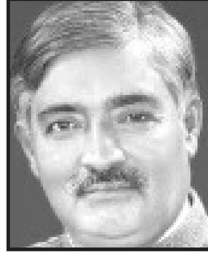
(डॉ० मदन मोहन झा)

विनोद नारायण झा
पूर्व मंत्री
बिहार विधान सभा
सभापति
निवेदन समिति, बिहार विधान सभा



8 एम. स्टैण्ड रोड, पटना
80001
मोबाईल : 9431815798
E-mail : ministerphed0099@gmail.com

पत्रांक :   दिनांकः



शुभकामना संदेश

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन अपन गौरवमयी परम्परा के अनुरूप आने वर्ष जकाँ अहू वर्ष **19म अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन,** श्री अयोध्याधाम, 22-23 दिसम्बर 2021 क मनाब जा रहल अछि। अपन संस्कृति एवं मैथिली भाषा के संरक्षण तथा सम्वर्धन हेतु सतत् प्रयत्नशील क्रम ई कार्यक्रम ताहि दिशा में महत्वपूर्ण डेग प्रमाणित होयत-से विश्वास अछि।

मैथिली भाषा साहित्यक इतिहास मे मातृभाषाक स्वरूप मे मैथिलीक संरक्षण, संबर्द्धन आ प्रबर्द्धनक अभियान लगभग 1920ई. मे आरंभ लेल छल। विद्यापतिक 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' केर उद्घोष संग अपन भाषाक प्रति जन जागरण केर अभियान सेहो एहि लगपास 1920-30 केर मध्य मानल जाइछ। तँ मातृभाषा लेल समर्पण संग विभिन्न कार्यक्रम आ आधुनिक सृजनकर्मक आयु करीब 100 वर्ष 2020ई. मे पूर्ण भेल ई कहल जा सकैत अछि।

एखन हमरा लोकनि देखि रहल छी जे मैथिली सृजन कर्म खूब गतिमान अछि। कियो अपन मातृभाषाक अनुपम सृजनक अनुवाद कय अंग्रेजी मे वृहत पटल पर अनबाक काज क रहलाह अछि, तऽ कियो फिल्म निर्माण केर कार्य कऽ भाषा लेल आधुनिक पोषण देबाक कार्य क रहलाह अछि, कियो विद्यालय आ गाम-गाम मे घुमि क धिया-पुता मे मातृभाषा सृजन करबाक कर्म सीखा रहलाह अछि, सैकड़ो के संख्या मे मिथिलाक्षर प्रशिक्षण करा रहलाह अछि, अपनहुं जेबीक पैसा लगा क मैथिली पोथी प्रकाशन करा रहलाह अछि, कियो लेखनीसंग समाज लेल नेतृत्व करबाक प्रशिक्षण करा रहलाह अछि, जिनका जहि तरहें होइ छनि से अपना मातृभाषा लेल समर्पित सेवादान क रहलाह अछि। इ सब शुभ लक्षण अछि।

एहिलेल डॉ. बैजनाथ चौधरी बैजू एवं डॉ. महेन्द्र नारायण राम सहित संस्थाक सब सहयोगी लोकनि के संग सम्मेलन एवं स्मारिकाक सफलता क शुभकामना समर्पित करैत छी।

भवदीय

विनोद नारायण झा

(विनोद नारायण झा)

संजय सरावगी
विधायक (दरभंगा सदर)



Sanjay Saraogi
MLA, (Darbhanga Sadar)

Ref. No. .... Date ....



शुभकामना संदेश

19म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन एहि बेर श्री अयोध्याधाम, दिनांक- 22-23 दिसम्बर, 2021 केँ मनाबऽ जा रहल अछि। एहि अवसर पर **'अयोनिजा'** नामक स्मारिकाक सेहो प्रकाशित कराबऽ जा रहल अछि, ई जानि बेसी प्रसन्नता भेल।

मिथिला अपन संस्कृति एवं सभ्यताक लेल जगतप्रसिद्ध अछि। एहि ठामक खान-पान, रहन-सहन ओ मधुरवाणी सेहो जगतप्रसिद्ध अछि। एकर लोकसंस्कृति एवं विरासत अक्षुण्ण अछि। सम्मेलन एवं 'अयोनिजा' मिथिलाक गौरवमयी इतिहास केँ विकास मे एकटा आओर डेग अछि।

हम सम्मेलन एवं स्मारिकाक पूर्ण सफलताक शुभकामना करैत छी।

असीम शुभमंगलकामनाक संग

(संजय सरावगी)

रामलषण राम 'रमण'

पूर्व सदस्य, बिहार विधान परिषद

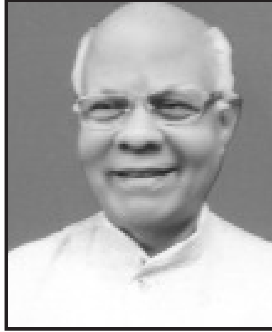
पूर्व अध्यक्ष, अनुसूचित जाति एवं अनु. जनजाति
कल्याण समिति, बिहार विधान परिषद्, पटना
पूर्व मंत्री, शिक्षा विभाग, खान एवं भूतत्व विभाग,
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग
तथा स्वास्थ्य विभाग, बिहार सरकार



बिहार सरकार

158, सांसद-विधायक कॉलोनी,
कौटिल्य नगर (नेटनरी कॉलोनी),
पटना- 800014
मो०- 9473199415, 9431694699

पत्रांक :................................ दिनांक:................................



शुभकामना संदेश

ई अति प्रसन्नताक विषय अछि जे 19म अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन, श्रीअयोध्याधाम 22-23 दिसम्बर मे आयोजि भऽ रहल अछि से अपन अधिकार लेल सराहनीय डेग अछि।

एहि लेल हम अपना हार्दिक शुभकामना प्रकट करैत छी।

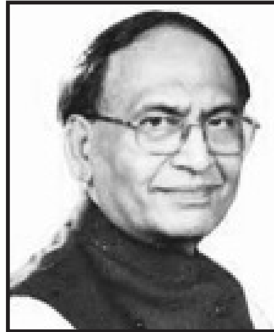
रामलषण राम रमण

(रामलषण राम 'रमण')

Dr. C. P. Thakur

Chancellor, South Bihar Central University, Gaya
Former Member of Parliament (Lok Sabha & Rajya Sabha)
Former Union Minister, Govt. of India
MBBS (Hons. & Gold Medalist) MD Pat MRCP (London & Edin)
FRCP (London & Edin)
Emeritus Prof. of Medicine, Patna Medical College, Padam Shree
Dr. B. C. Roy Awardee, P. N. Raju Awardee (ICMR)
B. N. Aiket Awardee (ICMR), Ranbaxy Research Awardee,
Dr. B. C. Roy Awardee (Major), D. Sc. (Hons.), Manipur
Expert WHO (Geneva)
PHYSICIAN AND CARDIOLOGIST

Uma Complex
Fraser Road, Patna - 800001
Ph. : 0612-2226545 / 2221797
Fax : 0612-2972579
E-Mail : cpthakur1@rediffmail.com
thakurcp@gmail.com
Website : www.bus.org.in



शुभकामना संदेश

ई जानि अत्यन्त प्रसन्नता भेल जे अहू बेर 22-23 दिसम्बर 2021 कें द्वि-दिवसीय 19म अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, श्रीअयोध्याधाम मे आयोजन क' रहल अछि। हम एहि सम्मेलनक सफलता केर कामना करैत छी आ एहन तरहक आयोजनक लेल अपने सब गोटे कें हृदय सं बधाई दैत छी ।

एहि तरहक आयोजन समाज कें साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास में सहायता प्रदान करैछ। विशेष रूप सँ समाजक युवा वर्ग कें बहुत रास नीक चीज सीखबाक अवसर भेटैछ। एहन अवसर समाजक गुणी आओर विद्वान लोकनिक साक्षात्कार, हुनक अनमोल वचन आदि सुनबाक सेहो अवसर प्रदान करैत अछि। हमरा जनैत एहि तरहक विद्वत आ शाश्वत आयोजन एकटा प्रशिक्षण स्थली बनि जाइत अछि।

हम पुनः एहि आयोजन आ स्मारिका प्रकाशन केर पूर्ण सफलताक कामना करैत छी ।

C. P. Thakur

प्रोफेसर सुरेन्द्र प्रताप सिंह
कुलपति
Prof. Surendra Pratap Singh
Vice-Chancellor



ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY
कामेश्वरनगर, दरभंगा - 846004 बिहार
Kameshwaranagar, Darbhanga - 846004 Bihar

Letter No. ....
Date ....



शुभकामना संदेश

हम ई बुझि कए अभिभूत छी जे अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन अपन 19म अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनक सुअवसर पर स्मारिका **'अयोनिजा'** क प्रकाशन करए जा रहल अछि। एहि संस्थानक गतिविधि पर आधारित पत्रिकाक प्रकाशन पूर्वहिसँ होइत आबि रहल अछि। ई स्मारिका संस्थानक एक एहर महत्त्वपूर्ण अभिलेख अछि जकर आधार पर संस्थान अपन विवेकपूर्ण मूल्यांकन कए भविष्यक हेतु विकासक सम्यक् दिशाक निर्धारण कए सकत।

मिथिलांचल प्राचीन कालहिसँ शिक्षा, संस्कृति एवं सभ्यताक केन्द्र बनल रहल अछि। एहि प्रकारक स्मारिकाक प्रकाशन एवं सार्थक आओर सुखद पहल अछि। हम एकर सराहना करैत छी।

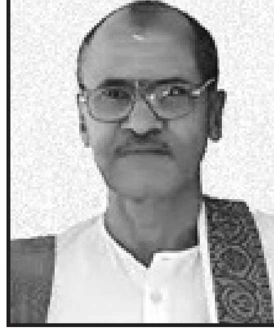
सुरेन्द्र प्रताप सिंह

प्रो० शशिनाथ झा
कुलपति
कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृतविश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार- 846008



Prof. Shashi Nath Jha
Vice-Chancellor
Kameshwarsingh Darbhanga Sanskrit
University, Darbhanga, Bihar - 846008
Email-ksdsuvc@gmail.com
Mob. : 9199475909

पत्रांक :................................ दिनांक:................................



शुभकामना

अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन 2021 ई. भारतक सांस्कृतिक पुरातन राजधानी अयोध्या मे भए रहल अछि आ ताहि अवसर पर एक स्मारिका 'अयोनिजा' नामक प्रकाशित भए रहल अछि, से जानि बड़ प्रसन्नता भेल। ई मिथिला ओ अवधक सांस्कृतिक सम्बन्धक पुनर्नवीकरणक संग विविध आयाम पर नव्य विचारक भव्य आयोजन थिक, जे नीक संकेत दैत अछि।

जगज्जननी सीता भूगर्भ सँ उत्पन्न होयबाक कारण 'अयोनिजा' कहओलनि आ संयोग एहन जे एहि नाम मे अयोध्याक आदि दू अक्षर सेहो सन्निहित अछि। अतः एहि नामक स्मारिकाक स्वागत करैत शुभकामना सन्देश प्रेषित करैत छी।

शशिनाथ झा

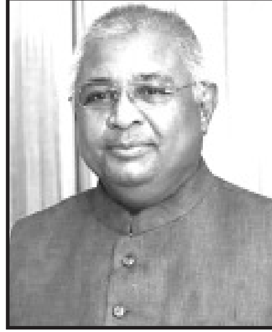
(प्रो० शशिनाथ झा)
कुलपति

डॉ. दिलीप कुमार चौधरी
Dr. Dilip Kr. Choudhary



पूर्व सदस्य
बिहार विधान परिषद्, पटना

पत्रांक :................................ दिनांक:



शुभकामना संदेश

ई जानि अत्यन्त प्रसन्नता भेल जे अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन केर तत्वावधान मे संवैधानिक मैथिली अधिकार दिवसक अवसर पर 19म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक आयोजन 22-23 दिसम्बर कें अयोध्या मे कयल जा रहल अछि।

एहि सम्मेलन मे अनेक विशिष्ट कलाकार, सुप्रसिद्ध कवि आ विभिन्न विषयक विद्वानक जुटान होयब आह्लाद पूर्ण अछि।

हम 19म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक केर सफलताक कामना करैत एहि आयोजन सँ जुड़ल सभ मातृभूमि आ मातृभाषा अनुरागी लोकनिक प्रति कृतज्ञताक भाव प्रदर्शित करैत एहि अवसर पर 'अयोनिजा' नाम सं प्रकाशित होबय वला स्मारिका हेतु अपन अशेष शुभकामना प्रेषित करैत छी ।

(डा. दिलीप कुमार चौधरी)

कमलाकान्त झा

पूर्व अध्यक्ष, मैथिली अकादमी,
बिहार सरकार सह अध्यक्ष
सलाहकार समिति, विद्यपति सेवा संस्थान

पत्रांक :................................. **दिनांकः.................................**



शुभकामना संदेश

अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन अपन 19म सम्मेलनक अवसर पर संग्रणीय 'अयोनिजा' नामक स्मारिकाक प्रकाशन करय जा रहल अछि जे प्रशंसनीय अछि।

सम्मेलनक यशोलतिका चतुर्दिक लतरल चतरल ओ पसरल अछि। सम्मेलनक उपलब्धि सम्पूर्ण देशक मैथिली भाषीक बीच चर्चित, परिचित आ अर्चित अछि। एहि बेर डॉ. महेन्द्र नारायण रामक सम्पादकत्व मे आकर्षक मनोहारी आ नयनाभिराम स्मारिका 'अयोनिजा' केर प्रकाशन भऽ रहल अछि।

सम्मेलनक, अध्यक्ष, महासचिव ओ सभ सदस्य कें अनन्त मंगल कामना सम्प्रेषित करैत एकेटा सेहन्ता उद्धाटित करब जे मिथिला राज्य कोना हो ताहि पर सभक चिन्तन, मनन ओ अनुशीलन आवश्यक।

कमला कान्त झा

(कमलाकान्त झा)

डॉ० बुचरू पासवान

कार्यकारी अध्यक्ष
विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा
सह–उपाध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन

पत्रांक :................................ **दिनांक:................................**



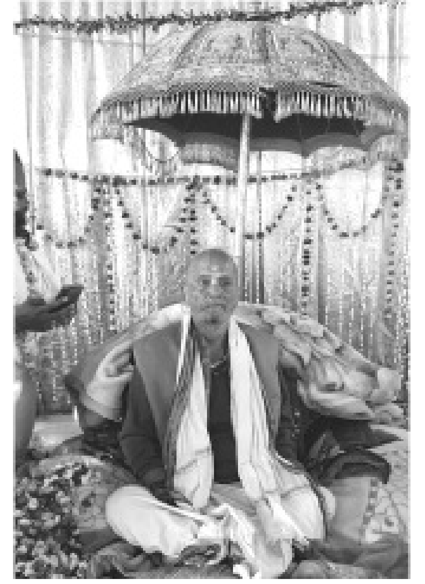
शुभकामना संदेश

मैथिली सेनानी डा. बैद्यनाथ चौधरी बैजूक सत्प्रयासे देश-विदेशमे अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन होइत आबि रहल अछि। जकर फलाफल सकारात्मक रहल अछि। एहि बेर 19म अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन अयोध्या मे होम' जा रहल अछि, जे बहुत रास उल्लेखनीय दिशा तय करत। एहि बेर सम्मेलनक अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र नारायण रामक सम्पादकत्वमे 'अयोनिजा' नामक स्मारिका सेहो प्रकाशित होम' जा रहल अछि। ई मिथिला, नेपाल ओ भारत दुनू पारक अपन संस्कृति ओ सभ्यातक लेल जगतप्रसिद्धि मे आओर श्रीवृद्धि करत।

सम्मेलन ओ स्मारिकाक सफलताक शुभकामना करैत छी।

(डॉ० बुचरू पासवान)

मुख्य संरक्षकक कलम सँ



अयोध्या मोक्षदायी अछि। कहल गेल अछि-

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायी।।

अयोध्याक स्थापना मनु कयलनि। ई पुरी सरयु केर तट पर बारह योजन लम्बाई आ तीन योजन चौड़ाईमे बसल छल। कतोक शताब्दी धरि ई नगर सूर्यवंशी राजा सभक राजधानी रहल। स्कन्दपुराणक अनुसार सरयु तट पर दिव्य शोभा संयुक्त दोसर अमरावतीक समान अयोध्या नगरी अछि। ई मूल रूपसँ हिन्दू मंदिर सभक शहर छी। आइयो एहि ठाम धर्म सँ जुड़ल कतेको अवशेष विद्यमान अछि।

जैन ओ वैदिक दुनू मत केर अनुसार भगवान रामचन्द्रजीक जन्म एहि भूमि पर भेल। भगवान रामचन्द्रजी इक्ष्वाकू वंशक छलाह। एकर महत्व एकर प्राचीन इतिहासमे निहित अछि, कारण भारतक प्रसिद्ध ओ प्रतापी क्षत्रि सभक (सूर्यवंशी) राजधानी इएह नगर रहल अछि। ओहि क्षत्रीमे दशरथी रामचन्द्र अवतारक रूपमे पूजल जाइत छथि। पहिने ई कौशल जनपदक राजधानी छल।

मानव सभ्यताक पहिल पुरी होयबाक पौराणिक गौरव अयोध्यामे स्वाभाविक रूपेँ प्राप्त अछि। तइयो श्री रामजन्म भूमि, कनक भवन, हनुमानगढ़ी, दशरथ महल, श्री लक्ष्मण किला, कालेराम मंदिर, मणिपर्वत, श्री रामकी पैड़ी, गुप्तारघाट समेत कतेको मंदिर एहिठाम प्रमुख दर्शनीय स्थल अछि। बिरला मंदिर, श्री मणिराम दास की छावनी, श्री रामवल्लभ कुंज, श्री लक्ष्मण किला, श्री सियाराम किला, उदासीन आश्रम रानोपातरि ओ हनुमान बाग जेहन कतोक आश्रम आगंतुक लोकनिक केन्द्र अछि। जाहि बड़ा भक्त मालजीक छावनीक सेहो अपन महत्त्वपूर्ण एवं अनुपम स्थान अछि। अयोध्या एना तऽ सदिखन कोनो-ने-कोनो आयोजनमे व्यस्त रहैत अछि, किन्तु किछु विशेष अवसर होइछ जे अत्यन्त हर्षोल्लासक संग पर्व मनाओल जाइत अछि। मुख्य पर्वक रूपमे -श्री रामनवमी श्री जानकी नवमी, गुरु पूर्णिमा, सावन-झूला, कार्तिक परिक्षमा, श्री राम विवाहोत्सव आदि मनाओल जाइत अछि।

प्रभु श्री रामक नगरी होयबाक सँ अयोध्या उच्च कोटिक संत सभहक साधना भूमि रहल अछि। एहि क्रमे हमर बड़ा भक्त मालजीक छावनी सेहो संत समागमक अपूर्व साधना स्थली छी। हमरा लेल सुखद संयोग आ अवसर अछि जे माँ जानकी अर्थात माँ मैथिलीक सेवा करबाक सौभाग्य अयोध्यानगरीमे प्राप्त भेल अछि। 19म अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन करबाक आ एकर मुख्य संरक्षक गुरुत्तर भार ओहि श्रीराम ओ माँ जानकीक कृपा सँ भेटल आ एकर माध्यम बनल मैथिली सेनानी डॉ० बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' एक बेर फेर सँ मिथिला ओ अवध खासकऽ अयोध्याक सम्बन्धकेँ जीवन्त कऽ देलक अछि ई सम्मेलन। ई मैथिली हमर भेल नहि अधिकार छी, आ हमरा अधिकार के जे हनन करत तकरा सभ तरहेँ लड़बाक शक्ति के मजबूत करैत छी। मुख्य संरक्षक हैसियत सँ एहि सम्मेलनमे उपस्थित सभी आगत अतिथिकेँ स्वागत ओ अभिनन्दन करैत छी। संगहि एहि अवसर पर निकल जायवला स्मारिकाक सफलताक कामना सेहो करैत छी।

श्री श्री 1008 श्री
कौशल किशोर दासजी महाराज



स्वागताध्यक्षक उद्‌गार

'उनैसम अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन' एहि बेर अयोध्याधाम, केर उत्तर प्रदेशमे भऽ रहल अछि आ एकर गुरुत्तर भार संयोगवश हमरा भेटल अछि। ई हमरा लेल प्रसन्नताक विषय थिक। एहि सम्मेलन केर माध्यमे विश्वक के उन्नयनक व्यक्तित्व लोकनिक दर्शन ओ सेवा करबाक अवसर भेटल, ई आओरो आह्लादित कऽ रहल अछि, खासकऽ मिथिला अर्थात् भारत ओ नेपाल क्षेत्र सहित आनो स्थानक भाषा, साहित्य, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, बोली-वाणी आदि मैथिल विशिष्टता के विश्वमे एहि अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत करबाक प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय होयत। विश्वक मध्यम ई मनोरम परम्पराक संबंध आओर मीठगर ओ मजबूत होयत, से आशा करैत छी।

एहि अवसर पर सम्मेलन आ स्मारिकाक पूर्ण सफलताक हम हार्दिक सुमंगल ओ शुभकामना करैत छी, संगहि एहि अवसर पर विश्वक सभ क्षेत्र सँ आबऽवला साहित्यकार, गौरवक अनुभूति कऽ रहल छी।

श्री श्री 1008
श्री अवधेश कुमार दासजी महाराज
स्वागताध्यक्ष
19स अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन

प्रकाशकीय-सह महासचिवक प्रतिवेदन



मैथिली एक स्वतंत्र अस्तित्वक भाषाक रूपमे आन भारतीय भाषासँ पर मानल गेल अछि। एकर प्रथम प्रमाण रामायणमे भेटैत अछि। ई त्रेतागुणमे मिथिला नरेश राजा जनकक राज्य भाषा छल। तैं एकरा इतिहासक प्राचीनतम भाषामे सँ एक केर रूपमे मानल जाइत अछि। भारतक लगभग 6 प्रतिशत आबादी लगभग 9-10 करोड़ लोक मैथिली के मातृभाषा के रूपमे प्रयोग करैत अछि। एकर प्रयोगकर्त्ता भारत ओ नेपालक अतिरिक्त विश्वक कतेको देशमे पसरल छथि। मैथिली विश्वक सर्वाधिक समृद्धशालीन ओ मिठगर पूर्ण भाषा सभमे सँ एक केर रूपमे मानल जाइत अछि।

विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा मैथिली ओ मिथिलाक विकास लेल सतत संघर्षशील रहल अछि। परिणामस्वरूप 22 एवं 23 दिसम्बर, 2003ई०मे लोकसभा ओ राज्यसभामे विधेयक पारित भऽ मैथिली संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे प्रतिष्ठित भेलीह। इएह कारण भेल जे उक्त तिथि केँ मैथिलीक अधिकार दिवस केर रूपमे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन संस्था बना कऽ मनयबाक निर्णय केर तहत दिल्ली, बम्बई, कोलकाता, मद्रास, तिरूपति, काठमांडू, गौहाटी, देवघर, जनकपुर, राजविराज, विराटनगर, वृन्दावन होइत 19म, सम्मेलन यू.पी.क 'श्री अयोध्याधाम'मे भऽ रहल अछि जनक संरक्षक श्री श्री 1008 श्री कौशल किशोर दासजी महाराज छथि।

अयोध्या, भारतक उत्तर प्रदेश राज्यक अयोध्या जिलाक एक नगर आ जिला मुख्यालक छी। सरयू नदीक तट पर बसल ई एक अति प्राचीन धार्मिक नगर छी। पौराणिक मान्यताक अनुसार अयोध्यामे सूर्यवंशी/रघुवंशी/अर्कवंशी राजा लोकनिक राज भेल करैत छल, जाहिमे भगवान श्री राम अवतार लेने छलाह। वेदमे अयोध्या केँ ईश्वरक नगर बताओल गेल अछि-" अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या"। एकर सम्पन्नताक तुलना स्वर्ग सँ कयल गेल अछि। अथर्ववेदमे यौगिक प्रतीकक रूपमे अयोध्याक उल्लेख अछि- **अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्याः।**
तस्यां हिरण्मयः कोशः स्वर्गो ज्योतिषाव्रतः।। -10.2.31

एहि अयोध्याक सम्बन्ध मिथिला एवं मैथिली सँ अनुपम अछि। अयोध्याक श्रीरामक विवाह मिथिलाक जनकपुरीक जनकक पुत्र सीतासँ भेल अछि। सीताक अर्थे मैथिली अछि। तैं ई संयोग सेहो दुर्लभ अछि जे अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मैथिलीक सासुर अयोध्यामे भऽ रहल अछि। ई सभ तरकेँ प्रणयधर्मी थिक। मैथिली अयोध्यामे आबि उद्धार हेतीह। से श्री श्री 1008 श्री कौशल किशोर दासजी महाराज कर कमलसँ ई सम्मेलन सफल होयत।

हम पहिनहुँ कहने रही जे पत्र-पत्रिका, पोथी-स्मारिका आदिक माध्यमे मैथिली, मैथिल समाज, मिथिला ओ मैथिली आन्दोलन अपन चरमके पाबि सकैत अछि, एहिमे लेखक, साहित्यकार, सम्पादक, संकलनकर्ता लोकनिक योगदान अहम भऽ सकैत अछि से ई धरोहर दस्तावेजक रूपमे युग प्रवर्तक कबीश्वर चन्दा झा नामक पोथी, स्मारिकक संपादन सँ लऽ कऽ नेपाल-भारतक प्रकाशन होइत एहि बेर श्री श्री 1008 श्री कौशल किशोर दासजी महाराजक संरक्षणमे डॉ० महेन्द्र नारायण रामक संपादन, प्रवीण कुमार झाक सह-संपादन ओ डॉ0 फूलो पासवानक प्रबन्ध संपादनमे ई स्मारिका अयोध्यामे प्रकाशित भऽ रहल अछि, से हमरा आह्लादित तऽ करिते अछि, अयोध्या आ मिथिलाक सांस्कृतिक व्यावहारिक संबंध के स्मरणीय धरोहर के रूपमे प्रतिबिम्बित कऽ रहल अछि, स्वाभाविक अछि।

ई स्मारिका दूर धरि अपन फलाफल लऽ भविष्यमे उपस्थित होयत से आशा करैत छी। एहि लेल सभ सम्प्राट व्यक्ति धन्यवादक अधिकारी छथि।

वैद्य नाथ चौधरी

प्रबन्ध संपादक दिस सँ..........



मिथिला मूलमे हमर जन्म। मैथिली हमर भाषा। मैथिली पढ़लहुँ। मैथिलीमे चाकरी केलहुँ। अपन होशहि सँ मैथिली ओ मिथिला लेल आन्दोलनरत रहलहुँ। आइ मिथिला मगध होइत फेर मिथिलामे पदस्थापित छी।

भाषा मनुष्यक जन्मजात स्वभाव थिक। एकरे बल पर मनुक्ख ज्ञानी-विज्ञानी होइत अछि। भाषा विचार वैज्ञानिक दर्शनक साहित्यिक केन्द्र-बिन्दु थिक, जाहि केन्द्र बिन्दुमे भाषा सर्वकालिक तथा सर्वदेशीय विवेक स्थापित करैत अछि। मैथिली भाषा विचार वस्तुतः मिथिलाक ऐतिहासिक अभिज्ञान आ खोजक पर्याय थिक। लेखन सँ बोलचालमे छिड़िआयल ई अभिज्ञान आ खोज मिथिलाक जनमानसकेँ एकटा विवेक-विचार देलक अछि, जाहि पर मिथिलाक लोक प्राचीन काल सँ आबि रहल अछि।

मुदा से भाषा मैथिली कतौ-ने-कतौ कोनो ने कोनो साजिशक शिकार होइत रहल अछि। इएह कारण अछि, मिथिला लेल, मैथिली लेल आन्दोलन, धरना-प्रदर्शन सेहो करऽ पड़ैत आबि रहल छी। मैथिली संविधानक अष्टम अनुसूचीमे आयल आ ओहि तिथिकेँ 'अधिकार दिवस' के रूपमे मनबैत आबि रहल छी। ई यात्राा '19म' अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन अयोध्यामे रूकल अछि। एहि अवसर पर स्मारिका सेहो प्रकाशित होइत रहल अछि। एहि वर्ष एहि स्मारिकाक प्रबंध संपादकक रूपमे गुरुत्तर भार हमरा भेटल अछि, ई हमरा लेल सौभाग्यक बात थिक, जाहि मिथिला आ मैथिलीक कर्ज हमरा पर अछि ओहि कर्जमे सँ किछुओ हम उतारि सकी तऽ हमरा लेल ई पुण्यक कार्य करत। एहि लेल ई भार हमरा सौंपलनि सम्मेलन महासचिव डॉ० बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू;, भाई संपादक डॉ० महेन्द्र नारायण राम आ उपसंपादक भाइ प्रवीण कुमार झा। हम तीनू गोटे के आभार प्रकट करैत गौरवान्वित महसूस करैत छी।

एहि बहन्ने हमरा मिथिला, मैथिली, श्रीरामक सेवा करबाक अवसर भेटल तँ हम कृत-कृत छी......।

जय मिथिला, जय मैथिली!

डॉ० फूलो पासवान
प्रबन्धक संपादक स्मारिका
प्राचार्य,
सी.एम. कॉलेज, दरभंगा
एम.के.एस. कॉलेज, चन्दौना, मधुबनी

सम्पादकीय.............



राजा मिथि अपना नामेँ मिथिला बसौलनि। कालान्तरमे राजधानीनगर मिथिला राज्य बोधक बनि गेल। बाल्मीकि रामायणमे मिथिलापुरी एवं जनकस्यपुरीक उल्लेख भेटैत अछि। बाल्मीकि रामायण, महाभारत, स्कन्ध पुराण, भागवत आदिक अतिरिक्त बौद्धजाक ओ जैन ग्रंन्थ सभमे विदेह आ मिथिलाक विशद चर्च भेल अछि, मुदा गुप्तकालीन परिवेशमे आलोच्य जनपद तीरमुक्तिक नामसँ ख्यात भेल। एक दिस मिथिलाक जाहि भौगोलिक दिग्देश केँ चन्दा झा ''गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि, पूर्व कौशिकीधारा, पश्चिम बहथि गंडकी, उत्तर हिमवत बल विस्तारा कहलनि अछि। मिथिलामे परम्परित लोकगाथा लोरिकाइनक दिक्पति वंदनामे सांस्कृतिक मिथिलाक सीमांकन संस्कृतिक उद्गाता ग्रामीण शोषित एवं पीड़ित कलाकार द्वारा एहि रूपेँ कयल गेल अछि-

पुरूष जे पुरनियाँ पुजली पश्चिम जे बिहार।
उत्तर जे नेपाल पुजलियै, दक्षिण गंगाधार।।

एहिमे पूर्णियाँ सँ कोशी, बिहार सँ गंडकी क्षेत्रक सीमांत लौरिया नंदनगढ़ ओ उत्तर नेपाल सँ हिमालय पाद प्रदेशक संकेत अछि। स्पष्ट अछि जे मिथिला जे सांस्कृतिक जनपद सँ जानल जाइत अछि, केर प्राकृतिक सुषमा, ऐतिहासिक गौरव एवं सांस्कृतिक गरिमा सम्बद्ध अछि।

भाषा एक सामाजिक व्यवस्था थिक। भाषा व्यवहार वस्तु थिक। जाबेधरि कोनोहु भाषिक समाजक दू गोट व्यक्तिवक्ता आ श्रोता जीवित रहत आ अपन भाषाक प्रयोग करैत रहत तावत धरि ओ भाषा सेहो जीवित रहत आ अपन भाषाक प्रयोग करैत रहत।

भारत कतोक तरहक भाषा सभहिक एक सुरम्य उद्यान अछि। एहि ठाम जतेक बेसी भाषा सभ अछि आ ओकर जतेक प्रकार अछि, संभवतः कोनो आन एक देशमे दुर्लभ अछि। भारतीय भाषा सर्वेक्षणक अनुसार भाषा उपभाषाक चारि भिन्न-भिन्न अछि। यथा भारोपीय, द्रविड़, ऑस्ट्रो-ऐशियाटिक ओ चीनी-तिब्बतीय। एकर अतिरिक्त सेमेटिक कुलक अरबी भाषा सेहो एहिठाम बेसी दिन धरि प्रचलित रहल आ ओकर प्रभुत्व किछु ने किछु सभ आधुनिक भारतीय भाशा सभ पर पड़ल अछि।

'मैथिली' भाषा भारोपीय कुलमे पड़ैत अछि। मिथिला भाषाक सर्वप्रथम नाम अवहट्ठ अथवा मिथिला अपभ्रंश भेटैत अछि। संस्कृत ओ प्राकृत सँ उद्भूत देशी भाषा अथवा देसिल वयना के प्रायः अपभ्रंश कहल गेल। सर्वप्रथम कोलब्रुक एकर नाम मैथिली रखलनि। पश्चात ग्रियर्सन एकर साहित्यिक व्यापकता दिस लक्ष्य कयल। हुनक कहब छलनि जे भारतक आब क्षेत्रक लोक मैथिली केँ तिरहुतिया कहै छथि, मुदा मैथिली भाषी एकरा मैथिली कहैत छथि।

मैथिली पूर्णतः अनुराग हो गृहस्थक भाषा थिक। गृहस्थ जीवन मोह, माया, ममता सँ युक्त होइत अछि, अर्थात् मातृ वा प्रकृति भाव पर आधारित। वस्तुतः मूल प्राकृतिक मान्यता देवी वा मायक मान्यता होइत अछि। स्पष्ट अछि स्वस्तिमे मायक भाषा मिथिला भाषा कहबैत अछि। ऋग्वेदमे सरस्वती, दुर्गाक महिमा कहल गेल अछि। दिव्य गुणक कारणेँ हिनका देवी सेहो कहल गेल अछि। त्रिदेवी इलाक प्रशस्तिक मिथिलाक अवधारणा थिक, तैं मिथिलाक भाषाक प्रणयन लोक विधि एवं लोक संभाषणक दृष्टि सँ भेल अछि। इएह कारण जे मैथिली भाषामे वेद विधि वा वेद संभाषण वर्जित मानल गेल। वस्तुतः संस्कारोत्सव वा आन यज्ञ कर्ममे लोक विधि एवं लोक संभाषणक हेतु भाषा अर्थात् मैथिलीक आविष्कार कयल गेल। माइक गर्भसँ निकललाक बाद जाहि भाषामे नेना सहजतापूर्वक शिक्षा ग्रहण करय तकरे माइक भाषा वा मातृभाषा कहल जाइछ।

हम पहिनहुँ कहने रही जे मैथिली अर्थ प्राकृतिक प्रशस्तिक भाषा होइत अछि, तैं मैथिली भाषाक स्वभाव मातृ मधुरताक स्वभाव अछि। प्रकृतिक प्रशंसामे प्रकृतिक दोसर नाम माया कहल जाइत अछि। मायाक उल्टा 'या मा' होइत अछि जकर अर्थ होइत अछि- माता अहाँ वस्तुतः छी। मायाक अर्थ देवी प्रशंसा थिक। मैथिलीमे 'माय' (ई) शब्दक मायाक अभिप्राय रखैत अछि। तैं मैथिली भाषाक स्वभावमे प्राकृतिक मधुरता आकृत कयल गेल अछि। मैथिली भाषाक आविष्कारक तहमे इएह तत्व ज्ञान, चिन्तन, विचार सन्हिआयल अछि।

इएह कारण अछि जे हम कलहुँ- ''मैथिली, माया, मोह, ममता आ मधुरताक भाषा थिक।''

मैथिलीक एकटा वृहत् समाज अछि- मिथिलाक समाज। ओकर एकटा लोकजीवन अछि। मिथिला ओ मैथिलीक विशिष्ट लोक जीवन विश्वभरिमे प्रशंसित होइत आबि रहल अछि। विश्व इतिहासमे पावन मिथिलाक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। गौतम, जनक, याज्ञवल्क्य, कणाद, कपिल, मंडन, वाचस्पति, कुमारिलभट्ट आदि सँ लऽ कऽ महाकवि विद्यापति, चन्दा झा, दरबारी दास, माँगन खबास धरि सन मनीषी एहि भूमि पर जनम लेने छथि। एहि ठाम लोरिक सलहेस, दीनाभद्री, कारिख, सोखा, गोरैया सन लोकदेवता अपन देवत्व लेल कीर्ति-पताका

फहरबैत छथि। एक दिस एहि ठाम अहल्या, सीता, गार्गी, भारती आ लखिया सन आदर्श नारी भेल छथि तऽ दोसर दिस अमरावती, कुसुमावती, चक्रवती, चापावती, सती बिहुला, माँजरि, चनैन, मैनावती, दौना मानेन, कुसमा मालिन, हरियि, जिरिया, रानी सत्यवती, वनसहित, रेशमा, फुलेश्वरी, तुलेसरी, रमकी माता, मैनावती, अहुना-पहुआ, बहुरा ठकुराइन, गाङो, कमला, जसुमती, रानी सुखवंती, खेमासती, सती सोनमंती, घेघामंती, मोती दाइ, चम्पागरैनी, लाठी देवी, लेलही देवी, बौकी देवी आदि सन लोक चरित्र भेलीह। धर्म, दर्शन, कला आदि क्षेत्रमे, मिथिलाक बहुमुखी आ सारस्वत प्रतिवाक स्पष्ट छाप भेटैत अछि। एहि ठामक जीवन ओहि सपाट मैदानक सदृश अछि जाहि मोने पहाड़ने घाटी अपन आकांक्षा आ रहस्य नुकौने अछि। परम सौम्य, शांत, संयत आ संतुष्ट जीवन व्यतीत करब एहि ठामक लोकक लेल नियति बनि गेल अछि। एहि ठामक एखनो बहुतो एहन स्थान, डीह-डाबर, गढ़-खंडहर, परती-पराँत अपन अतीतक गौरवगाथक लेल नामी अछि।

तइयो एहन सुन्दर मिथिला देश, मैथिल आ मीठगर भाषा मैथिली एकटा साजिशक शिकार होइत आबि रहल अछि। एकर विकास अस्मिता ओ अधिकार लेल एकटा नम्हर आ लोकक ओ संघर्ष करैत रहल अछि। एक मात्र संकल्प ध्यानमे मात्र मैथिली संविधानमे नामक नारा वर्षो-वर्ष अनुगुंजित होइत रहल। मिथिला सँ लऽ दिल्ली धरि धरना प्रदर्शन आन्दोलन करैत रहल। सफलता 22 दिसम्बर 2003 ई० के हाथ आयल। महामना अटल बिहारी वाजपेयी जीक मैथिलीक प्रतिनिष्ठा, पद्मश्री डॉ० सी०सी० ठाकुरक अगाध प्रेम, हमरा सभक हठधर्मिता, डॉ० बैजनाथ चौधरी बैजूक नेतृत्व, मिथिलाक लौहपुरूष पं0 देवनारायण झा, हरिश्चन्द्र झा, चुनचुन मिश्र सहित कतेको नाम गुमनाम व्यक्तित्वक परिश्रमक फलस्वरूपे मातृभाषा मैथिली संविधानमे प्रवेश पओलीह। 22 ओ 23 दिम्बर, 2003 ई० के क्रमशः लोकसभा आ राज्यसभामे विधेयक पारित कयल गेल। उक्त तिथि केँ मैथिली अधिकार दिवसकेँ रूपमे एकटा अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन नामक संस्था बना कऽ मनयबाक निर्णय भेल। ई-यात्रा दिल्ली सँ चलि कऽ बम्बई, कोलकाता, मद्रास, तिरूपति, काठमांडु, गौहारी, जनकपुर, देवघर, राजविराज, विराटनगर, वृंदावन होइत एहि बेर श्री अयोध्याक धाममे रूकल अछि। ई 19म थिक। जनिक मुख्य संरक्षक श्री श्री 1008 श्री कौशल किशोर दास जी महाराज आ स्वागताध्यक्ष जी छथि।

श्री अयोध्या धामक विश्वमे धार्मिक, सांस्कृतिक ओ सामरिक दृष्टि सँ अनुपम चर्चित ओ ख्याति प्राप्त नाम अछि। एकरो गौरवगाथा मिथिलेक जकाँ एतिहासिक रहलैक अछि। ताहुमे मिथिला ओ अयोध्याक सम्बन्ध एकटा कुटुमैतीक रूपमे हृदयंगम अछि।

श्री अयोध्या एक नगर छी, जतऽ भगवान श्री रामक जन्म भेल। जखन कखनो प्राचीन भारतक तीर्थ सभक उल्लेख होइत अछि तऽ ओहिमे सर्वप्रथम अयोध्या केर नाम अबैत अछि। ओ विशेषतः श्री रामक अवतरण भूमिका कारण खास अछि। ओहि रामक विवाह मिथिलाक राजा जनकक पुत्री सीता से हेबाक कारणें एकर धार्मिक, सांस्कृतिक सामरिक संबंध हृदय-हृदयमे अछि। एक कुटुम्बकेँ रूपमे सौसे अयोध्यावासी के देखल जाइत अछि। एखनो जनकपुरमे रामक बरियात अबैत अछि आ मिथिलावासी कृत-कृत होइत अछि। ताहि मैथिली अर्थात् सीताक सासुरमे 19म अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन होयब गौरवबोधे टा नहि करबैत अछि अपितु एहि ठाम सँ मैथिली एकटा शिकारक साजिश होइत रहल अछि, मुक्ति पाओत आ अपन लक्ष्य कि पाओत, से आशा कएल जा सकैत अछि। एहि अवसर पर निकालल जा रहल स्मारिकाक तैं अपन महत्त्वपूर्ण स्थान अछि।

एहि महत्ती कार्यमे श्री श्री 1008 श्री कौशल किशोर दासजी महाराज, श्री श्री 1008 अवधेश श्री अवधेश कुमार महाराज, डॉ0 फूलो पासवान, डॉ0 बैजनाथ चौधरी बैजू , एवं संपादक श्री प्रवीण कुमार झा सहित जे हमरा रचना पठओलनि अछि, सभक प्रति अपन आभार अभिनंदन प्रकट करब अपन कर्तव्य बुझैत छी।

जय मिथिला, जय मैथिली!

डॉ० महेन्द्र नारायण राम

श्रीराम सीता-संदर्भ

✍ सरिता सनम

सीता रामायण आ रामकथा पर आधारित आन ग्रंथ, यथा-रामचरित मानस, कंब रामायणक मुख्य नायिका छथि। सीता मिथिला (सीतामढ़ी, बिहार)मे जन्म लेलीह। ई स्थान आगाँ चलि कऽ सीतामढ़ी नाम सँ विख्यात भेल। देवी सीता मिथिलाक नरेश राजा जनक केर ज्येष्ठ पुत्री छलीह। हिनकर विआह अयोध्याक नरेश राजा दशरथ ज्येष्ठ पुत्र श्री राम सँ स्वयंवरमे शिव धनुष के भंग करबाक उपरान्त भेल छल। ओ स्त्री आ पतिव्रता धर्मक पूर्ण रूपसँ पालन कयलनि, जकर कारण हिनकर नाम आदर सँ लेल जाइत अछि। त्रेतायुगमे हिनका सौभाग्यक देवी लक्ष्मीक अवतार कहल गेल अछि।

रामायणक अनुसार मिथिलाक राजा जनक के खेतमे हर जोतबा काल एकटा पेटी अलकलनि। हिनका ओहि पेटीमे भेटल छलनि। राजा जनक आ रानी सुनयना के गर्भमे हिनकर कला आ आत्माक दिव्यता केँ महर्षि याज्ञवल्क्य द्वारा स्थापित कयल गेलनिः तत्पश्चात सुनयना अपन मातृत्व स्वीकार कयलनि आ पालन कयलनि। उर्मिला हुनक छोट बहिन छलथिन।

राजा जनकक पुत्री होबाक कारण हिनका जानकी जनकात्मजा अथवा जनकसुता सेहो कहल जाइत छल। मिथिलाक राजकुमारी होयबाक कारण ई ''मैथिली'' नाम सँ सेहो प्रसिद्ध छथि। भूमि जे पाओल जेबाक कारण भूमि पुत्री अथवा भूसूता सेहो कहल जाइत अछि। ऋषि विश्वामित्र यज्ञ राम ओ लक्ष्मणक रक्षामे सफलतापूर्वक सम्पन्न भेल। एकर उपरान्त महाराज जनक सीता स्वयंवरक घोषणा कयलनि आ ऋषि विश्वामित्र उपस्थितिमे निमंत्रण भेजल गेल। आश्रममे राम ओ लक्ष्मण उपस्थित केर कारण ओ हिनका सभके मिथिलापुरी साथ लऽ गेलाह। महाराज जनक उपस्थित ऋषि मुनि लोकनि के आशीर्वाद सँ स्वयंवर लेल शिव धनुष उठेबाक नियम केर घोषणा कयलनि। सभामे उपस्थित कोनो राजकुमार, राजा ओ महाराजा धनुष उठेबामे विफल रहलाह। श्रीरामजी धनुष उठौलनि आ ओकरा भंग कयलनि। एहि तरहेँ सीताक विआह श्रीरामजी सँ निश्चय भेल।

एकरे संग उर्मिलाक विआह लक्ष्मण सँ, मांडवीक भरत सँ तथा श्रुतकीर्तिक शत्रुघ्न सँ निश्चय भेल। कन्यादानक समय राजा जनक श्रीरामजी सँ निश्चय भेल। कन्यादानक समय राजा जनक श्री रामजीसँ कहलनि- ''हे! कौशल्या नन्दन राम! ई हमर सीता छी। एकर पाणिग्रहण कऽ अपन अर्द्धांगिणीक रूपमे स्वीकार करू! ई सदिखन अहाँक संग रहतीह।'' एहि तरहेँ सीता ओ रामक विवाह अत्यन्त वैभवपूर्ण सम्पन्न भेल। विवाहोपरान्त सीता अयोध्या एलीह आ हुनकर दाम्पत्य जीवन सुखमय छल।

राजा दशरथ अपन पत्नी कैकेयी के देल वचन केर कारण श्रीरामजी के चौदह वर्षक वनवास भेलनि। श्रीरामजी आ आन पैद्यक परामर्श नहि मानि कऽ अपन पति सँ कहलनि- '' हमर पिताक वचनक अनुसार हमरा अहाँक संगे रहऽ पड़त। हमरा अहाँक संग वनगमन एहि राजमहल के सभ सुख से बेसी प्रिय अछि।'' एहि तरहेँ राम आ लक्ष्मणके संग सीता वनवास चलि गेलीह।

ओ चित्रकूट पर्वत स्थित मंदाकिनी तट पर अपन बनवास कयलनि। एहि समय भरत अपन पैघ भाई श्रीरामजीक मना कऽ अयोध्या लऽ जेबाक लेल एलाह। अंतमे श्रीराम जीक खड़ाम लऽ घुरि गेलाह। तकर बाद ओ सभ ऋषि अत्रीक आश्रम गेलाह। सीता देवी अनुसूइयाक पूजा कयलनि। देवी अनुसूइया सीता के पतिव्रता धर्मक विस्तारपूर्वक उपदेशक संग चानन, वस्त्र, आभूषणादि प्रदान कयलनि। तकर बाद कतोक ऋषि ओ मुनिक आश्रम गेलीहः दर्शन आ आशीर्वाद पाबि ओ पवित्र नदी गोदावरी तट पर पंचवटीमे वास कयलनि।

पंचवटीमे लक्ष्मण सँ अपमानित शूर्पणखा अपन भाइ रावणसँ अपन व्यथा सुनौलीह आ ओकर कान भरैत कहलीह ''सीता अत्यन्त सुन्दर अछि आ ओ तोहर पत्नी बनवाक सर्वथा योग्य अछि।'' रावण अपन मामा मारी, के संग मिलिकऽ सीता अपहरणक योजना बनौलनि। मारीच सोनाक हरिणक रूप धारण कऽ राम आ लक्ष्मण केँ वनमे लऽ जायत आ हुनका सभक अनुपस्थितिमे सीता के अपहरण कऽ लेब। सएह भेलैक। आकाश मार्ग सँ जाइत काल पक्षीगण जटायु के रोकला पर रावण ओकर पांखि काटि देलक। जखन कोनो सहायता नहि भेटलनि तऽ माता सीता अपन आँचर सँ एक भाग निकालि ओहिमे अपन आभूषण बान्हि नीचा खसा देलीह। नीचा वनमे किछु वानर एकरा अपना संग लऽ गेल। रावण, सीताक लंका नारीक अशोक वाटिकामे रखलनि आ त्रिजटाक नेतृत्वमे किछु राक्षसनी के ओकर देख-रेखक भार देलनि।

सीताजी बिछुड़ि कऽ रामजी बहुत दुःखी भेलाह आ लक्ष्मण सहित हुनका वन-वन खोजैत जटायु धरि पहुँचलाह। जटायु हुनका सीताजी के रावण दक्षिण दिशा दिस लऽ जेबाक सूचना दऽ प्राण त्यागि देलनि। राम जटायुक अंतिम संस्कार कऽ

लक्ष्मण सहित दक्षिण दिशामे चलि गेलाह। आगाँ चलैत हुनकर मिलन हनुमानजी सँ भेलनि। ओ हिनका सभ केँ ऋष्यमृक पर्वत पर स्थित अपन राजा सुग्रीव सँ भेंट करौलनि। रामजी संग मैत्रीक बाद सुग्रीव सीताजी के खोज करबाक लेल चारू दिस वानर सेनाक टुकड़ी भेजलनि। वानर राजकुमार अंगद केर नेतृत्वमे दक्षिण दिस गेल, टुकड़ीमे हनुमान, नील, जामवंत प्रमुख छलाह आ दक्षिण दिस सागर तट पर पहुँचलाह। तट पर हुनका जटायुक भाइ सम्पाति भेटलनि, जे हिनका सूचना देलनि जे सीता लंका स्थित एक वाटिकामे छथि।

हनुमानजी समुद्र लाँघि कऽ लंका पहुँचल। लंकिनी केँ परास्त कऽ नगरमे प्रवेश कयलनि। ओहिठाम सभ भवन आ अंतःपुरमे सीता माता के न पाबि ओ अत्यन्त दुःखी भेलाह अपन प्रभु श्रीरामजी के स्मरण व नमन कऽ अशोक वाटिका पहुँचल। ओतऽ धुआँक मध्य चिनगारी जकाँ राक्षसनीक बीच एक तेजस्विनी स्वरूप के देखि सीताजी के चिन्हलनि आ हर्षित भेलाह। तत्क्षण रावण ओतऽ पहुँचलाह। सीतासँ विवाहक प्रस्ताव देलनि। सीता घासक एक टुकड़ाके रावण के बीच रखलीह आ कहलीह- ''हे रावण सूरज आ किरण जकाँ राम-सीता अभिन्न अछि। राम आ लक्ष्मणक अनुपस्थितिमे हमरा अपहरण तोँ अपन कायरताक परिचय आ राक्षस जातिक विनाशक निमंत्रण देल अछि। रघुवंशी केर वीरता सँ अपरिचित भऽ तोँ एहन दुस्साहस कयल अछि। तोहर श्रीरामजीक शरणमे जायब एहि विनाश सँ बचबाक एक मात्र उपाय अछि। अन्यथा लंकाक विनाश निश्चित अछि।'' मुदा रावणक कृत्य सँ ओ दुःखी छलीह।

रावणके गेलाक बाद हनुमान सीताक सम्मुख भेलाह। हनुमानजी लंका जरौलनि। माता सीता सँ चूड़ामणि लऽ विदा भेलाह आ लंका यात्राक सम्पूर्ण खिस्सा रामके सुनौलनि। पश्चात राम-लक्ष्मण वानर सेना लऽ लंका आक्रमण भेल। रावण सहित राक्षसक वध कयल गेल। सीता-मुक्त भेलीह आ अयोध्या वापस एलाह। मुदा नियतिक अनुसार सीता के पुनः वन गमन भेलनि। लव-कुश पुत्र प्राप्ति भेलनि। किन्तु सीता कतोक कारणें धरतीमे समा गेलीह।

एहि तरहेँ श्रीराम ओ सीताक सम्बन्ध अयोध्या आ मिथिलाक लेल आत्मीय अछि। अयोध्या आ मिथिला, सीता आ रामक नाम लैतहि हृदय गदगद भऽ जाइत अछि। आइयो दुनूक चर्चा/प्रशंसा/ कथा/ सम्बन्ध दिग दिगन्त लेल सुगंधित अछि।

संयोग अछि आत 19म अंतर राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, श्री अयोध्या धामक स्मारिका लेल हमरा ई लिखबाक अवसर प्रदान भेल। हम एहि लेल धन्य छी।

जय मिथिला-जय मैथिली!





मातृभाषा दिवस

✍ हीरेन्द्र कुमार झा

प्रत्येक वर्ष 21फरवरीकेँ ''मातृभाषा दिवस'' मनाओल जाइत।बहुतो लोक उत्साहमे रहैत छथि। रहबाको चाही कारण एखन सबहक अन्तर्मनमे अपन संस्.ति,भाषा आ परिपाटीक लेल अर्न्तद्वन्द चलि रहल छै। विश्वक पैघ जनसङ्ख्या भ्रमणशील भऽ गेल अछि। एक समय रहै लोक एकसँ एक अवसर त्यागि दैत छल मुदा पैत्रिक गामक डीहसँ दूर नहि जाइत छल।मुदा आब परिस्थिति एकदम बदलि गेल छै।नीक अवसर भेटौक तऽ लोक अपन गामकेँ के पुछय सोत्साह देश छोड़ि एकदम विपरित भुगोल, समाज आ धर्मक देश चीन, अमेरिका आ अरब सन देशक लेल प्रस्थान करैत अछि। तहिना देशक हरेक कोना कोनासँ लोक चारू महानगरक अलावे चण्डीगढ़, हैदराबाद, बँगलोर आ हरेक राज्यक राजधानीमे प्रवेश कैएने जा रहल अछि। आरम्भमे पछिला शताब्दीक अन्त तक, मात्र विशेष शिक्षा आ साक्षरताक बलेँ उबलब्ध रोजगारक लोभमे अपना गाम घरकेँ त्यागि लोक महानगर आ नगरसभ दिस बाट धरैत छलाह।मुदा एकैसम शताब्दीक एहि तेसर दशक के आरम्भ होइत होइत एकटा बिहारि उठि गेल छै।यद्यपि हम जाहि स्थितिक चर्च करऽ जा रहल छी से कमोबेश भारतक समस्त क्षेत्रक लेल एकहि छै। मुदा हम अपन विश्लेषणमे मिथिलाकेँ विशेष उदाहरण मानि गप्प करब।लोक अनवरत सपरिवार गाम घरकेँ खालीकऽ नगर आ महानगर दिस विस्थापित भऽ रहल अछि। किया, कोन कोन कारण छैक? ई विस्थापन नीक वा अधलाह, ताहिपर अलगसँ चर्च करबाक जरूरत छै।सम्प्रति मातृभाषापर एकर प्रभावकेँ विचार करी।मनुष्य मात्रकेँ इ प्रवृति होइत छै जे ओ अपनाकेँ तेहन रूप आ गुणसँ परिष्कृत करैत रहय जे लोक ओकरा किछु विशेष मानि लक्ष्यित करै। अपन मातृभूमिसँ महानगरीय वातावरणमे एलापर ओकर जीवनमे तीन बिन्दु सबसँ प्रभावित होइत छै। भाषा, पोषाक आ भोजन। एहिमे सबसँ कम प्रभावित होइत छै भोजन पद्धति। बाहरक लोक महानगरमे किछु स्थानीय आ किछु अपन पारम्परिक भोजनसँ सामञ्जस्य कऽ लैत अछि। पोशाकक स्थिति आब गाम-घरोमे संस्कृतिक अपेक्षा सुविधाकेँ प्राथमिकता भेटबाक कारणे नव नव स्वरूपमे आबि रहल अछि। महानगरमे एहि विषयक कोनो खास प्रभाव नहि लक्ष्यित होइत अछि। उन्टे महाराष्ट्रक अपन वेष भूषा यथा महिलागणक ढेका बला साड़ी, पुरूषक उजरा टोपी विलुप्त भेल जा रहल अछि। मैथिल महिला मिथिलोमे नुआक बदला सलवार कुर्ती आ जिंसक प्रयोग कऽ रहल छथि।

सबसँ प्रभावित भऽ रहल छै भाषा। हँ आजुक विचार भाषापर। मिथिलाक समस्त जनताक दू गोट भाषा अछि। गाम घरमे रहनिहार, अखनो कोनो नीक वा बेजाय कारणे गामक डीहपर वास करैत लोक,जाहिमे कृषि, कास्तकारी आ मनिआर्डर आश्रयी सब अछि अपन पूर्वजक भाषा मैथिली बाजि रहल अछि। हँ अलग अलग क्षेत्रमे बजबाक भिन्नताक कारणे कतहु ठेठी, कतहु अङ्गिका आ कतहु बज्जिका कहाइत अछि मुदा समवेत सबटा मैथिलीए कहाइत छै। एहि वर्गकेँ मातृभाषा मैथिलीए छिऐ, रहतै। एकर माय, बाप, भाइ, बहिन आ अड़ोस पड़ोस सब मैथिलीए बजैत छथिन। एहि वर्गकेँ कोनो भाषाइ आन्दोलन वा दिवस मनेबाक कोनो आवश्यकता नहि छै।मुदा समस्याक बीजारोपण एही ठोस वातावरणमे भऽ रहल छै।

जी हाँ,एहि मैथिल समाजकेँ आइ नहि तऽ समुचित आ सन्तोषप्रद कृषि छै। ने कोनो उद्योग। व्यापार तऽ एतय इतिहासोमे नहि भेटत। हँ एहि बीच मिथिला चित्रकलाक किछु विकास भेलैया परन्तु ओकर अस्तित्व माथपर साटल ललका टिकुलीएक बराबरि छै।

तेहनामे धनीक आ गरीब, पिछड़ा हो कि उच्च जाति सबहक एकमात्र लक्ष्य छै जे ओकर नेना पढ़िकऽ कमौआ बनय। पढ़बाक अर्थभेल अङरेजी आ हिन्दी पढ़नाइ। मातृभाषा अर्थात मायक मुँहक बोल ओकर ममताधरि रहैत छै। मुदा ओकर महत्वाकाङ्क्षाक सङ्घर्षमे मैथिली कतहु ठाढ़ नहि भेटैत छै। ओ गामक पाठशालामे भविष्यक सपना जाहि खिड़कीसँ देखैत अछि से छै हिन्दीमे लिखल पोथी। जँ मिथिलाक अभिभावक लग पासक कोनो शहर जेना सहरसा, दरभङ्गा वा भागलपुरमे रहि रहल छथि तऽ हुनकर नेनासब तथाकथित पब्लिक आ कनभेन्टमे पढ़ि अङरेजीक दूरबीनसँ अपन भविष्य देखैत छथि। मातृभाषा एतहु घरक चौकठिएपर छुटि जाइत छै।

आब आउ महानगर। एतऽ देशक सब क्षेत्रसँ लोक आयल छै आ सङ्गहि ओहि राज्यक स्थानीय समाज जे आब पचीस तीस वर्षक पहिलका समाज तऽ छै नहि। एतय एक दिस क्षेत्रीयताक धुआँ पूरा वातावरणकेँ गछारने छै। विद्यालय,कार्यालय आ हरेक सार्वजनिक स्थानपर ओतुका भाषामे लिखल सूचना,जारी पत्रकेँ देखि ओकरा समक्ष एकटा पैघ मानसिक द्वन्द ठाढ़ भऽ जाइत छै। ओ सोचबाक लेल बाध्य होइत अछि जे ओ एतय

बाइली अछि।मुदा आब की कैएल जाओ? ओकर गाम, ओकर शहर आ ओकर सम्पूर्ण प्रदेश सुन्न, मरूद्यानक सदृश्य लगैत छै। ओ कोनो हालतेँ घुमिकऽ नहि जा सकैया। कतऽ जाएत? की करतगऽ? हारिकऽ ओकरा सलाह करऽ पड़ैत छै एहि धुआँसँ। ओ सिख लगैत अछि बङ्गला, मराठी, गुजराती ताकी ओ कने आफियतसँ जीबि सकय।जे सरकारी आ निजी संस्थानमे काज करैत छथि ओ बेशीसँ बेशी अङरेजीकेँ सहयोग लैत अछि जाहिमे ओकर काबिलियत नहि अपितु मोनमे अपन मातृभाषाकेँ छुटि जेबाक हीन भावना ओकरा प्रतिक्रियावश प्रेरित करैत रहैत छै।

मुदा वृहत श्रमिक वर्गकेँ कोनो उपाय नहि रहैत छै। ओ हारिकऽ अपना नेनाकेँ स्थानीय भाषा आ अङरेजीक अराधनामे लगा दैत अछि। ओकर नेना अपना विद्यालय आ खेलधुपमे सङ्गी साथीसँ स्थानीय बोली सिखैत अछि, अङरेजीमे पढैत अछि। ओकर माय मैथिलीए बजैत छै, मुदा मायक बोल ओकर भाषा नहि बनि पबैत छै। आब परिस्थिति आओर आगाँ बढ़लैया। आब नेनाक माय सेहो एहने वातावरणमे पढ़ल आ बढ़ल छै। किछु माय छोट पैघ संस्थामे, दोकानमे नोकरीयो करैत छै। आब ओ स्वयं अपन मायक बोली बिसरि गेल अछि। ओ आब घरोमे हिन्दी, स्थानीय भाषाक प्रयोग करैत अछि। तखन नेना कोना बुझतै मैथिली की होइत छै? एहि स्थितिक पाछाँ लोकक आर्थिक लाचारी छै,जीवन सङ्घर्षक दबाब छै। एहिकेँ महानगरमे कोनो हालतेँ सुधारल नहि जा सकैत छै।

सङ्गहि प्रत्येक मैथिल परिवारकेँ अन्तर्मनमे दबल आत्मबोध सदैव कछमछाइत रहैत छै। आ तकर दुरूपयोग किछु छद्म संस्था करैत अछि। अपन भाषा आ संस्कृतिक नामपर भरिगर बेहरी सङ्ग्रह कऽ किछु फूहड़ गबैया आ ताहुसँ बेशी बिदुषक सन मञ्च सञ्चालक लोककेँ बलजोड़ी थौपड़ी बजबाकऽ ई मानबाक लेल बाध्य करैत छथि जे ओ लोकनि अपन मातृभाषाक उत्थान कऽ रहल छथि। कखनोकऽ छोट छिन कविगोष्ठीक आयोजनो होइत अछि, मुदा कविलोकनि सेहो चुटकुला बला कविता वा अति दार्शनिक कविता सुना कम विदाइक आहि लेने चलि जाइत छथि।

मुदा महानगरक समस्त समाजक घरतक किछु नहि पँहुचौत छै। कतेक नीक रहितय जँ एहन एहन अवसरपर आयोजक छोट छिन सांस्कृतिक कार्यक्रमक सङ्ग सबकेँ घरही एकटाकऽ पत्रिका,वा पोथी पँहुचबतथि। ठीक छै घरक नेना ओकरा पढ़ि नहि सकतै। मुदा घरमे टेबुलपर, ताखपर कतहु ओकर उपस्थिति ओहि नौनिहालक मोनमे एकटा ठोकर तऽ दैत रहतै जे देवनागरीमे छपल इ पोथी वा पत्रिका हमर परिवार आ वंशक मूल भाषा थिक। जेना घरमे टाँगल भगवानक फोटोकेँ सब रोज पूजा नहि करैत अछि परन्तु मोनमे श्रद्धा बोध तऽ होइत रहैत छै।

अन्तमे हम घुरिकऽ आबैत छी ष्मातृभाषा दिवसष्पर। ठीक छै एकर चर्च हो,मुदा फोंक बधाइ आ शुभकामनासँ अपनाके जुनि परतारे जाउ। किछु सकारात्मक करे जाउ। अन्यथा किछुए दिनक बाद अहाँक नेना पूछत ''पापा यह मातृभाषा क्या होता है?''





मैथिलीक जड़ि पटेबाक आवश्यकता

✍ अखिलेश कुमार झा

मातृभाषा नेना घरे सँ सीखब आरंभ करैत अछि। आन कोनो विषयवस्तुक तुलना मे मातृभाषा अपेक्षाकृत सुगमता सँ बुझबा मे आबि जाइत छैक। यदि मातृभाषाक माध्यम सँ किछु बुझायल जाइत अछि त' एक्के बेर मे धीया पूता ओकरा आत्मसात क' लैत अछि। ओही ठाम यदि अन्य कोनो भाषाक माध्यम सँ विषय वस्तु बुझेबाक प्रयास कयल जाइत अछि त' बाल मन केँ दुगुना आ दू स्तर मे अतिरिक्त श्रम करय पड़े छै। पहिल स्तरक श्रम मस्तिष्क अन्य भाषा सँ मातृभाषा मे अनुवाद करबाक लेल करैत अछि। दोसर स्तरक श्रम क' विषय वस्तु केँ बुझि पबैत अछि। यदि मातृभाषाक माध्यम सँ विषय वस्तु बुझेबाक प्रयास कयल जाइ त' आधा परिश्रम सँ दूगुना परिणाम प्राप्त कयल जा सकैत अछि।

हमरा लोकनि कैँ अपन मातृभाषाक विकास, सुरक्षा, संरक्षण आ संबर्धन लेल प्राथमिक विद्यालय सँ पढ़ौनी आरंभ करबायब अनिवार्य अछि। एहि सँ जड़ि मजगूत भ' सकत आ सम्पूर्ण विकास संभव होयत।

वर्तमान मे महाविद्यालय आ विश्वविद्यालय स्तर पर मैथिलीक अध्ययन आ अध्यापन भ' रहल अछि। बी.पी.एस.सी. आ यू.पी.एस.सी. मे मैथिली शामिल भ' चुकल अछि मुदा प्राथमिक विद्यालय स्तर पर पढ़ौनी नहिं होयबाक कारणेँ जड़ि कमजोर होयबाक आशंका रहैत छैक।

हमरा लोकनिक नेना भुटाकाक मैथिली सँ जोड़ि क' रखबाक लेल परिवार मे निधोख भ' आपस मे मैथिली मे गप करी आ नेना केँ एहि लेल प्रोत्साहित करी। सरकार सँ प्राथमिक विद्यालय मे पढौनीक मांग करी। एकर दू टा पक्ष भ' सकैत अछि। पहिल मांग ई भ' सकैत अछि जे सब कक्षा मे एकटा अनिवार्य मैथिली भाषा पत्रक पढ़ौनी आ दोसर मांग मैथिली माध्यम सँ पढ़ौनी। एहि मे पहिल मांग अपेक्षाकृत अधिक सहज आ व्यावहारिक अछि।

एहि लेल प्रयास करी त' बाट सुगम भ' सकैत अछि। हमर संविधान मातृभाषा पढबाक अधिकार दैत अछि। आब त' सरकारक नव शिक्षा नीति सेहो एहि बात केँ स्वीकार केलक अछि आ एहि सँ मैथिली पढ़ौनीक मार्ग प्रशस्त होइत देखा रहल अछि। हमरा लोकनि बेसी काल सरकारक मुँह ताकय लगै छी।

हमरा लोकनिकेँ अपना स्तर पर सेहो कोशिश करय पड़त तखने अपन अधिकार प्राप्त करबा मे सफलता भेटि सकैत अछि। यदि सरकारी स्कूल मे बच्चा पढैत हो त' ओहि ठाम आवेदन दश क' मांग करी अथवा यदि निजी विद्यालय मे बच्चा कैँ पढ़ा रहल छी त' प्रबंधन सँ मैथिली पढ़ौनीक व्यवस्था करबाक लेल दबाव बना सकै छी। यदि ओहि ठाम अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत आर्द्ध भाषा पढ़ाओल जा सकैत अछि तखन मैथिली किएक नहिं पढ़ायल जा सकैत अछि?

यदि अभिभावक लोकनि एकजूटता देखाबथि त' सब ठाम सँ सकारात्मक परिणाम भेटि सकैत अछि। एहन मे मैथिलीक भूत त' गौरवपूर्ण छल आब वर्तमान आ भविष्य दुनू उज्जवल भ' सकत। प्रत्येक प्रान्तक विद्यालय मे ओहि ठामक स्थानीय भाषाक पढ़ौनी मातृभाषा रूप मे अनिवार्यतः कयल जाइत अछि।

अन्यान्य भाषा केँ एहन सुविधा एहि कारण सँ प्राप्त छैक जे ओहि भाषाक अपन अपन प्रान्त छै मुदा मैथिली भाषाक मिथिला प्रान्त एखन धरि नहिं बनि सकल अछि। स्वतंत्र मिथिला प्रान्त निर्माण सय रोगक एक उपचार होयत।

मैथिली के ँ संविधानक आठम अनुसूची मे स्थान भेटलाक बादो ओ सब अधिकार पूर्णतः प्राप्त होयबा मे भांगठ छै जे संवैधानिक भाषा केँ भेटबाक चाही। एखन धरि मैथिलीक अपन स्थायी दैनिक अखबार, डी.डी.मैथिली नहिं भेटि सकल अछि।

विद्यापति पर्वक नाम पर साल मे करोड़ो टाका फूकल जाइछ मुदा पाठ्यक्रमक पोथी उपलब्ध नहिं भ' पबैत अछि, जे चिंताक विषय थिक। ई सब करबाक लेल प्रत्येक मैथिली भाषीक सामूहिक प्रयासक आवश्यकता अछि।

आउ एहि लेल सब मैथिल जन संकल्प ली। एखन जे स्थिति अछि ओहि पर पंडित चन्द्रनाथ मिश्र श्अमरश् द्वारा रचित पंक्ति सटीक बैसैत अछि- फुनगीये दिस ताकि रहल छथि मैथिलीक सब प्रेमी, घर मे डीबिया मिझा रहल अछि, उसकाओत के टेमी?

ई एकटा यक्ष प्रश्न बनि एखनो हमरा सभक सोझाँ मुँह बौने सुरसा जेकाँ ठाढ़ अछि आ हमरा सभकेँ एकर सटीक उत्तर तकबाक अछि।



अपनहिं घर मे उपेक्षित मैथिली

✍ सोनी चौधरी

अति प्राचीन सुन्नर, मिठगर, कर्णप्रिय, मैथिली भाषाक प्रथम उल्लेख शतपथ ब्राह्मण मे आ वाल्मीकि रामायण में अछि। मिथिला प्राचीन काल सं विद्वान आ साहित्यकारक धरती रहल अछि। इ धरती राजा जनक, विद्यापति, मंडन मिश्र, चंदा झा,गोविंद दास, मनबोध, पंडित सीताराम झा, जीवनाथ झा(जीवन झा) आ सुरेंद्र सुमन के धरती थिक। अति मधुरतम मैथिली भाषा भारतक संविधानक आठम अनुसूची में शामिल अछि। एहि भाषाके नेपालक संविधानक अनुसुची मे आ साहित्य अकादेमी द्वारा 1965 ईस्वी सं शामिल कयल गेल तदुपरांत बाइस दिसंबर 2003 से भारत सरकार द्वारा मैथिलीक भारतीय संविधानक अनुसूची मे सेहो शामिल कयल गेल अछि।

मुख्य रूप सं एहि भाषाक उपयोग देश मे दरभंगा, मधुवनी, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय, पूर्णियां, कटिहार, किशनगंज, शिवहर, भागलपुर, मधेपुरा, अररिया, सुपौल, सहरसा, बैशाली, रांची, बोकारो, जमशेदपुर, धनबाद, आओर देवघर जिला मे बाजल जैत अछि, मैथिली नेपाल केर आठ जिला मे धनुषा, शिरहा, सुनसरी, सरलाही, सत्तरी, मोहतरी, मोरंग, आ रौतहट मे बाजल जैत अछि। लगभग सात सौ ईस्वी केर आसपास मैथिली मे रचना प्रारंभ होमय लागल स विद्यापति मैथिलीक आदि कवि आ सर्वाधिक ज्ञाता कवि भेलाह, भारतक लगभग 5.6 प्रतिशत आबादी (सात सं आठ करोड़) लोक मैथिलीक मातृभाषा केर रूप मे प्रयोग करैत छथि।

मैथिली भाषाक प्रयोग कर्ता भारत आ नेपाल केर विभिन्न भाग सहित विश्व के अनेक देश मे मैथिल भाषी छथि।

मैथिली विश्व केर सर्वाधिक समृद्ध, शालीन भाषा मे एक अछि। मैथिली भारत मे राजभाषाक रूप मे सम्मानित अछि।

भाषाक उत्थान- कोनो भाषाक उत्थानक लेल अपन लिपि होईत अछि जाहि मे मैथिलीक अप्पन लिपि अछि जे समृद्ध भाषाक प्रथम पहिचान अछि। सरकार द्वारा मैथिली विकासक लेल ठोस कदम उठाओल गेल अछि जाहि मे गैर सरकारी संस्था आ मीडिया द्वारा मैथिली भाषा मे साहित्यिक कलात्मक, ज्ञानवर्धक शिक्षण संस्थान,रेडियो, टेलीविजन,पत्र पत्रिका, रेलवे स्टेशन मे सेहो मैथिली सूचना दय सुलभता प्रदान कयने छथि। भाषाई उत्थानक तहत उद्यमता आ रोजगार मे मैथिलीक बहुत महत्वपूर्ण पक्ष भ सकैत अछि। संविधान केर अष्टम अनुसूची मे दर्ज भेलाक उपरांत भारत सरकार द्वारा प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षा में सफल होयबाक विशेष योजक कडी केर भूमिका प्रदान कय रहल अछि। वर्तमान सरकार द्वारा नबका शिक्षा नीति सं भारतक प्रत्येक प्रांतक एकटा विषय मातृभाषा अनिवार्य रूप मे होयत जाहि में उत्तीर्णता अनिवार्य अछि।

रोजगार मे साहित्यिक, सांगीतिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक क्षेत्र मे ढेर रास रोजगार भेटबाक सहजता अछि मुदा मैथिली अपनहिं घर में उपेक्षित छथि बंगाली, मद्रासी, पंजाबी, गुजराती, केकरों अपन मातृभाषा छोडि दोसर भाषा कोनो हाल मे स्वीकार नहि मुदा मैथिल अपना घर मे हिंदी बजताह, बाल बच्चा के मैथिली के कोनो ज्ञान तक नहि, तखन ओ बाहर मैथिली की बजताह? हिंदी आ अंग्रेजी के स्टेटस सिंबल मनैत मैथिली बाजय में लाज लगैत छन्हि।

जीवन यापन लेल मातृभूमि सं बाहर रहनाई एकटा मजबूरी सेहो, कर्मभूमि पर दोसर समाज मे हिंदी बजबाक मजबूरी सेहो मैथिल केर दुर्भाग्य, स्कूल केर पाठ्यक्रम मे मैथिली नहि रहलाक कारण बाल बच्चा के रुचि नै रहैत अछि मुदा आब सौभाग्य जे मैथिल सेवी सबहक अथक प्रयास सं पाठ्यक्रम मे शामिल कयल गेल जे बहुत शुभ संकेत अछि। अपन मातृभाषाक प्रति पूर्ण समर्पण बहुत जरूरी अछि

घर में माता पिता, पति पत्नी बाल बच्चा के बीच अपन भाषा केर प्रयोग, संगहि हित मीत कें एहि भाषाक इतिहास सं परिचित करेनाई परम आवश्यक। जन जन मे मैथिली के प्रति आस्था आ प्रेम जगेनाई मैथिल के प्रथम कर्तव्य होयबाक चाही।

अपन गौरवशाली और समृद्ध भाषा मैथिली के अपन जीवनशैली में नित्य प्रयोग, एकर व्यहवार आ विस्तार के दिशा मे सोचनाइ परम आवश्यक अछि। मातृभाषा मैथिली के जन मानस के मानस पटल पर रेखांकित केनाय परम आवश्यक अछि।

पहिल शुरुआत घर सं, ताहि के बाद पाठ्यक्रम सं एकर विकास के सुनिश्चित कयल जाय। किछु चंद लोकक सोचला सं किछु नहि होयत। एहि कार्यक लेल प्रत्येक मैथिल के आगू आबय पडत।

जय मिथिला, जय मैथिली!!



मिथिला आन्दोलनमे दलित-पिछड़ाक सहभागिता

✍ डॉ० गौरी चौधरी

आन्दोलन संगठित सत्ता तंत्र अथवा व्यवस्था द्वारा शोषण आ अन्याय कयल जायवला बोध सँ ओकर खिलाफ जनमत संगठित ओ सुनियोजित अथवा स्वतः स्फूर्त सामूहिक संघर्ष अछि। एकर उद्देश्य सत्ता अथवा व्यवस्थामे सुधार अथवा परिवर्तन होइत अछि। ई राजनीतिक सुधार अथवा परिवर्तनक आकांक्षा केर अतिरिक्त सामाजिक, धार्मिक, पर्यावरणीय अथवा सांस्कृतिक लक्ष्यक प्राप्ति लेल सेहो चलाओल जाइत अछि। यथा- चिपको आन्दोलन गाछ-वृक्षक रक्षार्थ चलाओल गेल आन्दोलन छी।

आन्दोलन आ संघर्षमे अन्तर अछि। आन्दोलन एक सामूहिक संघर्ष थिक, जखन कि संघर्ष रोजमर्राक जिनगीक अभिन्न अंग होइत अछि। वर्गमे बाँटल आ शोषण पर टिकल समाजमे व्यक्ति प्रत्येक दिन अनगिनत रूपमे संघर्ष करैत अछि। ई संघर्ष व्यक्ति के सामूहिक अथवा वर्ग-संघर्षक हिस्सा सेहो होइत अछि। मुदा, ई सभ आन्दोलन नहि कहबैछ। आन्दोलन चाहे ओ संगठित हो अथवा स्वतः स्फूर्त, संघर्षक विकासक एक अवस्था थिक, जतऽ संघर्षक स्वरूप आम भऽ जाइत अछि। संघर्ष व्यक्तिगत नहि रहि जाइछ, सामूहिक भऽ जाइत अछि। नमक आन्दोलन, दांडी मार्च, भारत छोड़ो आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन आदि भारतीय प्रमुख आन्दोलनमे अबैत अछि। तहिना कोना पार्क्स आन्दोलन, फ्राँसक छात्र आन्दोलन, ध्येन आगमन स्क्वेयर प्रोटेस्ट, मण्डल कमीशन प्रोटेस्ट आदि शिव आन्दोलन किछु बानगी अछि।

भारतमे अम्बेडकरक माँदे मात्र आन्दोलनक बात करी तऽ महाड़ सत्याग्रह, नासिक केर कालाराम मन्दिर आन्दोलन, दलित बौद्ध आन्दोलन, नागपुर ओ लखनऊ आन्दोलन, मुखेड़ आन्दोलन, मोहाली धुले आन्दोलन, अम्बा देवी मन्दिर आन्दोलन, पूणे कौन्सिल आन्दोलन, पर्वती आन्दोलन एवं दिस अबैत अछि तऽ भारतीय सामाजिक आन्दोलनक अन्तर्गत सम्पूर्ण क्रान्ति, नर्मदा बचाओ आन्दोलन, स्वाध्याय आन्दोलन, अन्ना आन्दोलन, छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा आदि आन्दोलन के नाम लेल जा सकैत अछि।

मिथिला सामाजिक आन्दोलनमे सभ जाति धर्मक बन्धन टूटि गेल जेबाक इतिहास सुरक्षित अछि। एहि सँ संदर्भित कंदर्पीघाटक लड़ाई मोन पड़ैत अछि। वर्ष 1753ई.मे मिथिलेश नरेन्द्र सिंहक नेतृत्वमे कन्दर्पी घाटक लड़ाई भेल छल, जाहिमे आम मैथिल जाति धर्मक बन्धन तोड़ि कऽ भाग लेलनि। शीशोत्सर्गक विजयश्रीक वरण कयलनि। कहल जाइत अछि जे युद्धक बाद रक्त आ बालु सँ सनल 74 सेर जनेऊ जोखल गेल छल। भारी संख्यामे हताहत भेल सैनिक, आमजन केँ संस्कारक समस्या भेल तऽ हुनका सभक जनेऊ उतारि केँ प्रतीकात्मक संस्कार भेल छल। ओहि समय ब्राह्मण, क्षत्रीय, कायस्थ, यादव, सोनार, केवट, जातिक लोक जनेऊ धारत करैत छल। एहि अमर शहीद लोकनिक स्मृतिमे तत्कालीन अनुमण्डल पदाधिकारी, झंझारपुर रंगनाथ चौधरी 20 जनवरी, 2010ई. केँ मिथिला विजय स्तम्भ केर आधारशिला रखने छलाह जकर अनावरण तत्कालीन ग्रामीण विकास मंत्री, बिहार सरकार मान्यवर नीतीश मिश्रा 12 फरवरी, 2014 केँ कयने छलाह।

1857क क्रान्ति सँ भारतक प्रायः सभ हिस्सा थोड़-बहुत प्रभावित भेल। ई घटना जकर प्रारंभ सिपाही विद्रोह सँ भेल छल, बहुत जल्दी एक राजनीतिक आन्दोलनक रूप लऽ लेलक। जे घटना धर्म लेल युद्ध सँ आरंभ भेल, अन्ततः स्वतंत्रताक लड़ाई केर रूप लऽ लेलक। विद्रोही लोकनि विदेशी शासन मिटाबऽ चाहैत छलाह। मेरठ सँ जे अन्हर 10 मई,1857 ई0 केँ चलल से बहुत शीघ्रहि सम्पूर्ण भारतमे पसरि गेल तथा अपन 14 मासक प्राचीन वर्ग सँ उत्तम जन धरि पहुँच गेल। एहि सभ घटना सँ मिथिला सेहो अप्रभावित नहि रहि सकल।

ई कहबाक आवश्यकता नहि अछि जे एहि आन्दोलनमे दलित-पिछड़ाक सहभागिता नहि छल? कतोक उदाहरण समक्ष अछि जे मिथिलाक संदर्भित जातिक लोक सभ जाति-धर्मक बंधन केँ तोड़ि एहि आन्दोलन केर सहभागी बनल छलाह। उदाहरणस्वरूप हम नाम लेमऽ चाहब मौजे मुधोरापुर सरगना, लुरौवाइ जिला तिरहुतक निवासी घुट्टी उर्म झगडू पिता-विलास महतो, जे कोइरी जातिसँ अबैत छलाह, उक्त आन्दोलनमे दलित विद्रोही के रूप 8 जुलाई, 1857 केँ फाँसी देल गेल छलनि। एहिना तिरहुत जिला निवासी शिवटहल कुर्मी, बड़ गाँव के कालापानी, रामटहल गोप शरफनगर परगना, तुरौनी, भगीरथ गोप, धूर्मपुरी परगना कुरौनी, रामधुनी गोप, तुफानी, पोटसुरका गोप आदि केँ पाँच सालक कालापानी देल गेल छल। एहने शीलानाथ बहरी जिला दरभंगा के नथुनी साहु के गोली मार देल गेल।

एहने कतोक उदाहरण समझ अछि। कहल जा सकैत अछि जे एहि आन्दोलनमे 21 प्रतिशत निम्न जातिक गंगादास बेस महत्त्वपूर्ण जे छैक, एकटा कऽ ओहि सभहक आर्थिक सामाजिक दयनीय पर ध्यान देल जा सकैत अछि। एहि सँ ईहो स्पष्ट बुझल जा सकैत अछि जे दलित पिछड़ा जातिक 20 प्रतिशत सँ बेसी भाग लेनाइ आन्दोलनक राष्ट्रीय स्वरूप मात्र केँ नहि उजागर करैत छैक अपितु संग-संग एहि हेतु एहि आन्दोलनक आधार निश्चित रूपसँ बेसी भुहर भेलैक।

भारतीय समाज आइयो गाँधीक विचार ओ छाप सँ अनुशीलन अछि। ई प्रायः सर्वज्ञात अछि जे 1917मे गाँधी केँ चम्पारणक कतिपय साधना कुलक सभ द्वारा अपन क्रमशः ह्रासोन्मुख आर्थिक स्थितिमे सुधार आबाक उद्देश्यसँ जिलाक निलप्त साहबक विरूद्ध आन्दोलन करबा लेल आतंकित कऽ आनल गेल छलनि। गाँधीजी के एला पर निलहा साहेबक अमला रहि चुकल संत राउत आ दोसर साहुकार रवेन्द्रर प्रसाद राय रहथि। हिनका संग देनिहार रहथि बेतियाक गौड़ीशंकर साह, हीरालाल साह, देवी दयाल साह, रामदायल साह, ललिता प्रसाद साह, पुण्यदेव प्रसाद साह आदि। ई कहब आवश्यक अछि जे महाजन सभक इलाकाक अर्थव्यवस्था पर जबरदस्त नियंत्रण रहैक। विपक्ष कृषक आ दलित वर्गक लोके बेसीकाल हुनकर कर्जदार रहनि आ ओ कर्ज नहि आपस कऽ सकबाक स्थितिमे प्रायः अपन जमीन महाजनके लिखि देवा लेल विवश रहैत रहथि। चम्पारणमे वस्तुतः एहि वर्गक लोक दुखस्थामे रहथि। आ हुनका सभके गाँधी सभक कोनो लोकक खोज रहथि जे हुनकर कादोमे फँसल जीवनकेँ उबारि लैनि। मुदा से ताहिमे किछु गलत साजिश रचल गेल।

गाँधीजी चम्पारण अभियान अहू संदर्भमे महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि जे एतहि ओ भारतमे सत्याग्रह आन्दोलनक अपन प्रथम सफल प्रयोग कयलनि। पहिने जे किछु कएने छलाह से दक्षिण अफ्रीकामे, मुदा जे बेसी महत्त्वपूर्ण भेलैक से ई जे ओ दलित/पिछड़ा वर्गक मुक्तिक बहुविध संघर्ष आरंभ सेहो एहिठाम कयलनि। चम्पारणमे गाँधी सुस्पष्ट घोषणा कयलनि जे ई सभ सम्बद्ध व्यक्तिक जोतिक दायित्व छल जे ओ दलितक पुनरूद्धार लेल काज करथि। वस्तुतः गाँधी आगमन सँ चम्पारण (मिथिला) केर दलित लोक लेल नव दुनियाक निर्माण लेल। पूर्णियाँ जिलामे बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे भेल कतिपय कृषक उग्रता अर्थात आन्दोलनक विवेचन करैत छी तऽ पबैत छी जे 7943 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफलक वर्ग उक्त जिलामे 2644गजएक ग्राम अछि जे समस्त ग्रामीण जनसंख्याक मुख्य आजीविका कृषि छैक कुल जनसंख्याक 94 प्रतिशत ग्रामीण अछि जे तथाकथित दलित ओ पिछड़ा वर्ग सँ अबैत अछि आ तकर 90 प्रतिशत अपन जीविकोपार्जन स्वात्री कृषक, बटाईदार अथवा भूमिहीन श्रमिकक रूपमे करैत अछि। ई सभ एक अथवा अनेक जमींदारक अधीन होइत छल। ओ लोकनि कतोक प्रकार सँ प्रताड़ित छल। एहि सँ हिनका सभक अन्दर विद्रोहिक बीज पनपल। 1920मे मुजफरपुरमे जे उत्तर बिहार किसान सभाक बैठाक भेल, तकर क्रिया-कलाप पूर्णियाँ धरि पहुँचल। पूर्णियाँ जिलाक धरहरा आ फारबिसगंज क्षेत्रमे कृषिक आन्दोलन उभरल। 1929-30 से आर्थिक मंदी एक विभिन्न प्रकारसँ कृषिक तनाओ उत्पन्न भेल। रैयत आ राज अधिकारी मध्य ओकाबिला आ विरोध होम लागल। अपितु संताय बटाइदार संगठित भऽ आन्दोलन कर' लगल आ धरहरा, रानीगंज आ फारबिसगंज के कृषिक बलबा भेल। सर्वाधिक उल्लेखनीय अछि जे कृषि श्रमिकक लेल स्निग्ध नेताक रूपमे दुल्हना माँझी आ नक्षत्र मालाकार उभरल। ओ लोकनि दलित कृषिक समुदायक जे मात्र अनभिषिक्त राज बनि गेला अपितु इतिहासमे अपन समाज समकालीन कतोक जमींदार आ धनी हिंसानक अपेक्षा सुरक्षित कऽ लेलनि।

एहि ठाम इहो कहब आवश्यक अछि जे सामंतवर्गीय जमींदार सभ तरहेँ समाजक शोषणमे केहेन तल्लीन छल, से ताहि राजाक 1896ई0 भूमि सर्वेक्षण खतियान आ नक्शा ई दर्शाबैत अछि जे भूभागक अछिक सभ कबूलिया जे जमींदारक ओतऽ लिखाइत छल। एहि क्रमे कोनो दलित पिछड़ा केँ दहसति देखा कऽ ओकर अधिकार हनन कऽ ओकर जमीनसँ बेदखल कऽ देल जाइत छल। जमीनक भावली नगदी बन्दोबस्ती केबाला आ बटइया खतियान प्रचलित छल। बटइया खतियानमे सर्वेक बाद किसानके देल गेल मुदा तकर स्वामित्व मालिक अपने करैत छल। किसानक सभ अधिाकार मालिके के होइत छल। एकर सम्पूर्ण शोषण केर विरूद्ध 1942मे व्यग्र किसान आन्दोलन उग्र रूपमे लहरि उठल। एकर विकास रूप एहि ठाम देखल गेल छल। फणीश्वरनाथ रेणु, कर्पूरी ठाकुर आदि नेता सभ जमींदारक भूमि के ट्रैक्टर आ हर सँ जोति कऽ किसान के बटइया खतियानक सभ सँ पहिला वाजिब हक दियौलनि। ई गवाह अछि रेणु जीक 'मैला आँचल ओ 'परती परी कथा'। संगहि फणीश्वरनाथ रेणु 'मैला आँचल' और 'परती परी कथा' मिथिलांचलक लेखक सरल साखी रूपेण अविरल करैत कथा सम्यक अहेर दखल विद्यमान अछि।

लिखित स्वभाव सर्गमे सफल आन्दोलन अर्न्तवर्ती कथा शिलालेख प्रायः सम्पूर्ण रूपेण तऽ नहि मुदा छद्मरूपेणमे एहि भरल पुरल अछि जकर वर्णन केनाइ एहि विक्षिप्त व्यवस्थामे दोसर नहि भऽ सकैत अछि, तकरीबन इतिहास साक्षी अछि जे महथाक मानवीक संग गोनु नाथ झा के जखन हमर माइ कोरामे लऽ कऽ सुला और ही भागल छल ताहि संगे लदनियाक मेवालाल गोप, चेकरव गोप, रामलखन साहु, मणिकांत दुसाध इत्यादि सेहो पटक आन्दोलन के लऽ बसि के हवा देने छल। जाहि क्रममे लदनियाँ जयनाथ, रजौली आदि बतना के जराओल गेल छल। डाकघरक तार जोड़ल गेल, रेलक पटरी मधुबनी से जयनगर धरि उखाड़ि फेकल गेल छल। पंडित फूलजी संत वैरागी आ बनवारी सभ छड़क रूपेण अपन काज करैत तन-मन-धन से एहि आन्दोलन के भलेबाक लेल तत्पर रहल। जाहि क्रममे एकटा बात अत्यन्त कारणीक अछि जे बलआ बाजार मटिअरबा के देवनारायण गुरमैता अपन बहिनक घरमे रातिके डकैती कऽ के ओकरा माइ-बापक बेस सभटा शोभाक गहना हरण कऽ स्वतंत्रता संग्राममे दाब देने छल। नेपालक राजविराजक बैंक के लुटि कऽ एहि राजडोइ के अविरल सबल केने छल। जाहि क्रममे जहल गेला पर काशीकान्त झा। दलित आ पिछड़ाक वर्गक मजदूरीक बड़के जीनक फारक गोड़िकर हुनका सभके राते-रात बाहर निकाल कऽ फिरंगी भगाओ आन्दोलन के जगता ज्योति रखबामे बंतरंग साक्षी भेल छल एहि रूपेँ ई कहब अतिश्योक्ति नहि जे।

मध्यन्ते रिपुव जत्र सद् मिथिला अपना नाम के ताहु दिनमे

सार्थक केने अछि। किछु उदाहरण फेर सँ एहिठाम द्रष्टव्य- ब्रद्री दास, पैरी, भागलपुर 1942मे भागलपुर रेल पुलिस पर पुलिसक गोली सँ घायल भेला पर मृत्यु के वरण केने छलाह। गौसपुर, दरभंगा निवासी बंगाली दुसाध 1942मे गोली से मारल गेलाह, लखन दुसाध 17 अगस्त, 1942मे मारल गेलाह। सूरज दुसाध 1932मे विखहर थाना पर झंडा फहरा पुलिसक गोली शहीद भेलाह, देवम परदाहा, पूर्णियाँ निवासी बालेश्वर हजारा 25 अगस्त 1942के द्वारा पुलिस द्वारा बंद कयल गेलाह। ठाहर, जिला दरभंगा निवासी भगत पासवान शहीद भेलाह, एहि तरहेँ बुधन पासवान, मुजफरपुर, चमक लाल पासवान केमाज, मुंगेर, जहुरी पासवान, लामा, मुंगेर, जय गोविन्द पासवान, शीतला मुजफ्फरपुर, लिख परिणाम भागलपुर, परमेश्वर पासवान, धोकबा, पूर्णियाँ एहि आन्दोलनमे शहीद भेल छलाह।

कोनोहु आन्दोलन केर माँदे महात्मा गाँधी कहब एहि ठाम मिथिला आ मैथिली आन्दोलन लेल समीचीन लगैत अछि। हुनक कहब छलनि- न्यायोचित माननीय अधिकार प्राप्ति हेतु होमऽवला कोनो आन्दोलन केँ सफलता प्राप्ति कएला सँ पूर्व उपहास, उपेक्षा, तिरस्कार आ दमन-चारिटा चरण पर करऽ पड़ैत अछि। ताहि संदर्भ मिथिला आ मैथिली सँ जुड़ल आन्दोलन संक्षिप्त स्वरूप एहि ठाम देबऽ सेहो समीचीन लगैत अछि-

सभसँ पहिल पत्रिका 'मैथिली हित साधन'क प्रकाशन 1934ई. तऽ कोलकाता विश्वविद्यालयमे प्राथमिक कक्षा सँ एम.ए. धरिक पाठ्यक्रममे मैथिलीक प्रवेश 1917ई.मे भेल। सर्वप्रथम विद्यापति जयंती एम.एल.एकेडमी, दरभंगामे आ मैथिली दोसर नमक ट्रस्टक स्थापना 1929ई0मे तऽ पटना विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रममे मैथिलीक समावेश 1941ई.मे भेल। साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिली भाषाक मान्यता 1965 तऽ पुरस्कार प्रदान करबाक श्रीगणेश 1966ई.मे गेल। बी.पी.एस.सी. परीक्षामे मैथिलीक ऐच्छिक विषय रूपमे स्वीकृत 1972ई. तऽ आकाशवाणी दरभंगाक स्थापना 1976ई.मे भेल। बड़ी लाइन हेतु विशाल धरना प्रदर्शन जनवरी 1984ई. तऽ विद्यापति सेवा संस्थान केर तत्वावधानमे तेरह सूची माँग सहित रेल रोकू आन्दोलन 1986ई.मे भेल।

अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा कोलकातामे बिहार सरकारक मैथिली विरोधी रवैया के विरूद्ध भेल मुकदमाक निर्णय 2 दिसम्बर, 1990ई.के भेल तऽ कोलकातामे जनजागरण अभियान कोलकातामे 1990ई.मे भेल। मैथिली संघर्ष समिति, पटना द्वारा बिहार विधानसभा समक्ष विशाल प्रदर्शन 27 मार्च, 1992 ई.मे कयल गेल तऽ दिल्लीक वोट क्लब पर राजनीति कर्मी एवं ई क्रम जंतर-मंतर दिल्ली आ अजो ठाम अनवरत चलैत रहल। प्रधानमंत्री/ उपप्रधानमंत्री के ज्ञापन पत्र अर्पण 8 दिसम्बर 2002ई. के देल गेज हजारो कार्यकर्त्ताक गिरतारी 18 दिसम्बर, 2003ई. के कयल गेल। अतः 22 दिसम्बर 2003 के लोकसभा आ 23 दिसम्बर 2003मे राज्यसभामे संविधान के अष्टम् अनुसूची लेल प्रस्ताव पारित भेल।

एहि लेल मिथिलाक सभ जाति धर्म बंधन टूटल देखल गेल एहि आन्दोलनकेँ से। वस्तुतः मैथिली सर्वजनीय भाषा किक। मिथिलाक अधिकांश भू-भागमे बहुसंख्याक पिछड़ा आ पछुआयल वृहत्तर समाज विका करैत छथि। एकरा दलित, उपेक्षित, शोषित, अल्पसंख्यक, सभ शब्दक उपयोग सेहो कयल जा रहल अछि। मुदा से ई वृहत्तर समाज लोक मैथिलीक अतिरिक्त कोनो आन भाषा नहि बजैत छथि आ नहि लिखैत छथि।

तै एहि वर्गक पदमृश्री बिलट पासवान विहंगम, विद्यावारिधि ा मिथिला रत्न रामलषण राय 'रमण', बिन्देश्वर मण्डल, सुभाष चन्द्र यादव, किशोरी यादव, डॉ. बुचरू पासवान, डॉ. जय नारायण यादव, तारानंद वियोगी, सहित मोतीलाल मुखिया, डॉ. मोहन प्रसाद, कमलाकान्त भंडारी, डॉ. अशोक कुमार मेहता, डॉ. फूला पासवान, डॉ. लालति कुमारी, डॉ. लालपरी देवी, डॉ. राजाराम प्रसाद, डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी, फजलुर रहमान हासमी, आचार्य नाजिम रिजवी, अब्दुला राईन, हसन इमाम दर्द, एजाज कामिल, सैयद रहमानी, शेख शब्बीर अहमद 'जएमी', मोहम्मद युसूफ, सुश्री टी. फातिमा, स्व. रहमान मियाँ, डॉ. मंजर सुलेमान, बीरबल यादव, बजरंग मंडल, रोहित यादव, अमलेश मंडल, अरूण कुमार शर्मा लोकनि मैथिलीक आदर्शनामे लागल छथि।

1905 आ 1912ई.मे बंगाल सँ फराक भेलाक बाद 1936, 1956 आ फेर 2000ई.के बिहारक विभाजन भऽ चुकल अछि, मुदा आइ धरि मिथिलांचल केँ अलग नहि कयल गेल अछि। एहि लेल अनवरत आन्दोलन चलि रहल अछि। देशक विभिन्न संख्या एहि लेल तत्पर अछि। बता दी जे एहि संस्थानमे सेहो दलित पिछड़ाक सहभागिता सभ नहि छनि। अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्लीक फाउण्डर अध्यक्ष रहलाह स्व. राजकुमार पूर्वे। आर.पी. यादव प्रभृति कतेको लोक एहिमे अपना भागीदारी सुनिश्चित कयलनि। वि.सं.स. दरभंगा कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. बुचरू पासवान दरभंगा समितिमे गणेश शंकर खर्गा, रघुवीर मोची तऽ अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक माँदे अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र नारायण राम छथि।

सूच्चा मैथिल तऽ एहिमे अनवरत आन्दोलनत अछि, जाहिमे रोहित यादव, अमरेश मण्डल मिथिलाक राजनीतिज्ञक बात करी तऽ मान्यवर धनिक लाल मंडल, मंगनीलाल मंडल, रामप्रीत मंडल, रामविलास पासवान, सुकदेव पासवान, संजय पासवान, हुकुमदेव नारायण यादव, देवेन्द्र प्रसाद यादव, प्रो. रामदेव भण्डारी, रामलषण राय 'रमण', पदमृश्री बिलट पासवान विहंगम प्रभृति कतोक नेतागण मिथिला ओ मैथिलीक सहभागिताक अनुपम उदाहरण छथि। एतावता मिथिला आन्दोलनमे दलित ओ पिछड़ाक भागीदारी के कम कऽ के आँकल नहि जेबाक चाही। हिनक सभक योगदान ऐतिहासिक ओ अविस्मरणीय अछि।



महाकवि विद्यापतिक मैथिली आन्दोलन आइओ सान्दर्भिक

✍ देवेन्द्र मिश्र

एम्हर किछु समयसँ मैथिली आन्दोलनक प्रसङ्ग जखन. तखन उठैत रहैत अछि। ई प्रसङ्ग उठबाक क्रममे मैथिली भाषाक विकास, संरक्षण आ सम्बर्द्धनक उद्देश्य मूलमे रहैत अछि। एहि सम्बन्धमे ई जाननाइ आवश्यक अछि जे कोनहुँ भाषाक विकासकलेल पाँचटा मुख्य गप आवश्यक होइछै :

1. भाषाक हस्तान्तरण अर्थात एक पुश्तासँ दोसर पुश्तामे भाषाकेँ विस्तारितध्प्रसारित कएनाइ,
2. लोकसभद्वारा हरेक सम्भावित सन्दर्भ आ स्थलपर मातृभाषा मैथिलीक प्रयोग
3. भाषाक आधिपत्य अर्थात राज्यक हरेक संरचनामे भाषाक स्थान आ सम्मान
4. भाषाक संरक्षणक आ सम्बर्द्धनकलेल पर्याप्त साहित्य रचना, से कथा, कविता, उपन्यासेटा नहि, जीवनोपयोगी हरेक क्षेत्रमे ओहि भाषाक माध्यमे रचना भेनाइ।
5. जन-जनकेँ मैथिली भाषा प्रति गौरववोध भेनाइ करेनाइ कराओल गेनाइ।

भाषा आन्दोलन, खास कए मैथिली भाषा आन्दोलनमे स.य प्रत्येक व्यक्तिकेँ ई ध्यानमे राखबाक चाही जे उपर्युक्त चारू पक्षमे की.की समस्या अछि आ तकर समाधानकलेल कोन-कोन उपाय सम्भावित आ अपेक्षित अछि। आन्दोलनकारीलोकनि द्वारा जँ एहि दिश ध्यान नहि दऽ मैथिली आन्दोलनकेँ मञ्चीय अभिभाषणटा धरि सिमित राखल जाएत तऽ अपेक्षित उपलब्धि सम्भव नहि हएत। जँ नीकसँ अध्ययन कएल जाए तऽ वर्तमान समयमे ई चारू पक्ष उपयुक्त अवस्थामे नहि देखल जा रहल छै।

जेना वर्तमान समयमे शहर दिशक द्रुत उन्मुखता आ अपन जन्मस्थलसँ बाहर अन्यत्र रहबाक बाध्यकारी अवस्थाक कारणे तथा सरकारी गैरसरकारी कार्यालयसभ, शैक्षणिक संस्थानसभ आदिमे नेपालमे नेपाली भाषा आ भारतमे हिन्दी अथवा अङरेजी भाषाक बोलबाला रहबाक कारणे धियापुता केँ अपन मातृभाषा मैथिली प्रयोग करबाक अवसर बहुते कम भेटैत अछि।

एहि सन्दर्भमे एकटा आओरो सत्यकेँ स्वीकार करए पड़बाक अवस्था अछि जे, किछु अपवादकेँ छोड़िकऽ अधिकांश मैथिली भाषीलोकनि अपन घर.परिवारमे सेहो मैथिलीक प्रयोग नहि करैत छथि। ओलोकनि अपन परिवारोमे नेपाली अथवा हिन्दी अथवा कतओ-कतओ तऽ अङरेजीओ प्रयोग करैत छथि। एहि भयावह अवस्थाक परिणाम ई होइबला अछि जे एक-दू पुश्ताक बाद अधिकांश लोक अपन मातृभाषा बिसरिए जाएत आ सबटा आन्दोलनक गप हवामे उड़िजाएत। तएँ प्रत्येक मैथिली आन्दोलनी केँ एहि समस्याक स्थायी समाधानक उपाय सोचबाक चाही आ एकर समाधानक लेल कार्ययोजना बना कार्यान्वयन करबाक चाही।

दोसर आ तेसर पक्ष मैथिलीक सर्वत्र प्रयोगक सम्बन्धमे सेहो उपर लिखल कारण अछि। जखन कार्यालयसभ, निजी स्तरक कार्यक्षेत्रोसभ, विद्यालय आदि स्थानमे मैथिलीक प्रयोग औपचारिको रूपेँ वर्जित अछि तऽ लोक एकर प्रयोग कोना कए सकैत अछि? एहि आन्दोलनमे लागल सभकेँ एहि दिश ध्यान देबाक आवश्यकता अछि जे अपन कार्यक्षेत्र, सेवाक्षेत्रमे मातृभाषाक प्रयोगक सुनिश्चितता कोना हएत।

मैथिलीक सन्दर्भमे चारिम पक्षक अवस्था नीक कहल जा सकैए, मुदा एखनहुँ ई पर्याप्त नहि अछि। ईश्वी सम्वतक सातमे.आठमे शताब्दीमे शुरुह भेल मैथिली साहित्य-रचनाक परम्परा लगभग एगारहम शताब्दीमे ज्योतिरीश्वर द्वारा एकटा पैघ क्षितिज ठाढ़ कएल गेल आ चौदहम.पन्द्रहम शताब्दीमे महाकवि विद्यापतिद्वारा नव स्वरूप देल गेल मैथिली साहित्यक भण्डार एकैसम शताब्दीधरि उपोउप नहि भरल अछि, से नहि कहल जा सकैए।

मुदा मैथिली साहित्य एखनहुँ धरि कथा, कविता, उपन्यास, निबन्ध, नाटक आदि धरातलीय स्तरसँ उपर नहि उठि सकल अछि। मैथिली भाषामे अर्थशास्त्र, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीवनोपयोगी कौशलक आन.आन रचनासभ लगभग नहिएँ जकाँ अछि, किछु अपवादकेँ जँ छोड़ि दी तऽ। मैथिली आन्दोलनमे लागल तत् तत् विषय आ बिधाक विद्वानलोकनिकेँ ई अवश्य ध्यान देबाक चाही।

वर्तमान समयमे मैथिलीक लेल सबसँ ज्वलन्त समस्या ई अछि जे मैथिलीक विविध बोली बजनिहार लोकसभमे भाषिक गौरवबोधमे ह्रास आबि रहल अछि। प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक प्रो. डा. रामावतार यादवक कथन जँ पैंच ली तऽ मैथिली विविधताक स्वर्ग अछि।

क्षेत्रभेद, भूगोलक अन्तरसँ मैथिलीक अनेक प्रकारक बोली जन.जनमे प्रचलित अछि, से सहज आ स्वाभाविक रूपसँ। मुदा एम्हर किछु समयसँ बोलीभेदकेँ भाषिक अन्तर बुझि किछु

गोटे अपन मातृभाषाकेँ मैथिलीक स्थानमे आन भाषाक नाम देबए लागल छथि। नेपालमे मैथिली मातृभाषी किछु जातीय समुदायसभ अपन मातृभाषाक रूपमे मगही अथवा बज्जिका नामसँ अपन मातृभाषाकेँ नामकरण कऽ रहल अछि। ओहि जातीय समुदायसभक अगुआसभक ई कथन अछि जे मैथिली तऽ किछु अमुक अमुक जातिक भाषा छी, हमसभ ओहेन शुद्ध नहि बाजि पबैछी, तएँ हमर भाषा मैथिली नहि अछि। मैथिली आन्दोलनमे संलग्न अभियानीलोकनि एखनहुँ धरि लोकके ँ ई गप समझाबएमे सफलता प्राप्त नहि कऽ सकलाह अछि जे भाषाक स्वरूप आ 'टोन' जातिक आधारमे नहि, भौगोलिक क्षेत्रक आधारमे बदलैत अछि।

कतओ-कतओ तऽ, आ आब तऽ कहल जा सकैए जे बहुतो ठाँ, ईहो देखल गेलैए जे किछु तथाकथित उच्च वर्गद्वारा अपनहिटा भाषिकाके ँ श्रेष्ठ/मानक/शुद्ध आ दोसर वर्गक भाषिकाकेँ अशुद्धध्ठेठ कहिकऽ अवहेलित कएलाक कारणेँ सेहो लोक अपमानवश आ विद्रोहवश अपन भाषाक नामे बदलि रहल अछि। एखनुक मैथिली आन्दोलन वस्तुतः एहि भ्रमक निवारणमे आएल समस्या आ तकर अबिलम्ब समाधान दिश केन्द्रित हेबाक चाही छल, जे भऽ नहि सकल अछि अपेक्षित रूपेँ।

एहि समस्या दिश आइसँ लगभग सात सए वर्ष पहिने महाकवि विद्यापति साकांक्ष छलाह। कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर एगारहम शताब्दीमे मैथिलीक शब्दकोश ''वर्णरत्नाकर'' रचना कए शब्दसभक सङ्कलन कएलनि अवश्य, मुदा सही अर्थमे मैथिलीके ँ जन-जनधरि पहुँचेबामे सबसँ पहिल योगदान कएनिहार भाषा-आन्दोलनी विद्यापतिए छलाह। तत्कालीन समयमे साहित्य रचनाक भाषा मूलतः संस्कृत छल। संस्कृतक विद्वान विद्यापति संस्कृतोमे रचना कएलनि।

अबहट्ठ भाषाक सेहो ग्रन्थ ओ लिखलनि। मुदा ई रचनासभ हुनक प्रसिद्धिक कारण नहि बनि सकल। विद्यापतिक कृतिसभक नाम लैत काल लोक एहि ग्रन्थसभक नाम लैत अछि, मुदा विद्यापति सात दशकसँ लोकक बीचमे चर्चित रहबाक कारण हिनक देसिल बयनामे कएल गेल मैथिली पदसभ अछि। ओ मैथिलीक ग्रामीण बोलीसभके ँ अपन गीतसभक भाषा बनौलनि, जे ओहि समयक पैघ आन्दोलन छल।

विद्वान कहेबाकलेल, शास्त्रार्थ करबाक लोक संस्कृतमे रचना करैत छलाह, सस्कृतमे सम्भाषण करैत छलाह, ठीक किछु एहिना जेना आइकाल्हि विद्वान कहेबाक लेल लोक अङरेजी आदि बाजैत अछि। मुदा संस्कृत रचनाक एहि परम्परासँ भिन्न विद्यापति लोकभाषामे रचना कएलनि, जकर परिणामस्वरूप हुनका जातिसँ बहिष्.त सेहो कएल गेल आ पण्डित समुदायमे ओ आलोचनाक पात्र बनल छलाह।

मुदा तकर ओ परबाह नहि कएलनि आ मैथिलीक विविध बोलीमे गीत रचकिऽ गबौलनि/प्रचारित कएलनि। एहिसँ परिणाम ई भेल जे मैथिली भाषा प्रति लोकके ँ गौरववोध भेल आ राज्य संरक्षण बिहीन अवस्थामे होइतो मैथिली जँ आइओ जीबैत अछि तऽ एहिमे महाकविक गीतसभक पैघ योगदान अछि। एहि हिसाबेँ महाकवि मैथिली आन्दोलनक पहिल योद्धा छलाह, से कहल जा सकैछ।

वर्तमान समयमे मैथिली आन्दोलनमे लागल लोकसभ के ँ एहि दिश ध्यान देनाइ आवश्यक अछि जे विद्यापतिक भाषा तथाकथित मानकेटा नहि जन.जनक बोली सेहो अछि। आमजनमे भाषा आ बोलीमे अन्तर, एकटा स्वतन्त्र भाषा कहेबाकलेल कोन-कोन भाषा वैज्ञानिक उपकरण आ अवयबसभ चाही आदिक जनतब देबाकलेल योजनाबद्ध तरीकासँ सबकेँ काज करबाक चाही। इएह आजुक आवश्यकतो अछि आ मैथिली आन्दोलनी लोकनिक लेल कर्तव्यो।





मैथिली साहित्य इतिहास : एक नजरि मे

✍ मंजू ठाकुर

मैथिली नाम सुनिते हमरा सब केँ अपन ओ मनमोहक, मीठ, आ रमणगर भाषा नजरि केँ आगाँ घुमै लगैत अछि। समस्त संसारमे जौँ सबसँ मीठ आ शालीन कोनो भाषा अछि तऽ ओ अछि मैथिली।

मैथिली भाषा कऽ उद्‌गम संस्कृत भाषा सँ भेल अछि। किंशायत एकर मधुरता कऽ इहो कारण हुवे। संस्कृतक तत्सम आ तद्‌भव रूपमे मैथिली भाषामे बहुत रास शब्द एखनो प्रयुक्त होयत अछि। एकर एकटा आउर विशेषता छै जे बहुत रास एहन शब्द मैथिलीमे भेटैत छैक जे अन्य कोनो भाषामे नहि भेटैत अछि।

ओना किछु विद्वान लोकनिक इहो कहब छनि। जे मैथिली प्राकृत मागधी सँ उत्पन्न भेल अछि। ओना जौं ध्यान दी तऽ एकटा बात स्पष्ट रूपेँ परिलक्षित होयत अछि। जे बंगला, उड़िया आ असमिया एहि तीनू भाषाक संग मैथिलीक बहुत नीक बाउण्डिंग अछि। आ इ चारू भाषाक बहुत रास शब्द मिलैत-जुलैत अछि। संगहि संग एकर लिपिमे सेहो बहुत समानता अछि। ताहि सऽ भऽ सकै अछि। जे विद्वान लोकनि मैथिलियो केँ प्राकृत मागधी सऽ उत्पन्न मानै छथि।

भाषाक विकास जहिना-जहिना होय छैक। तहिना-तहिना शब्द सेहो परिष्कृत होयत अछि। किछु पुरान शब्द हेरा जाइत अछि। आ नव शब्द ओहिमे जुड़ि जाइत अछि। केवल जुड़िये टा नश्चि जाइत अछि। अपितु ओ ओहि भाषामे तेहन कऽ घुलि-मिलि जाइत अछि। जेना ओ ओकरे शब्द होय।

मैथिली भाषाक इतिहासक जौं गप्प करी। तऽ इ त्रेता युगमे महाराज जनक केँ राजभाषा छलनि। अर्थात् मैथिली भाषा संसारकेँ प्राचीनतम भाषामे सँ एक अछि। तकर प्रमाण रामायणमे सेहो भेटैत अछि। मुदा एखन जे मैथिली हमस ब बजैत वा सुनैत छी ओ मैथिलीक प्राचीनतम रूप नञि अछि। ओ एहन मैथिली अछि। जाहिमे कतेको अन्यान्य भाषाक समागम भेल अछि। इ कहब कनिको अतिश्योक्ति नञि हेतै। जे मैथिली आब आधुनिक भऽ गेल छथि। अपन पुरान स्वरूप, पुरान वेशभूषा, पुरान रहन-सहनमे किंचित बदलाव कऽ माडर्न भऽ गेली। खैर परिवर्तन तऽ अवश्यंभावी होइत अछि।

मैथिली बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश केँ किछु क्षेत्र आ बंगाल के सीमावर्ती क्षेत्र में बाजल जायत अछि। संगहि नेपाल के लगभग 9 से 10 जिलामे सेहो बाजल जाइत अछि। जाहिमे धनुषा, मोरंग, सुनसरी, सप्तरी आदि प्रमुख अछि।

कहल गेल अछि जे जाहि भाषाक अपन लिपि होई छै। ओ भाषा स्वयंमे समृद्ध आ परिपूर्ण होइ छै। प्राचीन कालमे एकरा मिथिलाक्षर अथवा कैथीमे लिखल जाइत छल। एखनहुँ विवाहक सिद्धान्तमे एकर प्रयोग होइत अछि। मुदा आब हम सब देवनागरीमे एकरा लिखैत छी। देखल जाइत अछि जे मिथिलाक्षर आ बंगलाक लिपि समान अछि। बस उड़िया आ असमियामे किछु परिवर्तन भेटैत अछि।

खैर भाषाक विकास मानव अपन आवश्यकतानुसार कटिते अछि। ताहि सँ जखन मैथिली देवनागरीमे लिखाय लागल तऽ इ आउर सर्वसुलभ आ सर्वग्राह्य भऽ गेल।

भारत के लगभग 5 सँ 6 प्रतिशत आबादी मैथिली भाषी छथि। तथापि मैथिली केँ जे अधिकार, जे सम्मान भेटवाक चाही छल से नै भेटल। वर्ष 2003मे मैथिली भाषाकेँ संविधानक आठम अनुसूचीमे शामिल कयल गेल। नेपालमे मैथिली क्षेत्रीय भाषाक रूपमे सम्मानित अछि। झारखण्डमे सेहो द्वितीय राजभाषाक रूपमे जानल जाइत अछि। मुदा देश कऽ लगभग 8 सँ 10 करोड़ आबादीक दैनिक भाषाक दुर्भाग्य अछि। जे UPSC सनक सम्मानित परीक्षामे एकर मान्यता समाप्त कऽ देल गेल अछि। जे सरकारक दिस सँ मैथिलीक संग भेदभावपूर्ण व्यवहार अछि।

मैथिली साहित्यक विकासमे कविवर विद्यापतिक सर्वोच्च स्थान प्राप्त छनि। हुनकर कार्यकाल 14 सँ 15 शताब्दी मानल गेल अछि। मैथिल कोकिल विद्यापति मैथिली साहित्यकेँ कोइली कऽ बोल सन आकाशमे ठेका देलखिन। हुनकर गायल-गेल गीत मिथिला केँ घर-घरमे गायल जाइत अछि। आ जा धरि ई धरती रहत ता धरि गायल जाइत।

विद्यापति केँ बाद बहुत रास साहित्यकार भेलनि। जे मैथिली साहित्य केँ आगाँ बढ़ेवामे महती भूमिका निभेलनि। जाहिमे चंदा झा, मनबोध बाबू, सीताराम झा, गोविन्द दास आदि प्रमुख छथि।

मुदा एहि कड़ीमे हरिमोहन झा कनाम नञि कहनाई उचित नहि रहत। कहल जाइ छै जे जहिना देवकी नंदन खत्रीक चन्द्रकान्ता पढ़वाक लेल लोक हिंदी सिखलक। तहिना हरिमोहन झाक रचना पढ़बाक लेल लोक मैथिली सिखलनि एहि कड़ीमे एकटा आर नाम जोड़व आवश्यक अछि ''सिनेहलता''। जिनकर

राम जानकी विवाह संकीर्तन गाम-गाम, घर-घर प्रचलित भेल। आ मैथिली साहित्यकेँ घरे-घर, कोने-कोन, आ दोगे-दोग प्रचलित आ विस्तारित कयलक।

मैथिली साहित्यकेँ मुख्य रूप सँ तीन कालमे विभाजित कयल जाइत अछि। आदिकाल (1000-1600), मध्यकाल (1600-1860) आ आधुनिक काल (1860-..........)।

तीनू काल अपन अलग-अलग विशेषता राखैत अछि। आदिकालमे गीतिकाव्य, मध्यकालमे नाटक आ आधुनिक कालमे गद्यक प्रधानता देल गेल अछि।

मैथिली कऽ सबसँ प्राचीन साहित्य गीत अथवा काव्य रूपमे छल। जे मिथिलामे मैथिली संगीतक परम्परा स्थापित केलक। ओ काल मैथिली साहित्यक स्वर्ण युग छल। जाहि समयमे कर्णाट वंशक अभ्युदय भेल। आ राजा हरसिंह देवक समकालीन ज्योतिरीश्वरक ठाकुर ''वर्णन रत्नाकर'' नामक एकटा महान पुस्तक लिखलनि। जे एखनहुँ विभिन्न विषय पर कवि लोकनिक मार्गदर्शक बनैत अछि।

तखन कविवर विद्यापतिक युग आयल। (1350-1450) जाहि समयमे बंगालमे कवि जयदेवक एकछत्र राज्य छलनि। ओ कृष्ण भक्ति संगीतक रचना आ गायन करैत छलाह। ताहि समयमे विद्यापति सेहो कृष्ण-राधाक प्रेम आ भक्तिकेँ गायन करै लगला। जाहि सँ हुनका ''अभिनव-जयदेव''क उपनाम देल गेलनि।

एहि कालमे मैथिली साहित्य तीन रूपेँ विकसित भेल। हुनकर किछु रचना संस्कृत, फेर किछु रचना संस्कृत प्राकृतक सम्मिश्रण सँ अवहट्टमे भेल। फेर शनैः-शनैः जखन संस्कृत आ अवहट्ट केँ प्रचलन कम भऽ गेल तखन मैथिलीमे होमय लागल।

ओहि समयमे गीत गावि कऽ आ नाटक सेहो काव्य रूपमे गायन कयल जाय छल। ताहि समयमे पौराणिक घटना अथवा आख्यानकेँ गीत रूपमे मंचन कयल जाय छल। एखनहुँ कखनो-कखनो राजा सलहेश वा आल्हा रूदल आदि एहि रूपेँ देखबा आ सुनबा लेल भेट जाइत अछि।

मध्यकालमे एकर दोसर रूप विकसित भेल। तकरा कीर्तनिया नाटक कहल गेल छल। एहि समयमे कृष्ण वा शिव पर आधारित नाटक अपन विशेष संगीत द्वारा प्रस्तुत कयल जाइत छल। जे विशुद्ध मैथिली भाषामे होइत छल। बादमे एहिमे सूफी संत अपन सम्प्रदायक प्रचार करवाक लेल सेहो आबि गेला। आ तखन 5 एकटा परम्परागत गायन-नृत्यक नाट्यशैली बनि गेल।

आधुनिक कालमे जखन लोक पश्चिमी शिक्षा आ पश्चिमी मनुष्यक सम्पर्कमे एलाह। तखन प्राचीन साहित्य केँ अन्वेषण आ अध्ययनक केँ साहित्य केँ परिष्कृत रूप अर्थात् आधुनिक साहित्यक विकास भेल।

जाहिमे चन्दा झाक मैथिली रामायण गौरवान्वित करऽवला ग्रन्थ अछि। एहि कालमे किछु मैथिली पत्र-पत्रिका, समाचार-पत्र आदि नियमित रूपेँ छपाय लागल छल। फेर रेडियो पर मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण, टेलीविजन आदिक द्वारा मैथिली भाषाक विकास होइत रहल।

एखनहुँ मैथिलीमे कहानी, कविता, निबन्ध, यात्रा वृतान्त, संस्मरण आदि तऽ लिखले जाइत अछि। संगहि किछु स्वयंसेवी संस्था सेहो मैथिलीक विकास आ प्रसारक लेल सराहनीय कार्य कऽ रहल अछि। जाहि सँ मैथिलीक विकास नीक सँ भऽ रहल अछि। आ आगाँ होइत रहत। आ हमरा सबकेँ चमकैत मिथिला आ बिहुँसैत मैथिलीक दर्शन होयत।

जय मिथिला! जय मैथिली!!





हम आ हमर भाषा

ꩲ शम्भुनाथ मिश्र 'आसी'

आइ हम मिथिलावासी अपन भाषा मैथिलीक प्रति चिंतनशील छी। मिथिला आ मैथिलीक विकास लेल प्रयत्नशील छी। मैथिलीक दशा आ दिशा पर चर्च करैत छी आ मैथिलीक प्रसार हेतु प्रयत्नशील छी। मुदा एखन धरि प्राप्ति नगण्य। जतहि सँ चलैत छी भ्रमण करैत ओतहि आबि ठाढ भऽजाइत छी--किएक?

जखन एकर कारण ताकैत छी तँ भेटैत अछि अपन अरुचि आ उदासीनता। भारतवर्षक सभ भाषा अपना अस्तित्व केँ रक्षा करैत प्रगति पथ पर सतत अग्रसर अछि आ हम ओतहि ठाढ़ छी जतय सँ चलल रही वा एना कही जे किछु पाछुए घुसकलहुँ। आइ सँ पचास वर्ष पहिने जे मैथिलीक स्थिति छल ताहि मे आइ ह्रास देखल जाइत अछि। उच्चविद्यालय आ महाविद्यालय मे मैथिलीक शिक्षक आ पाठ्यक्रम छलै आ आइ मैथिली कतहु ताकलो सँ नहि भेटैछ, खास क' प्रारम्भिक शिक्षा मे। आवश्यकता छैक जड़ि मे जल देबाक छीप अनेरो हरियर आ पल्लवित रहतै। छीप पर जल देला सँ गाछ किछुए दिन उपरान्त रुग्ण भ' सूखि जेतै। कतोक दिन सँ संघर्ष करैत मैथिली भाषा केँ भारतीय संविधानक अष्टम सूची मे स्थान ते भेटल मुदा राज्य सरकारक उदासीनता क्षेत्रवादिता आ हमर प्रतिनिधि केर दुर्बलता सँ स्कूली प्रारम्भिक शिक्षाक पाठ्यक्रम सँ नहि जुड़ि सकल। आन आन भाषा मे प्राथमिक शिक्षा ते छै परन्तु मैथिली ओ दिन ताकि रहल अछि कहिया प्राथमिक विद्यालयक पाठ्यक्रम मे जोड़ल जायत- सायत एखन कोनो आशा नँ।

भारतक सभ भाषा केर अपन लिपि छैक आ सभ भाषा आ लिपि केर रक्षा आ विकास लेल प्राणपन सँ लागल रहैत अछि। अपन मातृभाषाक स्थान सर्वोपरि बुझैत अछि। आइ देशक कोनो प्रान्तक लोक अपना मे अपन भाषा केँ छोड़ि दोसराक प्रयोग नहि करैत अछि जा धरि आवश्यक नहि बुझना जाय। परन्तु हम मैथिल अपना लिपि केँ त कहिया ने तिलांजलि देलहुँ आ आब अपन भाषा केँ सेहो छोड़ि रहल छी। प्रवासी मैथिल मातृभाषाक प्रयोग घरो भरि नहि करैत छथि बाहर बाजब ते दूर। अंगरेजी आ हिन्दी मे बाजबा के श्रेष्ठता आ मैथिली बाजबा मे हेठी बुझैत छथि। घरो मे धियापुताक संग अपना भाषा मे गपशप छोड़ि देल अछि ते शिक्षाक कोन कथा। मैथिली मात्र ग्रामीण भाषा बनि के रहि गेल अछि।।

एहि स्पर्धाक युग मे सभ अपना संतति केँ अंगरेजी शिक्षा दिश झोंकि देलनि, भले ओहि सँ कोनो लाभ हुअ वा नहि। मुदा नोकसान तँ अपना भाषा केर अवश्य भेल अछि। हमर मांग सतत मिथिला राज्यक रहैत अछि मुदा मिथिला क्षेत्रक उत्थान आ विकासक प्रति आँखि मूनल अछि। समग्र मिथिलाक विकासक संगहि मिथिला राज्यक मांग हो। सत्ता तँ संघर्ष सँ प्राप्त भऽजेतै परन्तु विकासोन्मुखी नहि रहला सँ एतय सँ पलायन नहि रुकि सकैछ आ जखन पलायन हेतै ते लोक प्रवासी हेता आ प्रवासी मैथिली सँ विमुख होइत जेताह।

आइ मातृभाषाक स्थान पर मैथिली नञ कहि हिन्दी कहैत कोनो संकोच नञ हैइत छै। मिथिलावासी अपन मातृभाषा मैथिली नहि मानैत अछि किछु वर्ग विशेषक भाषा कहै छथि। तेँ मैथिली केँ एहि वर्ग विशेषक संरक्षण सँ बाहर क' स्वतंत्र छोड़ि देला सँ सभ अपना केँ अधिकारी बूझत। कोनो एक वंश वा जाति कोनो भाषाक सम्पोषक नहि भ' सकैछ एहिके लेल समग्रता आवश्यक। किछु अवसरवादी, पागधारी चाटुकारिता केँ मैथिलीक सेवा बूझै छथि आ लाभान्वित सेहो होइ छथि । एहि परम्पराक माटिक भीत के जड़ि सँ उखाड़ि नूतन आ कंकरीट घरक नेओ पड़'क चाही जे मात्र माटिए नञ अपितु पजेबा, गिट्टी, सिमेंट, बाउल, लोहा सभक सहयोग सँठाढ़ होय।

आत्मश्लाघा मैथिलीक प्रगति मे बाधक। अपन बड़ाइ अपने मुँह सँ लोक केँ अनसोहाँत लागै छै, दोसराक देल बड़प्पन शोभनीय छैक। एहि आत्मश्लाघा सँ हम मैथिल एक मंच नहि भ' सकैत छी आ जखन अलग अलग मंच छै तेँ ''अपन डफली अपन राग''। एहि सँ किछु व्यक्ति केँ लाभ भ' सकै छै परञ्च मैथिली विलखैत रहती।

अन्त मे मैथिलीक लेल मैथिल सभ सँ एतबे--

मिथिला मैथिल मैथिलीक चर्चा सभतरि अछि
विद्यापति केर जयकारा अर्चा भ' रहलै।
पागक संग दोपाटा माला गर-गर शोभय
मैथिलीक उत्थान हेतु खरचा भ' रहलै।।
मंच ठाढ़ भाषण मे निष्णात जे वक्ता
गला फाड़ि के मैथिलीक गुणगान करै छै।
कोना बढ़त भाषा आशा सभकेँ द' रहलै
घर फिरतहिँ हिन्दी अंगरेजी दम्भ भरै छै।।
विद्यापति केँ बेचि कतोक झोड़ा भरि रहलै
कोने बैसल मैथिलीक हिय फाटि रहल छै।
चाटुकार चारण चाटय जे तरबा सदिखन
मिथ्या भ्रम जन राखि मलाइ काटि रहल छै।।
बूक फाड़िके मैथिली कहि रहलै जन सँ
सत्पथ पर चलि सतत बढ़ाबी अप्पन मान।
कनडेरिओ यदि ताकब कौखन हमरा दिश
चढब सुयश संग तुंग सभुक होयत कल्याण।।

अस्तु अपना भाषा केँ सर्वोपरि बूझैत सतत मातृभाषा मे बाजि अपन मान बढाबी। किएक ते---

की बंगला की हिन्दी उर्दू अवधी ब्रज पंजाबी
भोजपुरी तामिल कन्नर की कोंकण माथ खपाबी
उड़िया तेलगू होय डोंगरी अंगरेजी मलयालम
सभ सँ सुन्नर हमर मैथिली रसगर मधुर मुलायम। ❑❑❑

विद्यापतिक नाम पर

✍ कमल मोहन चुन्नु

मैथिली साहित्य मे महाकवि विद्यापतिक स्थान अप्रतिम अछि!हिनक साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक अवदान संबंधित सर्वविदित अतुलनीय अछि!तैं ई मिथिला आ मैथिलीक शिखर-पुरुष मे सँ सम्मानित-प्रतिष्ठापित छथि!ई हमरा लोकनिक चिरनायक छथि!हिनक नायकत्व सँ सगर मिथिला आ सम्पूर्ण मैथिली लाभान्वित होइत आबि रसल अछि!आइयो मिथिलाक समाज हिनक ऋणी अछि!

आधुनिक काल मे विद्यापति कें आ हिनक नायकत्व कें केन्द्र मे राखि आधुनिक मैथिलीक भाषिक-सांस्कृतिक प्रभृति आन्दोलनक श्रीगणेश सेहो कयल गेल! एहि योजनाक प्रारंभ आ विस्तार रूप मे विद्यापति-गोष्ठी, विद्यापति स्मृति पर्व, मिथिला-विभूति पर्व प्रभृति अनेकानेक नाम सँ आयोजन कें साकार कयल जाय लागल! उल्लेख करब आवश्यक अछि जे एकर प्रारंभ आ विस्तार करबाक क्रम मे किरणजी, यात्रीजी, अमरजी लोकनिक सर्वथा अविस्मरणीय योगदान कयने छथि! ई लोकनि महाकवि विद्यापतिक साहित्यिक-सांस्कृतिक आभा सँ एहि आन्दोलन मे ऊर्जा भरित रहलाह! एवंक्रमे एहि भाषा साहित्यक विविधस्तरीय स्वर मुखर भेल! एहि आन्दोलनक प्रारंभिक काल(50-60दशक) सँ लेके 90क दशक धरि ई आयोजन अपन समग्रता मे साहित्यिक-सांस्.तिक रूप धरने छल! एहि कालखंड मे मैथिलीक आधुनिक साहित्य कें श्रीवृद्धि प्राप्त भेलैक! मैथिलीक भाषिक साहित्यिक अस्मिता सुदृढ़ भेलैक, लेखकक नम्बर पाँति तैयार भेलैक, मैथिलीक साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यकर्ता वर्ग तैयार भेलैक आ सगर मिथिला-समाज कें एक सूत्र मे आकि एक छाँह तर अनबाक सार्थक प्रयास होबय लागल! ई प्रयास बहुलांशया सार्थक प्रयास सेहो देलक! एकर प्रभाव आ उद्देश्यक रूप मे एकर अवशेष कें आजुक मैथिली साहित्य मे सेहो अँखियासल जा सकैत अछि!

महाकवि विद्यापतिक नाम कें आ हुनक साहित्य कें अक्षुण्ण आकि दीर्घजीवी बनयबाक लेल हुनका नाम सँ मारिते रास संस्था सभ सेहो बनल प्रारंभिक काल मे बहुत रास उल्लेखनीय काजहु सभ भेल! मैथिलीक साहित्यिक-सामाजिक-सांस्कृतिक समृद्धि हेतु संस्थागत प्रयास सेहो होबय लागल! एहि संस्था सभक गठन सँ मैथिलीक भाषा साहित्य आ समाज कएक स्तर सँ लाभान्वित भेल! जे काज सरकारी पद्धति सँ सम्भव नहि छल से एहि संस्था सभक समेकित प्रयास सँ सम्भव भेल! एहि संस्था सभ लग एकटा वृहत्तर मैथिली-साहित्यक समृद्धिक उद्देश्य छल,वृहत्तर आ समावेश संस्कृतिक संरक्षण-संवर्द्धन, विकास आदि छल!अपन-अपन सीमा सुविधा आ शक्तिक अनुसार ई संस्था सभ काजहु कयलक! मैथिलीक छिटपुट आकि एकाकी प्रयास ओ आन्दोलन कें संस्थाक वरदहस्त प्राप्त भेलैक! संस्था सभ अपनहु कार्य-योजना मे एहि कार्य सभक प्राथमिकता देलक! एवंक्रमे एकहि संग मैथिलीक साहित्यिक आ सांस्कृतिक दुनू स्तरक गतिविधि प्रारंभ भेल! पुरस्कार, सम्मान, कविगोष्ठी, गीत-नाद, संगोष्ठी, नाटक आदि सभ सम्भव होबय लागल!एवंक्रमे प्रकारन्तर सँ मैथिलीक साहित्यिक सम्पदा समृद्ध होबय लागल!

तहिया एहि संस्थाक सूत्र साहित्यिक! सांस्कृतिक रूझानबला लोकक हाथ मे छल! तैं ओ लोकनि साहित्य-संस्कृतिक मर्म बुझैत छलाह! मैथिलीक प्रतिष्ठाक सोझाँ अपन महत्व नगण्य बुझैत रहलाह!मनसा-वाचा-कर्मणा ई लोकनि मैथिलीक लेल लागल रहलाह! मुदा 90क दशकक बाद एकाएक एकर कार्य-संस्कृति मे परिवर्तन आयल! संस्था सभक सूत्र राजनीतिक रूझानक लोक सभ लग सभ आबि गेल! जँ ओ लोकनि राजनीतिक नहियो छलाह ते अ-साहित्यिक तँ अवश्ये छलाह! हुनका लोकनि लेल अपन आदर-मोजर प्रधान छल आ साहित्य-संस्कृति गौण! आयोजन सभक गुणवत्ता तदनुरूपें बदलय लागल! मुँहलगुआ साहित्यिक प्राणी लोकनिक चला-चलती बढि गेल! दोयम-तेयम स्तरक लेखक लोकनि अपना कें एहि संस्थानिक पद-प्रतिष्ठाक बल पर अपना कें उच्चस्तरीय घोषित करय लगलाह! साहित्यहु मे अर्थक खेल-बेल देखार रूप सँ शुरू भेगेल! अयोग्य-अपटु लोकक दखल-कब्जा बढय लागल! साहित्यहु मे जाति-पातिक खेल आ तुस्टीकरण नीति चलय लागल! साहित्यिक गुणवत्ता पर संस्थागत प्रभुताक चढाइ होबय लागल! जाहि लेखक लोकनि सँ मैथिली-साहित्य अपन गुणात्मक स्थिति कें प्राप्त केरहल छल,ताहि लेखक-साहित्यकार कें अबडेरल जाय लागल! जे एहि गुणवत्ता कें परखैत छलाह, परखि केकहैत छलाह तिनकहु लोकनि कें कतियाबय जांय लागल! साहित्य-निनिरपेक्ष लोकनि लेल इएह एकटा अचूक उपाय छल जाहि माध्यम सँ ई लोकनि संस्थाक सूत्र अपना हाथ मे लेसकैत छलाह, अपन साहित्य-निरपेक्ष एजेण्डा चला सकैत छलाह आ अपन अनुयायी किरतनियाँ वर्ग कें उपकृत केसकैत छलाह!

आइ स्थिति ई अछि जे मैथिली मे कतहु कोनो संस्था

मे साहित्यिक-सांस्.तिक प्रधानता नहिं बाँचल अछि! अर्थक संग्रह आ अर्थक प्रधानता एतय एकटा कसगर अस्त्र सिद्ध भेल जकरा माध्यम सँ एहि साहित्यिक प्राणी कें दोयम स्तर मे ठेलल जा सकय! तैं संस्था सभ अपन आर्थिक समृद्धि दिस बढल! तकरहि समानान्तर एकर राजनीतिक रूझान सेहो बढल!जे संस्था अपन प्रारंभिक कालक घोषणा मे नितांत साहित्यिक-सांस्.तिक लोकसभ लेल छल ततय अ-साहित्यिक लोक सभ कें अनधुन सदस्य बना-बना केअपन-अपन पक्ष मजगूत करय जाय लागल !एकर संचालन मे एकटा चलाक प्रजातांत्रिक व्यवस्था सेहो लादल गेल जतय साहित्यकार अथवा संस्कृति कर्मीक सार्थक प्रयोजन नहिं, मात्र मूडीक प्रयोजन होबय लागल! एहि मुड़ी सभहक जोगाड़ ओहि राजनीतिक प्राणी लोकनि सँ नीक जकाँ के केसकैत छल? परिणाम भेल जे समस्त मैथिली-मिथिलाक संस्था सभक स्टीयरिंग हवीलश्पर असाहित्यिक असांस्कृतिक दखल बढैत गेल !एकरा प्रकारांतर सँ ई कहल जा सकैत अछि जे आजुक मिथिला-मैथिली चिचियाएबला प्रायः सभटा संस्था आइ एकटा चतुर-वर्ग द्वारा अपहृत भे गेल अछि! जेना-जेना संस्थाक राजनीतिक दृढ़ता आ प्रतिबद्धता बढल, राजनीतिक दृष्टिकोण बढल, तेना-तेना मंच पर सँ गुणी साहित्यिक-सांस्कृतिक प्राणी सभ अस्पृश्य बनल चलि गेलाह!आजुक स्थिति ई जे साहित्यिक सांस्कृतिक लोक सभ सेहो एहि संस्था सभ सँ अपन दूरिए बना केराखब अपन बाँचल प्रतिष्ठाक अनुकूल बुझैत छथि! जाहि-जाहि शहर मे मैथिलीक संस्था सभ सक्रिय अछि ओहि शहरक अधिकांश साहित्यक-जन एकटा संस्थागत विभेदक ग्रास बनल सन छथि! एहि संस्था सभक आयोजनक अध्ययन कयला सँ ई बात आओरो स्पष्ट भेजाइत अछि जे कार्यक्रमक आयोजक लोकनि अपन गंभीर रचनाकार कें सायास अवडेरने रहैत छथि! ओहुना जे दोसर दृष्टि सँ देखल जाय अर्थात एकटा षड्यंत्रकारी पद्धति सँ देखल जाय तँ दोयम-तेयम स्तरक रचनाकारक अधिकता आकि मुँहपुरखै सँ गुणाग्राही आ उच्चस्तरीय रचनाकार अपन मान-सम्मानक डर सँ स्वयम् कतिया जाइत छथि! परिणामस्वरूप दोयम-तेयम स्तरीय रचनाकार निर्बाध गति सँ अपन दियादी सौजन्नी एजेण्डा चलबैत रहैत छथि!

आइ-काल्हि जहाँ-तहाँ जे मैथिली कवि-गोष्ठी होइत अछि तकरा जँ मैथिली कविता परम्पराक आधुनिक पर्याय बुझि लेल जाय तँ तकर अनर्थकारी परिणाम बहराइत अछि!तकर कारण ई अछि जे जे रचनाकार आधुनिक मैथिली कविताक गुणवत्ता कें समृद्धि आ विकास दे रहल अछि से भेल पर, सर्वथा अनुपस्थित अछि अथवा भेल दिस सँ अनामंत्रित अछि! मुदा जे मैथिली कविताक शील-हरण, गुण-हरण, रीति-हरण, आकि दिशा-हरण करैत आबि रहल अछि, सर्वथा अग्यात-अल्पज्ञात अछि से मंच पर मठोमाठ अछि! लोकरंजनी-मनोरंजनी कविता सँ कहिया कोन उपकार भेलैक साहित्यक? मुदा एहि समारोह सभ कवि-भेला (कवि-गोष्ठीअथवा कवि-सम्मेलन नहिं) मे इएह मानक चलि रहल अछि!

संस्था मे राजनीतिक तुष्टिकरण सेहो बेसम्हार बढल अछि! कोनहु साहित्यिक सम्मान -पुरस्कार निमंत्रण-आमंत्रण काल आयोजक दिस सँ सर्वप्रथम हुनक जाति, क्षेत्र, लिंग, मूल-गोत्रादि बेकछाओल जाइत अछि!हुनक साहित्य अछि! साहित्यिक गतिविधि तँ मात्र चेफरी सन बुझल जाइत अछि! एवंक्रमे जतेक संस्था अपरोजक आ दोखी अछि तन विद्यापति पर्वक आयोजन मे जे गीत-नादक कार्यक्रम होइत अछि ताहि मे विद्यापति कें ताकब एक प्रकारे समुद्र मंथने करब थिक!सप्पत खाय लेल एकाधटा गीत भे जायत होएत! ई आयोजन आजुक गबैया सभ लेल समर्पित रहैत अछि!भरि राति वैह हँसी-मजाक भरल संचालन, स्त्री सभक मान-सम्मान कें अवमूल्यित करैत गीत-नादक, अपसंस्कृति पसारैत सांस्कृतिक आयोजन होइत रहैत अछि! ई गबैया लोकनि कें एहि कृत्यक मात्र भौतिक महत्व छनि! हुनका लोकनि लेल मिथिला आ मैथिलीक प्रचार-प्रसार आकि आन्दोलनक कोनो महत्व नहिं! आइ धरि मोन नहिं अछि जे कोनहु गबैया गीतगाइन कोनोहु मिथिला-मैथिलीक आन्दोलन मे अपन सहभागिता देने होअए! भाषा-संस्कृतिक प्रति हिनका लोकनिक कोनहु प्रतिबद्धता नहिं! पाइ देबनि तेमिथिलाक समाज मे बड़ सुविधाजनक ढंगसँ भोजपुरी, मगही, उर्दू हिन्दी गीत सभ परचारी देताह, गाबि देताह! एहि माँदे ई लोकनि अपना कें अनावश्यक उदार कहैत छथि! जखनकि ई उदारता एकटा मुखावरण अछि पाइ कमयबाक!

ताहि से बेसी दोखी अछि एकरा द्वारा नियुक्त कयल गेल निर्णायक सभ! पछिला कतोक वर्ष सँ जतबा सम्मान पुरस्कार सभ बिलहल गेल अछि तकर जँ अलग-अलग सूचीक अध्ययन कयल जाय तँ स्थिति तेहेन मरखाह निर्णय प्रस्तुत करते जे चकविदोर लगा देत! हरे कृष्ण झा, महेन्द्र मलंगिया, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, मोहन भारद्वाज, अमरनाथ, नीता झा, ज्योत्नाचन्द्रम, देवशंकर नवीन,रमेश, सुभाषचंद्र यादव, रमानाथ झा रमण, सुरेन्द्र नाथ, राजनंदन लाल दास, रामलोचन ठाकुर, प्रदीप मैथिली पुत्र, अरविंद ठाकुर,नारायण जी, महाप्रकाश, धीरेन्द्र नाथ झा सन आनो बहुत रास रचनाकार किएक बारल रहलाह! सूची देखला सँ इहो स्पष्ट होइत अछि जे निर्णायक लोकनि लग साहित्यिक वस्तु के गुणबाक कोनहु सार्थक आ गुणग्राही दृष्टि बाँचल नहिं रहि गेल अछि! प्रायःसभ केर दोयम-तेयम स्तरक पोथी कें आगाँ केके ई लोकनि अपन निकृष्टताक परिचय तैं देबे कयल संगहि मैथिली साहित्य कें अधोगति दिस अग्रसर सेहो कयल! एहि कृत्य मे मैथिलीक बाहरक लोक नीक दृष्टियें

नहिं देखैत अछि!

अनावश्यक आ अनपेक्षित रूपें जागि जाइत छथि! जँच सर्वोपरि-सहभागिता आ कि मान्य-प्रतिष्ठा प्राप्त नहि भेलनि तेचट देब्राह्मण-सोल्हकनक राजनीति क्रय लगैत छनि! जखनकि स्थिति ई अछि जे ब्राह्मणेत्तर वर्ग सँ लेखक बहुत कम आबि रहल छथि!जे अयलाह तिनका अवसर कम नहि देल गेल मुदा ओ अपनहि स्थान आ स्थितिक प्रति भरि जिनगी साकांक्ष रहलाह, मारिते किछु नव लेखक नहि तैयार केसकलाह! एहि वर्गक लेखक अपन संतति के ते एहि कर्म मे नहिं आबय देलनि! सभ एहन नाम अछि जे भरि जिनगी अपनहि अवसर-लाभ लैत रहलाह!ने त अपन लेखन स्तर मे उत्तरोत्तर सुधार कयल आ ने लेखनक श्रीवृद्धि कयल! हँ, ई अवश्य होइत रहल जे जखन कोनो अपयश आ कि कुचेष्टाक बेर अबैत छल तँ ई लोकनि निन्द तथ्यक समर्थन लेलहि बिनु एहि आलेचक वर्ग कें गारि से तोपैत रहलाह!एहन बात नहिं छैक जे ब्रामण वर्गक आलोचक, संस्थापुरूष लोकनि सभटा नीके करैत रहलाह अछि! बड़-बड़ अनर्थ कयलाह अछि ओहो लोकनि मुदा ताहि अनर्थकारी वर्ग सँ लड़बाक लेल जे लेखकीय अस्त्र-शस्त्र चाही तकर ओरिआओन सँ ब्राह्मणेत्तर लेखक लोकनि एकदम निरपेक्ष लगैत छथि! साहित्यिक मोजर लेल राजनीतिक कार्य प्रणाली नहिं सकत! साहित्यिक समस्या कें साहित्यिके औजार सँ समाप्त कयल जा सकैत अछि! जे एहि रहस्य के बुझि गेलाह से सभठाम आ सभ वर्गक लेल जगजियार नाम छथि! जेना-जगदीश प्रसाद मण्डल, महेन्द्र नारायण राम, तारानंद वियोगी!

विद्यापतिक नाम पर सरकारी पुरस्कार सेहो अछि मुदा से देबा काल ने तेविद्यापति देखाइत अछि आ ने विद्यापति पर काज कयनिहार लोक! ओ बस एकटा सधि मात्र छैक जे कोनो अपन लोक कें देके उप.त केदेबाक छैक! सरकारी संस्था आ सरकारी आयोजन तेअरबधि केएहि साहित्यिक-सांस्कृतिक व्यवस्था कें नष्ट-भ्रष्ट केरहल अछि! सरकारी संस्था मे पदाधिकारी-संस्कृति चलैत अछि! ओहिठाम पदाधिकारी प्रमुख आ सर्वविधा सम्पन्न होइत छथि!एहिना मे साहित्यकार-लेखकक कतेक मोजर होइत होयत से सहज अनुमान्य अछि! तैं ने जकर आइ धरि एकहुटा कविताक पोथी नहिं आबि सकल आ सदति कवि-गोष्ठी मे उच्च स्थानापन्न होइत रहलाह! जखनकि साहित्यिक आयोजन मे ओकर साहित्यिक-कार्य के ताकल-हेरल जयबाक चाही ओकर प्रशासनिक पदक नहिं! मुदा से स्थिति आब नहिं अछि! जे बड़का हाकिम भेगेलाह अथवा कोनो संस्था मे कोनहु पदक जोगाड़ केलेलनि अथवा जेना-तेना कोनहु मौद्रिक सहायता विज्ञापन आनि देकेकोनहु मान-प्रतिष्ठा-पत्र कीनी लेलाह से साहित्यकार बुझल जाय लगैत छथि! तैं ने सगर लोक बजैत अछि जे आब पुरस्कार कीनी-बेसाहि के लेल जा सकैत अछि! नहिं ते एना कोना होइत अछि जे एक दशक सँ कतहु-कोनोहु साहित्यिक गतिविधि नहिं, मुदा एक्कहि राति मे एहन की भे गेलैक जे एकाएक एकाधिक मान्य संस्था अपन महत्वपूर्ण सम्मान हुनका कर-कमल मे प्रदान केदेलक? इहो कम अजगुत बात नहिं जे सगर समाज एकटा प्रायोजित चुप्पी लधने रहल अछि!

सगर देशक मैथिल समाज मे विद्यापतिक नाम पर आयोजन कयल जाइत अछि!नेपाल मे विद्यापतिक नाम पर आयोजन! नेपालक मनरूस्थिति आब विद्यापति कें भारतीय बुझैत छनि! मुदा भारत मे कएक शहर मे ई आयोजन होइत अछि! ई ओतहुक भाषा-भाषीक एकताक एकटा समर्थ माध्यम अछि! एकर मारिते रास लाभ सेहो भेल अछि एहि भाषा-भाषी समाज कें! सगर देशक एहि साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनक आयोजक लोकनि पर ध्यान दी तेलगभग सभ ठाम आयोजक ब्राह्मण छथि! अभिप्राय ई तँ निकालले जा सकैत अछि जे मिथिलाक ई वर्ग अपन भाषा साहित्य आ संस्कृतिक प्रति सजग अछि, बहुत सतर्क अछि आ बहुत संवेदनशील अछि!एहि माँदे अपन जाति आ वर्गक भूमिका नगण्य छनि! नेपालहु मे वएह स्थिति अछि! अपन जाति वर्गक लोक मैथिलीक कार्यक्रम के आयोजनक स्तर पर अपना कें नहिं आनय चाहैत छथि! मुदा सहभागिता काल विद्यापतिक नाम पर जे आइ आयोजन होइत अछि तकरा उद्देश्य साहित्यिक सँ बेसी राजनीतिक लगैत अछि! एकर अतिथि लोकनि लेल जे ताकहेर होइत अछि ताहि मे नेता लोकनिक नाम प्रथम होइत अछि! अजगुत तेलगबाके चाही ने जे साहित्यिक सांस्कृतिक आयोजन मे राजनीतिक प्राणीक मठाधीशी किएक? की राजनीतिक आयोजन मे कोनो साहित्यिक कें अतिथि रूप मे बजाओल जाइत छनि? एकदम नहिं!तखन साहित्यिक सांस्कृतिक आयोजनक आयोजक लोकनि एहि बौद्धिक कार्यक्रम मे हुनका सभक कोन प्रयोजन?आइ कतेको वर्ष सँ अपना कें सर्वश्रेष्ठ घोषित करेबला संस्था के पछिला कएक वर्ष सँ ओकर विद्यापति पर्वक कार्यक्रम मे साहित्यकार कें अतिथि बन्हैत नहिं देखलहुँ! की ई संस्थागत कार्यकलाप एकर बौद्धिक दारिद्रता देखबैत अछि? एकरा निमित्त जे सांस्कृतिक आयोजन राखल जाइत अछि तकरा एहि मिथिलाक संस्कृति मे कोन आ कतेक अवदान सिद्ध भेल जे आइ धरि नहिं अकानि सकलहुं! एहि कार्यक्रमक गबैया लोकनि मे बसियाएल, अश्लील आ अगंभीर गीत परसबाक प्रतियोगिता चलि रहल अछि! मंच पर प्रस्तुत गीत कें मैथिलीक गीत-परम्परा सँ जोड़ि केदेखब तेसाहित्यक दुर्घटना मात्र हयत! मंचप, चंदा झा, ईशनाथ झा, साहेब रामदास, स्नेहलता, रवीन्द्र जी, सरसजी लोकनिक गीत सँ निट्ठाह अनुपस्थित रहैत छथि!संगहि हँसी-मजाक जे चलैत अछि से फराक! एहि सँ

मैथिली-संस्कृतिक जे अधोस्तर भेल तहिना एकर श्रोता-दर्शकक स्तर सेहो अधोगति भेगेल! ई दर्शक मात्र हँसी-मजाक टा बुझैत अछि! एहि वर्ग लेल साहित्य, संस्कृति, भाषा, आन्दोलन आदि विचार व्यर्थ छैक! एकर दुष्प्रभाव सहज रूप सँ एतहुक समाजक आ सामाजिक क्रियाकलाप पर पड़ि रहल छैक! ओहिना नहिं आजुक मिथिला समाज कोनहु प्रकारक समर्थ आन्दोलन नहिं ठाढ केपाबि रहल अछि!मिथिलाक एहि स्थितिक सर्वाधिक लाभ राजनीतिक प्राणी कें भेटि रहल छैक! एहि स्थितिक लाभ संस्था पुरूष लोकनि सेहो उठबैत अछि! एकरहि पक्ष मे ठाढ भे के मुँहलगुआ साहित्यकार, संस्कृति कर्मी लोकनि दान-अनुदान पाबि भाषा-साहित्य कें अधरूपतन लेल समर्पित छथि!

सगर मिथिला मे ताकल जाय जे विद्यापति आ एतहुक साहित्यिक-सांस्.तिक नायकक कतेक मूर्ति लागल अछि? मुदा राजनीतिक प्राणी लोकनिक मूर्ति सौंसे अम्रत! सेहो एतहुक राजनेता सँ बेसी एतय सँ बाहरक नेता सभक मूर्ति भेटत! मिथिलाक सभ शहर मे अम्बेडकर, इन्दिरा गांधी लोकनिक नाम सँ किछु ने किछु भेटिए जायत! मुदा मिथिला-भूमिक अपन नायक ताहि अनुपात मे नगण्य भेटत! एखनुक मिथिला निकट भविष्य मे एहि स्थिति सँ उपरो नहिं उठय जा रहल अछि!

विद्यापतिक नाम पर जतेक संस्था महापर्व करैत अछि से धन-सम्पन्न अछि! चेतना समिति तँ भौतिक रूप सँ सेहो प्रचुर सएह! मुदा चेतना समिति सहित देशक कोनहु संस्था ई उदारता नहिं देखा सकल जे विद्यापतिक रचनावली, चंदा झा रचनावली छापि सकय! विद्यापति संगीत पर अभि मिथिलाक चित्रकला पर कोनहु संस्थानक काज भे सकय, जखनकि विद्यापतिक नाम पर एहि संस्था सभ कें भौतिक आर्थिक सम्पदा बनल अछि! विद्यापतिक डीह पर (बिस्फी) अपन उद्धारक बाट जोहि रहल अछि! जाहि विद्यापतिक ख्याति-इजोत जगत भरि पसरलनि तकर डीह पर एहेन अन्हार? एखनुक दिल्ली आ पटनाक गद्दीक समृद्धि मे मिथिलाक योगदान ककरहु फरवरी कम नहिं!मुदा तकर लाभ की भेलैक मिथिला कें? कोन फैक्ट्री खुजली?कोन विश्वविद्यालय खुजली? भाषिक विभाजन राजनीति के दाबल गेल, एकर अध्यापन रोकथाम लेल रंग-विरंगक सरकारी षड्यंत्र कयल गेल, एकर अध्यापक संख्या कें घटा केविज्ञापन निकालल गेल, आदि-आदि! हद तेई छैक जे मिथिलाक स्वघोषित नेता लोकनि लेल ई स्थित सभ कोनो विशेष भोखक नहिं! जँ भरल रहितैक तँ एकर संग्यान अवश्य लितथि!

से कहलहुँ जे मैथिली आ मिथिलाक समस्या दिनानुदिन बढिते जा रहल अछि! एहि मे प्रभु वर्गक सदस्य लोकनि एकरा कम करबाक बदला बढाइये दैत छथि!ई वर्ग अपन स्वार्थ, सत्ताहिक पूर्तिक लेल कोनो वस्तु ककरहु अपन माध्यम बना लैत रहल छथि!तें कहियो भाषा, कहियो क्षेत्र, कहियो जाति, कहियो धर्म एकर खेलौड माध्यम बनैत रहल अछि! विद्यापतियो एहि षड्यंत्र सँ अपैत नहि रहि सकलाह! विद्यापतिक नाम-गामकदोहन बेस चलाकीक संग कयल जा रहल अछि! विद्यापतिक नाम पर होइत समारोह देखि केकेओ जँ विद्यापतिक व्यक्तित्व-कृतित्व कें बुझल चलय तँ डेखे-डेगे संकट होएत!

एहन स्थिति मे ई समस्त साहित्यिक सांस्कृतिक सामाजिक संस्थाक एकटा समेकित दायित्व बनैत अछि जे ई विकट स्थिति कें बदलय मे अपन भूमिका तय करय, नहिं तँ अपना सभ जाहि तरहें साहित्यिक सांस्कृतिक पतनक उदाहरण देखा रहल छी तेहन मे भविष्य मे ने अपना सभ लग गर्व करबा लेल किछुओ नहिं बाँचल रहत!

❑❑❑



स्थानीय मिथिलाक समाज

✍ प्रो0 श्रवण कुमार मंडल

शिक्षा ओ सामाजिक शिक्ष जीवनपर्यन्त चलऽवाली सतत् प्रक्रिया थिक। मनुक्ख शैशवावस्था सँ वृद्धावस्था धरि किछु-ने-किछु सीखैत रहैत अछि! शिक्षण जीवन सापेक्ष अछि। प्राचीन भारतमे शिक्षा के आत्मज्ञान आ आत्म प्रकाश केर साधन माननलि अछि। प्राचीन चीनमे शिक्षा द्वारा व्यक्ति के सामाजिक व्यवस्थाक आदर करबाक प्रशिक्षण देल जाइत छल। अस्तु शिक्षाक असरि समाजसँ जुड़ल रहैत अछि। मिथिला समाज शिक्षाक प्रति सदैव सँ संवेदनशील रहैल अछि। ज्ञान प्राप्ति लेल मिथिला विश्वमे अपन स्थान अदौकालसँ अनुकरणीय बनौने रहल अछि। विश्व भरिक लोक एहि ठाम शिक्षा प्राप्त करबाक लेल अबैत रहल अछि। आजादीक बाद शिक्षाक प्रसार ओ वैज्ञानिक जागरूकता के फलस्वरूप रूढ़िगत ग्रस्त भारतीय समाज खासकऽ मिथिलाक समाजक विचार एवं स्वरूपमे बहुत बेसी परिवर्तन आयल अछि। प्रारंभिक समयमे कतोक तरहक रूढ़िवादिता छल मुदा ई रूढ़िवादिता नहुँ-नहुँ समाप्त होइत गेल। साम्प्रदायिक ओ जातीय भखनाक डोल ढ़ील होइत गेल। आपस केर भिन्नता वर्तमान समयमे मिटैत देखाइ पड़ि रहल अछि।

स्वतंत्रा प्राप्तिक पश्चात भारत अपन संविधान केर निर्माण केलक ओ ओहिमे सभसँ बहुमूल्य तत्व धर्म निरपेक्षता, समानता, समाज आ न्यायक घोषणा केलक जाहिमे अश्यपृश्यता, जातीय साम्प्रदायिकता जेहन असामाजिक भावना सभ आब समाप्त होइत देखाई पड़ि रहल अछि। मुदा एखनो भारतीय समाज जाहिमे मिथिलाक समाज सेहो समाहित अछि, वर्ग केर आधार पर क्रम ओ समुदाय आ जातिक आधार पर बेसी बंअल अछि। व्यक्तिक रहन-सहनमे सेहो भिन्नता अछि। तथापि एहिठाम सांस्कृतिक दृष्टिकोण सँ एहिठामक ग्रामीण लोक एखनो धर्म, रीति आ प्रक्रियाक माध्यमकेँ अपनौनहि अछि तऽ नगरीय समाजक मुख्य साधन औद्योगिक व्यवसाय आ नौकरी छनि। अमीर गरीबी छनि। मुदा एकरा संग इहो सकारात्मक बात ई अछि जे जाहि देशमे शिक्षाक स्थान जाहि क्रम पर होइत अछि ओ देश ओतबहि क्रम पर होइत अछि आ से ई भारतीय समाज खासकऽ मिथिलाक समाज अपन स्थान रखैत अछि। एहि ठामक लोक सभ परीक्षामे अग्रणी परिणाम दऽ रहल अछि।

स्थानीय समाजमे अपन गुण-कौशल केर आधार पर कार्य करैत समाजमे प्रतिष्ठित भऽ रहल अछि। ताहि सँ समाज सेहो स्वयं प्रतिष्ठित भऽ रहल अछि। एक एहिठामक लोहार, कुम्हारक महत्व ओ स्थान अनुपम अछि तऽ दोसर दिस सभ वर्गक लोक अपन-अपन गुण-कौशलकेँ आधार पर डाक्टर- इंजीनियर, प्रशासनिक पदक अतिरिक्त व्यापार आदिमे नीक प्रदर्शन कऽ रहलाह अछि।

स्थानीय विद्यालयमे स्थानीय लोकक बहुत पैघ सहयोग होइत अछि। जयंती/त्योहार आदिमे भाग लऽ कऽ ई समाज एक नव ओ उत्साहवर्द्धक वातावरण केर निर्माण करैत अछि। जकर स्थानीय शिक्षाक क्षेत्रमे बहुत बेसी नीक प्रभाव डालैत अछि। अतीते सँ एहिठामक गणमान्य लोक अपन विद्यालय बनेबाक लेल जमीने दनामे नहि दैत एलनि अछि, अपितु विद्यालय ओ बच्चाक विकासमे अन्यान्य भूमिकाक निर्वहन सेहो करैत एलाह अछि। मिथिलामे हम अपने स्थानीय उदाहरणकेँ रूपमे दू-तीन टा नाम एखन स्मरण आबि रहल अछि। खुटौना हाई स्कूल केर निर्माणमे जतऽ एक दिस अब्दुल रहिम केर योगदान अछि तऽ महामानव चेथस महतो जीक नाम विद्यालय। महाविद्यालय खोलन्हि दिनमे धरी हाट खोलबामे अग्रिम पाँतिमे लेल जाइत अछि। एहिना फुलपरासमे रासलाल यादव जीक नाम लेल जाइत अछि। एहि तरहक उदाहरण सँ सम्पूर्ण मिथिला भरल-पुरल अछि। इ सभ शिक्षाकेँ अमूल्य धरोहर माननलि अछि। एहि केर संगहि इहो कहबमे हिचक नहि अछि जे जतऽ अतीतमे कोनो खासवर्गक बच्चा पढ़ैत छल मुदा आई शिक्षा जगतमे आन्दोलन भेल आ जाहि सँ सभ समुदायक बच्चा शिक्षा ग्रहण करबाक लेल विद्यालय जाइत देखल जाइत अछि। एतबहि नहि विद्यालयमे चलाओल जा रहल विभिन्न तरहक योजनाक लाभ लऽ रहल अछि। अपन सर्वांगीण विकासक भूमिकामे अग्रणी भऽ रहल अछि।

वर्त्तमान परिवेशमे गरीब ओ अमीर दुनू शिक्षाक समान अधिकार लऽ रहल अछि किन्तु एहि ठाम उल्लेखनीय अछि, मिथिलाक समाज शिक्षा प्रेमी अपन-अपन जमीन-धान दान दऽ बच्चाक भविष्य लेल एक दिस चिन्तिक अछि तऽ दोसर दिस एहिमे कार्यरत प्रबंध कमिटीक अध्यक्ष द्वारा दोहन सेहो कयल जा रहल अछि। ई मुख्य रूपसँ वित्त रहित महाविद्यालय/विद्यालयमे देखल जाइत अछि। एहि मामला सरकार के उदासीनता सेहो देखल जाइत अछि, जाहिमे अपेक्षित सुधार भेला सँ मिथिला समाजक विकास तीव्रत्तर होयबाक पूर्ण संभावना बनैत अछि, मुदा तइयो।

निष्कर्षतः ई कहल जा सकैत अछि जे स्थानीय मिथिलाक समाजमे स्वतंत्रा प्राप्तिक बाद वचनाक उदाहरण कम देखाई पड़ैत अछि तऽ सभ समान ढंग सँ अपन जीविकामे लगल रहैत अछि आ अपन सुख-दुःखके आदान-प्रदान करैत अछि। ❑❑❑

मिथिलाक बच्चाक प्रारंभिक शिक्षामे मैथिलीक भूमिका

✍ **उमेश घोष**

नगमा आफरीनक ई पाँति हमरा नीक लगैत अछि-

शिक्षा समाधान है, बेबसी सी जिन्दगी का।
शिक्षा अरमान है, भविष्य की उन्नति का।।
शिक्षा पहचान है, जिन्दगी की हर सफलता का।
शिक्षा अभियान है, जिन्दगी की अस्तित्व का।।
शिक्षा सीखाती है, हर पल आगे बढ़ना,
शिक्षा बताती है, जिन्दगी में है कुछ करना।।

शिक्षा भौतिक सुख-सुविधाक प्राप्ति केर माध्यम मात्र नहि भऽ कऽ व्यक्तिक सर्वांगीण विकास पर्याय अछि, जे अध्ययन, अनुशासन, मौलिक विचार एवं सदाचरणे सँ संभव अछि। शिक्षामे एक एहन माध्यम अछि, जे मूल्यक पुनर्स्थापना कऽ समाजमे परिवर्तन लाबि सकैत अछि आ मिल्टन, वर्डसवर्थ, सुकरात, गाँधीक विचार केँ आत्मसात करैत सम्पूर्ण विश्व केँ एक सूत्रमे गूँथि कऽ परिस्थितिक संतुलन एवं पारस्परिक सद्भाव बनाकऽ राखि सकैत अछि।

आइ शिक्षाक विकास लेल भारते टा नहि अपितु सम्पूर्ण विश्व चिन्तित अछि आ एकरा सुधारक लेल रंग-विरंगक कार्यक्रम चला रहल अछि। शिक्षामे नव-नव प्रयोग भऽ रहल अछि मुदा तइयो उम्मीद केर अनुरूप प्रगतिक अभाव अछि। शिक्षाक न्यो छैक प्राथमिक शिक्षा। कोनो मजगूत भवन लेल न्यो मजगूत आ ठोस हेबाक चाही। तैं शिक्षाक मूलमे गुणात्मक परिवर्तनक प्रयोजन बुझना जाइत अछि आ एहि लेल व्यवस्था, शिक्षक आ समाज तीनू खूट्टा के ठाढ़ नीक जकाँ होमऽ पड़तैक। मैथिली सम्पूर्ण मिथिलाक मातृभाषा छी। कोनोहु मातृभाषा सरल, सहज ओ बोधगम्य होइत अछि। मातृभाषाक सम्बन्ध अपन घर-परिवारसँ लऽ कऽ ओहि भौगोलिक प्रदेश सँ सेहो बहुत निकटता रहैत अछि। बच्चाक स्वाभाविक विकासमे एकर भूमिकाके बहराएल नहि जा सकैत अछि, अपितु ई मनोवैज्ञानिकी भाषामे पहिल तत्व छी।

हम देखैत छी जे जन्मक सँग माय अथवा आन कोनो सदस्य ओकरा दुलार-पुचकार-प्यार-स्नेह के जे सम्बोधन करैत छथि, ओ मातृभाषायेमे होइत अछि। यथा जँ कोनो बच्चा कनैत रहैत अछि, तऽ अनैर मुँह सँ निकलि पड़ैत अछि- ''बौआ, चुप्प भऽ जाह नहि कानू, की भेल आ हा हा..... और देखैत छी जे ओ नौनिहाल जेना सभ किछु बुझि गेल हो आ चुप भऽ जाइत अछि। एतबहि नहि, एहि ठामक पशु-पक्षी सेहो मातृभाषा मैथिली के सहजहिं समझि लैत अछि। जँ कोनो कुकुर के बजेबाक जरूरति होइत छैक तऽ 'कमिंग-कमिंग अथवा एम्हर आउ-एम्हर आउ नहि कहि कऽ ओकरा ''आतुह आऽ आऽ'' केर सम्बोधन करैत छथि तऽ जतऽ कतौ कुकुर सुनि रहल होइत अछि तऽ, निकटि दौड़ि कऽ चलि अबैत अछि। 'कुत-कुत' कहला पर कुकुरक बच्चा दौड़ जाइत अछि। एहि तरहेँ हर जोतबा अथवा बैलगाड़ीक वरद के रोकबाक होइत अछि तऽ 'हः हः' बाजि कऽ ओकर टोकल जाइत अछि आ ओ वरद ठाढ़ भऽ जाइत छैक। बकरीमे 'लीह', सुग्गा के सीताराम कहू' कहि कऽ अपन मातृभाषा मैथिलीक ज्ञान करा देल जाइत अछि। ओहो जीव-जन्तु जेहन एहि भाषा के समझि-परखि लैत अछि। तैं मिथिलामे शिक्षा मैथिलीक माध्यम से होयब उपयुक्त अछि। भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वान लोकनि ई स्वीकार कयलनि अछि जे प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा केर माध्यम हो, ई उपयुक्त आ नीक होइत अछि।

भारतीय संविधानक अनुच्छेद-350मे स्पष्ट उल्लेख कयल गेल अछि जे मातृभाषामे निरक्षण-व्यवस्था लेल एक शिक्षक केर नियुक्ति हेबाक चाही। 22 मार्च, 1950 के बिहार सरकार मैथिली के माध्यम से प्राथमिक शिक्षाक स्वीकृति निम्नप्रकार देने अछि-

"I have to state that the state government have decided Maithili may adopted as a medium of institutions at the primary stage and schools teaching through this medium may be give recognition."

1986ई0क शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय नीतिक निर्धारण एवं ओकर कार्यान्वयन केर पृष्ठ सं0-161मे स्पष्ट रूप सँ उल्लिखित अछि- ''मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देना अनिवार्य है।''

स्पष्ट अछि जे मातृभाषाक माध्यम सँ प्रारंभिक शिक्षा सहज ढंग सँ संचालित होयत। बच्चा सभक प्रारंभिक शिक्षा मिथिला क्षेत्रमे मैथिलीमे हेबाक चाही। बहुतोक एहन शब्द हैत जे आन भाषामे कहल जेतैक तऽ ओ भारी, दबाव हेबाक संभावना बनैत छैक। यथा-भात मैथिलीमे सहज बोधक अछि। एकरा जँ 'बोआइल्ड राइस' कहला सँ मानसिक दवाब आ उल्लंघन उत्पन्न कऽ देतऽ एहि तरहेँ ''माछ, तिलकोर, खम्हाउर, केंसौर, सारूख, कटहर, बरहर, तौला, पतली, करही, छाँछ, डाबा, कँाडि, सड़बा, कोया, कुरबार, जोड़न, दाबि, ढेकी, जत्ता, कोरा, बड़ेरी, सटका, पेंना, छौंकी, गड़िआठी, ओइछ, अराँचि, आदि बहुतोक उदाहरण भऽ सकैत अछि।

मुदा विडम्बना अछि जे ग्लोबलाइजेशन कुप्रभाव हमरा बच्चा सभ पर सेहो पड़ि रहल अछि। मुदा प्रारंभिक विद्यालय सभमे प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से देब समुचित होयत। अस्तु ई कहब अतिश्योक्ति नहि होयत जे मिथिला, जे गंगाक उत्तरी भूभाग एवं पूब कटिहार, पूर्णियाँ सँ लऽ पछिम चम्पारण धरती धरि भौगोलिक परिक्षेत्रमे परिगणित अछि, से कम से कम करोड़ बच्चा प्रारंभिक शिक्षा लऽ रहल होइत अछि। आब अपन प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा मैथिलीमे प्राप्त कऽ अपन सुन्दर भविष्यक मजबूत आधार तैयार कऽ सकत। ओ अपन जीवनक तैयारी अथवा जीविकोपार्जनक उद्देश्य पूर्ति कऽ सकत।

जय मिथिला-जय मैथिली! ❑❑❑

प्राथमिक शिक्षामे मैथिली

✍ रमाकान्त राय 'रमा'

योगिराज भर्तृहरि आरम्भमे बहुत विलासी राजा छलाह। एहि क्रममे हुनका मानव जीवनक अनेक कठोर सत्यसँ स्वयं साक्षात्कार करऽ पड़ल छलनि। ओहि नग्न सत्यकेँ ओ आत्मसात् कऽ लेने छलाह। बादमे ओ अपन ओहि सत्यक उद्घाटन अपन साहित्यमे संकेत रूपमे यत्र-तत्र कयने छथि। हुनक एकटा प्रसिद्ध श्लोक अछि-

यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता,
साप्यन्यमिच्छति जनं सजनोऽन्यसक्तः
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या,
धिक्तांच तंच, मदनंच इमांच मांच।

अर्थात्, हम सदिखन जाहि स्त्री (पत्नी)क चिन्तन करैत रहैत छी, से हमरासँ विरक्त अछि। ओहो ककरो आनकेँ पसिन करैत अछि मुदा ओ व्यक्ति कोनो तेसरक प्रति आसक्त अछि। आ हमरासँ केओ आन संतुष्ट होइत अछि। एहि लेल ओकरा (पत्नीकेँ), ओकर प्रेमीकेँ, एकरा (हमर प्रेयसीकेँ), हमरा आ सभक जड़ि कामदेवकेँ धिक्कार अछि। योगिराज भर्तृहरिक एहि कथनक विशेषता ई अछि जे ओ अपनो दोषकेँ स्वयं देखलनि, अपनो स्वभावक गुणावगुणकेँ चिन्हलनि आ ओकरो आन दोषी जकाँ बूझि सार्वजनिक रूपसँ प्रकटकऽ अपनहुँकेँ धिक्कारलनि।

हमरा लोकनि आ हुनकामे ई जे एकटा छोटसन अन्तर अछि सैह बहुत पैघ भोकन्नर अछि-ई बात हम सब नहि बूझि पाबि रहल छी! संत कबीरदास सेहो कहने छथि-

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोय।
जों दिल खोजा आपना मुझसे बुरा न कोय।।

जखन लोक आनक दोषक अहेर करैत अछि तखन अपन दोष दिस ओ ध्यान नहिं दैत अछि। जखन कि पहिने नीक जकाँ अपनहिं गुणवगुणक विवेचन करब आवश्यक अछि। एहि संदर्भमे कबीरदास एकठाम आर कहैत छथि जे जखन हम खराब लोकक अहेर करऽ लगलहुँ तँ हमरा दृष्टिपथपर केओ खराब नहि अभरल, सब नीके बुझाइत छल। जखन ह्रदयपर हाथ राखिकऽ विचार करऽ लगलहुँ तखन हमरा अपनासँ बढिकऽ केओ आन दोषी नहि बुझायल। एकरे ओ एकटा आन दोहामे अपन अहंकार कहैत, अपनाकेँ महान् बुझबाक भ्रम सिद्ध कयलनि अछि-

जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु हैं हम नाहीं।
प्रेम गली अति सांकरी ता में दो न समाय।

हमर अपन एकान्तिक विचारमे मैथिलीक अनेक समस्यामे एकटा समस्या सभकेँ शत प्रतिशत नहि तँ पचास प्रतिशतसँ अधिक अपन दोष मानैत छी। जखन अपन शक्तिसँ अधिक बोझ उठा लैत छी आ ओहिसँ करेज दलकऽ-दहलऽ लगैत अछि तखनहिं भगवानक गोहारि करैत छी हम सब-'हे भगवान, कोनहुना ई बोझ ठामपर धरि हम पहुँचा दियैक-एतेक शक्ति हमरा दिअ!' हल्लुक-फल्लुक बोझ लोक प्रसन्नता पूर्वक उघैत अछिए, मुदा ओ कखनहुँ भगवानकेँ स्मरण नहि करैत अछि। प्राथमिक शिक्षा सभ नेनाक प्राप्त होअय, आ से मातृभाषाक माध्यमे होअय-ई उत्तरदायित्व सरकार अछि। हमर संविधान आ सरकारक अनेक निर्णय एहि बातक सम्पुष्टि करैत अछि। मुदा जखन स्वार्थक चक्की तर पिचाकऽ अहाँ दम तोड़बाक स्थितिमे छी, तखन यदि कनिकोटा छिद्र भेटि जाय तँ जान बचा लेबामे बुद्धिमत्ता अछि ने कि सरकार अथवा ईश्वरक दोहाइ दऽकऽ जान गमायब समुचित?

सरकार जे भाषा बुझैत अछि ओकर पढाइ ने मिथिलाक लोक कयलक अछि आ ने एहिठामक नेतामे प्रभुता रहितो ओ गुण आयल अछि। हमरा सभक भाषेटा नहि मधुर अछि, हमर सभक माटि- पानिक सेहो ई गुण, महान् दोषमे परिवर्तित भऽ चुकल अछि।

समयक दोष सेहो अछि। आइ सत्यक शपथ लऽकऽ असत्यक आचरण करब आम बाते नहि अछि, एकटा फैशन भऽ चुकल अछि। अहाँक हमर अधिकार लऽकऽ, हमर सभक कल्याणक टाका चोराक गामक, समाजक किछुलोक मालामाल भऽ जाइत अछि हमरा अहाँक आँखिक समक्ष। हम अहाँ टुकुर- टुकुर देखैत रहब-बाजब नहि जे स्कूलक छत ढलाइमे सिमेंटक मात्रा कम अछि-तखन पटना आ दिल्लीक सरकारक समक्ष दस-पाँचटा नहि, सय-पाँच सय की हजार लोकक खाली वक्तव्य आ भाषण सँ कतेक प्रभाव पड़ैत अछि-से तँ हमरा सभक समक्षे अछि? हम ई नहि कहैत छी जे शान्तिपूर्ण आन्दोलनक कोनो अर्थ नहि। मुदा जखन कूपेमे भांग घोरल होइक तखन तँ जीवनरक्षाक निमित्त किछु करहिं पड़त किने?

प्राथमिक शिक्षा मातृभाषाक माध्यमसँ भेटय एहिमे हमरो सभक योगदान देब एकटा महत्वपूर्ण बिन्दु अछि। ई सर्व विदित बात अछि जे अखन पहिल वर्गसँ लऽकऽ दशम वर्ग धरिक पाठ्यपुस्तक छापबाक अधिकार बिहार सरकारक एकटा सार्वजनिक उपक्रम 'बिहार राज्य पाठ्य पुस्तक प्रकाशन निगम, पटना'क अछि। मुदा प्राथमिक शिक्षाक समारम्भमे कोनो पोथीक आवश्यकता नहि होइछ। नेना एकटा सिलेट लऽकऽ पाठशाला अबैत अछि। ओकरा अक्षर ज्ञान आ खाँति आ सामान्य जोड़, घटाओ, गुणा आ भाग सिखायब बिनु पुस्तकोक सम्भब अछि। एहि लेल सरकारक मदतिक कोनो प्रयोजन आवश्यक नहि अछि। कारण अखन, आ प्रायः सभ दिन स्थानीय व्यक्ति प्राथमिक विद्यालयक शिक्षकक पदपर नियुक्त होइत

छथि। ओ सुविधासँ एतेक काज कऽ सकैत छथि अपन मातृभाषाक माध्यमे। पछिला बोझ उघबाक उदाहरणमे हम ईश्वरक गोहारि करबाक उदाहरण देने छी। हम सब जनैत छी, बुझैत छी, जे ईश्वर प्रकट भऽ कऽ कहियो हमर मदति नहि करताह। तथापि हमसब एकटा विश्वासक वशीभूत हुनक गोहारि करितेटा छी आ ओकर फलो भेटैत अछि हृदयमे एकटा दृढ आस्था स्वरूप उर्जासँ। एहि उर्जेक कारण हम अपन शक्तिसँ अधिको काज करबामे सक्षम होइत छी।

हमरा विचारे सरकार ओहि ईश्वरसँ अधिक षक्तिशली प्रतीत होइत अछि जकरा भरोसपर हम सब किछु काज स्वयं करैत छी आ समय-समयपर किछु काज ओकरोसँ भऽ जाइत अछि। हमर कहबाक अभिप्राय ई जे जखन प्राथमिक शिक्षाक शिक्षक स्थानीय छथि तखन प्राथमिक शिक्षाक शुरूआत तँ मैथिली माध्यमसँ कयले जा सकैछ। हमरा बुझने एकटा आर भ्रम हमरा सभक बीच परिव्याप्त अछि- ओ ई जे एहिसँ मैथिली भाषाक अध्ययन कयनिहार लोकक नियुक्ति अधिकाधिक रूपमे होयत। ओहुना जाहि क्षेत्रक जे मातृभाषा अछि ओ व्यक्ति तकनीकी विषय छोड़िक ओहि भाषाक प्राथमिक शिक्षक नियुक्त होइतहि छथि।

हम सभ एकपक्षीय काज कऽ रहल छी प्राथमिक शिक्षा मातृभाषाक माध्यमे देबाक सरकारसँ केवल मांग कऽक्य। जहिना मातृभाषाक माध्यमे शिक्षा प्राप्त करब हमर अधिकार अछि, तहिना ओहि लेल स्वयं तत्पर रहब सेहो हमर कर्त्तव्य अछि। ओ तत्परता हम पहिल कक्षाक छात्रसँ आरम्भकऽ देखा सकैत छी। तहिना सरकार आब पुस्तक किनबा लेल छात्रकेँ टाका दैत छैक। यदि मैथिली क्षेत्रक प्रकाशक स्वतंत्र रूपसँ पुस्तक पहिल, दोसर आ तेसर वर्गक लेल छापथि तखन छात्र ओहो पुस्तक कीनि पढि सकैत छथि। एहिसँ नेनेसँ मैथिली पुस्तक कीनिकऽ पढबाक चहटि सेहो ओकरामे औतैक आ भविष्यमे मैथिली साहित्यक प्रति आमजनमे जागरूकताक वृद्धि सेहो होयत। एकटा छोटसन बात आर कहऽ चाहैत छी हम जे पहिने लोक अपन नेनाक, विशेषक छोट-छोट नेनाक शिक्षाक प्रति विशेष साकांक्ष रहैत छलाह। सांझ-भिनसर ओकरा नियमित पढबा लेल उत्प्रेरित करैत छलाह आ ओकर छोट-मोट उत्सुकताक, जानकारीक समाधान सेहो करैत छलाह। मुदा आब से एकदम नहि भऽ पबैत अछि। आइ वैह अभिभावक विशेष जागरूक बूझल जाइत छथि जे अपना नेना लेल सांझ आ भिनसरक लेल फराक-फराक ट्यूटरक व्यवस्था कयने छथि।

अहाँ स्वयं जे अपना नेनाकेँ पढबापर ध्यान देबैक से, आ ट्यूटर जे ध्यान देताह-ओहि दुनूमे आकाश-पातालक अन्तर होयत।

हम स्वयं प्राथमिक शिक्षा मैथिलीक माध्यमसँ देल जाय आ सरकार ओकरा शीघ्रातिशीघ्र लागू करय एहि विचारक पृष्ठपोषक छी। मुदा अपन छोट-छोट त्रुटि दिशि दिस अपन ध्यान राखि ओहिपर ध्यान देब सेहो अत्यावश्यक बूझैत छी। एहि विचारक अनुपालनसँ ठप्प पड़ल काजमे गत्वरता आयत। काज किछु आंगाा ससरत। आ ओ अन्ततः समग्र प्राथमिक शिक्षा मैथिलीक माध्यमे होअय, एकर पृष्ठभूमि तैयार करत। जेँ कि हम सब मात्र सिद्धान्त रूपमे मैथिली माध्यमे प्राथमिक शिक्षा देबाक चर्च-वर्च करैत छी, तेँ एकर व्यवहारिक पक्षक सही-सही जाकारी अथवा एहिमे आबघ्वला कहिनाइक अभिज्ञान नहि अछि। एकटा कोनो गोष्ठीमे अमरजी एकर व्यवहारिक पक्षक एकटा दृष्टान्त सुनौने छलाह जे रोचकक संग- संग अत्यधिक प्रेरक अछि। ई सत्य घटना मैथिलीक वरेण्य विभूति प्रदीप मैथिलीपुत्रसँ सम्बन्धित अछि तेँ एकर सत्यता स्वयंसिद्ध अछि।

एकबेर प्रदीप मैथिलीपुत्र तैयार भेलाह जे अगिला सत्रसँ हम अपन विद्यालयमे मैथिलीक माध्यमे अध्ययन-अध्यापन आरम्भ करब। हुनक सभ सहयोगी सेहो हुनका संग देलथिन आ ओ अपना विद्यालयमे मैथिलीक माध्यमसँ शिक्षा देब आरम्भ कयलनि।

एकाध सप्ताहक बाद अभिभावकगण एकजुट भऽकऽ विद्यालयमे अयलाह आ हिनका सभक कार्यक घोर विरोध करैत कहलथिन- 'अहाँ सभ टाका-पाइवला लोक छी तेँ अपन-अपन धियापुताकेँ अंग्रेजी माध्यमवला स्कूलमे पढबैत छी। हमरा सभकेँ अपन सरकारो द्वारा संचालित हिन्दियो माध्यमे तँ पढऽ देल जाय। यदि अहाँ सभ नहि मानब तँ हमरो सभकेँ बाध्य भऽकऽ अहाँ सभक विरुद्ध आन्दोलन करऽ पड़त।'

अभिप्राय जखन धियापुताक माये-बाप अपन नेनाक मैथिली माध्यमे नहि पढबऽ चाहतैक तखन तँ सभसँ पहिने ओकर समाधान ताकऽ पड़त। कारण मिथिलाक आम जनताक बीचमे मातृभाषाक प्रति स्नेह, ममत्व आ अपनत्व अयतैक तखने मैथिलीक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा देब संभव अछि, अन्यथा सरकार द्वारा लागू कयलाक बादो ओ सफलता नहि प्राप्त करत। जेना कि एकबेर कर्पूरी ठाकुरक मुख्यमंत्रित्व कालमे आंशिक रूपमे भऽ चुकल अछि।

हमरा विचारेँ एहि सब दृष्टिऐँ सम्पूर्ण मिथिलामे मैथिली भाषाक जागरूकता उत्पन्न कयल जायब मैथिली माध्यमे प्राथमिक शिक्षाक मूल काज अछि हमरा सभक लेल। 4-5 करोड़ मैथिली भाषाभाषीक बदला हम मैथिलीक हजार-दू हजार मैथिली प्रेमी, आन्दोलनी, लेखक, कवि वा पत्रकारक प्रतिनिधित्व तँ करबा दाबाकऽ सकैत छी, मुदा परिस्थिति अहाँक दाबाक पोल खोलि दैत अछि समयपर। ओहो समय अनेक बेर आबि चुकल अछि, आ माथपर सवारो अछि-भारतीय जनगणना।

अतएव हम आरम्भेमे योगिराज भर्तृहरिक उदाहरण देने छी जे हमरा सभक समक्ष जे नग्न सत्य अछि ओकरा अपना बीच स्वीकारकऽ ओहिपर चिंतन-मननकऽ ओकर निराकरण करबाक प्राथमिकता देब परमावश्यक अछि। अन्यथा भारतमे नेता आ हुनक फूसि आश्वासन, हुनक आधारहीन भाषण आ अत्ममुग्धतासँ आम लोक आइ 65-70 वर्षसँ परिचित अछिए। मिथिलाक लोकक सेहो ओहिमे थोड़ योगदान नहि अछि। अपराध करबसँ अपराध सहब कनिको न्यून नहि होइछ।



मातृभाषामे शिक्षा : एकटा समस्या

ॐ **फूलचन्द्र झा 'प्रवीण'**

अपन विचारकेँ व्यक्त करबाक लेल भाषाक प्रयोजन होइत अछि। ओ भाषा लिखित, मौखिक किंवा सांकेतिक भऽ सकैत अछि। भाषा सभ क्षेत्रविशेषक लेल फराक-फराक होइत अछि आ ताहूमे समता वा एकरूपता प्रायः देखबामे नहि अबैत अछि। एकहि गाममे एक टोलक लोकक बाजब दोसर टोलक लोकक बाजबसँ भिन्न भऽ सकैत अछि, परन्तु ई बात मात्र मौखिक भाषाक लेल अछि। मुदा जखन हमरालोकनि लिखित भाषा दिस तकैत छी तखन प्रायः ओहूमे एकरूपता देखबामे नहि अबैत अछि। हमरा जनैत साहित्यिक भाषामे तँ एकरूपता अनिवार्य रूपसँ होयबेक चाही, कारण सभ भाषाक अपन प्रकृति आ अनुशासन होइत छैक आ ओही आधारपर एक भाषा दोसर भाषासँ भिन्न मानल जाइत रहल अछि।

भारतमे अनेको भाषा बाजल आ लिखल जा रहल अछि। बेसी भाषाकेँ अपन लिपि छैक, मुदा एहनो भाषाक संख्या कम नहि छैक जे देवनागरीक सहारापर चलि रहल अछि। अपना देशमे क्षेत्रीय भाषाक बहुलता छैक, जाहिमे बेसीकेँ अपन लिपि छैक आ शेष दोसरक लिपिसँ काज चलबैत अछि। एहि अर्थमे मैथिली भाग्यशाली अछि जे एकरो अपन लिपि-तिरहुता छैक, मुदा वर्तमान, लिपिक दृष्टिएँ नीक नहि छैक आ लोक धुरझाड़ देवनागरी लिखि रहलाह अछि। एकरा लेल भाषाक हितचिन्तकलोकनि प्रयासरत छथि। देखा चाही कहिया धरि सफलता पबैत छथि।

हमरालोकनिकेँ एहि बातक सदा ध्यान रखबाक चाही जे कोनहु भाषा व्यक्तिविशेष वा जातिविशेषक नहि होइत छैक। ओ होइत छैक क्षेत्रविशेषक। प्रत्येक भाषाक अपन भूगोल होइत छैक। एतबे नहि, प्रायः जतेक क्षेत्रीय भाषा अछि ओ कानो-ने-कोनो क्षेत्रविशेषक मातृभाषा थिक।

मातृभाषा माने मायक भाषा, मायक दूधक भाषा, जाहि परिवारमे नेना जन्म लैत छथि तकर भाषा, ओहि समाजक भाषा। हमरा लोकनि मिथिलाक लोक छी ते निर्विवाद रूपें हमरा सभक मातृभाषा मैथिली थिक। ई पूर्ण रूपसं एकटा भाषा थिक, बोली नहि, कोनो भाषाक उपभाषा नहि।

तेँ भारत सरकार एकरा एकटा स्वतंत्र भाषा मानि 2003 इमे संवैधानिक मान्यता देलक जकरा लेल 1977इ.मे तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर द्वारा केन्द्र सरकारसँ अनुशंसा कयल गेल छल। एतबे नहि, एहि भाषाक साहित्यिक समृद्धिकेँ देखैत भारतक सर्वोच्च साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली मैथिली केँ बहुत पूर्वे 1965 इ. मे अपन मान्यता दऽ देलक। एहि कार्यक लेल डा. जयकान्त मिश्रजीकेँ मिथिलावासी कहियो नहि बिसरि सकैत छनि। मुदा ई सभ भेलाक बादो मैथिली शिक्षाक माध्यम नहि भऽ सकल। पूर्वस लडका वर्तमानोमे साहित्यक सभ विधामे नीकसँ नीक रचना होइत आबि रहल अछि। रंग-विरंगक पुरस्कार आ सम्मानसँ साहित्य आ साहित्यकार पुरस्कृत होइत आबि रहलाह अछि।

प्रति वर्ष पोथीक प्रकाशनक अम्बार लागल जा रहल अछि परन्तु ई आन-आन क्षेत्रीय भाषा जकाँ शिक्षाक माध्यम नहि भऽ पाबि रहल अछि। सहर जमीनसँ जेना उपटल जा रहल अछि। ई एकटा गम्भीर विचारणीय प्रश्न अछि। जहाँ धरि मातृभाषाक माध्यमसँ पढ़ौनीक बात छैक, एकरा लेल अनेक बेर प्रयास होइत आयल अछि आ एखनो भऽ रहल अछि जे एहि प्रकारे अछि-

मैथिलीमे बालवर्गक हेतु पाठ्यग्रंथक निर्माण एवं प्रकाशनक सूत्रपात करबाक श्रेय छनि बाबू भोला लालदासके। एकरा लेल स्वयं आ आनो-आन व्यक्ति सभ द्वारा ओ पोथी लिखबाय प्रकाशित करबौलनि। 'मैथिली साहित्य लहरी'क चारि भाग प्रकाशित भेल जे प्राथमिक वर्गक साहित्यक पाठ्यग्रंथ छल।

एकर अतिरिक्त मैथिलीक व्याकरणक खागि देखि स्वयं 'सुबोध- व्याकरण' आ 'व्याकरण प्रबोध' लिखि प्रकाशित करबौलनि, जे पाठ्यग्रंथमे छल। पुस्तक भण्डार लहेरियासरायसँ सेहो मैथिलीमे 'गद्य-पद्य संग्रह' प्रकाशित भेल छल। व्यक्तिगतो प्रयाससँ आनो ठामसँ पोथी सभ छपय लागल। एहिमे भोलानाथ झा आ रमेन्द्र नारायण चौधरीक नाम उल्लेखनीय अछि। भारती भवन पटनासँ डा. गोपालजी झा' गोपेश' आ डा. गंगेश गुंजनक सम्पादनमे किछु पोथी छपल।

साहित्यक किछु पाठ्यपुस्तक पं. श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' 'मैथिली ग्रंथमाला प्रकाशन' जे रमानाथ मिश्र 'मिहिर'क छलनि, तकरा द्वारा सम्पादित कयलनि। बिहार सरकार स्वयं स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कारपोरेशन द्वारा प्रथम वर्गसँ मैट्रिक धरि सभ वर्गक हेतु सभ विषयक पोथी मैथिलीमे तैयार करबा प्रकाशित करबौलक, जाहिमे साहित्यिक पोथीसभक सम्पादन करबाओल गेल आ आन-आन पोथीक अनुवाद।

पं. श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क सम्पादनमे सातम वर्गक लेल तत्कालीन नव पाठ्यक्रमक अनुसारेँ 1954 इ. मे 'मैथिली साहित्यालोक' नामक साहित्य पाठ्यग्रंथ प्रकाशित भेल।

हिनकेँ सम्पादनमे 1981 इ. में दूटा आओर पाठ्यग्रंथक प्रकाशन 'मैथिली ग्रंथमाला प्रकाशन' दरभंगा द्वारा प्रकाशित भेल जकर नाम छल- 'मैथिली नवीन साहित्य सुमन' वर्ग सातक लेल आ 'मैथिली पदावली' वर्ष आठक लेल।

ई प्रकाशन प्राथमिकसँ लऽकऽ विश्वविद्यालय स्तर धारिक अनेको पोथीक प्रकाशन कयलक। एकर अतिरिक्त आनो-आन व्यक्ति आ प्रकाशन पाठ्यग्रंथ छपैत रहल होयताह, जकर जनतब हमरा नहि अछि। मुदा एतेक बात तँ सत्य जे पाठ्यग्रंथक अभाव नहि रहल, जेना कि 28 दिसम्बर 1999क 'हिन्दुस्तान' दैनिक पत्रमे बिहार सरकारक टेक्स्ट बुकक समस्त सूची देखला उत्तर भान होइत अछि। ओ एहि प्रकारेँ अछि-

वर्ग-1 - मैथिली भारती-1

वर्ग-2 - मैथिली भारती-2

वर्ग-3 - मैथिली भारती-3
आउ गणित सीखू-3
पर्यावरण आओर हम-1
बिहार गौरव

वर्ग-4 - मैथिली भारती-4
आउ गणित सीखू-4
पर्यावरण आओर हम-2
हमर देश भारत

वर्ग-5 - मैथिली भरती-5
आउ गणित सीखू-5
पर्यावरण आओर हम-3
हम आओर हमर दुनियाँ

वर्ग-6 - मैथिली भारती-6
जीवनामृत
गणित, भाग-1
आउ विज्ञान सीखू-1
प्राचीन भारत
हमर नागरिक जीवन
देश आओर ओकर निवासी-1

वर्ग-7 - मैथिली भारती-7
प्राचीन भारती गणित, भाग-2, खण्ड-1
गणित, भाग-2, खण्ड-2
मध्यकालीन भारत
देश आओर ओकर निवासी-2
आउ विज्ञान सीखू-2
हमर शासन व्यवस्था

वर्ग-8 - मैथिली भारती-8
स्वतंत्र भारती
गणित, भाग-3, खण्ड-1
गणित, भाग-3, खण्ड-2
आधुनिक भारत
देश आओर ओकर निवासी-3
आउ विज्ञान सीखू-3, खण्ड-1
आउ विज्ञान सीखू-3, खण्ड-2
हमर भारत समस्या आ चुनौती

वर्ग-(9-10) मैथिली गद्य मालिका
मैथिली पद्य मालिका
गल्पगुच्छ
गणित, भाग-4, 5, खण्ड-1-4
विज्ञान, भाग-1, 4, खण्ड-1-4
सभ्यताक इतिहास, भाग-1, 2
पर्यावरण बोध, भाग-1, 2
हमर संविधान आओर नागरिक जीवन, भाग-1, 2
हमर अर्थ व्यवस्था, भाग-1, 2
उच्च गणित, भाग-1, 2
गृहविज्ञान
श्रम आ स्वास्थ्य सेवा, भाग-1, 2

एतबे नहि, श्री कमल नारायण झा 'कमलेश' 1965 आ 1966 इ. मे आ रमेन्द्र नारायण चौधरी 1966 इ. मे साहित्येतर पाठ्यग्रंथ सभक रचना आ प्रकाशन करैत रहलाह।

पाठ्यग्रंथक एतेक प्रकाशित पोथीकेँ देखला उत्तर स्वयं अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षा व्यवस्था चलयबामे बड़ बेसी दिक्कत नहि छैक, तथापि ई काज किएक नहि भऽ पाबि रहल अछि, जखन कि 22 मार्च 1950 केँ बिहार सरकार मैथिलीक माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षाक स्वी.ति एहि प्रकारेँ दऽ देलक-

"I have to state that the state government have decided Maithili may be adopted as a medium of instruction at the Primary Stage and Schools teaching through this medium may be given recognition"

1986 इ.क शिक्षा सम्बन्धी राष्ट्रीय नीतिक निर्धारण आ एकर कार्यान्वयनक पृष्ठ संख्या 161 मे स्पष्ट रूपेँ लिखल अछि जे मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षा देव अनिवार्य अछि।

बिहार सरकार एहिसँ सम्बंधित आदेश कतेको बेर निकालैत रहल अछि जकर साक्ष्य कैकटा मातृभाषानुरागी लग उपलब्ध छनि। किछु आदेशक तिथि आ वर्ष एहि प्रकारेँ अछि- 16 नवम्बर 1966, 28 मार्च 1966, 1973, 24 जुलाई 1975 आदि।

1968क राष्ट्रीय शिक्षा नीतिमे माध्यमिक स्तरपर मातृभाषाक स्थान निर्धारित कयल गेल छल आ ओकरे आलोकमे बिहारोमे मैथिलीक अध्ययन-अध्यापन मातृभाषाक रुपमे माध्यमिक स्तरसँ होइत आबि रहल छल। 1972 इ0 मे सरकार बिहार लोक सेवा आयोगमे मैथिलीकेँ एकटा विषयक रूपमे मान्यता देलक।

मुदा जखन बिहार सरकार द्वारा पूर्वमे प्राप्त अधिकार आपस लऽ लेल गेल तखन एहि आदेशक विरुद्ध डा. जयकान्त मिश्र पटना उच्च न्यायालयमे रिट याचिका CWJC No-7505/98 दायर कयलनि आ न्यायालयक फैसला डा. मिश्रक पक्षमे आबि गेलनि। एकर बाद सरकार उच्च न्यायालयक विरुद्ध उच्चतम न्यायालय चल गेल (Civil Appeal No- (s) 7266 of 2004), मुदा एहि मुकदमापर माननीय न्यायमूर्ति बी. सुदर्शन रेड्डी आ माननीय न्यायमूर्ति सुरीन्दर सिंह निज्जर द्वारा 30 सितम्बर 2010 केँ सुनबाइक बाद-1 मई 2011 केँ अपन निर्णय सुना देलनि जे एहि प्रकारे अछि-

"We have heard learned councel for the parties, we do not find any infermity what soever in the impugned judgement requiring our interference"

एहि तरहेँ उच्चतम न्यायालय उच्च न्यायालय पटनाक निर्णयकेँ स्वीकार करैत डा. मिश्रकेँ विजयश्री प्रदान कयलक।

भारतीय संविधानक अनुच्छेद-350ए क भावनाक अनुसार जँ कोनो वर्गमे 10 छात्र तथा विद्यालयमे 40 छात्र क्षेत्रीय भाषा पढ़निहार होथि तँ हुनका मातृभाषामे शिक्षण-व्यवस्थाक लेल एकटा शिक्षकक नियुक्ति होयबाक चाही। ई मैथिली मात्र लेल नहि, आनोआन भाषाक छात्रक लेल अनिवार्य अछि आ एकर सभ व्यवस्था राज्य किंवा स्थानीय निकाय द्वारा करब बाध्यता अछि। मुदा आइ धरि प्राथमिक शिक्षकक रुपये मैथिलीक शिक्षकक नियुक्ति नहि कयल गेल अछि।

हमरा जनैत प्रत्येक समयक अपन किछु खास माँग होइत अछि। सभ भाषाक उत्थान आ पतनक एकटा समय होइत छैक। कने पाछू तकला उत्तर हमरालोकनि देखैत छी जे संस्कृत आ फारसी सन समृद्ध भाषाक आइ की स्थिति अछि। एहने परिस्थितिमे भाषाक अस्तित्वक रक्षाक प्रयोजन छैक, कारण लोक अपना बच्चाकेँ एक ते सरकारी विद्यालयमे पढ़ब नहि चाहैत छथि आ दोसर बात जे मातृभाषाक माध्यमसँ नहि पढाकड अंगरेजी माध्यमक प्राइवेट स्कूलमे पढ़ा रहल छथि।

तखन प्रश्न उठैत अछि जे पदत केँ आ पढ़ाओल जायत ककरा? ई एकटा गम्भीर प्रश्न अछि जे सरकार पाठ्यपुस्तक छपा. पढ़यबाक आदेश दऽ देलक। मैथिलीक साहित्यकार आ सेवकलोकनि अपनो स्तरस पोथी छपबैत रहलाह अछि, मुदा जनिका लेल ई लोकनि कानि रहलाह अछि तनिका सभक आँखिमे नोरे नहि। तखन तँ यैह टा सम्भव अछि जे आने प्रदेश, यथा-पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, असम आदि जकाँ प्राथमिक शिक्षा पूर्ण रूपसँ मैथिलीये टा मे देल जाय-एहन सरकारक कठोर आदेश हो आ तकरा लेल पूर्ण तत्परताक संग कार्य हो। तखने सभ बच्चा मैथिलीक माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कऽ सकताह।

हमरालोकनि देखैत छी जे कोनो प्रदेश वा देशक लोक होथु बंगालमे बंगला हुनका पढ़हि टा पडैत छनि, ओकर अतिरिक्त ओ आन-आन भाषा जे पढ़थु। मुदा ताहू लेल मैथिल समाजक लोककेँ तत्पर भऽक एहि कार्यमे सहयोग करऽ पड़तनि, कारण कोनहु टा कानूनक बनि जायब मात्र समस्याक समाधान नहि थिकैक। समाधान तँ ओकर पालन करब थिकैक आ तकर पूर्ण अभाव देखबामे अबैत अछि।

आश्चर्यक गप तेँ ई थिक जे लोक अपना घरोमे मैथिली बजबामे संकोचक अनुभव करैत छथि। लोकक मानसिकता ई भऽ गेलैक अछि जे हिन्दी वा अंगरेजीमे बजलासँ हमर बेसी महत्व बढ़ि जायत जखन कि एहन कोनो बात नहि छैक। एते बात तँ सत्य जे वर्तमान समयमे अंगरेजी पढ़ब आवश्यक छैक, परन्तु एकर अर्थ ई नहि जे मातृभाषाकेँ लतियाकऽ कात कऽ दी! आइ धरि जतेक भाषावैज्ञानिक भेलाह अछि, ओ तँ मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षा देबाक गप कहिए गेलाह अछि।

एकर अतिरिक्त अल्बर्ट आइंस्टीनक समकालीन भारतीय वैज्ञानिक सत्येन्द्रनाथ बोस जे मातृभाषाक माध्यमसँ विज्ञान विषयक पढ़ौनीपर अपन विचार व्यक्त कयने छथि, तकरा अजय राय एहि प्रकारे प्रस्तुत कयने छथि- ''ओहि समयमे शिक्षित वर्गमे अंग्रेजीक प्रति बेस आकर्षण बढ़ि रहल छल। बोस भारतीय भाषाक महत्व बुझैत छलाह।

हुनक कहब छलनि जै भारतमे विज्ञानकें आगू बढ़यबाक अछि तँ छात्रकेँ ओकरे भाषामे शिक्षा देल जयबाक चाही। हुनका अनुसार शिक्षा आ विज्ञानक क्षेत्रमे भारतक पछुआयल रहबाक मुख्य कारण ओकरा अंग्रेजी माध्यमसँ पढ़ायल जायब थिक। श्री बोसक मान्यता छलनि जे विज्ञान आ शिक्षाक विस्तारमे मुख्य बाधा मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षा नहि देब थिक आ दुनियाँमे भारत छोड़ि कोनहु टा देश एहन नहि अछि जे अपना बच्चाकेँ मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षा नहि दैत होइ। (प्रभात खबर, 8 जुलाइ 2012, पृ.-09)।

मैथिली बहुत समृद्ध भाषा थिक। एकर एकटा पैघ इतिहास छैक आ तकर परिणामस्वरूप 1918 इ0 मे कलकत्ता विश्वविद्यालयमे, 1933इ. मे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमे आ 1937 इ0 मे पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीकेँ पढ़यबाक मान्यता भेटलैक, मुदा वर्तमानमे तँ मिथिलो क्षेत्रक अधीन विश्वविद्यालय सभमे एकर की दशा छैक से किनकोसँ नुकायल नहि अछि।

यूनेस्कोक अनुसार दुनियाँ भरिम-2471टा भाषा अपन अतिम साँस गनि रहल अछि, जाहिमे भारतमे एकर संख्या-197 अछि आ पछिला वर्ष 196 रहय। अमेरिकामे- 191 भाषा हुक-हुक कऽ रहल अछि। मैक्सिकोमे-143 भाषा संकटमे अछि। इण्डोनेशिया सन छोट देशमे-146 भाषा आ ब्राजीलमे-190 टा भाषा समाप्त भऽ जयबाक स्थितिमे अछि। गूगलक प्रयाससँ आरम्भ भेल बेवसाइट इनडेंजईलैंग्वेजेस डॉट कॉम पर 3054 या भाषाक चर्च कयल गेल अछि। एहि साइटक हिसाबे दुनियाँक लगभग आधा भाषाक अस्तित्व संकटमे पड़ि गेल अछि आ वर्तमानमे बाजऽवला 7000 भाषामे 3500 भाषा मरि रहल अछि (पीयूष पाण्डे-प्रभात खबर-8 जुलाई 2012 पृष्ठ-09)

हमरा बुझने मानवताक सभसँ पैघ खोज जै भाषाकेँ कहल जाय तँ अतिशयोक्ति नहि होयत, मुदा दुर्भाग्यक गप अछि जे आइ ओ भाषा सभ नहि बाजल जाइत अछि जे एक जमानामे बाजल जाइत छल। ई बात सत्य जे सभ भाषाक अपन ऐतिहासिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक महत्व छैक, मदा आइ हजारो भाषा अस्तित्वक संकटसँ लड़ि रहल अछि। एकरा बचयबाक लेल 21 जून 2012केँ इंटरनेटक दुनियाँक सभसँ पैघ कम्पनीमे गूगल मरैत भाषाक रक्षार्थ इनडेंजर्डलैंग्वेजेस डॉट कॉम नामक साइट आराम कयलक अछि। देखा चाही एकरा कहाँ घरि सफलता भेटैत छैक।

परन्तु जहाँ धरि मैथिली भाषाक प्रश्न अछि, तकरा विषयमे हम विशेष किछु नहि कहैत अन्तमे एहि निबन्धक अन्त, मिथिला दर्शन, वर्ष-21 अंक जनवरी 1974क सम्पादकीय- 'मैथिली शिक्षाक प्रहसन'मे सम्पादक बाबू साहेब चौधरीक एहि पक्तिक संग करय चाहब जाहिमे ओ लिखने छथि- हिजरासँ वंश-वृद्धि होइत छैक?



प्राथमिक शिक्षामे मैथिली

ᘓ **नूतन मिश्र**

माँ जानकी के जन्मभूमि मिथिला जे श्रषि मुनि के ज्ञान स्थल आ पावन पवित्र भूमि अछि। जतैय के कण-कण मे देवि देवता वास करैत छथि। विद्वता आ सभ्यता संस्कृति सँ परिपूर्ण अछि मिथिला। कतेको विद्वान आ विदुषी के जन्मस्थली अछि मिथिला।कला आ संगीतक जन्मदाता अछि मिथिला। महाकवि विद्यापति के तप भूमि अछि मिथिला।

कतेको महान् कवि कवियत्री के सुंदर परिकल्पना अछि मिथिला। सहि कहु ते मिथिला धर्म कर्मक सुंदर भूमि अछि। अतिथि सत्कार ते देवतुल्य अछि मिथिला के। भगवान् रामचन्द्र के, चरण स्पर्श सँ मिथिला पावन पवित्र कहबैत अछि।

भगवान् रामचन्द्र सेहो मिथिला के अतिथि सत्कार सँ भाव-विभोर भे गेल छला। आदिकाल सँ मिथिला के अप्पन भाषा आ लिपि अछि। जे भारतक संविधान के अनुसार अष्टम सूची मे दर्ज अछि। मिथिला के लेल इ गौरवक गप्प अछि। मैथिलि भाषा मिश्री सन मधुर आ कर्णप्रिय अछि।

मिथिला लिपि जे विलुप्त भे रहल छल से वर्तमान मे अनगिनत मैथिलि संस्था द्वारा जन जन मे जागृत कैल जा रहल अछि। पुरुष लोकैन के संग संग स्त्रीगनक सहयोग अविश्वरणीय अछि। मिथिला के भाषा लिपि के उत्थान मे महिला संस्था सखी-बहिनपाक ङ्कयास सराहनीय अछि मुदा तयो अप्पन भाषा आ अप्पन राज्य अखनो उपेक्षित अछि।

बाइढ़ आकाल आ शिक्षा के समुचित अभाव मे मिथिला के लोग प्रवासी भे रहल छथि संग मे शहरीकरण के दिखाबा मे अप्पन मातृभाषा मैथिलि के छोड़ हिन्दी आ अंग्रेजी के बेसी महत्व देब लगलखिन्ह अछि।

एकर दुष्परिणाम भेल जे घर घर धिया-पूता होइथ वा पति-पत्नी सब कियो हिन्दी बजैय छथि। अप्पन स्थान पर सब भाषा सर्वोच्च अछि मुदा जे भाषा हमरा अप्पन गाम घर सभ्यता संस्कृति सँ जोडैऽत अछि ओहि भाषा के हम कोना अवहेलना के सकैय छि। हमर मातृभाषा मैथिलि हमर आत्मा अछि। अहि आत्मा के हम अप्पन शरीर सँ कना दूर के सकैय छि। दुर्भाग्य जे अप्पन भूमि मे सेहो मैथिलि भाषा के उपेक्षा होइत अछि।

जे अप्पन भाषा के जोगा के रखबाक अछि ते हमर सरकार आ मैथिल जन सँ आग्रह आ निवेदन अछि जे अप्पन लिपि आ भाषा के बचाव आ प्राथमिक शिक्षा मे स्थान दियौ आ धिया-पूता के अप्पन मातृभाषा मैथिली के प्रति सिनेह आ सम्मान सिखाउ। तखने अप्पन भाषा आ संस्कृति के संरक्षण हैत आ मिथिला के विकास आ सम्मान मे सहयोग भेटत।

जय मिथिला जय मैथिली



घर-घर जहिना चिनबार : मैथिली तहिना आधार

✍ हितनाथ झा

प्राथमिक शिक्षामे मैथिली जाहि भाषाक पढाइ आइसँ ठीक एक सय दू वर्ष पूर्व भारतक प्रख्यात विश्वविद्यालय, कलकत्ता विश्वविद्यालयमे प्रारम्भ होयबाक सीनेटक मंजूरी भय व्याख्याताक नियुक्ति भेल हो आ पढाइ शुरूह भेल हो, ओहि भाषाक माध्यमसँ पढाइक लेल, सरकारसँ, सेहो प्राथमिक आ माध्यमिक कक्षामे ओही भू भागमे एक सय साल बाद तक माँगक लेल आन्दोलन, धरना, प्रदर्शन, चर्चा-परिचर्चा, सेमिनारक आयोजन आयोजित होइत हो, ई कोनो भाषाक लेल मात्र नहिँ, ओहि क्षेत्रक लेल कलंकक बात थिक, संगहि ओहि क्षेत्रक जन-प्रतिनिधि आ राज्यक सरकार लेल सेहो।

जँ ई भाषा, मैथिली छोड़ि कोनो आन रहैत, तँ एकरा ई दिन देखय नहिँ पड़ितैक। ओहि क्षेत्रक लोककेँ कलंकक दाग नहिँ लगितैक। ओ भाषा सम्पूर्ण क्षेत्रमे पढ़ल जाइत रहल रहितैक। सरकारक आगाँ नतमस्तक नहिँ होअय पड़ितैक आ सरकारसँ आँखि मिला कय सभ न्यायोचित माँग लेने रहैत।

मुदा, मैथिली संग ई कहाँ भेलैक ! कलकत्ता विश्वविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, पटना विश्वविद्यालयसँ लय महाविद्यालय तक पढाइ शुरू भेलैक, आ जानि नहि कोन नीतिक कारणे, अथवा राजनीतिक कुचक्रक कारणे प्राथमिक स्तर तक पढ़ाइ नहिँ भय सकलैक। आब पाठशालामे कोना मैथिलीक समावेश होयत, एहिपर विचार करब जरूरी ।

विचार जखन करय लगैत छी, तँ हमर सामने भाषा, समृद्ध साहित्य, समकालीन स्तरीय रचना संगहि भारतक संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकार सभ किछु अछि, तखन एखन धरि, सभ किछु रहितहुँ, याचक मुद्रामे सरकार लग गोहारि लगा रहल छी, आ समस्त मिथिला क्षेत्रक भाषानुरागी बौक भेल ठकायल सन महसूस करैत अपनाकेँ ठाढ़ पबैत छी ।

भाषाकेँ देखतहिं पूर्ण रूपसँ आस्वस्त भय जाइत छी जे हमर भाषा कोनो भाषासँ कमतर नहिँ अछि, सरकार केँ पढ़उनीक लेल जे जे आवश्यकता छैक, सभ मैथिलीमे अछि। करीब पंद्रह वर्षसँ संवैधानिक मान्यतासँ प्राप्त भाषा सेहो अछि। भाषापर विस्तारसँ चर्चा करब हमर अभीष्ट नहिँ, ज्ञानो नहिँ।

करीब हजार वर्षसँ साहित्यकारक साधना तथा तपस्याक बलें हमरालोकनिक भाषा एतेक समृद्धि अछि, एहिमे कोनो सन्देह नहिँ। तखन?

राजनीतिक दृष्टिएँ हमरा लोकनि बहुत पछुआएल छी, से मात्र भाषेक क्षेत्रमे नहि, प्रत्येक क्षेत्रमे। तकर कारण अछि, जाति-पातिमे बंटल समाज। भाषाक प्रति मिथिलाक जननेताक उदासीनता। सरकारक ''बाँटू आ राज करू''क नीति।

मिथिलामे मैथिलीक पढ़ाइक प्रसंग अपन कविताक किछु पाँती एतय प्रस्तुत कय रहल छी, जे हमरा जनैत एहि कथनपर मिथिलाक व्यक्ति ध्यान देथि, तँ ओ दिन दूर नहि, जे मैथिलीक पढ़ाइ संभव भय सकैछ।

''भाखाक नामपर जहिया बटन दबेबै स'ब
तहिएसँ नेना पढ़त मैथिली, सुनबै स'ब
राज्य बनत तखने' मिथिला' ई मानी स'ब
स्वाभिमान भाषा थिक, गीरह बान्ही स'ब

एहि समारोहक माध्यमे एक बेर फेर राज्य सरकारसँ प्राथमिक पाठशालामे मैथिलीक पढ़ाइक माँग करैत छी।

''भनहि हमर हो जाति कोनो बरु
आ ने मँगै छी कोनो उपाति।
हो इसकूल निजी सरकारी
नीति रहय बस एकहि भाँति।।

❑❑❑

मैथिली भाषा एवं साहित्यक विकास मे प्रवासी लोकनिक योगदान

✍ अशोक झा

अपन जीवन यापन करवाक लेल मिथिलाक छोटसं छोट आ पैघ सं पैघ लोक भारतक विभिन्न क्षेत्र मे छितरायल छथि। अपना माँटि-पानि हवा-वसात से कोसो दूर रहऽ वाला मिथिलावासी जाहि शहर मे गेलाह ओ ओहि ठामक आचार-विचारक संग जीवन यापन करबा मे प्रवीण भऽ जाइत छथि ई मिथिलावासीक सहनशीलताआर उदारताक परिचय अछि।

मुदा! प्रवास मे रहनिहार मिथिलावासी सदैव अपन मातृभाषाक प्रति अनुराग राखऽ मे एक सजग प्रहरीक भूमिका देखावैत छथि। मैथिली भाषा, साहित्य, सामाजिक आर राष्ट्रीय चेतनाक प्रति प्रवास मे रहनिहार मिथिलावासी अपना केँ एकबद्धताक सूत्र मे बान्हि कऽ रखवाक प्रक्रिया केँ अपन प्रवृत्तिक एक अभिन्न हिस्सा मानैत प्रवास मे कार्य करैत छथि। वस्तुतः प्रवासी मिथिलावासी जतय गेलाह जतबे जुटि सकलाह मुदा मैथिली मिथिलाक प्रति ओसब अपना अपना गाँवक राज्यपालक भूमिका अदा करैत छथि। ई क्रम अतीतो मे छल आरवर्तमान काल मे सेहो अछि। इएह कारण अछि जे वर्तमान मे मैथिली भाषा, साहित्य, सामाजिक कर्तव्यबोध आर राष्ट्रीय चेतनाक पूँजी जतेक प्रवास मे रहनिहार मिथिलावासी मे सन्नहित अछि ओतेक माँटिपानि पर नहिं। हम तऽ स्वयं प्रवासी छी।ई लिखबा/कहबा मे हमरा कनिओ अतिशयोक्ति नहि बुझना जा रहल अछि जे भारतवर्षक कोनो राज्य मे रहनिहार प्रवासी मिथिलावासी सँ बेसीसाकांक्षा आर सजग प्रहरीक रूप मे कोलकाताक मिथिलावासी छथि। कोलकाता सांस्कृतिक नगरी अछि। अहिठामक सांस्कृतिक चेतना हर दृष्टिकोण सँ मिथिलावासी केँ मजबूती प्रदान करैत अछि। पूर्वहि काल सँ मिथिलाक सभ वर्गक लोक कोलकाता दिस अबैत रहलाह अछि। कहलो जाइत अछि जे दरभंगा बंगालक द्वारबंग अछि। कोलकाता एकटा एहन शहर अछि जाहि ठाम मिथिलाक प्रायः सभ गामक प्रतिनिधि रहिते छथि। कोलकाता व उपनगरीय कोलकाता मे रहनिहार प्रवासी मिथिलावासी द्वारा मैथिलीक प्रति अनुराग, भाषाक प्रति प्रतिबद्धता, सामाजिक, राष्ट्रीय चेतनाक प्रति कट्टरताक कारणे कोलकाताक नाम मैथिलक तीर्थस्थलीक रूप मे लेल जाइत अछि। कोलकाते नहिं, उपनगरीय कोलकाता मे जाइते मैथिली भाषा, साहित्य सामाजिक राष्ट्रीय चेतनाक कोने ने कोने केन्द्र भेट जायत। इतिहास अहि गप्पक साक्षी अछि जे अपन जीवन यापन करैत मैथिली भाषा मे साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक चेतनाक संग राष्ट्रीय एकता केँ प्रति सजग रहि अपन सामाजिक सांस्कृतिक धर्म केँ पालन करैत रहला अछि। अहि दिस प्रवास मे रहनिहार मिथिलावासी चिंतनशीलता आर अनुराग अद्वितीय अछि। विश्वक छोट सँ छोट घटनाक प्रभाव प्रतिक्रिया कोलकाता मे देखल पाओल जा सकैछ। मिथिलाक लोक शिक्षा सँ जीविका धरिक लेल गाम-घर से बहरा सर्वप्रथम एहि महानगर मे पदार्पण करैत छथि।

मैथिली भाषा साहित्यक महत्त्वक इतिहास बड़ पुरान अछि। मिथिलाक आचार-विचार, वेषभूषा, खान-पान, धार्मिक आस्था ओ विश्वास आदि आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण विभिन्न पाश्चात्य विचार-धाराक प्रभाव, नवयुगीन राजनीतिक जागरण, दिनानुदिन बढ़त सामाजिक संरचना पर नगरीय प्रभाव आदिक कारणे सम्प्रति परिवर्तनक द्रुततर प्रक्रिया सँ गुजरि रहल अछि। मुदा ईहो सत्य जे परिवर्तनक अहि युग मे जतय डेग-डेग पर सांस्कृतिक सामाजिक प्रदूषण सँ सम्पूर्ण वातावरण प्रदूषित भऽ रहल अछि। अहि विषम परिस्थितिक समक्ष अतीत से वर्तमान काल धरि कोलकाताक विभिन्न संस्था मैथिली भाषाक ध्वजवाहक केँ रूप मे ठाढ़ भऽ अविरल आर अबाध गति सँ मैथिली भाषा केँ जीबैत रखवाक कार्य कऽ रहल अछि। सन् 1952 सँ आई धरि कोलकाताक विभिन्न साहित्यिक संस्था मिथिलाक विभिन्न साहित्यविदक पुस्तक प्रकाशित करबाक गौरव प्राप्त केने अछि जे मिथिलाक गौरवमयी साहित्यिक धरोहरक भण्डार मे बढ़ोत्तरीये नहिं मिथिलाक विद्वत जनक भावना केँ बचेबाक कार्य केलैन।

श्रमजीवी लोक जहाँ-जहाँ गेला अपना केँ संगठित करबाक एवं अपन मातृभाषा मे गप्प-शप्प करबाक अभिषा सँ कोनो ने कोनो प्रकारें कोने निश्चित स्थान पर एकत्रित भऽ कऽ बइसारक योजना बनौलनि। एहि क्रम मे छल ''कीर्तन मंडलीक'' स्थापना जाहि मे धार्मिक भावनाक छल प्रधानता। आ एहि युक्ति केँ कार्यान्वित करबाक लेल ओ सभ सर्वप्रथम कीर्तन मंडली केँ स्थापना कयलनि। धर्म-कर्मक बले प्रारम्भ भेल प्रवास मे रहनिहार मिथिलावासी द्वारा सामाजिक चेतनाक क्रांति। सामान्य लोकक सामान्य संतान उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक लेल जखन कोलकाता अबैत छलाह तऽ आवासक बड़ दिक्कत होइत छलैन आर अहि दिक्कत केँ दूर करबाक उद्देश्य सँ कोलकाता मे बनल ''बिहार प्रवासी छात्र संघ''।

एक तरफ कीर्तन मंडलीक सक्रियता देखल जाइत छल

गिरीश पार्क मे। प्रायः प्रत्येक रविक दिन श्रमजीवी मिथिलावासीओ धार्मिक चेतना सँ ओत-प्रोत प्रवासी लोकनि बेशी सँ बेशी संख्या मे उपस्थित होइत छलाह आर ढोलक, झालि मृदंगक संग-संग झूमि-झूमि कऽ कीर्तन करइत छलाह। कीर्तन देखवाक एवं सुनबाक लेल बंगवासी सभ सेहो आबि जाइत छलाह। गिरीश पार्क मिथिलावासी सभक जमघट केन्द्र छल। एहि मे मुख्य भूमिका छल भनसिया, दरबान, ट्राम कर्मचारी, शिक्षक एवं अन्य श्रमजीवी बन्धुएतय जातीय भेद-भावक संकीर्णता नहि देखल जाइत छल।

सामाजिक चेतनाक विकास सेहो एहि ठाम देखल जाइत छल। प्रवासी बन्धु अपन गाम घरक लोग सँ भेंट करबाक, चिट्ठी-पत्री पठयबाक, समादवारी बुझबाक आ कखनो काल गाम पर टाका पठयबाक लेल सेहो ग्रामीण सभसँ भेंट घाँटलेल जुटइत छलाह। दोसर संगठन छल प्रवासी मिथिलावासीक छात्र सभक। एक स्थान छल बिहार प्रवासी छात्र संघ। बिहार प्रवासी छात्रक बीच एकटा पारस्परिक सहायता माओर सम्पर्क एक आन्दोलन केँ रूप मे अपनौने छल।

प्रारम्भ मे प्रवासी मिथिलावासीक लेल आवासक अभाव रहैत छलैन। छात्र सभहक लेल ई समस्या विकराल छल। मुदा बिहार प्रवासी छात्र संघ द्वारा स्थापित भेल राजेन्द्र छात्र निवास। तत्कालीन कामरेड मैथिली भाषा साहित्य आर समाजक लेल प्रतिबद्ध श्री सत्यनारायण लाल जीक संरक्षण में अहि समस्याक निदान होबऽ लागल जे वर्तमानो मे अपन स्वरूप केँ बचौने अछि। अहि केँ अलावा प्रवासी मिथिलावासी छात्र सभहक अध यनक हेतु राजेन्द्र छात्र भवनक निर्माण भेल आर सम्प्रति ओहो अपन विशाल रूप अंगीकार कऽ उच्च शिक्षा प्राप्त कर वाला प्रवासी मिथिलाक छात्र लेल ध्वजवाहक बनि कार्य कऽ रहल अछि। ओना कोलकाता मे जे कनिको अइलफैल जगह पर रहैत छलाह तऽ विभिन्न नाम सँ छात्रावासक रूप मे सामान्य छात्र केँ आवासक समस्या सऽ मुक्ति दियेबा मे अपन योगदान दैत रहलाह।

अहि क्रम मे किछु प्रतिबद्ध व्यक्तित्वक संगठनात्मक क्षमता प्रवासी मिथिलावासीक लेल नवचेतना भाषाई प्रतिबद्धता आर प्रवासी मिथिलावासी केँ एक सूत्र मे बन्हवाक लेल कार्य प्रारम्भ केलनि। जाहि मे स्वद्द हरीश चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु', स्वद्द उदित नारायण झा, स्वद्द बाबू साहेब चौधरी, स्वद्द प्रबोध नारायण सिंह, स्वद्द देवनारायण झा, स्वद्द महेन्द्र झा जीक संग कोलकाताक विभिन्न साहित्य सांस्कृतिक अनुरागी सभ आगा अयलाह आर अहि क्रम मे विभिन्न संस्थाक माध्यम से विद्यापति पर्व समारोहक आयोजनक माध्यमे मिथिलाक सांस्कृतिक चेतना, साहित्यिक चेतना केँ जागृत करबाक लेल पोथी प्रकाशनक व्यवस्था होमय लागल। सांस्कृतिक कार्यक्रम, मैथिली पोथीक प्रकाशन आर गणतांत्रिक प्रक्रियाक माध्यम सऽ मैथिली मिथिलाक सर्वांगीण विकासक माँग मे कोलकाताक भूमिका समस्त मिथिलावासीक मोनक भावना मे मैथिली भाषा, संस्कृति, सभ्यताक संग राष्ट्रीय चेतनाक प्रति सजगता अनबामे अग्रदूतक भूमिका अदा केलैन आर कोलकाताक ई लुत्ती सम्पूर्ण भारतवर्ष मे रहनिहार प्रवासियो मिथिलावासीक संगे मिथिलाक गाम-गाम मे पसरि गेल। कालेक्रमे युवा वर्ग मे सेहो अपन माँटि-पानि, खेत-खरिहान, साहित्य-संस्कृतिक प्रति अनुराग पनपैत गेल।

समवेत संस्था बनल आर संस्थाक नाम पर होबऽ लागल साहित्यिक सामाजिक सांस्कृतिक चेतनाक आंदोलन। अपन भाषाक लेल प्रेम आतकर उन्नति विकासक लेल प्रयत्नक प्रतिफल भेल एहिठाम मैथिलीसेवी संस्था सभहक गठन। पूर्व मे सभा-समावेश, आन्दोलन- अनशन, जुलूस-स्मार पत्र, पोथी-पत्रिकाक प्रकाशन दिस कोलकाता एवं उपनगरीय कोलकाताक संस्था सभ अग्रणी भेलाह। साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीक मान्यता, विद्यापति डाक टिकस ओ मिथिला एक्सप्रेस ट्रेनक नामकरण। बिहार लोकसेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिली, मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना, दड़िभंगा रेडियो स्टेशनक स्थापना। मिथिला विकास परिषदक प्रयास से सर्वप्रथम कोलकाता दूरदर्शन से मैथिली भाषाक कार्यक्रम प्रसारण, अहि संस्थाक प्रयास सऽ एक गैर सरकारी चैनल ताजा खबर पर कवि गोष्ठी समेत अन्यान्य मैथिली कार्यक्रमक प्रसारण मैथिली केँ भारतक संविधानक अष्टम अनुसूची में शामिल करबाल लेल गणतांत्रिक आंदोलनक पृष्ठभूमि कोलकाता मे तैयार भेल। अहि क्रम मे एहि गप्पक उल्लेखन करब आवश्यक जे मैथिलीकेँ भाषाई संवैधानिक मान्यता भेटवा सऽ पूर्व लोकसभा मे मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूची मे शामिल करबाक औचित्यता पर मिथिला विकास परिषद, कोलकाता द्वारा कएल एवं देल गेल दस्तावेज केँ केन्द्रित कऽ भारतक प्रथम गैर मैथिल तृणमूलक तत्कालीन सांसद श्री सुदीप बंदोपाध्याय द्वारा संसद मे प्रश्न उठोने छलाह। जे समस्त मैथिली अनुरागी, साहित्यकार, राजनेता केँ मकरध्वजक कार्य केलक आर नव कलेवर लऽ कऽ मैथिली भाषाक संवैधानिक मान्यताक प्रश्न पर सभ एकबद्ध भऽ गेलाह। मैथिली मिथिलांचलक सर्वांगीण विकास मे पूर्व मे हावड़ा सऽ दरभंगा-जयनगर बड़ी रेल लाइनक निर्माणक हेतु विभिन्न संस्था द्वारा कएल गेल आंदोलनक ई परिणाम अछि जे पहिने समस्तीपुर सऽ दरभंगा आर तत्पश्चात् जयनगर धरि बड़ी रेल लाइनक निर्माण भेल। मिथिला विकास परिषदक अनुशंसे केँ परिणाम अछि जे तत्कालीन रेलमंत्री श्रीमती ममता बंदोपाध्याय एवं तत्कालीन सांसद श्री सुदीप बंदोपाध्याय जीक द्वारा सियालदह सऽ दरभंगा धरि सवारी गाड़ी जे पूर्व मे साप्ताहिक चलैत छल ओहि केँ प्रतिदिन करेबा आर

समय परिवर्तनक कार्यकराकऽ प्रवासिये मिथिलेवासी नहि गाँव घर मे रहनिहार व्यवसायी भाई लोकनि केँ कोलकाता मे व्यवसाय करबाक लेल एक सुखद आधारशिलाक निर्माण भेल। वर्तमान मे जयनगर धरि बड़ी रेल लाइनक निर्माण सऽ राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यवसायिक सामंजस्यताक सूत्रपात मे कोलकाता प्रवासी मैथिल संस्था मिथिला विकास परिषदक भूमिका केँ नजरअंदाज नहि कऽ सकैत अछि।

महत्वपूर्ण कार्य मे प्रवास मे रहनिहार मैथिलीभाषी संस्थाक योगदान आर अवदान सर्वविदित अछि। वर्तमान काल मे सेहो कोलकाता मे कार्यरत मैथिली संस्था सभ अपना अपना ढंग सऽ मैथिलीभाषा, साहित्य, सामाजिक आरराष्ट्रीय चेतनाक कार्य मे सजग प्रहरीक भूमिका प्रस्तुत कऽ रहल अछि। मैथिली भाषाक उत्थानक लेल जतेक कार्य कोलकाता एवं उपनगरीय कोलकाता मे भेल अछि वा प्रवासी मिथिलावासी भारतीय संस्कृति धारा मे मैथिल संस्कृतिक विलक्षण स्थान बनेबा मे सफल रहल। प्रवास मे रहनिहार मिथिलावासी द्वारा वर्तमान विषम परिस्थितियो मे अहि तरहक पैघ धारावाहिक, साहित्यिक प्रवाह केँ गतिशीलता प्रदान कऽ रखवाक गौरवमयी इतिहास कोलकाता एवं उपनगरीय कोलकाताक मैथिली संस्थे केँ प्राप्त अछि। वास्तव मे कोलकाता एवं उपनगरीय कोलकाता मे कार्यरत मैथिली संस्था द्वारा कएल गेल कार्य अनेकता मे एकताक परिचायक अछि।

मैथिली भाषा साहित्यिक नव जागरण मे कोलकाता एवं उपनगरीय कोलकाताक अवदान अनेक दृष्टिएँ मूल्यांकित भेल अछि। अनेक शोध निबन्ध, गद्य-पद्यक कृति विशेषक रचना वैशिष्ट्य पर पोथीक प्रकाशन शोधकर्ताक पृष्ठभूमि तैयार करबा मे प्रयोजनीय सामग्रीक रूप मे उपयोगी सिद्ध भेल अछि। अहि क्रम मे स्वद्र बृज किशोर वर्मा "मणिपद्मजीक'' जीक दुलरा दयाल, आर यात्रीजीक बलचनमा पोथी जे एक काल में कोलकाताक साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था, मिथिला सांस्कृतिक परिषद प्रकाशित केने अछि अहि महत्त्व केँ नकारल नहिं जा सकैत अछि।

कोलकाताक विभिन्न संस्था द्वारा समय-समय पर पोथी-पत्रिकाक प्रकाशन दिस अग्रसर रहि मैथिली भाषा साहित्यक भण्डार मे श्रीवृद्धि कऽ सिद्धहस्त साहित्य विदक बहुउद्देशीय ऐतिहासिक पोथी विद्यापति पर्व अंक, मैथिली भाषा आ साहित्य, आधुनिक मैथिली साहित्य, गल्पसुधा, गीतांजलि (पद्यानुवाद), बलचनमा, विद्यापति वाङ्मय, लोरिक विजय, रंजना, नैका बनिजारा, मेघदूत (पद्यानुवाद, भू-परिक्रमणम् (संस्कृत), भू-परिक्रमणम् (मैथिली), तापस कवि विद्यापति, फूटपाथ, हनुमान चरित, अष्टदल, अन्तहीन आकाश, दुलरा दयाल, बाट आ बटोही, स्वतंत्रता आंदोलन मे मिथिलाक योगदान, कठोपनिषद (मैथिली व्याख्या) जनक आर याज्ञवल्क्य, मातृ दोहावली, लोरिक विजय (पुनर्मुद्रण) वियाह संविधभारी, कर्णगोष्ठी द्वारा सेहो अनेक पोथी प्रकाशित कएल गेल अछि। वर्तमान मे मिथिला विकास परिषदक डेग पोथी प्रकाशन दिस बढ़ल अछि। आर नव नव लेखक कविक काव्य संग्रह, नाटक सन पोथीक प्रकाशन कऽ नवतुरिया रचनाकार, कवि नाट्यकार केँ प्रोत्साहित करबा मे रूचि रखने अछि। अहि क्रम मे अशोक झा द्वारा लिखल गेल मैथिली नाटक जीबैत लाश, कमऊआ पूत, इजोरिया अवस्से हेतै (काव्य-संग्रह), सुनगैत सपना (काव्य संग्रह), फूलचन्द झा द्वारा लिखल नाटक आंदोलन, हमरा मोनक खंजन चिड़िया (काव्य संग्रह), सन् पोथीक प्रकाशन भेल अछि। पोथी प्रकाशनक अहि क्रम मे कोलकाताक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा प्रकाशित पोथी नैका बनिजारा पर श्री बृजकिशोर वर्मा मणिपद्म जीकें साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार भेटल छैन। 1952 सँ आई धरि कोलकाताक विभिन्न संस्था द्वारा तकरीबन 125 पुस्तकक प्रकाशन कोलकाता प्रवासी मैथिली संस्था केँ भाषाक प्रति अनुरागक प्रतिबद्धता केँ प्रमाणित करैत अछि। प्रकाशनक क्षेत्र मे स्वद्र प्रबोध नारायण सिंह जीक व्यक्तिगत अवदान भाषाई प्रतिबद्धताक परिचायक अछि। स्वद्र प्रबोध नारायण सिंह जीक धर्मपत्नी डाद्र अनिमा सिंह जी द्वारा संकलित आर संपादित मैथिली गीत संग्रह मैथिली लोकगीतक आर कोलकाताक प्रकाशनक समिति द्वारा प्रकाशित पोथी वर्तमान मे मैथिली भाषा, साहित्यिक क्षेत्र मे दस्तावेज बनि आइयो चर्चित अछि।

उपरोक्त पोथीक अलावा कर्णगोष्ठी द्वारा बृज किशोर वर्मा 'मणिपद्म' जीक अर्द्धनारीश्वर, नागभूमि, भारतीक बिलारि, हुनका सं भेंट भेल छल (अहि पोथी मे मणिपद्म जीक संस्मरण पर आधारित 63 गोट संस्मरण संग्रहित अछि)। अनमिल आखर (एकांकी संग्रह), अनंग कुसुमा (महाकाव्य मणिपद्म), मणिकण (मणिपद्मीक काव्य संग्रह), कनकी (मणिपद्म जीक उपन्यास), तेसर कनियां (मैथिली नाटक) श्रीमती लीलीरे केँ लघु उपन्यास, 'जिजीविषा' मैथिलीक दधिचि बाबू भोलालाल दासलेखक शंभुनाथ मिश्र, श्री प्रदीप बिहारी द्वारा लिखल नाटक (मणिपद्म जीक उपन्यास पर आधारित) फुटपाथ, श्रीमती ललिता दत्त द्वारा लिखल पोथी ललित गीत संग्रह। डा. वीरेन्द्र मल्लिक जीक काव्य संग्रह 'अग्निशिखा', श्री राजनंदन लाल दास जी द्वारा लिखल चित्रा-विचित्रा, मणिपद्मजीक आदिम गुलाम, श्री प्रदीप बिहारी जीक उपन्यास विषुमियस। मणिपद्मक पत्र (सं. डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन), विनोद बिहारी लाल जी द्वारा लिखल कथा संग्रह खोहक अन्हार, रमानंद रेणुक उपन्यास उत्तर जनपद, श्री राजनंदन लाल दास जीक संपादन मे मुंशी रघुनंदन दास, व्यक्तित्व ओ कृतित्व। श्री प्रेमशंकर सिंह जी द्वारा लिखल श्प्रपाणिकाश्। राधा छवि माधुरी लेखक मुंशी रघुनन्दन दास अखिल भारतीय

मिथिला संघ द्वारा सेहो अनेको पोथी प्रकाशित भेल अछि। जाहि मे प्रमुख अछि आरसी प्रसाद सिंह जीक माँटिक दीप, मधुपजीक 'झंकार', प्रवासी साहित्यालंकार जीक कविता संग्रह अरूनिमा, मायानन्द मिश्र जीक उपन्यास 'बिहारिपात-पाथर', कथासंग्रह आगि-मोम- पाथर मणिपद्‌म जीक विद्यापति उपन्यास, राध ाकृष्ण चौधरीक दार्शनिक पुस्तक 'शारन्तिधा', हरि मोहन झा जीक हास्य व्यंग्य पोथी 'चरचरी', राजकमल चौधरीक उपन्यास आदि कथा।मैथिली प्रकाशन समिति द्वारा मणिपद्‌म जीक लोक साहित्य राजा सलहेसश, राधाकृष्ण चौधरी जीक 'धम्मपद', 'लवहरि-कुशहरि।'

आल इंडिया मैथिल संघ द्वारा प्रकाशित पोथी मे प्रमुख अछि मणिपद्‌मजीक 'राय रणपाल' (लोक साहित्य), श्री राजनंदन लाल दास जी द्वारा लिखल नाटक 'संतो', बाबू भोला लाल दास एवं राजेश्वर झा- व्यक्तित्व आर कृतित्व संपादक श्री राजनंदन लालदास। प्रधान संपादक डा. असर्फी झा, श्री नवीन चौधरी जीक सम्पादन मे मिथिला संघर्ष समितिक स्वनामधन्य श्री कमलेश जीक प्रयास सऽ मधुप जी पर केन्द्रित बेस झमटगर पुस्तक श्अमर कीर्ति कवि तोर, विद्यापति स्मारक मंच द्वारा 'कविपति विद्यापति मतिमान सपादक श्री ताराकांत झा। मिथिला सेवा समिति बेलुड़ द्वारा प्रकाशित एवं स्व. जयधारी सिंह 'प्रभाकर' जीक संपादन मे कथा सरिता।

मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा मणिपद्य जीक कथा-संग्रह 'साहित्य कारक दिन' सेहो प्रकाशित भेल अछि। लोकसाहित्य परिषद द्वारा सेहो पोथी प्रकाशित भेल अछि जाहि मे प्रमुख अछि डा. अनिमा सिंह द्वारा संपादित आर संकलित मैथिली लोकगीत। डा. प्रबोध नारायण सिंह जी द्वारा लिखल नाटक 'चोर'।

मैथिली रंगमंच द्वारा प्रकाशित पोथी मे प्रमुख अछि स्व. डा. ईला राणी सिंह जी द्वारा बंगला सऽ अनुवादित पोथी 'प्रेम एक कविता', नचिकेता जी द्वारा लिखल मैथिली नाटक 'एक छल राजा', स्व. सीताराम चौधरी जी द्वारा अनुवादित मैथिली नाटक 'सुखायल डारि-नव पल्लव', बेमातर, मोहन चौधरी जीक अनुवादित नाटक 'चन्द्रगुप्त' (मूल जयशंकर प्रसाद), दीनानाथ झा जी द्वारा अनुवादित नाटक आगंतुक (मूल नारायण गंगोपाध्याय) व्यक्तिगत स्तर पर श्रीराम लोचन ठाकुर जी द्वारा लिखल, अनुवादित बहुतरास पोथी प्रकाशित भेल अछि। जाहि मे इतिहास हंता, माँटि-पानिकगीत, अपूर्वा, देशक नाम छलै सोन चिरैंया, लाख प्रश्न अनुत्तरित (सभ काव्य संग्रह) बेताल कथा (हास्य व्यंग्य) स्मृतिक धोखरल रंग, आँखि मुनने आंखि खोलने मैथिली लोककथा, प्रतिध्वनि (अंग्रेजी सऽ अनुवादित) जा सकैत छी, किन्तु कियैक जाऊ (बंगला सऽ) फाँस (अनुवादिक नाटक), जादूगर, रिहरसल अहि केँ अलावा हुनका द्वारा जे अनुवादित नाटकक पोथी अछि ओहि केँ मंचन तऽ भेल अछि मुदा प्रकाशित नहि भेल अछि। कुर्मी छात्रवृत कोष द्वारा स्व. देवन मंडल जी द्वारा लिखल नाटक 'महकारी'। मैथिली रंगमंच द्वारा प्रकाशित भेल अछि स्व. गीतेश्वर मंडल जीक नाटक क्षमादान। स्वद्र उत्तम लाल मंडल जीक 'ईजोत' नाटक। व्यक्तिगत स्तर पर स्व. जनार्धन झा जीक पोथी 'निश्कलंक', 'अरुणोदय', 'अभिनेत्री' आदि। स्व. शरतचन्द्र मिश्र जीक द्वारा लिखल नाटक 'समाज केँ बदलि दिय'। व्यक्तिगत स्तर पर श्री सुशील झा जी द्वारा लिखल गेल उपन्यास घरारी आ गामवाली, मैथिली नाटक भामती प्रमुख अछि। श्री नवीन चौधरी जीक पोथी 'बाट आ बटोही' जकर प्रकाशन मिथिला सांस्कृतिक परिषद केने अछि। कोलकाता मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन द्वारा आयोजित कार्यक्रम मे युग प्रवर्तक कविश्वर चन्दा झा पोथीक प्रकाशन कोलकाताक गौरवमयी साहित्यिक इतिहास मे लिखायल अछि। अहि ठाम ई उल्लेख करैत गर्व भऽ रहल अछि जे अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन द्वारा अधिकार दिवसक अवसर पर भारतक मुम्बई, दिल्ली, कोलकाता आर चेन्नई मे समारोहक आयोजन भेल मुदा पोथी प्रकाशनक ऐतिहासिक कार्य कोलकाते सँ भेल जकर संपादक श्री रामलोचन ठाकुर जी छलाह आर पोथीक सम्पूर्ण प्रकाशन व्यय कोलकाताक मैथिली अनुरागी श्री कामदेव झा जी देने छलाह।

राष्ट्रीय चेतनाक विश्वासत्मकता दिस देश प्रेम प्रदेशक हित बाधित नहिं साधित रूप में 'विश्व तखनहिं मदिरा राष्ट्रक क्षेत्र, देशप्रेम ज्योतित प्रदेश प्रतिमेम'।

अहि प्रसंग केँ उल्लेख अहि द्वारे करैत छी जे प्राकृतिक विपदा यथा मिथिला मे आयल सन् 1987 केँ भूकम्प हो वा हो ओहि वर्षक प्रलयंकारी बाढ़ि कोलकाता मे रहनिहार प्रवासी मिथिलावासी प्राकृतिक विपदा मे फसल हमर माँटि-पानि पर रहनिहार, बसनिहार माय, बहीनक प्रति व्याकुलताक संगराहत सामग्री जुटाबऽ लेलतत्पर भऽ शक्ति साधनक संग प्रवास सऽ दौर कऽ ओहि माँटि-पानि पर राहत कार्य करबालेल आतुर भऽ जाइत छथि। वर्तमान मे 2008 वर्षक अगस्त मे कोशी नदीक उफान आर ओहि सँत्रस्त मिथिलांचलक लोकवेदक प्रति सेवाक मनोभाव सऽ कोलकाताक प्रवासी मिथिलावासी भाव विह्वल भऽ उठलाह आर दौरिगेलाह कोसीक प्राकृतिक विपदा मे फंसल मा-बहिनक उद्धारक लेल राहत सामग्री लड कऽ। मिथिला विकास परिषदक सदस्य तकरीबन सवा लाखक औषधि लऽ कऽ गेलाह सहरसा आर पूर्णियाक सुदूर गाँव मे सामाजिक आरराष्ट्रीय चेतना मे अपना उपस्थिति दर्ज करा कऽ कोलकाताक प्रवासी मिथिलावासी अपन कर्तव्यबोधक परिचय देलैन। पूर्व मे तऽ मिथिला विकास परिषदक सेवा कार्यक वर्णन करबाक आवश्यकता नहि कारण

कर्म अपने बजैत अछि। कोनो कालक इतिहास केँ नुकाएल नहिं जा सकैत अछि। इतिहास साक्षी अछि जे कोलकाताक प्रवासी मिथिलावासीक अखिल भारतीय मिथिला संघ, मैथिली प्रकाशन समिति, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, मिथिला विकास परिषद सहित आन-आन संस्था द्वारा साहित्यिक गोष्ठी, कवि गोष्ठी, एकल पाठ एवं मिथिलाक विभिन्न स्वनाम धन्य साहित्य अनुरागी केँ उपस्थिति मे साहित्यिक गतिविधिक आयोजन होइत रहल अछि। अहि क्रम मे स्व. हरिमोहन झा, स्व. बृज किशोर वर्मा 'मणिपद्म', यायावर कवि बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री-नागार्जुन', आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन', स्व. काशीनाथ मिश्र 'मधुपजी', डा. रामदेव झा, पंद्र चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', श्री जयकान्त मिश्र, पं. गोविन्द झा, डा. सुरेश्वर झा सन अनन्य भाषाई विद्वतजनक सान्निध्य मे आयोजित गतिविधि मे उपस्थित भऽ कोलकाताक गौरवमयी साहित्यिक इतिहासक पन्ना केँ साक्षी बनल छथि।

विगत 7 वर्ष मे साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित आर कोलकाताक मिथिला विकास परिषदक सहयोगिता सऽ साहित्य अकादेमी नई दिल्ली मे मैथिली परामर्थदात समितिक तत्कालीन संयोजक डा. रामदेव झा जीक कार्यकाल मे मैथिलीक 2 टा राष्ट्रीय गोष्ठी आर तत्पश्चात् पं. चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर' जीक संयोजन काल मे बीतल 5 वर्षक कार्यकाल मे विभिन्न विषय पर पांच टा सेमिनार, 2 टा नवोदित कवि द्वारा कवि गोष्ठी, महिला केँ प्रोत्साहित करबाक उद्देश्य सँचारि बेर स्मिता आर मुलाकात कार्यक्रमक टटका आयोजन अहि गप्प केँ प्रमाणित करैत अछि जे वर्तमान काल मे सेहो प्रवासी मैथिली संस्था मे मैथिली भाषा, साहित्यिक प्रति प्रतिबद्धता आर कर्तव्यबोधक मर्म सन्निहित अछि।

सांस्कृतिक आर मिथिलाकव्यक्तित्वक प्रति कोलकाताक सजगता अहि गप्प सऽ प्रमाणित होइत अछि जे मिथिलाक माँटि-पानि सऽ दूर रहियो कऽ मिथिला विकास परिषद द्वारा सन् 1996 मे कविपति विद्यापतिक प्रस्तर प्रतिमा कोलकाताक ऐतिहासिक गिरीश पार्क मे स्थापित भेल अछि आर 29-30 दिसम्बर 2008 कऽ परिषद् द्वारा पुनः यायावर कवि बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री नागार्जुन' जीक मूर्ति कोलकाताक ऐतिहासिक तारा सुंदरी पार्क मे स्थापित कऽ प्रवास मे रहनिहार मैथिली भाषीक हृदय मे मैथिली भाषा साहित्यक ध्वजवाहक व्यक्तित्वक प्रति उमड़ल श्रद्धा, भाषानुरागक प्रतिबद्धता केँ प्रमाणित करैत अछि। माँटि-पानि सऽ दूर बहुत दुर रहयवाला सभ वर्ग वर्णक लोकक सहयोग सऽ ईकाज सम्भव होइत अछि। कारण कार्य भले ही मिथिला विकास परिषद्क प्रयास सऽ संभव भेल हो मुदा ई उपलब्धि प्रवासी मिथिलावासीक साहित्यिक, सामाजिक प्रतिबद्धता केँ प्रमाणित करैत अछि। अहि मूर्ति स्थापना भेलाक उपरान्त कोलकाताक अन्य संस्था विद्यापति स्मारक मंच द्वारा सियालदह उड़ान पुलकनाम विद्यापति सेतुआर ओहि सेतुक निकट पुनः विद्यापतिक मूर्ति स्थापना ऐतिहासिक प्रमाण केँ प्रमाणित करैत अछि। अतबे नहिं प्रवासी मिथिलावासीक संस्था द्वारा ऐतिहासिक हावड़ा पुल सऽ संलग्न उड़ान पुलक नाम चण्डीदास सेतुक नाम सऽ करेबाक प्रस्ताव दऽ कऽ प्रवास मे रहनिहार मैथिली संस्था सामाजिक समरसता आर बंगाल एवं मिथिलाक अटूट सांस्कृतिक एकता चेतनाक संग चिंतन धाराक डोर केँ मजबूत बनाकऽ राष्ट्रीय चेतनाक पूंजी मे वृद्धिक केलक अछि।

कोलकाता मे मैथिली नाट्य मंचक शुभारंभ होइत अछि 1953-54 सें। स्थानीय डागा धर्मशाला मे सर्वप्रथम 1954 मे 'छींक' प्रहसन आर ओहि वर्ष 'उगना' नाटक सेहो मंचन भेल। 30 दिसम्बर, 1956 केँ उषा फैक्टरीक कर्मी स्व. कान्ति बिहारी मिश्रक मनोहर पोखरीक आवास पर 'मिथिला कला केन्द्र' नामक नाट्य संस्थाक माध्यम सऽ कोलकाता मैथिली नाट्य मंचक तत्कालीन युवा वर्ग द्वारा धारावाहिक नाट्य मंचनक माध्यम से प्रवास मे कला एवं कलाकारक क्रांति प्रारम्भ भेल। 1960 मे मिथिला कला केन्द्र द्वारा 'हाथीक दाँत'क मंचन भेल। अहि मंचक अध्यक्ष छलाह सुप्रसिद्ध नाट्यकार स्व. सीताराम चौधरी आर सचिव छलाह श्रीकांत मंडल। 1966 केँ जनवरी में एकटा नाट्य संस्था मैथिली रंगमंचक जन्म भेल आर 10 वर्षक अल्पायु मे मैथिली रंगमंच छोट-पैघ 18 टा नाट्य मंचन केलक आ 10 गोट नाटकक पोथीक सेहो प्रकाशन भेल। एहि तरहे प्रकाशित पोथी मे मौलिक आ अनुवाद पोथी छल। एहि ठाम ई उल्लेखनीय अछि जे कला केन्द्र द्वारा मंचित नाटक मे चारि गोट मौलिक नाटक छल जाहि मे तीनटाक लेखन प्रकाशन कोलकाता सँ भेल अछि। 1970 मे कलाकेन्द्र इतिहासक पन्ना पर चलि गेल आर नाट्य मंचनक नव इतिहासक सृजन भेल। संस्थाक नाम भेल 'मिथियात्रिक'। डा. असर्फी झा जीक अध्यक्षता मे अहि नाट्य संस्थाक सचिव भेलाह सुप्रसिद्ध नाट्यकार श्री गुणनाथ झा जी।

वस्तुतः कोलकाताक अखिल भारतीय मिथिला संघ जकर मुख्य उद्देश्य छल आंदोलनात्मक कार्यक्रम मुदा इहो संस्था 11 गोट नाटक केँ मंचल केने छल। 1974 सँ 1982 धरि कोलकाताक मैथिली रंगमंचक संक्रमण काल छल। 1983 मे युवा वर्गक लऽ कऽ मैथिली भाषा, संस्कृति आर कलाक आंदोलन मे मिथिला विकास परिष द्वारा प्रारम्भ भेल मैथिली नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामाजिक उत्थान आर आंदोलनक जय यात्रा। एहि संस्थाक अध्यक्ष भेलाह मधुबनी जिलांतर्गत बरहा गामक अशोक झा। ई संस्था अपन जन्मकाले सँ प्रारम्भ केलक मैथिली नाटक। मेटेलक कोलकाता मैथिली नाट्य मंच पर आयल तकरीबन 10 वर्षक ग्रहण केँ हटा कऽ मंचित भेल 1983 मे। श्री गुणनाथ झा

जी द्वारा लिखित मैथिली मौलिक नाटक 'शेष नहिं'। जाहिक निर्देशक छलाह सुप्रसिद्ध मैथिली नाट्यमंचक निर्देशक एवं अभिनेता स्व. दयानाथ झा। मैथिली रंगमंचक माध्यम सँ कोलकाताक मैथिली नाटकक गौरवमयी 50 वर्ष सऽ बेसी केँ इतिहास अहि गप्प केँ प्रमाणित करैत अछि जे प्रवास मे रहनिहार युवा मैथिल अपन रोजी-रोटीक संग मैथिली नाटकक इतिहास केँ गौरवान्वित करैत रहला अछि। मैथिली नाट्य मंचक माध्यम सऽ मैथिली नाटकक विकास अहि गप्प केँ प्रमाणित करैत अछि जे कोलकाता एवं उपनगरीय कोलकाता मे विगत 1953-54 सऽ दिसम्बर 2008 धरि विभिन्न नाट्य मंच यथा मिथिला कला केंद्र द्वारा 9 गोट नाटक, मैथिली रंगमंच द्वारा 18 गोट नाटक, अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 11 गोट नाटक, मिथियात्री द्वारा 5 गोट नाटक, 'मिथिला विकास परिषद' द्वारा 30 गोट नाटक, कोकिल मंच द्वारा 22 गोट नाटक, कुर्मी क्षत्रीय छात्रवृत्ति कोष द्वारा 3 गोट नाटक, आल इंडिया मैथिल संघ द्वारा 2 गोट नाटक, कर्ण गोष्ठी/जयन्त लोकमंच द्वारा 2 गोट नाटक, मिथिला सेवा संस्थान द्वारा 3 गोट नाटक, बैदेही कलामंच द्वारा 4 गोट नाटक, झंकार बेलुड़ द्वारा 6 गोट नाटक, मिथिला सेवा समिति बेलुड़ द्वारा 6 गोट नाटक, उदय पथ द्वारा 3 गोट नाटक केँ मंचन मैथिल नाट्य मंचक प्रति मैथिली कला साहित्यिक प्रति प्रवास मे रहनिहार मैथिली भाषीक प्रतिबद्धता केँ प्रमाणित करैत अछि। वर्तमान मे अखनो मिथिलाक विकास परिषद् आर कोकिल मंच उपनगरीय कोलकाताक बेलुड़ मे मिथिला सेवा समिति, रिसड़ा मे मिथिला कल्याण परिषद् जीवंत मैथिली नाट्य मंच अछि। आर बाँकी उल्लेखित मैथिली मंच प्रायः मृतप्राय अछि। वर्तमान मे कोलकाता मैथिली नाट्यमंचक कलाकार, निर्देशक, नाट्यकार रंगमंचक प्रति ततेक प्रतिब्ध छथि जे वर्ष मे 3-4 टा मैथिली कोलकाता नाटकक मंचन होइत अछि। मिथिला विकास परिषद् द्वारा तै कोलकाते नहिं अरिपन नाट्य प्रतियोगिता पटना, क्षेत्रीय ग्रामीण नाट्य प्रतियोगिता, सरिसव पाही, जनकपुर मे नाट्य महोत्सव, बोकारो मे नाट्य प्रतियोगिता मे भाग लऽ कऽ ध्वनि, गीत-संगीत, रूप सज्जा, निर्देशनक संग विद्युत परिकल्पनाक शीर्ष स्थान प्राप्त कऽ मैथिली नाट्य मंच केँ नव कलेवर आर दिशा निर्देश देबा मे सफल रहल अछि। ई गौरवक गप्पअछि जे पूर्व मे महिला कलाकारक जे अभाव मैथिली रंगमंच केँ छल ओहि संक्रमण काल सऽ वर्तमान कोलकाताक मैथिली रंगमंच उबरि गेल अछि आर मिथिला विकास परिषद्क मंच पर श्रीमती शैल झा, श्रीमती संगीता झा, श्रीमती वंदना ठाकुर, श्रीमती रूपा चौधरी, सुश्री (श्रीमती) झूमा चौधरी, कुमारी सपना झा, कुमारी साधना झा, प्रीति प्रतिहस्त, बबली प्रतिहस्त, श्रीमती मंजु मल्लिक, श्रीमती बेला झा, श्रीमती शारदा चौधरी सन मैथिली भाषी महिला कलाकार मैथिली मंच पर अपन आदर्शक छाप छोड़बा मे सफल भेलीह। अहि क्रम मे कोकिल मंच सेहो एकटा नव मैथिलानी महिला कलाकार श्रीमती किरण झा केँ मंच पर अनबा मे सफल रहल अछि। वर्तमान मे मैथिली नाट्य लेखनक क्षेत्र मे मिथिला विकास परिषद्क वर्तमान अध्यक्ष अशोक झा द्वारा लिखित मैथिली गौलिक नाटक जीवैत लाश, कमऊआ पूत, वीरों, द्वन्द, भोरका मेघ, मँइया, सच सऽ बेशी झूठ, हम नहिं इ सब जाहि मे जीबैत लाशक संग कमऊआ पूतक प्रकाशन सेहो मिथिला विकास परिषद् द्वारा भेल अछि। ठीक एहि काल मे श्री कृष्ण चन्द झा रसीक एवं आनन्द कुमार झा, फूलचन्द्र झा 'प्रवीण' द्वारा नाटक लिखल गेल। विगत 1983 सऽ आई धरि मैथिली रंगमंच पर मिथिला विकास परिषद्एवं कोकिल मंच द्वारा कोलकाता मे मैथिली नाटकक मंचन भऽ रहल अछि। आर अहि काल मे बेलुड़ मे झंकारक उपेक्षाकृत मिथिला सेवा समिति आर रिसड़ा मे मिथिला कल्याण परिषद् संस्था मैथिली रंगमंचक प्रति प्रतिबद्ध संस्था अछि। अहि 1983 सं 2008 धरि निर्देशक आर नाट्यकारक संग कलाकारक रूप मे मिथिला विकास परिषद्क अध्यक्ष अशोक झा खुब चर्चित रहलाह। एम्हर निर्देशन आर कलाकारक रूप मे कोकिल मंचक श्री गंगा झा आर मिथिला सेवा समिति बेलुड़क नाट्य मंचक निर्देशक आर कलाकारक रूप मे श्री भवनाथ झा मैथिली रंगमंचक प्रति एक सजग प्रहरीक रूप मे कोलकाता एवं उपनगरीय कोलकाताक मैथिली रंगमंच केँ जिएबा मे अपन सक्रियताक पूंजी लगोलैन

अतीत मे मैथिली नाट्य निर्देशन एवं कलाकारक रूप मे स्व. दयानाथ झाजी, स्व. विश्वम्भर ठाकुर, स्व. फेकू मिश्र, स्व. श्रीकांत मंडल, स्व. ईला राणी सिंह, कुणाल, डा. वीरेन्द्र मल्लिक, रामलोचन ठाकुर एवं शंभु नाथ मिश्रक नाम उल्लेखनीय अछि। वर्तमान काल मे गोपीकान्त झा 'मुन्ना', राघवेन्द्र झा, नारायण ठाकुर, श्रीमती वंदना ठाकुर, श्रीमती संगीता झा, विनय प्रतिहस्त, अशोक झा 'भोली', कैलाश मिश्र, टिंकू झा, अवनीश कुमार झा 'भगवान', सुधा झा, भवनाथ झा सन-सन अनेको युवा प्रौढ़ प्रतिबद्ध कलाकारक पैघ सूची अछि जे मैथिली रंगमंचक उज्ज्वल भविष्य दिसलऽ जायवाला सजग प्रहरी कलाकारक रूप में जानल जाइत छथि। कुल मिलाकऽ कोलकाता मैथिली नाट्य मंच पर मिथिला विकास परिषद्क अशोक झा, कोकिल मंचक गंगानाथ झा, मिथिला सेवा समितिक श्री भवनाथ झा झंकारक श्रीशंभुनाथ मिश्र (मैथिलीक अपेक्षाकृत हिन्दी रंगमंच पर विशेष सक्रिय) जीक प्रतिबद्धता मैथिली रंगमंचक माध्यम सऽ कोलकाता मैथिली मंच पर क्रांति अनने छथि। अहि क्रम मे कोकिल मंच मौलिक आर अनुवाद नाटक आर बाँकी सब नाट्य मंच मौलिक मैथिली नाटक मंचित किरैत अछि। जे अहि गप्प केँ प्रमाणित करैत

अछि जे मैथिली नाट्य लेखन क्षेत्र मे कोलकाताक नाट्यकार कतेक संबल छथि।

मिथिला विकास परिषद् कोलकाता द्वारा वर्ष 2002 मे कोलकाताक 'शिक्षायतन प्रेक्षागृह' मे मैथिली नाट्य प्रतियोगिताक आयोजन आर अहि क्रम मे 24 अप्रैल सऽ 30 अप्रैल धरि कोलकाताक मिथिला विकास परिषद् द्वारा 'जुआयल कनकनी' (लेखक महेन्द्र मलंगिया, निर्देशक-अशोक झा), कोकिल मंच द्वारा बेलक मारलश (लेखक सुधांशु शेखर चौधरी, निर्देशक- श्री गंगा झा) झंकार बेलुड़ द्वारा 'हटात् परिवर्तन' (लेखक आनन्द कुमार झा, निर्देशक शंभु मिश्र), मिथियात्रिक द्वारा 'बौआ अएला हे' (नाट्यकार श्री बुद्धिनाथ झा, निर्देशक श्री दयानाथ झा), भंगिमा पटना द्वारा 'प्रायश्चित्त' (नाट्यकार श्री छत्रानन्द सिंह 'बटुक भाई', निर्देशक- किशोर कुमार झा।) मधुबनी केँ यात्री नाट्य संस्था द्वारा 'गोरखधंधा' नाटकक प्रस्तुति (नाट्यकार श्री काश्यप कमल आर निर्देशक श्री चन्द्रिका प्रसाद) अहि गप्प केँ प्रमाणित करैत अछि जे व्यस्तताक बावजूदो नाटक सन कठिन प्रतियोगिताक सफल आयोजनक लेल प्रवास मे कार्यरत मिथिला विकास परिषद् कलाक प्रति कतेक समर्पित अछि।

अहि तरहक सफल आयोजन सँकोलकाता मैथिली रंगमंचक क्रमिक विकास स्वतः स्पष्ट परिलक्षित अछि। कोलकाता मैथिली रंगमंचक उत्साह आर प्रतिब्धताक कारणे मैथिली रंगमंचक माध्यमे नाट्य लेखन, निर्देशन आ कलाकारक पैघ सूची कला लेखन आर नाट्य मंचक इतिहास भारतक आन शहरक संग गांव घरक लेल सेहो उदाहरण बनि मैथिली रंगमंच केँ जिया कऽ रखबा मे कोलकाताक प्रवासी मिथिलावासीक भूमिकाक पैघ आर सत्यता पर आधारित इतिहास अछि। कोलकाताक मैथिली रंगमंचक अभियान केर 50 वर्ष सँ बेसी केँ इतिहास वास्तव मे प्रवासी मिथिलावासीक सीना केँ अनेरे उतान कऽ दैत अछि। कोलकाता मैथिली नाटकक ५50 साल पर मिथिला विकास परिषद् द्वारा कोलकाता मे सेमिनार आयोजित कऽ अतीत आ वर्तमान कोलकाता रंगमंचक दस्तावेज तैयार कएल गेल अछि।

पत्रकारिता आर पत्रिकाक माध्यम से प्रवास मे आयल क्रांति केँ सेहो नजर अंदाज नहि कएल जा सकैत अछि। अहि दिस सेहो प्रवास मे रहनिहार साकांक्ष साहित्य अनुरागी, समय-समय पर पत्र-पत्रिकाक आवश्यकता केँ आवश्यक मंत्र बुझि डेग बढ़ौलैन। ई गप्प सेहो सच जे मैथिली पत्र-पत्रिकाक निरंतर प्रकाशन नहि भऽ सकल अछि। सजग, सुदृढ़ सबल, दूरदर्शी प्रवासी मिथिलावासी द्वारा संस्थागत वा व्यक्तिगत स्तर पर मैथिली पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन अहि गप्प केँ प्रमाणित करैत अछि जे पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन मे सेहो प्रवास मे रहनिहार मिथिलावासी कतेक साकांक्ष छलाह। ओहि प्रकाशित पत्रिकाक सम्पादक केँ व्यक्तित्व आ मैथिली भाषाक संग मौलिक समस्या पर लिखल प्रकाशित आलेख निश्चित रूपे सामान्य लोक केँ नव दिशा-निर्देश करबा मे सफल रहल अछि। कोलकाता सऽ प्रकाशित पत्रिका पर नजर दौरेला सँ स्वतः प्रमाणित होइत अछि जे प्रवास मे रहनिहार प्रवासी मिथिलावासी केँ भाषा साहित्य आर मिथिलाक विभिन्न मौलिक समस्याक प्रति आदि काल सं वर्तमान धरि सजग आ साकांक्ष छथि। विगत 1953 सँ वर्तमान 2008 ध ारि कोलकाता सँ प्रकाशित पत्रिका, नाटक, कविता सन मौलिक विषय वस्तु पर केन्द्रित भऽ प्रकाशित भेल अछि। कोलकाता एवं उपनगरीय कोलकाता सऽ जे पत्र पत्रिका प्रकाशित भेल अछि ओहि मे सन् 1953 ई. मे सर्वप्रथम स्वद्द प्रबोध नारायण सिंह एवं श्रीमती अनीमा सिंह द्वारा संपादित 'मिथिला दर्शन' आर किछुए दिनक बाद स्व. बाबू साहेब चौधरी संपादन मे अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा प्रकाशित भेल श्मैथिली दर्शनश। पुनः 1954 मे कोलकाताक अखिल भारतीय मैथिल संघ द्वारा स्व. रमाकान्त झा जीक संपादन मे श्मिथिला सेवकश नामक पत्रिका प्रकाशित भेल। 1960 मे स्व. कृत नारायण मिश्र, आर डा. वीरेन्द्र मल्लिक जीक संपादन मे श्आखरश नामक पत्रिका। 1968 मे स्व. प्रबोध ा नारायण सिंह जीक बालक श्री नचिकेता जीक संपादन मे सर्वप्रथम प्रथम त्रैमासिक काव्य पत्रिका 'मैथिली कविता' प्रकाशित भेल। अहि वर्ष स्व. इंद्र गोविन्द झा आस्व. श्रुतिधर झा 'पंडित' जीक सम्पादन मे 'मैथिली प्रकाश' नामक प्रथम शोध पत्रिका प्रकाशित भेल।

1966 मे श्री गुणनाथ झा जीक संपादन मे लोक मंचश नामक मैथिली नाटक पर केन्द्रित प्रथम पत्रिका प्रकाशित भेल। सन् 1973 मे डा. वीरेन्द्र मल्लिक जीक संपादन आर सुकांत सोम एवं श्री रामलोचन ठाकुर जीक सहयोग सऽ 'अग्निपत्र' प्रकाशित भेल। 1970 मे मैथिलीक प्रथम मिनी पत्रिका (लम्बाई 10 से.मी. आर चौड़ाई 6 से.मी. छल) 'मि' डा. वीरेन्द्र मल्लिक आर श्री गुणनाथ झा जीक संपादन मे प्रकाशित भेल अछि। अहि तरहक छोट आकारक पत्रिका भारतवर्षक कोनो आन भाषा मे प्रकाशित नहिं भेल अछि।

सन् 1974 मे श्रीकुणाल आर अग्निपुत्र द्वारा संपादित 'शिखा' नामक पत्रिका प्रकाशित भेल अछि। 1974 मे मैथिली नाटक पर केन्द्रित 'रंगमंच' नामक पत्रिका श्री रामलोचन ठाकुर जीक संपादन मे प्रकाशित भेल। ''मैथिली बुलेटिन'' नामक पत्रिका यदा कदा मिथिला सांस्कृतिक परिषद् द्वारा प्रकाशित होइत छल जाहि, पत्रिका मे कोनो संपादक केँ नाम उद्धृत नहिं छल। अहि केँ अलावा श्री विनोद झा जीक सम्पादन मे 'देशकोश', देशील बयना, भोरूकवाक प्रकाशन श्री अमरनाथ झा श्भारतीश जीक सम्पादन मे प्रकाशित भेल अछि।

सन् 2001 मे मिथिला विकास परिषद् द्वारा मासिक पत्रिका अनुवार्ता प्रकाशन भेल। जकर महिला सम्पादक श्रीमती शैल झा छलीह। अहि पत्रिकाक पुनः प्रकाशन 19 अप्रैल 2009 सऽ परिषद् द्वारा भऽ रहल अछि। 1981 सऽ निरंतर प्रकाशित होबय वाला त्रैमासिक पत्रिका 'कर्णामृत' पूर्व मे स्व. अर्जुन लाल कर्ण आर निरसन लाभ जी आर वर्तमान मे श्री राजनंदन लाल दास जीक संपादन मे प्रकाशित भऽ रहल अछि। वर्तमान मे विनय भूषण जीक संपादन मे 'मिथिला चेतना' नामक साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित भऽ रहल अछि। कोलकाता सँ लूटन ठाकुरजीक संपादन मे मैथिली मासिक अखबार 'प्रवासक भेंट' प्रकाशित भेल-अछि। वर्तमान मे मिथिला चेम्बर आफ क०मर्स संस्था दिस सँ पूर्व मे श्री विनय-भूषण एवं वर्तमान मे श्री महेन्द्र हजारी जीक संपादन मे 'श्री मिथिला' नामक। पत्रिका प्रकाशित भऽ रहल अछि। अहि तरहें पत्रि पत्रिकाक प्रकाशन मे अपन सक्रिय भूमिका केँ प्रवास मे रहनिहार मिथिलावासी प्रमाणित कऽ चुकल छथि। मैथिली साहित्य आर भाषाक प्रति प्रवासी मिथिलावासी कतेक सजग आर सचेष्ट छलाह आर वर्तमानो मे छथि स्वतः प्रमाणित अछि। वर्तमान मे मिथिला विकास। परिषद् द्वारा एक गैर मैथिल श्री राजेन्द्र नारायण बाजपेयी जी सँ अनुनय-विनय कऽ कऽ भारतवर्षक एकमात्र मैथिली दैनिक समाचार मिथिला समादक प्रकाशन करेबा मे सफल हेबाक गौरवक संग प्रवास मेरहनिहार मैथिली भाषिक भाषा आर साहित्यिक प्रतिबद्धताक परिणाम अछि। ई गौरव भारत वर्षक कोनो राज्य वा मिथिलाक माँटि-पानि पर रहनिहार लोककें नहिं कोलकाताक प्रवासी मिथिलावासी कें प्राप्त भेल अछि। जाहि कारणे दैनिक समाचार पत्र नहिं हेबाक कलंक केँ मेटा कऽ नव इतिहासक सृजन करबा मे प्रवासी मिथिलावासी सफल भेल। विदित हो जे अहि समाचार पत्रक प्रकाशक आर प्रधान सम्पादक श्री राजेन्द्र नारायण बाजपेयी आर सम्पादक श्री ताराकांत झाजी छलाह। 30 अगस्त 08 सं आइ धरि कोलकाता सँ ई दैनिक समाचार पत्र निरंतर प्रकाशित भऽ रहल अछि।

अहि तरहें ई कहल जा सकैत अछि जे अपना माँटि-पानि सऽ दूर बहुत दूर रहियो कऽ कोलकाता आ उपनगरीय कोलकाता मे रहनिहार प्रवासी मिथिलावासी मैथिली भाषा, साहित्य, सांस्कृतक चेतनाक ध्वजवाहक बनल छथि। प्रवासी मिथिलावासी भाषा आर साहित्य मे प्रवासी मिथिलावासीक कार्यक दस्तावेजी दस्तावेज तैयार करवा मे जाहि तरहे छत्तीसगढ़ मे कार्यरत मैथिल प्रवाहिका संस्था आगा आबि कऽ अहि तरहक राष्ट्रीय स्तरक गोष्ठीक आयोजन करबा मे साहित्य अकादेमीनई दिल्ली कें सहयोग केलैन अछि ओ स्वयं अहिगप्प कें प्रमाणित करैत अछि जे छत्तीसगढ़ मे रहनिहार प्रवासी मिथिलावासी मैथिली भाषा, साहित्य आर सांस्कृतिक चेतनाक प्रति कतेक सजग आर प्रतिबद्ध छथि। वास्तविकता तऽ ई अछि जे मैथिली भाषी कतौ रहताह मैथिली भाषा, साहित्यिक प्रति हुनका लोकनिक प्रतिबद्धता अनुराग सांस्कृतिक चेतनाक दीप कें जराबैत रहताह। निःसंदेह अहि तरहक कतियाल गूढ़ प्रश्न कें चर्चा विषय बनाक विलक्षण दूरदर्शी मैथिली भाषा साहित्य अनुसमी साहित्य अकादेमी नई दिल्ली मे मैथिली परामर्श दातृ समितिक संयोजक डा विद्यानाथ झा 'विदित' जीक कार्यशैली अहि गप्प के प्रमाणित करैत अछि जे ओ एक सफल दूरदर्शी मैथिली अनुरामी छथि।





मिथिला, मैथिली आ गुजरात

🙞 राम कुमार मिश्र

निरन्तर गतिमान वैश्वीक परिवेश सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, शैक्षणिक आदि विभिन्न संरचना कें सदैव प्रभावित करैत रहल अछि। आ मिथिला त सदैव सँ किछु बेसीये प्रभावित होयत रहल अछि। नीति वाक्य ''वसुधैव कुटुंबकम'' कें मैथिलजन अक्षरशः सदैव सँ जीबैत रहला यए। ई प्रभाव ओ मॉटिक छैक। मिथिला मा०टि सँ बुद्धि, विवेक आ सद्ज्ञानक सुरभि जे निरन्तर प्रस्फुटित होयत रहैत छैक से कत्तहु भौगौलिक सीमा केर बन्धन मे अवगुंठित रहतैक...। ओ सुरभि सदैव निश्छल, निर्विकार, निस्पृह भाव सँ समग्र विश्व कें सुगंधित करैत रहल अछि। मिथिला.... जे ई मॉटि कें जगज्जननी केर जननीक संज्ञा प्रदान केलक ओ समग्र धरा कें अपन जननीये भाव सँ देखैत आयल अछि। आ यैह अवधारणा मैथिलजन कें पैर मे कखनहुं भौगोलिक बेड़ी नञ्लिागे दैत छैक।

पुरातन काल सँ जे मिथिला अपन बौद्धिक संपदाक लेल विश्वविख्यात रहल अछि से सम्प्रति किञ्चित कारणवश शिथिल आ सुषुप्तावस्थाक मुद्रा मे दृष्टिगोचर भ' रहल अछि। भौगोलिक, प्राकृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक दिशाहीनताक कारणें मैथिलजन जीविकोपार्जन हेतु मिथिलाक भौगोलिक क्षेत्र सँ इतर पलायन वा प्रवासक लेल निरन्तर विस्थापित भश रहल छथि।

''बुद्धि-विवेक, श्रेष्ठ ज्ञानयुत मिथिला कें जग जानल
मॉ मिथिले तुअ संतति जनमहिं पग घुरघूरा बान्हल।''

मात्र देशे टा नहि, अपितु समग्र संसार मे आइ मैथिल पसरल छथि। गुजरातो एहि सँ बांचल नञि अछि। बल्कि, अपन आर्थिक सम्पन्नता आ समावेशी संस्कृति कें कारणें गुजरात जीविकोपार्जन हेतु सदैव समुचित प्रदेश साबित भेल अछि। अतः गुजरातक प्रायः प्रत्येक शहर मे मैथिलजन पाओल जाइत छथि।

वर्तमान वैश्विक वातावरण जतय भौगोलिक सीमा कोनो बाध्यता नञि छैक, क्षेत्रीय एवं प्रान्तीय सभ्यता- संस्कृति संक्रमणक स्थिति सँ गुजैर रहल अछि। एहि परिस्थिति मे अपन सांस्कृतिक संरक्षणक प्रति विशेष जागरूकता एवं सामूहिक प्रयास आवश्यक छैक। आवश्यक छैक... पलायन आ प्रवास मे फर्क बुझबाक...एहि अंतर कें प्रचारित-प्रसारित करबाक...। प्रवास मे अन्यान्य अनिवार्य कारणें सारीरिक विस्थापन मात्र होयत छैक, आत्मा सदैव अपन सभ्यता-संस्कृतिक संग जीबैत रहैत छैक। मुदा पलायन मे सरीरक संग आत्मा सेहो अपन सभ्यता-संस्कृति सँ विलगित भे जायत छैक। इतिहास साक्षी रहलैक, वैह सभ्यता दीर्घकालिक आ चिरंजीवी होयत छैक जेकर संस्कृति निरन्तर, निर्वाध संरक्षित, संपोषित एवं संवर्धित होयत रहैत छैक।

गुजरात अवस्थित मैथिल प्रायः अपन सांस्कृतिक संरक्षणक प्रति सचेत आ सचेष्ट रहला यए। मुदा ओ प्रयास प्रायः छोट छोट विभिन्न समूह मे बॅटल मात्र भाषायी समूह परिलक्षित होयत रहल छल। सन् 2017 मे सामा-चकेबा पर्व आयोजन हेतु एकत्रित गांधीनगर-अहमदाबाद अवस्थित मैथिलजन ''शाश्वत मिथिला'' नामक संस्था निर्मित केलन्हि जे मात्र चारि बरखक आयु मे मिथिला-मैथिली आ मैथिलत्वक प्रति सचेष्ट, समर्पित, ऊर्जावान संस्था कें रूप मे गुजराते नहि अपितु राष्ट्रीय पहचान स्थापित करबा मे सफल अछि। शाश्वत मिथिलाक साहित्यिक-सांस्कृतिक संरक्षणक विभिन्न प्रयास मे प्रथम आ सर्वोपरि प्रयास रहल अछि पलायन आ प्रवासक स्पष्ट अन्तर प्रचारित प्रसारित केनाइ। शाश्वत मिथिलाक ध्येय वाक्य अछि ''साहित्य, संगीत, कला एवं सांस्.तिक संवर्धन'', आ संस्था अपन ध्येय वाक्य कें जीवंत आ मूर्तरूप मे परिवर्तित करबाक लेल सम्पूर्ण समर्पण भाव सँ चारि बरखक अल्पायु मे निम्नांकित क्रियाकलापक सफल आयोजन केलक।

1) सामा-चकेबा आयोजन रू वर्ष 2017 मे शाश्वत मिथिला द्वारा प्रारंभ मिथिलाक प्राचीन लोकपर्व सामा-चकेबा प्रति वर्ष अत्यंत हर्षोल्लासक संग मनाओल जायत अछि। सद्प्रयासक सुरभि सँ अभिभूत गुजरातक विभिन्न शहर मे प्रवासी मैथिल समूह द्वारा आब एहि लोकपर्वक आयोजन प्रारंभ भे चुकल अछि।

2) शाश्वत मिथिला आ मॉ जानकी सेवा समिति संगठित भे वर्ष 2018 एवं 2020 मे मिथिला विभूति स्मृति पर्वक सफल आयोजन केलक। मात्र गुजराते नञि, अपितु समग्र देशक मैथिल संस्था सभक एहि आयोजन मे सहभागिता रहल। मिथिला-मैथिली संबंधित साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक सरोकार पर विस्तृत परिचर्चाक आयोजन कयल गेल। सांस्कृतिक संरक्षणक एकटा महत्वपूर्ण चरण होयत छैक सांस्कृतिक हस्तांतरण। संस्थाक सदैव ई प्रयास रहैत छैक जे एहि प्रकारक सांस्.तिक कार्यक्रम मे प्रत्येक आयुवर्गक सहभागिता सुनिश्चित होअए। फलस्वरूप सांस्.तिक हस्तांतरण निरंतर प्रवाहमान रहय। एहिक्रम

मे ''कतेक जीबैयए मैथिली'' क्विज आयोजित सेहो कयल गेल जाहि मे मिथिला-मैथिली संबंधित व्यापक विषय-वस्तु आधारित प्रश्नावली समाविष्ट कयल गेल छल। आशाक विपरीत नवतुरिया लोकनि अत्यंत उत्साह सँ एहि प्रतियोगिता मे भाग लेलैन्ह। नवतुरिया सभक सहभागिता कें शाश्वत मिथिला अपन प्रथम पारितोषिक बूझैत अछि। कोनो समाजक साहित्य ओकर सांस्कृतिक प्रवाहक यान होयत छैक। आमजन मे साहित्यिक अभिरुचि बढ़ेबाक हेतु संस्था दृश्य, श्रव्य, मुद्रित आ आधुनिक डिजिटल माध्यमे मैथिली साहित्यक प्रचार-प्रसार मे सदैव संलग्न रहैत अछि। एहिक्रम मे संस्था ''श्री सीता शतक'' मैथिली पोथीक प्रकाशन सेहो करेलक।

3) वर्ष 2019 मे पुनः ''शाश्वत मिथिला''मां जानकी सेवा समिति के संग मिलि अन्तर्राष्ट्रीय मिथिला महोत्सव आयोजित केलक, जाहि मे देशक विभिन्न मैथिल संस्थाक संग संग विदेशो सँ मैथिल पाहुन सहभागी भेलैन्ह। साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनक संग एहि बेरक एकटा मुख्य आयोजन छल.. ''मैथिल उद्यमी शिखर सम्मेलन'', जाहि मे देश-विदेशक मैथिल उद्यमी अपन अनुभव साझा केलैन्ह आ उद्यम संबंधित विभिन्न पहलू पर सूक्ष्म परिचर्चा आयोजित कयल गेल। मैथिल युवजन कें उद्यमिताक प्रति उत्प्रेरित आ उत्साहित केनाइ एहि आयोजनक मुख्य लक्ष्य छ'ल। ''शाश्वत मिथिला'' आश्वस्त अछि जे एहि तरहक आयोजन यदि शीघ्र नञि तऽ कालान्तर मे प्रतिफलित अवश्य हेतैक।

4) दहेज उन्मूलन एवं महिला सशक्तिकरण : सभ्यता-संस्कृतिक निरन्तर प्रवाहक संग कालान्तर मे किछु कुरीति सेहो घुसियाइत सोन्हियाइत रहैत छैक। जाहि मे दहेजप्रथा कुरीति मिथिलाक पैघ समस्या एवं अभिषापक रूपे व्याप्त अछि। स्वस्थ सांस्.तिक संवर्धन एवं संपोषन हेतु समाज सँ एहि तरहक कुरीति सभक उन्मूलन आवश्यक अछि। 'शाश्वत मिथिला' एहि आवश्यकता कें बूझैत एकटा विचार-गोष्ठी आयोजित कयल जाहि मे मैथिलानी सब सोत्साह सहभागी बनलन्हि। एहि विचार-गोष्ठी मे दहेजप्रथाक कारण एवं निवारण पर वृहद परिचर्चा कयल गेल। एहि परिचर्चाक निष्कर्ष रूपे प्राप्त अन्यान्य उपाय संग महिला सशक्तीकरण पर विशेष जोर देल गेल। समुचित शिक्षा एवं संस्कारक माध्यमे सशक्त महिला दहेज उन्मूलनक सर्वश्रेष्ठ उपाय साबित भे सकैत अछि। संगहि महिला सशक्तीकरणक बिना कोनो समाजक सम्यक विकासक परिकल्पना अपूर्ण होयत छैक।

5). महाकवि विद्यापति स्मारक : 'शाश्वत मिथिला' देश-विदेशक लगभग 45 मैथिल संस्था कें एकत्रित के 'ग्लोबल मैथिल्स' नामक ग्रूप निर्माण कए परस्पर आ आपसी सहयोग सँ महाकवि विद्यापतिक जन्मस्थली बिस्फी मे भव्य स्मारक निर्माण हेतु प्रयासरत अछि।

6) सामाजिक उत्तरदायित्व : संस्था अपन सामाजिक उत्तरदायित्वक प्रति पूर्ण सचौत, सचेष्ट आ समर्पित रहैत अछि। सामाजिक उत्तरदायित्व निर्वाहनक क्रम मे अपन मातृभूमि मिथिला मे बाढ़ि प्रभावित हेतु तन-मन-धन सँ सहयोग अर्पित कए संस्था कृतकृत्य भाव सँ अभिभूत अछि। गुजरात अवस्थित जरूरतमंद मैथिल कें रोजगार प्राप्ति हेतु संस्था सदैव सहयोग मुद्रा मे तत्पर रहैत अछि। चारि बरखक अल्पावधि जाहि मे लगभग डेढ़ साल कोरोनाकालक वाबजूदो दर्जनों मैथिलजन संस्था सहयोग सँ रोजगार प्राप्ति सँ लाभान्वित भेलैथ। जरूरतमंद मैथिलक बीच कुल 25 टा रंगीन टेलीविजन वितरित कए संस्था अमूल्य संतोषक अनुभूति के रहल अछि।

कण-कण मे व्याप्त ईश्वरीय श्रद्धा, ईश्वरीय आस्थाक अनुभूति प्रगाढ़ करबा हेतु जहन एकटा आस्थाक केंद्र मन्दिर आवश्यक होयत छैक त' साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुभूति प्रगाढ्य बिना आस्था केन्द्र कें कोना संभव भे सकैत छैक...। मंदिर मात्र ईश्वरीय आस्था केन्द्रे टा नञि, अपितु भावी पीढ़ी मे आस्था-श्रद्धावाहक सेहो होयत छैक। साहित्यिक-सांस्कृतिक केंद्र सेहो भावी पीढ़ीक वास्ते संस्कृतिवाहक साबित होयत छैक। स्वस्थ सांस्कृतिक हस्तांतरण सांस्कृतिक अक्षुन्नताक एकमात्र उपाय होयत छैक। 'शाश्वत मिथिला' देशक सुदूर पश्चिमी प्रांत गुजरात मे मिथिला, मैथिली आ मैथिलत्वक साहित्यिक, सांस्कृतिक अक्षुन्नता सुनिश्चित करबा हेतु राजधानी गांधीनगर मे मिथिला भवन निर्माणक स्वप्नाधान केलक। संस्थाक संकल्प साधनाहूत, स्वयंस्फूर्त मैथिलसेवी सदस्यक अनथक, अविरल परिश्रम, अनुपम त्यागभाव तथा उदार दानभाव सँ भवन निर्माणक प्रथम चरण अर्थात भूमि खरीदी कार्य संपन्न भेल। संस्था आश्वस्त अछि जे भवन निर्माण कार्य शीघ्रातिशीघ्र संपन्न हएत आ ई भवन मैथिली साहित्यिक, सांस्कृतिक, कला एवं बौद्धिक विकासक केंद्र बनत। मैथिली श्रद्धा एवं मैथिल आस्थाक केन्द्व बनत। पीढ़ी दर पीढ़ी स्वस्थ सांस्कृतिक हस्तांतरणक माध्यमे अनंत काल धरि मिथिला-मैथिली जीबैत रहत एवं बन्धुत्व भाव प्रगाढ़ होयत रहत।

जय मिथिला। जय मैथिली। जयहिंद।



माधव जुनि जाह विदेश

✍ डॉ वीरेन्द्र झा

प्रवासी मैथिली सँ तात्पर्य मिथिलाक ओहि मूल निवासी सँ अछि जे विचित्र कालखण्डमे विभिन्न कारणे अपन गामघर छोड़ि अन्यत्र चलि गेलाह। आ ओतहि बसि कारोबार करय लगलाह। एक समय छल जखन लोक स्वदेश छोड़ि कतहु जैब नीक नहि बुझैत रहथि आ चाहे परिस्थितिये हो ओ अपन माटिये पकड़ने रहथि मुदा पछाति आबादी वृद्धि रोजगारक कयी आ सुविधाक अभावमे मिथिलाक लोक घर-द्वार डीह डॉवर छोड़ि अन्यत्र अपन संभावनाक खोजमे चलि गेलाह।

पहिला इ दशकमे मैथिलक पलायन तेजी सँ भेल अछि। ई पलायन देशक विभिन्न राज्यसँ लय लय परदेश धरि भेल आ भए रहलए। एखन मिथिलाक लाक सरल बेसी संरचनामे रेजी हेतु जा रहल छथि। पलाायन विकासक कारण आ परिणाम दुनू अछि। मिथिलाक प्राचीन साहित्यक अध्ययन सँ ज्ञान होइत अछि जे मुगलो शासन कालमे मिथिलाक लोक बंगाल, उड़ीसा, आसाम जाइत रहथि। किछु लोक रोजी रोटी लेल तँ किछु अध्ययन लेल। मैथिली लोकगीतमे सेहो पलायनक झलक देखाइत अछि।

एखन दिल्ली, मुम्बई, बेंगलुरू, कोलकाता, गोआ, भोपाल, कोरबा, रायपुर, रायगढ़, आगरा, बनारस, इलाहाबाद, गोरखपुर, मथुरा, सिनवासा, राँची, टाटा, धनबाद, बोकारो, जयपुर, जोधपुर, अयोध्या, कटक, भुवनेश्वर, नोएडा आदि विभिन्न शहरमे मैथिलक संख्या उल्लेखनीय अछि। ई लोकनि रोजी रोटी लेल गेलाह आ क्रमशः ओतुका सुविधा देखि ओतहि घर बना बसि गेलाह।

यद्यपि पलायनक कोनो आँकड़ा नहि अछि मुदा अनुमान अछि जे करीब 95 लाख मैथिल मिथिला सँ पलायन कय प्रवासी मैथिल बनि गेल छथि। आन तँ अमेरिका, इंगलैण्ड, न्यूयार्क, वाशिंगटन, लंदन, पेरिस, शाइते टोक्यो विदेशक प्रमुख शहर हैत जतन मैथिल नहि हेताह।

आरंभमे ओ रोजगारक कारणें, व्यापारक कारणें परदेश गेलाह मुदा फेर परदेशक सुविधा आ मिथिलाक असुविधा (बाटि रौदी, बेगारी, अशिक्षा, असुविधा)क कारणें ओतहि बसि गेलाह। किछु दिन धरि ओ लोकनि विभिन्न पारिवारिक आ सामाजिक उत्सव पर गाम घर अबैत रहलाह मुदा बादक पीढ़ीमे सेहो क्रम टूटि गेल। अपन परम्परागत यज्ञ, पूजा पाठ अनुष्ठान ओ ओतहि करय लगलाह। छठि, चौठचन्द्र, भातृद्वितीया ओतहि मनाबय लगलाह। धीरे-धीरे वियाह-दान सेहो।

किछु प्रवाणी अपन रीति नीति, भाषा जतय से कटुक सभ तँ रखलनि। मैथिलीक पत्रिका मैथिल हित साधन पूर्वोत्तर मैथिल एखनहु गोहाटी सँ छपैत अछि। हैदिराबाद, कोलकाता, राँची, दिल्ली, मुम्बई सँ कतेक मैथिली पत्रिका छपैत रहल। ई लोकनि ओतहि एकत्रित भय संगठन कायम कय विद्यापति पर्व सामा चकेवा आदिक आयोजन करय लगलाह। किछु प्रवासीक परिवारक भाषा एखनो मैथिली अछि खास कय कम पढ़ल कम श्रमिक वर्गमे। ई लोकनि अपन भाषा, संस्कृति, कला-कौशल कें पकड़ि कय रखने छथि। जे जाहि इलाकामे छथि से ओहि इलाकाक रीति-नीति सँ प्रभावित अवस्स छथि तें हिनका लोकनिक भाषा संस्कृति मैथिलीक संग स्थानीय भाषा सँ भिन्नतर भए नव रूप लए लेने अछि। किछु लोक सम्भ्रांत वर्ग भाषा, संस्कृति जें त्यागि अवश्य देलनि। ओल, तिलकोर, ऐटकोछ सन मिथिलाक विशुद्ध खाद्यान्न अमेरिमासे पर्यन्त उपलब्ध अछि। ई एहि बातक प्रतीत अछि जे प्रवासी मैथिल अपन संस्कृतिक रसा लेत प्रतिबद्ध छथि।

नचारी-सोहर, समदाउन, महेशवाणी गीत आव मिथिलाक अतिरिक्त दक्षिण भारत शहरमे यदा-कदा सुनाइत अछि। आरंभमे पंडित वर्गक पलायन भेल आ पंडित विद्वानगण विभिन्न राज दरबारमे कार्यरत रहथि। महेश ठाकुरक पूर्वज खंडवा (मध्य प्रदेश)मे रहैत रहथि। पछाति मजदूरो वर्ग नीक मजदूरीक लोभमे हरियाणा पंजाब जाय लगलाह आ एकर दुःपरिणाम ई भेल जे मिथिलामे घोर सुमिक संकट भए गेल। खेती-बारी चौपट भए गेल। मजदूरे नहि पढ़ल-लिखल लोक नीक सुविधाक कारणें शहर पकड़ि लेलनि आ मिथिलाक गाम घरक रोटा-सोफा, दलान, टूटली मरैया सभ सुन्न उदास मानवविहीन भेल जा रहलए। शिक्षित अशिक्षित सभक एकहि हाल। गरीब-धनिक सभक एकहि बात। पहिने पुरूष पलायन कैलनि आ आब क्रमशः ओहि घरक स्त्रीगण सेहो शहरे पकड़ि लेलनि। ओतय सुख-सुविधा विपुत, अस्पताल, शिक्षा आदिक कारणें। ओतय महिला मजदूरक रोजगारक साधन अछि। ब्यूटी पार्लर, नर्स, दाई, भनसिया आदिमे विपुल रोजगार भेटल। चकाचौंध सेहो एक कारण भेल।

पलायन नीक अधलाह इह पक्ष अछि। विभिन्न आर्थिक स्थिति पर एकर खूब प्रभाव पड़ल। प्रवासीक कारणें विदेशी मुद्राक आगमनमे मिथिलाक आर्थि उन्नति भेलए। गामे-गाम टूटली मरैया लग मानलि टाइल्स लागल। महल बजनल जा रहलाह। खेत पथारक दाम बढ़ल जा रहल अछि। समतामूलक

समाजक स्थापनाक मार्ग प्रशस्त भेल अछि। जातीय, धार्मिक बंधन क्रमशः ढ़ील पड़ल अछि। अर्न्तजातीय विवाह बढ़ि रहतए। एहि सँ सांस्कृतिक कारणें स्वाभाविक। विदेशी मुद्राक आगमन सँ विकासक गति बढ़ल अछि मुदा किछु वर्षक बाद प्रवासी मैथिल अपन गाम घर बिसरि पाई कौड़ी पठैव बंद लए लैत छथि तँ ओहा ठप भए जाइए। बहुतो प्रवासी द्वारा मिथिलामे अनेक शैक्षणिक संस्थान, अस्पताल, उद्योग मिथिलामे शुलभ अछि।

पलायन मिथिलाक एक जटिल समस्या अछि। प्रवासी मैथिल केँ कखनो कय परदेशमे क्षेत्रीय आ भाषाई आन्दोलनक शिकार पर्यन्त होबए पड़लए। मुम्बईमे बिहारी पर भेल हमलामे मिथिलाक अनेक मजदूरक घर द्वारि लूटि आगजनी कयल गेल अदि आ मान मर्यादा भंग कए भगा देल गेल। हिनका लोकनि केँजखन ओतय दोयम नागरिकक रूपमे समाज देखैत अछि तँ ओ लोकनि मिथिला दिस टुकटुकी लगा कय देखै छथि। एतय गाम घरक लोक प्रवासी केँ बहरिया बुझि अलग उपेक्षा करै छथि आ सदिखन हुनका सँ किछु टकबाक पचबाक आयास करै छथि आ स्वार्थ पूर्ति नहि भेला पर विरोधक सेहो सामना करय पड़ैए।

प्रवासी मैथिलक राजनीतिक महत्त्व आव क्रमशः बदल जा रहलए। दिल्ली विधान सभामे अनेक मैथिल विधायक छथि। झारखण्ड विधान सभामे विधायक निर्वाचित छथि। विभिन्न पूर्वात्तर भारतक शहरमे मेयर, वार्ड कमिश्नर आदि पद पर चुनैत छथि।

पलायन पहिले बेसी मौसमी होइत छल। धन कटनी, रोपनि महिनामे मजदूर परदेश जाइत रहथि आ फेर आपस भऽ जाइत। मुदा आब स्थायी निवासी बनल जा रहल छथि। रिक्सा-ठेला, ट्रक, जीप चाल सँ भऽ कऽ बागवानी, दरबानी, पुरहिताई, ट्यूटर, फल, तरकारी , विक्रेताक रूपमे मिथिलाक मजदूर दोसर महानगरमे भरल छथि। राज-बिजली मिस्त्री, तहीनाद, ड्रेसर, आदि तकनीकी ज्ञान रखनिहार मिथिलाक मजदूर सँ देशक बाहर भरल अछि।

आर्थिक विकास लेल सामाजिक वो राजनीतिक विकास लेल पलायन कोनो अधलाह बात नहि सहि मगर एक सीमा धरि मिथिलामे उच्च वर्गमे बहुतो पढ़ल-लिखल परिवार उजड़ि गेल। पूर्वजक डीह, कलम-गाही, सारा, ईनार पोखरि मंदिर छोड़ि या बेचि बिकनि ओ लोकनि महानगर पकड़ि गेलनि।

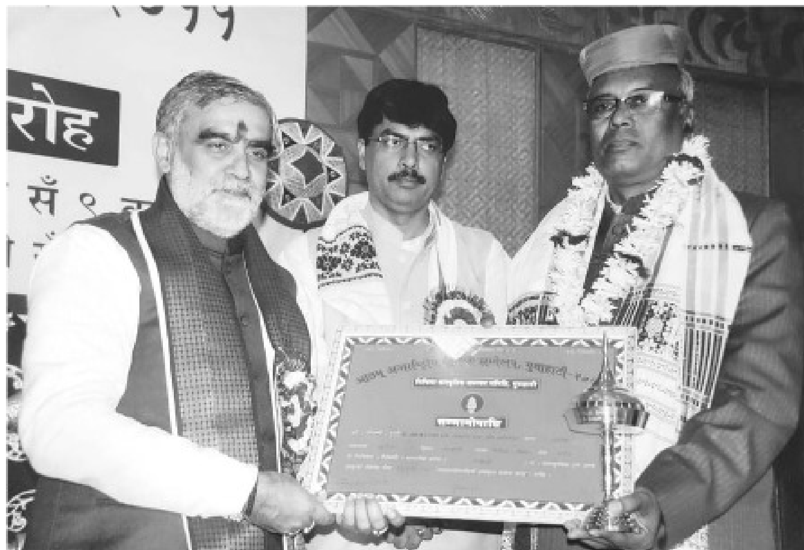
आगाँ पलायन रोकबा लेल मिथिलामे शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार आदिमे सुधार ओ विकास आवश्यक अछि। मिथिलाक कृषि क्रान्ति आ औद्योगिकरणक प्रयोजन अछि।

ओना आब समुन्द्र मंथन केँ धर्मविरूद्ध नहि मानल जाइए अपितु एकरा गौरवक बात बुन्दल जाइए जे फलगक परिवारक एतेक गोटे विदेशमे छथि तँ एतेत महानगरमे।

प्रवासी मैथिलक दर्द केँ बुझैए? ने प्रवासी शहरक लोक आ ने अपन गाम घरक लोक। गुड़क मारि छोकरे जनैए सैह बात। कोरोना संकट कालमे प्रवासी लोकनिक दर्द आर झलकल। कियो परदेशमे तेहेन हितैषी नहि। गाम अयलाह तँ सहयोगी नहि। दरभंगा एयरपोर्ट 2020मे शुरू भेला सँ पलायन गति आर तेज भेल अछि। पलायनक दिशा-दशा विभिन्न समाज सँ बदलैत जरूर रहलए।

प्रवासी मैथिल योगदान मिथिला मैथिलीक विकासमे उल्लेखनीय अछि। ओ लोकनि आब एतय सँ लैत किछु नहि छथि मुदा दैत सभ किछु छथि। प्रवासी मैथिल मैथिली साहित्यक सृजन सँ लय कय मिथिला मैथिली आन्दोलनमे ककरो सँ कम नहि छथि। ओ लोकनि परदेशमे छथि मुदा मोनमे हृदयमे टीस आ हिलोर सतत् मिथिले लेल।

❑❑❑



अथ प्रवासी मैथिल कथा

௰ डॉ. रंगनाथ दिवाकर

प्रवास वा आव्रजन अनादि कालसँ मानव जीवन केर एक कटु यथार्थ रहल अछि। अध्ययन, आजीविका, युद्ध, विवाह, प्रा.तिक प्रकोप आदि कारण ई होइत रहल अछि। मिथिलामे सेहो आव्रजन भेल अछि आ मैथिल सभक अन्यत्र प्रवास सेहो। जगदीश चन्द्र झाजी अपन ग्रंथ Migration and Achievements of Maithila Panditas : The Migrant Scholars of Mithila (जानकी प्रकाशन, पटना,1991)मे एहि विषयक सारगर्भित विश्लेषण प्रस्तुत कयने छथि।

मिथिलामे नान्यदेव (1097- 1147 ई.) द्वारा कर्णाट राज्य स्थापनामे सहयोग कयनिहार श्रीधर किछु विद्वान् कर्णाटी कहैत छथि आ मैथिल करण कायस्थ कर्णाटसँ तीन खेपमे आवजित 142 कर्णाटी सभक सन्तति मानैत छथि। ई प्रवाद मिथिलामे जड़ि धयने छल। मुदा

श्रीधर केर 11 पीढ़ी %पर मंग्यदासक वंशवृक्ष मिथिला बंगालमे उपलब्ध अछि। विस्तृत अध्ययनक बाद एहि प्रवादक खंडन भेल। जिज्ञासुजन प्रस्तुत लेखक केर पोथी

श्सुलतानपुर सौरभ’ देखि सकैत छथि। मिथिलाक सामाजिक आ आर्थिक स्थिति एहन नहि छल जे एतऽ बाहरसँ आजीविका लेल समूह आव्रजन संभव हो। एहि ठामसँ जीवन-यापन लेल विस्थापन बेसी भेल। ई विस्थापन सभ जातिक लोकमे भेल।

राढ़ क्षेत्रक राजा आदिशूरक समय मिथिलासँ सेहो मैथिल सभक प्रवास भेल छल। आदिशूर किछु विद्वान् (अशोक कुमार वर्मा : कायस्थों की सामाजिक पृष्ठभूमि, हिन्दी बूक सेन्टर, नयी दिल्ली, पृष्ठ 137)

काल्पनिक शासक मानैत छथि मुदा श्निजभुज वीर्यमास्थाय शूरान् आदिशूरो जयतिश (न्यायकणिका) लिखि वाचस्पति महोदय हिनकर अस्तित्वकै वास्तविक मानबाक मार्ग प्रशस्त करैत छथि। अधिकांश विद्वान् (प्रो. राधाकृष्ण चौथरी : मिथिलाक इतिहास, श्रुति प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ 63 आदि) आदिशूरक अस्तित्व मानैत छथि। आदिशूर सेन साम्राज्यक आरम्भिक निर्माता छलाह। बंगालमे सुरक्षित कुलकारिका (मिथिलाक पंजी सदृश वंशवृक्ष विवरण)मे सेनवंशीय बल्लालसेनकैं एहि आदिशूरक दौहित्र कहल गेल अछि- जातो बल्लालसेनो गुणी-गणितस्तस्य दौहित्र वंशे। दक्षिण राढ़ क्षेत्रक राजा रणशूरक वंशज आदिशूर छलाह।

आदिशूरक समय सेहो पाँच ब्राह्मण आ पाँच कायस्थक आव्रजन बंगाल भेल छल। आदिशूर एहि पाँचू ब्राह्मण आ कायस्थ सभकें प्रभूत दान-दक्षिणा देलनि एवं पंचकोटि, कामकोटि, हरिकोटि, कंकग्राम आ बटग्राम उपहार दैत एतहि बसा नेने छलाह। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर एहि समूहमे कान्यकुब्जसँ गौड़ आएल भट्ट नारायण (‘वेणीसंहार’क रचयिता) क वंशज छलाह। त्रिपुराक राजा आदि धर्मपा (अपर नाम दुर्गुरपा, दाँगरपा, धर्म माणिक्य प्रथम) केर राजत्व काल (1431-1461ई.) मे राजमहलपर गिद्ध बैसि गेल। आदि धर्मपा ज्योतिष्टोम यज्ञ करेबाक लेल सुयोग्य ब्राह्मण पठेबाक अनुरोध मिथिला नरेश बलभद्रसँ कयलनि। मिथिलेश बलभद्र मिथिलासँ वत्स, वात्स्य, भारद्वाज, कृष्णात्रेय आ पाराशर गोत्रीय यज्ञकर्म निष्णात् वैदिक ब्राह्मण क्रमशः श्रीनन्द, आनन्द, गोविन्द, श्रीपति आ पुरुषोत्तम मिथिलासँ त्रिपुरा पठओलनि। ई लोकनि श्रीहट्टान्तर्गत भानुगाछ परगनाक मंगलपुर गाममे (सम्प्रति बंगलादेश) विधानपूर्वक ज्योतिष्टोम यज्ञ सम्पन्न करओलनि। यज्ञ समाप्तिक बाद आदि धर्मपा हिनका सभकें पर्याप्त मान-सम्मान, धन, ब्रह्मोत्तर जमीन आदि दऽ हिनका सभकें एतहि रहबाक लेल तैयार कयलनि। आदि धर्मपा द्वारा देल गेल दानपत्र 4 जून 1843 ई.कॅ श्रीहट्ट केर एक अदालतमे चलि रहल वादमे महाराज .ष्ण कुमार माणिक्य प्रस्तुत कयने छलाह। एहिमे उल्लेख अछि -

त्रिपुरा पर्वताधीशः श्रीयुक्तादिधर्मपाः समानं दत्त पत्रंच मैथिलेषु तपस्विषु। वत्स-वात्स्य-भारद्वाज-कृष्णात्रेय-पराशराः श्रीनन्दानन्द गोविन्द श्रीपति पुरुषोत्तमाः। प्रतीच्यानुत्तरस्यां च वक्र गा क्रोशिरा नदी दक्षिणस्यं च पूर्वस्यां हाङ्कनाकोकिका पुरी। एतन्मध्यो सशस्यां या टेङ्गकरीकूकिकर्षताम् प्रगल्भदत्तो तद्भूमिं तेषु पंचतपस्विषु। मकरस्थे रवौ शुक्ले पंचदशीतिथौ त्रिपुराचन्द्व बाणाब्दे प्रदत्ता दत्त पत्रिका।

मिथिलासँ ब्रज पलायन केर पृथक् इतिहास अछि। कर्णाट राजा हरिसिंह देवक पराभव केर बाद यवन अत्याचारसँ पीड़ित 9 गोत्रक 75 मैथिल ब्राह्मण परिवार मिथिलासँ ब्रज दिशि चलि गेल। पं. जयराम मिश्र एहि पलायन केर समय अंकित कयने छथि - वैशाख शुक्ल एकादशी और दिना रविवार संवत् 1382 विक्रमी आए देश बिसार (पं. जयराम मिश्र : मैथिल ब्राह्मण ग्रंथ, पृष्ठ 25)

बैशाख शुक्ल एकादशीकै मोहिनी एकादशी कहल जाइत अछि। ई प्रवासी मैथिल सभक आश्रयस्थल मथुरा जिलाक

विशौली (विश्वावली) गाम भेल। फेर ई सभ विभिन्न खेडामे वास कयलनि।

15म शताब्दीमे कूचबिहारक राजा विष्णुसिंहक समय बहुत रास मैथिल ओतऽ गेल छलाह। एहि कमता (कूचबिहार) राज्यक प्रधानमंत्री मैथिल करण कायस्थ नरहरिदास छलाह। हिनकर बाद हिनक पुत्र पयोनिधि एहि पद सुशोभित कयने छलाह। हिनकर पुत्र कवीन्द्र दास असमिया कायस्थमे कुलीन प्रथा शुरू कयने छलाह। त्रिपुरामे अनेक मैथिल सभक वास छल। (प्रो. राधाकृष्ण चौथरी : पूर्वांचल भाषा साहित्य एवं संस्कृत, पृष्ठ 7, पं. राजेश्वर झाक पोथी मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य, मैथिली अकादमी, पटना, 1977, पृष्ठ 134 पर उद्धृत)।

पं. रामचन्द्व मिश्र 'चन्द्र' कृत 'हमारा प्रवास' मिथिलासँ ब्रज प्रवास केर क्रमिक कथा कहैत अछि।

अकबर केर समय 1556 ई. मे पटनामे भेल विद्वत् बैसारमे पं. रघुनन्दन झा, पं. जीवन नाथ झा, पं. शिवराम झा प्रभृति विद्वान् सभकें सम्मानित करैत अकबर (1556-1605ई.) अपना संगे आगरा आनि लेलनि। बादमे टोडरमल संग 80 गोटे आर आगरा आबि गेलाह। एहिमे सुखपाणि झा, जीवन नाथ मिश्र, शिवराम झा, श्रीकान्त मिश्र, उमापति मिश्र, ग्रहपाणि झा, दुर्गादत्त झा, वाचस्पति झा, पृथ्वीधर झा, पं. पुरुषोत्तम झा आदि सम्मिलित छलाह। हिनका सभकँ आगराक शहजाद मंडीमे बसाओल गेल छल।

जहाँगीर (1605-1627 ई.)क समय फत्तन मिश्र आ विद्याधर मिश्र सेहो मिथिला त्यागि आगरा आबि गेल छलाह। एहि समय 1623 ई. मे मिथिलेश शुभंकर ठाकुरसँ मनोमालिन्यक बाद श्याम झाक संगे शताधिक मैथिल ब्राह्मण आगरा आबि बैसि गेलाह।

शाहजहाँ (1627- 1658 ई.)क शासनकाल धरि एहि प्रवासी मैथिल सभक स्थिति ठीक-ठीक रहल। दारा। शिकोह जखन कोल (अलीगढ़) केर फौजदार छलाह तखन

ओ बनारसमे 150 पंडित सभक धार्मिक सभा करओने छलाह। एहि धर्मसभामे 25 टा पंडित मिथिलासँ गेल छलाह। दारा शिकोह एहि पंडित सभरू प्रचुर धन आ सम्मान दैत अलीगढ़मे बसा देलनि। दारा गीता, योगवाशिष्ठ, उपनिषद् सभक फारसी अनुवाद करओलनि, वेद सभक संग्रह कयलनि, फारसी ग्रंथ सारीनतुल् औलिया, सकीनतुल औलिया, हसनातुल आरफीन रचलनि। हिनकर मज्म-उल बहरीन (दू समुद्रक संगम) विलक्षण रचना अछि।

बी जे हसरत आ के आर कानूनगोक लब्धप्रतिष्ठ कृति 'दारा शिकोह' सँ ज्ञात होइछ जे दारा शिकोह मैथिल विद्वान् वंशीधर मिश्र आ पं. विश्वेश्वर आदि सम्मानित कयने छलाह। ई भारतवर्षक दुर्भाग्य रहल जे शाहजहाँक बाद सत्ता संघर्षमे दारा शिकोह सन सहिष्णु आ समन्वयवादी साधक सफलता नहि भेटल अन्यथा भारतवर्षक इतिहास आ भविष्य दोसर रहैत। वर्तमान कालक अनेक समस्या समाप्त भऽ गेल रहैत।

औरंगजेब (शासन काल 1658-1707 ई.)क समयसँ एहि प्रवासी मैथिल सभक समक्ष समस्या उत्पन्न भेल। 1667 ई. मे मुगल शासन द्वारा लगाओल गेल तीर्थयात्रा-कर केर विरोधमे काशीमे कवीन्द्राचार्यक नेतृत्वमे आन्दोलन भेल छल। आन्दोलनक सफलताक बाद विश्वम्भर मैथिलोपाध्याय, जयकृष्ण उपाध्याय, दामोदर उपाध्याय, महीपति उपाध्याय, रघुनाथ उपाध्याय आदि मैथिल सम्मानित भेल छलाह। (जगदीश चन्द्र झा : Migration and Achievements of Maithila Panditas, पृष्ठ 249-50, पृष्ठ 266)

प्रवासी मैथिल सभ अपन उत्कर्ष देखलनि तऽ अवनति केर गर्त सेहो। आगरा, मथुरा, हाथरस, अलीगढ़ आदि। स्थानपर बसल एहि प्रवासी मैथिल सभकें दारा शिकोहक प्रियपात्र मानि औरंगजेब बहुत तंग कयलनि। आगरासँ भागि ई सभ वनक्षेत्रमे शरण लेलनि। काष्ठ व्यापारसँ जुड़ल रहबाक आ स्थानीय विश्वकर्मा सभक आ हिनका सभक आस्पद समान रूपसँ शर्मा होयबाक कारण बहुत गोटेक अपन जातीय संस्कारक रक्षा करब कठिन भऽ गेल। एतबा धरि जे बहुत लोक विश्वकर्मा सेहो बनलाह। जीवन, धर्म आ जातिक रक्षा करब मोश्किल भऽ गेल तथापि ई सभ स्वधर्मो निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः केर सिद्धान्त मानि अनेक कष्ट सहैत कहुना अपन संस्कारक रक्षा कयलनि। ई सभ ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण कहाइत छथि।

ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण सभक जीवनकथा आ रचना सभकें प्रकाशमे आनबाक दृष्टिसँ डॉ. राधेबिहारी लाल सक्सेना 'राकेश'क 'ब्रजस्थ मैथिल कवि' (मथुरा,1988 ई.), डॉ. प्रेमदत्त मिश्र 'मैथिल'क 'ब्रज के आधुनिक कवियों के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन', पं. रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र'क 'हमारा प्रवास' आ 'चन्द्राभरण', पं. कोमल प्रसाद शर्माक 'ब्रह्मवंश दर्पण', पं. रघुवीर सहाय शर्माक 'ब्रज मे मैथिल ब्राह्मण', डॉ. फूलबिहारी शर्माक 'हमारे प्रवास का इतिहास' प्रभृति पोथी सभक अमूल्य योगदान अछि।

'ब्रजस्थ मैथिल कवि'मे पं. मानिक ठाकुर (1793-1870 ई., हाथरस), पं.नवल किशोर 'नील' (1827-1897 ई.), पं. ब्रजबल्लभ श्रोत्रिय 'बल्लभ सखा' (1860-1935 ई., हिनका वियोगी हरि 'ब्रज केर धूल भरल हीरा' कहने छलाह), पं. टोडाराम मिश्र 'टोडाराम', प्रज्ञाचक्षु पं. देवीराम मिश्र 'देवीसूर' (1870-1913 ई.), पं. झम्मन लाल मिश्र (1883-1953 ई.) आ सुपुत्र पं. रामगोपाल शर्मा 'गुपालकवि' (1889-1973 ई.), पं

घूरेलाल झा 'सूरकवि' (1890-1948 ई.) आ अनुज पं. मोहन लाल झा 'मोहन' (1896-1970 ई.), पं. प्रकाश चन्द्र 'प्रकाश' (1903-1977 ई.), पं. झम्मक लाल झा 'छम्मक' (1913-1972 ई.), लोककवि पं. छेदालाल शर्मा (1913-1975 ई.), पं. ताराचन्द्र मिश्र 'पुत्र चन्द्र कवि (1915-1987 ई.), श्रीकृष्ण शर्मा, डॉ. तारा चन्द्र शर्मा, पं. पन्नालाल शर्मा 'चातक', पं. ओंकार चन्द्र 'प्रणव', नत्थीलाल शर्मा 'मैथिल' आदिक उल्लेख भेल अछि। पं. रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र' (1873-1937 ई.) मैथिली, हिन्दी आ ब्रजी केर अप्रतिम हस्ताक्षर छलाह। सिद्ध कवि, कुशल निबंधकार आ सफल सम्पादक पं. चन्द्र 'चन्द्राभरण'मे प्रवास विषयक लिखने छथि- अछि फुलबरिया ग्राम प्रान्त दरभंगामे छल। ततय सुमैथिल विप्र मिश्र श्रीकान्त रहै छल। बलियासे नरसाम मूल काश्यप गोत्री से। विद्या बुद्धि निधान वंश पावन श्रोत्री से। (ब्रजस्थ मैथिल कवि, पृष्ठ 23) हिनक अनेक पोथी प्रकाशित अछि। श्मैथिल प्रभाश पत्र (अजमेर)क सम्पादक सेहो रहल छलाह। पं. शिवचरण लाल शर्मा 'मैथिलेन्दु', पं. भूदेव झा 'अमर', पं. जगदीश झा 'जगदीश' प्रभृति ब्रजस्थ मैथिल कवि मैथिलीक संग हिन्दी आ ब्रजीमे सृजनशील छथि। सृजनशील कविमे डॉ. प्रेमदत्त मिश्र श्मैथिलश केर नाम अग्रगण्य अछि। हिनकर पूर्वज पं. मणि मिश्र मिथिलाक राजनपुर मिठावली गामसँ तीर्थाटन करैत 14म शताब्दीमे मथुरा आएल छलाह। मथुरा जनपद केर रसगवाँ (ऋषिग्राम) मे 19 जनवरी 1939 के हिनक जन्म भेल। संस्कृत, पालि, मैथिली, ब्रजी, हिन्दी आ। अंग्रेजीक निष्णात् विद्वान् मैथिलजीक 'मैथिल काव्यायनी' आ ब्रज के आधुनिक कवियों के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययनश कालजयी कृति अछि।

प्रवासी मैथिल स्थानीय समाजमे नीकसँ घुलि-मिल गेलाह। बहुत लोक तऽ अपन मूल बिसरि गेलाह। अर्थक अभावमे अनर्थ होमऽ लागल। मुदा साकांक्ष आ विभवशाली वर्ग अपन मैथिलत्व जोगाके रखलनि। बहुत समय धरि मिथिलासँ हिनका सभक सम्पर्क-सूत्र समाप्ते जकाँ रहल। कालान्तरमे जखन हिनका सभक स्थिति नीक भेल तखन अपन उत्स केर खोज कयलनि। यातायात आ संचार व्यवस्था सुलभ भेल तखन एहिमे तेजी आएल। संयुक्त प्रांतीय मैथिल ब्राह्मण सभा, जबलपुर (1908) आ इटावा (1925), मैथिल हित साधन समिति, जयपुर (1905), मैथिल विद्वज्जन समिति, काशी (1905), अखिल भारतीय मिथिला संघ, नयी दिल्ली, मैथिल संघ, कलकत्ता आदि संस्था सभक उदय भेल। मैथिली पत्र-पत्रिका सभक प्रकाशन शुरू भेल। 'मैथिल हित साधन' जयपुरसँ आ 'मिथिला मोद' काशीसँ 1905 ई.मे प्रकाशन शुरू भेल। प्रवासी मैथिल सभक समस्त संस्था सभक उद्देश्य प्रवासी मैथिल आ मूल मैथिल मध्य सम्पर्क सेतु विकसित करब सेहो छल। अनेक सार्थक प्रयास सभक बाद अजमेरमे ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण महासम्मेलन, आगराक तत्वावधानमे आयोजित अखिल भारतीय मैथिल महासभाक 47म अधिवेशनमे मिथिलाक ब्राह्मण आ कायस्थ लोकनि ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण मैथिल मानि लेलनि। 27 दिसम्बर 1954 ई. मैं आयोजित एहि महत्वपूर्ण अधिवेशनक सभापतित्व महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह कयने छलाह। एकर कार्यवाही रमाशंकर शास्त्रीक सम्पादनमे प्रकाशित भेल छल। संचार व्यवस्था नीक भेलापर प्रवासी मैथिल आ मूल मैथिलमे सम्पर्क सेतु आर दृढ़ भेल। ओ सभ एम्हर आबि अपन मूल केर तलाश कयलनि तऽ एम्हरोसँ 2002 ई.मे मिथिलाक दू विद्वान् पं. देवचन्द्र मिश्र आ पं. गोविन्द मिश्र ब्रजस्थ मैथिल सभक खोज-पुछारि कयलनि। मिथिला कुंज आश्रम, वृन्दावन केर सन्त राधेश्याम शरण देवाचार्यक एहि सम्पर्क सेतु निर्माणमे महत्वपूर्ण अवदान अछि।

प्रवासी मैथिल सभक आव्रजन कतऽ कतऽ भेल आबई महत्वपूर्ण नहि रहल। कतऽ नहि भेल ई महत्वपूर्ण अछि। कहि सकैत छी जे सब राज्यमे भेल। अदौकालसँ मोरंग आ ढक्का बंगल्ला पतिक प्रवासपर विरहिन सभक मनोदशा केर चित्र लोकगीत आ पदावलीमे अभरल अछि। दिल्ली-पंजाब, कोलकाता-मुम्बई, गुजरात-बंगलुरु आदि जगह मैथिल सभक सशक्त संघ अछि। आब तऽ इंग्लैंड अमेरिका आदि विदेशमे सेहो मैथिल सभक सशक्त संघ सक्रिय अछि। अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर संघ सक्रिय अछि। भारतवर्षक प्रायः सभ शहरमे विद्यापति स्मृति पर्व धूमधामसँ मनाओल जाइत अछि। 5ळक एहि युगमे दूरी समाप्त भऽ गेल अछि आ सम्पूर्ण विश्व एक परिवार भऽ गेल अछि। प्रवासी मैथिल आ आम मैथिल मध्य स्नेहसूत्र विकसित भेल अछि, बियाह-दान शुरू भेल अछि जे शुभ संकेत थिक।



असममे मिथिला

✍ संतोष कुमार झा

असमक प्राचीन नाम प्रागज्योतिषपुर आ कामरूप अछि। राय के. एल. बरुआ बहादुरक पोथी "The Early History of Kamrupa" के इतिहासिक परिपेक्ष मे कहल गेल अछि जे कामरूप (राज्य) आ विदेहक राज्यक मगधक चौहद्दी लगैत छल। भगवती कामाख्याक शक्तिपीठ, प्राकृतिक सौन्दर्यता, महाबाहु ब्रह्मपुत्र नद आ जलवायु प्राचीन कालसँ लोककेँ असम आब्रजन हेतु आकर्षित करैत रहल छल। प्रागइतिहासिक कालमे कामरूपक अति शक्तिशाली राजा नरकासुर छलथि। नरकासुर, राजा जनकक दासी पुत्र छलथि। एकहि रातिमे कामाख्या गेटसँ कामाख्या मंदिर धरि पहाड़क पत्थर काटि रास्ता बनोलनि, जे नरकासुर पथ सँ जानल जाइत अछि। पैदलगामी श्रद्धालु एहि मार्गसँ एखनहुँ कामाख्या धाम जाइत छथि। असमक उद्‌भट विद्वान पंडित जगदीश मिश्र मैथिल छलथि, जे असममे वेद सहित अनेकहुँ ग्रंथपर टीका लिखलनि। बारहमी-तेरहवीं शताब्दीमे अहोम शासनकालमे नवद्वीप, कन्नौज, मिथिला आदिसँ कतोक ब्राह्मण आ विद्वान असममे बसाओल गेलथि। कामाख्या मंदिरक अनेकहुँ पंडा मैथिल छलथि। समयक संग हुनक लोकनिक असमियाकरण भए गेलनि, परंच विवाह, उपनयन आदिमे मैथिल परंपरा देखल जा सकैछ। विवाहमे मिथिलेक जकाँ राम आ सीताकेँ केन्द्र मानि गीत गाओल जाइत अछि।

पन्द्रहमी शताब्दीमे श्रीमंत शंकर देव, देशाटनके क्रम मे मिथिला आयल छलथि। महाकवि विद्यापतिक रचना सँ प्रभावित भए अपन रचना ब्रजावली में आरम्भ कयलनि। असममे मैथिली शब्दकोष नीक जगह बनौलनि। शंकरदेवक बड़गीतक किछु पंक्ति पढ़ल जाउ-

आजु जलमि सुत चले परदेश
कतनो लिहिल बिधि अभागिक क्लेश।
बिनु तोहि रहब जीवन नहि मोइ
कह शंकर कृष्ण कृष्ण बोल सब लोइ।

मैथिल लोकनिक असममे आगमनक दर कम रहल अछि। किंबदन्ती छल जे कामरूप - कामाख्यामे जादू - टोना होइत अछि आ प्रवासी लोकनिकेँ भेड़ - बकड़ी आ परबा, तोता बना कैद कए लैत छल। आजादीक बाद ई मिथक टूटल। रोजगारक खोजमे मैथिल लोकनि पूर्वोत्तरक रूखि कयलाह। हुनक लोकनिक मुख्य पसंद गुवाहाटी शहर बनल। सम्प्रति असमक विभिन्न जिला मुख्यालय संग पूर्वोत्तरक विभिन्न राज्यमे मैथिल लोकनिक उपस्थिति देखल जा सकैछ।

गुवाहाटीमे जखन मैथिल आबादी बढ़ल तँ 1 अप्रैल 1964 के ँ किछु प्रबुद्ध मैथिल लोकनि विचार विमर्श हेतु एकत्रित भेलाह। स्व. जनार्दन झा (अवारी), पंडित महावीर झा (अवारी), स्व. कृष्णदेव झा (सरिसब, बेनीपट्टी), स्व. श्यामा कान्त झा (निकासी) आ स्व. पीताम्बर मिश्र (चौरी) बैसारक मुख्य चेहरा छलथि। विद्यापति गोष्ठी नामक एक संस्था बनाओल गेल। ई मैथिले नहि, हिन्दीभाषीक (मारबाड़ी संस्था छोड़ि) प्रथम संस्थाक रूपमे सामने आओल। एहि संस्थाक अपन संविधान छलनि आ सोसायटी एक्टक अन्तर्गत पंजीकृत छल। कालक्रममे एहि संस्थाक संग कतोक प्रबुद्ध लोकनि जुड़लाह, स्व. पलट झा (जरैल), स्व. नवल कान्त झा (जरैल), स्व. देवनारायण झा (नवटोली), श्री महेश झा (नवटोली), प्रोफेसर ताराकान्त झा, स्व. कपिलेश्वर झा (डुमरा) आदि - आदि। हुनक लोकनिक योग्य नेतृत्वमे विद्यापति गोष्ठी समन्वयक बहुत रास काज कयलनि। सांस्कृतिक आदान - प्रदानसँ मैथिल लोकनि असमिया समाजक नजदीक अयलाह। मिथिलाक भाषा, लिपि, साहित्यसँ असमिया लोकनि परिचित होमय लगलाह।

विद्यापति गोष्ठी एक स्मारिका सेहो निकालति छलथि। एहिसँ मैथिली लेखनक तरफ समाजक झुकाव सेहो होमय लगलनि। मिथिलाक उत्तरोत्तर बिहारक अन्य भाषी समाज विद्यापति गोष्ठी के ँ अपनहि संस्था बुझैत छलथि। विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन, होली मिलन समारोह, नाटक, सेमिनार आदिक आयोजन होइत छल।

परञ्च 1972 मे मिथिला सांस्कृतिक परिषद नामसँ एक आओर संस्था सामने आओल। विद्यापति गोष्ठीसँ असंतुष्ठ किछु मैथिल एहि परिषदक गठन कएल। दू - तीन साल ई संस्था नीक काज कयलनि। मैथिल लोकनिक जनसंख्या कम छलनि। गुवाहाटीक आठगाँव, टोकेबाड़ी,

छतरीबाड़ी, फैन्सीबाजार धरि सीमित छलथि। आपसी संबंध ामे सेहो खटास आबय लगलनि। 1978 सँ आगू मिथिला सांस्कृतिक परिषद नहि बढ़ि सकल। 1987 मे विद्यापति गोष्ठी आपसी अविश्वासक आहुति पर चढ़ि गेलीह। पुनः संस्थाक गठनक प्रयास होइत रहल। मिथिला संघर्ष समिति आ मिथिला कल्याण परिषदक स्थापना भेल।

सन 2000 मे स्थापित ''मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति'' अधिकारिक गठन संस्थापक अध्यक्ष प्रेम कांत चौधरी (बिठौली बहेरी दरभंगा) आ संस्थापक उपाध्यक्ष, तत्कालीन पूर्वांचल प्रहरी के संपादक सत्यानंद पाठक (स्व) आ असमक प्रबुद्ध मैथिल समाज सभ मिलि क प्रथमहि सालमे दू दिवसीय विद्यापति स्मृति पर्व समारोहक आयोजन आ 2001 सँ त्रैमासिक ''पत्रिका पूर्वोत्तर मैथिल'' केर प्रकाशन कएल जे आब RNI मान्यता प्राप्त पत्रिका अछि, सुचारू रूपसँ चलि रहल अछि। असमिया आ मैथिलक समन्वयपर ई संस्था पैघ रुपे काज कय रहल छथि। जाहि मंच पर अनेकों असमिया विद्वान आबि अपन विचार मिथिला मैथिली विद्यापति आ श्रीमंत शंकर देव पर प्रभाव सँ परिचित करैला अछि। गुवाहाटी विश्वविद्यालयक एसोसिएट प्रोफसर डॉ दीपामणि हलोई महंथ असमिया होइतहुँ धारा प्रवाह मैथिली बजैत छथि। सितम्बर 2017 मे हिनक लिखल पुस्तक "Assamese & Maithili Verb system" सेहो प्रकाशित भेल।

मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक किछु असंतुष्ट मैथिल एक फराक संस्था ''विद्यापति चेतना समितिक'' गठन भेल। मिथिला सांस्.तिक समन्वय समिति गुवाहाटीक अतिरिक्त शाखा डिब्रुगढ़, जोरहाट, में कार्यरत अछि। संगहि डीमापुर, अरूणाचल प्रदेश मे सेहो मैथिल संस्था कमोवेश काज कए रहल छथि।

पूर्वोत्तर भारत के गेटवे गुवाहाटी के कहल जायत अछि आ वास्तविकता मे सेहो सत्य छै। अहि दिसा मे जखन मैथिली आंदोलन के अग्रणी नेता डॉ बैद्यनाथ चौधरी जी मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक अध्यक्ष प्रेम कांत चौधरी सँ 2011 के अष्ठम अंतरास्ट्रीय मैथिली सम्मेलन गुवाहाटी मे करवाक प्रस्ताव राखलैन्ह तखन ओहि प्रस्ताव पर समिति विचार केला बाद मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति कें सौजन्य सँ अष्टम अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन 22-23 दिसंबर 2011 क सम्पन्न भेल जाहि मे मिथिला सँ असमक राजधानी धरि मिथिलामय भ गेल छल। माँ कामाख्याक नगरी मे मैथिली सम्मेलन दुनु समाज के बीच सांस्कृतिक संस्कार के समन्वय स्थापित केलक।





लोक गाथात्मक उपन्यासमे मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास

✍ डॉ. अरुणा चौधरी

मिथिला प्राचीन कालसँ अनेक महान विभूतिक जन्म स्थल रहलाक कारणेँ विश्व इतिहासमे प्रसिद्ध अछि। जगत-जननी जानकीक जन्म-स्थलीमे गौतम, जनक, याज्ञवल्यक, कपिल, कणाद, कुमारिल भट्ट, उदयन सन सरस्वतीक वरद पुत्र जन्म लेने छथि जाहि ठाम अत्यन्त प्राचीन कालसँ एखन धरि विविध नामसँ मिथिला जानल जाइत अछि। मिथिला अपना सयममे शक्तिक महान प्रतिभा अहल्या, सीता, गार्गी, भारती, लखिमा समान आदर्श नारी एही धरतीक देन अछि।

मिथिलाक अपन संस्कृतिक भव्य परंपरा अछि। एकर आदिकालीन अतीत एक महान धरोहरक रूपमे सम्पूर्ण विश्वक हेतु प्रिय, रमणीय, आकर्षक अछि। प्राचीन मिथिलाक 12 गोट नाम अतिशय लोकप्रियता प्राप्त कयने अछि। ओना एखन धरि विदेह, मिथिला, तीरभुक्ति नाम सुप्रसिद्ध ओ प्रचलित अछि।

मैथिली साहित्यक उद्‌भव ओ विकास एकटा स्थायी स्तम्भक रूपमे लोक साहित्यक मान्यता देल गेल अछि। ई लोक साहित्यक संबंधमे अनुमान कयल जाइत अछि जे अज्ञात आ अपरिचित लोक साहित्यकार द्वारा अलिखित रूपमे रचना-प्रक्रिया लोक कंठमे स्थापित भेल होयत। एहिमे लोक गीतक महत्त्वपूर्ण भूमिका कहल जा सकैत अछि जे लोक कंठमे त' प्रचलित अछि। संगहि एकर श्रवण आ वादनमे सेहो रहि आगू बढ़ल अछि। युग-युगसँ मौखिक रहलाक कारणेँ ओकर भाषामे परिवर्तन देखल जा सकैत अछि। लोकगाथाक विषय वस्तुमे, कथानक चरित्र चित्रणमे, जोड़ल-घटाव कयलासँ ओहिमे निहित ऐतिहासिकता विलुप्त जकाँ भऽ गेल अछि तथापि मैथिलीमे लोकगाथाक जाहि प्रकारक संकलन प्राप्त होइत अछि ताहिमे प्राचीनताक प्रसंग निश्चित रूपसँ देखबामे अबैत अछि "जकर प्रमाण 13-14म षताब्दी धरि अत्यन्त सुदृढ़ रूपेँ देखबामे अबैत अछि। कविषेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुर अपन 'वर्णरत्नाकर'मे तकर उल्लेख कएल। यथा विरहा, चाँचरि, लोरिक नाच, लगनी, चउपाइ, प्रभृति। वस्तुतः लोकसाहित्यक निर्माण जनमनोरंजनक हेतु भेल तथा कतोक जनजीवनक उपकारी विषयक रूपमे सेहो भेल। जन्मसँ लए मृत्यु धरिक अनुभव, जय-पराजय, राग-विराग, रीति-रेवाज, व्रत-उपवास, शोषण-उत्पीड़न, सम्पन्नता-विपन्नता प्रभृतिक सहज भावाभिव्यक्ति एहि मध्य भेल अछि ओ तेँ एहि रीतिक साहित्य केँ वास्तविक अर्थमे लोकजीवनक दर्पण कहल जाए सकैत अछि।"2

"संकलित ओ चर्चित गाथागीत सभक वैज्ञानिक अध्ययन सँ पूर्वांचलक युग-युगक उपेक्षित सामाजिक इतिहास केँ प्रकाशमे आनल जा सकैछ। मैथिली लोकसाहित्यक इतिहासक दृष्टिसँ 'सलहेस' ओ गाथागीत अछि जाहिमे वन्य संस्कृति अवसान ओ मैदानी संस्कृतिक प्रारम्भकेँ सहजें देखल जा सकैछ। एहिमे मिथिला, मगध, नेपाल ओ तिब्बतक संबन्ध सूत्र, किरात ओ मल्ल संस्कृति, षैव एवं बौद्धधर्म, मालिन कल्ट, चौर्यकला, त्रिपुर-साधना, श्री चक्रपूजन आदि सांस्कृतिक परिसर उजागर भेल अछि। 'लोरिकाइन' मे तरूणी ओ तरूआरि, सान्ती सभ्यता, गोचर (कृषि) संस्कृति, षोषण ओ दास-प्रथा, षाक्तकल्ट, नारीक वासनात्मक रूपक नीक अभिव्यक्ति भेल अछि। एहि संदर्भमे 'लोरिकाइन कोशां'क प्रकाशन बेसी उपयोगी प्रमाणित होयत। संपूर्ण मैथिली लोकसाहित्यमे लोरिक सन योद्ध ओ चनैन सन अद्वितीय सुन्दरि अन्यत्र दुर्लभ अछि। एहि गाथागी सभमे वर्णित नारीपात्र कुसुमा, दोना-चनैनन मांजरि, तिलेसरी आदि मध्यकालीन नारी चरित्रक प्रतीक भऽ गेल अछि।"3

मैथिली लोक साहित्य अधिकांश गीतमय अछि। तकर कारण अछि जे लोक भाषाक प्रयोगमे गीतक प्रधानता अधिक अछि। ई अधिकता मानव जातियेटाक कथामे नहि, अपितु गीत-नृत्यक सहजता देखल जाइत अछि। लोक गाथा अपने-आपमे ततेक प्रसिद्ध ओ रूचिकर होइत अछि जकर गायन मिथिलाक संस्कृतिकेँ उजागर करैत अछि। "मिथिलाक किछु लोकगाथाक नायक तँ जाति निरपेक्ष छथि, जनिक पूजा सभ जातिमे अथवा अधिक जातिमे होइत अछि। किन्तु किछु लोकगाथा नायकक पूजा-अर्चना, प्रेरणा खास-खास जातिएमे होइछ। एहि तरहे कहि सकैत छी जे मिथिला निवासी अधिकांश जातिक अपन-अपन लोकगाथा नायक होइत छथि। ओहि लोकगाथा नायक सँ सम्बन्धित जाति लोक प्रेरणा लैत छथि। ओ प्रेरणाक स्रोत छथि। यथा-अमरसिंह (हुलआइ), गरीबन भुइयां (धोबि), जयसिंह (मलाह), दीनाभद्री (मुसहर), दुलरा दयाल सिंह (मलाह), फेकुरा (हलुआइ), बिहुला (तेली), बेनीराम (नौआ ओ कुड़ेरी) मोतीदाइ (धोबि), रइया रणपाल (धोबि) लालबन बाबा (चमार), लोरिक (यादव), नैका बनिजारा (बनिञ), सलहेस (दुसाध), कारिख पजियार (सुड़ी, यादव, दुसाध छेछन (डोम ओ चमार) मधुकर बाबा (ताँती) बसावन बख्तौर (यदुकुल), शशिया महाराज (खतबे), श्यामसिंह (डोम), आदि मध्य देखबा मे आबैत अछि।"4

लोकगाथा ग्राम्य-परिवेशमे जनसाधारणक मध्य जन सामान्यक लेल एक महत्वपूर्ण मनोरंजक सामग्री प्रस्तुत करैत अछि। एहि साहित्यमे लोक मनुष्यक आशा-आकांक्षा, निराशा, सुख-दुःख, रीति-संस्कार आदिक सत्य अभिव्यक्ति भेल अछि जाहिमे मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासक योगदान महत्वपूर्ण भूमिकामे रहल अछि। जतेक मैथिली लोकगाथा हमरा उपलब्ध भेल अछि, से आख्यान लयात्मक दीर्घ लोककथा, लोकगाथा अछि। एहिमे लोक कंठपर आधारित लोकगाथा आदिमे विभिन्न कालक सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक इतिहास, चिंतन-दर्शन ओ सामाजिक चरित्रक उत्कृष्टता आ निष्कृष्टताक दिग्दर्शन होइत अछि। ई लोकगाथा सभ मुख्य रूपसँ मिथिलाक सांस्कृतिक परिधिमे प्रायः जाति समुदायक विशेष रीति-रीवाज भेष-भुसा, आस्था विश्वास एवं देवी-देवता आदिकेँ व्यक्त करैत अछि। एहिमे मिथिला संस्कृति की? भारतीयक संस्कृतिक विलक्षण उदाहरण प्राप्त होइत अछि। एहि ठाम हम किछु प्रमुख लोकगाथात्मक उपन्यासक विषय वस्तुसँ परिचय करायब।

1. नैकाबनिजारा - "'नैका' नामक महावर्णिकक पुत्रक विवाह चम्मा नरेशक एकमात्र सन्तान 'फुलेश्वरी' सँ भेलैन्हि। 'नैका' द्विरागमन कराए जखन अपन पत्नी कैँ अनलन्हि ओहि समय मे पुनः व्यापार करबाक निमित्त बारहवर्ष महायात्रा मे प्रस्थान कएलन्हि। प्रस्थान करबाक पहिल तीन राति धरि गुप्त रूपैँ आबि अपन पत्नीक संग समागम कएलन्हि। तत्पश्चात् घुरि कैँ नहि अएलाह। एहि अभ्यन्तर मे गर्भवती फुलेश्वरी केँ अपन छोटकी ननदि तिलेश्वरीक द्वारा अत्यन्त दुर्गति भेल। प्रथम तँ ओ अपमानित भए राजच्युत एवं कुलच्युत भेलीह तत्पश्चात पुत्ररत्न प्राप्ति भेलन्हि। पुत्र देव संयोग सँ गुप्त रूपेँ एकटा कुम्हारक घर पोसल गेलन्हि तथा रानी फुलेश्वरी नारी व्यापारी कुम्भा डोमक हाथें बेचल गेलीह। अपन सतीत्वक रक्षा करैत एवं अपन पतिक पुनर्मिलनक चिरसंचित अभिलाषा केँ अपन अन्तः करण संयोगैत फुलेश्वरी के स्वतः अपनहि जेठकी ननदि द्रोण नगरक रानी तुलेश्वरी कीनि लेलन्हि। ओहिठाम फुलेश्वरी केँ अन्त मे अपन पति नैका सँ पुनर्मिलन भेलन्हि तथा दुनू गोटे मिलि वापस अपन नगरी अएलाह। अन्तमे पुत्र सँ सेहो मिलन भेलन्हि तथा अपन पुत्र एवं पतिक संग नीक जीवन व्यतीत करबाक फुलेश्वरी कैँ सौभाग्य भेटलन्हि।"5

2. लोरिक विजय - "एहि उपन्यासक नायिक छथि सती माँजरि एव नायक छथि षौर्यशाली एवं प्रतापी तथा वीर तरूण लोरिक। लेखकक आँखि समक्ष धुतिमान भए उठलीह लोरिकानिक स्वकीया नायिका एवं मिथिलाक बेटी सती मांजरि जनिक छवि मे मिथिलाक माटि-पानि तथा संस्कारक सम्पूर्ण सौरभ आ सीताक परम्परा साकार भए रहल छल। ई एहि उपन्यास मे लोरिकक विवाहिता पत्नी छथि। प्रस्तुत उपन्यास आठ खण्ड मे विभाजित अछि- जन्म खण्ड, सती मांजरि खण्ड, चनैन खण्ड, रणखण्ड, सावरखण्ड, बाजिलखण्ड, समझौतीखण्ड, भैरवीखण्ड। 'चनैन' एहिमे अपन नपुसंक पति सँ सम्बन्ध विच्छेद कए अपन पतिक इच्छा सँ लोरिकक द्वितीय पत्नीक रूप मे अएलीह अछि।

सतीमंजरि 'गौरा' गामक निवासी महरक बेटी छलीह। हुनक माताक नाम पद्मामौहरि छलैन्हि। उधरा पँवार ओही ठामक समीपे उधरा ग्रामक अत्याचारी राजा छलाह। हुनक जीवन तरूआरी, तरूणी तथा आसवक बीच बीतैत छलैन्हि। हुनक कुदृष्टि माँजरि पर छलैन्हि। अगौग्रामक निवासी यादव राजा सहदेवक हरवाह छल, ओ अत्यन्त विशालकाय तथा योद्धा छलाह। हुनक पत्नीक नाम खुलैन छलैन्हि। कुब्बे दम्पत्ति अत्यंत निर्धन छल। माता दुर्गाक कृपा सँ हुनका लोकनिके लोरिक एवं सावर नामक दू टा वीर पुत्रक प्राप्ति भेलन्हि। लोरिककेँ मांजरिक संग विवाह भेलन्हि। एहि क्रम मे उधरा पँवार मारल गेलाह। तत्पश्चात पति द्वारा सहर्षत्यक्ता नारी राजकुमारी चनैन (राजा सहदेवक बेटी) केँ क्रम मे ओ बहुतो अत्याचारी राजाकेँ क्षयमान कएलन्हि। बारह वर्षक पश्चात् पुनः मांजरिक समीप अएलाह। दुनू पत्नी सँ एक-एकटा पुत्र भेलन्हि। दुनू पुत्र एवं चनैन केँ घर सुपुर्द कए लोरिक एवं माँजरि भैरव एवं भैरवीक रूपमे शिवपूजन एवं शांति लाभक हेतु काशी विश्वनाथ चलि गेलाह। एहीठाम एहि उपन्यासक कथानक समाप्त भए जाइत अछि।"6

3. राजा सलहेस - ''राजा सलहेस एक टा पराक्रमी युवक छलाह। अवतारी पुरुष केँ तीन टा विशिष्ट गुण-शक्ति, शील एवं सौन्दर्य रहिते टा अछि। एहि गुणक अन्तर्गत हुनकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व केँ जे लोकरक्षक एवं लोकरंजक रूपमे रहैत अछि, अंकित करबाक चेष्टा कएल जाइछ जे राजा सलहेसक संग सेहो चरितार्थ भेल। राजा सलहेस महिसौथाक राजा छलाह। सलहेसक भागिन चोरेश्वर करिकनहा चोरसबिहक राजा छलाह तथा चोरेश्वर कहबैत छलाह। ओ चोर चूहड़मल्ल मल्लवंशक छल। योगिनी कुसुमा मालिन एक टा साधिका छलीह। कोनो दुष्कर कार्य करबाक समय ओ राजा सलहेसक संग रहैत छलीह। अरण्या एक टा दानवी छलीह। कुसुम एवं सलहेसक प्रयास सँ ओ मानवी मे परिवर्तित भए गेलीह तथा चोरेश्वरक पत्नी सेहो बनि गेलीह। सलहेस केँ महिसौथ सँ पकड़िया आबि राजा मानचन्द्रक चौकीदारी करए पड़लन्हि। चूहड़मल्ल चन्द्रक (मानचन्द्रक बेटी) सहायतासँ हार चोरी कएल जकर अभियोग सलहेस पर लगलन्हि। फलतः सलहेस केँ जाए पडलन्हि। परन्तु प्रेमिका कुसमा अपन सभ घटनाक पश्चातो चूहड़मल्ल नाना प्रकारक षड्यंत्र रचैत

रहल। अन्त मे मृत्यु केँ प्राप्त कएल। चूहड़क पत्नी 'रेशमा' सती भए गेलीह। अन्त मे सलहेस अपन पत्नी सत्यवीक समीप महिसौथा मे आबि गेलीह तथा कुसुमा खेदह मे साधना मे रहए लगलीह। एहिठाम कथा समाप्त भए जाइत अछि।"7

4. लवहरि-कुशहरि - "लवहरि-कुशहरि'क मूलकथा एना अछि - सीता द्वार, शक्तिस्वरूपा भए सहश्रमुख रावणक वध कएल जाइत अछि जे सम्पूर्ण अयोध्या वासी कैँ चकित कए दैत अछि। सहश्रमुख रावण द्वारा राम अपन चारू माएक संग धराशयी भए जाइत अछि। सीताक जय-जयकार सँ रामक ह्रदय मे ईर्ष्या उत्पन्न भए जाइत छन्हि तथा ओ सीता सँ अपनाकेँ हीन बुझाए लगैत छथि। सीताक हाथें रावणक चित्र बनाओल देखि राघव क्रोधित भए उठैत छथि। ओ सीता के वनवास देवाक निर्णय करैत छथि। लक्ष्मण द्रवित ह्रदय सँ सीता केँ सघन वनमे छोड़ि अबैत छथि। सीता के आदिकवि बाल्मीकिक आश्रय भेटि जाइत छन्हि। ओहि ठाम हुनका 'लव' एवं 'कुश' नामक दू टा पुत्रक प्राप्ति होइत छान्हि। 'लव' एवं 'कुश' बाल्मीकि एवं अपन माय सीता सँ शिक्षा-दीक्षा ग्रहण कर शीघ्रहि शस्त्र एवं शास्त्र दुनू विधा मे निपुण भए जाइत छथि। एक समय मर्यादा पुरुषोत्तम राम अश्वमेघ यज्ञ करैत छथि जकर घोड़ा 'लव' एवं 'कुश' बान्हि दैत छथि। दुनू भाइ मिल रामक विशाल सैन्य शक्ति केँ रामक भाइ सहित पराजित कए दैत छथि। अन्त मे सीता द्वारा सभक परिचय-पात कराओल जाइत अछि। राम सँ साक्षात्कारक पश्चात् सीता पाताल प्रवेश कए जाइत छथि। ओहि ठाम एक टा स्वर्णकमल प्रस्फुटित भए जाइत अछि। अयोध्यावासी एवं राम के ँ अश्वमेधक अश्व एवं विजेता उत्तराधिकारी 'लव' एवं 'कुश' भेटि जाइत छन्हि।"8

5. रायरणपाल- ''रायरणपाल एकटा आदर्शवादी योद्धा छलाह। हिनक पत्नी ''यशोमती" एकटा महीयासी नारी छलीह। राय अरिन्दम रणपाल अपने कुटुम्बक एकटा भीषण षड्यंत्रक कारणे मारल गेलाह। हुनक वीर पत्नी यशेमती गर्भवती छलथिन्ह। हुनक वध करबाक आयोजन सेहो केलीह जकर एकटा करूणामय वणिकक संरक्षण मे सयत्न पालन-पोषण कएलन्हि तथा सभाविद्या मे प्रशिक्षित कए प्रतिशोध लेलन्हि। असिधारा नामक युवती सँ अन्त मे यसोमतीक पुत्र गगुलीरणपालक विवाह भेलन्हि। अन्त मे अपन राजधानी शोभन नगर घुरि केँ अएलाह। एहि ठाम कथा अन्त भए जाइत अछि।"9

6. दुलरादयाल- ''एहि उपन्यासक नायक दुलरादयाल छथि तथा नायिका एक टा अनुपम सुन्दरी अमरावती। दुलरादयाल राजा अथवा योद्धा नहि अपितु एक गोट सिद्ध नर्तक एवं साहसिक सार्थवाह छथि। हुनक (दुलराक) विवाह एक टा शक्तिशाली डाइन बहुरा टकुराइनक बेटी सँ भेल छलैन्हि। हुनक साम छलैन्हि अमरावती। दुलरा माता कमलाक भक्त छलाह तथा अमरावती सेहो माँ कमलेश्वरीक अनन्य उपासिका छलीह। अमरावतीक माय एकटा उच्च श्रेणीक तांत्रिक साधिका छलीह किन्तु छलीह डाइन ओ ई चाहैत छलीह जे माँ कमलेश्वरीक पूजा-पाठ छोड़ि लोक ओकरे (बहुरेक) सेवा पूजा दिअए। दुलरा सहित भरौड़ग्राम निवासी एहि बात के ँ अस्वीकार कए देल। बहुरापर विजय प्राप्त करबाक हेतु विभिन्न स्थल पर जाए पड़लन्हि। बहुरा छल सँ एकटा लाला सुबासानन्द द्वारा भरौड़ा मे कमलाक धार के ँ सुखा देलीह। फलतः दुलरा अत्यन्त कठिन तपस्या द्वारा पुनः मिथिलामध्य धार बहौलन्हि। बहुरा ठकुराइन पर विजय प्राप्त कए ई अंत मे अपन धर्मपत्नी अमरावती के द्विरागमन करबा कए भरौड़ा आनलन्हि तथा अतिआनन्द सँ जीवन व्यतीत करब प्रारंभ कएलन्हि।"10

एहि तरहेँ मैथिली लोकगाथा मिथिलाक मध्यकालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्.तिक स्थितिक एहन इतिहास प्रस्तुत करैत अछि जाहिमे सुसङ्गत तिथिक्रम आ मान्य प्रस्तुति-विधि अनुपलब्ध रहितहु अन्यथा इतिहासक पोथी सभमे जे सूचना आ तथ्य उपलब्ध नहि छैक, से भेटैत छैक। ई लोक इतिहासक रचनाक लेल सशक्त आधार प्रदान करैत अछि। ई गाथा सभ बारहम शताब्दी आ तकर बादे अपन वर्तमान स्वरूप पाबि सकल। मुदा, एकर वर्ण्य विषय तँ कोनो-ने-कोनो रूपमे विगत अनेक शताब्दीसँ कहल आ गाओल जाइत रहैक। मणिपद्म तकरा सभकें साहित्यिक रूप दए मैथिली साहित्यक तें सेवा करबे कएलनि अछि, मिथिलाक उपाश्रयी वर्गक इतिहास-लेखनक लेल महत्वपर्ण स्रोत-सामग्री सेहो सुलभ करौलनि अछि।

सन्दर्भ

1. मैथिली लोकसाहित्य का अध्ययन- डॉ. ताराकान्त मिश्र, पृष्ठ- 29.
2. मैथिली साहित्यक इतिहास- डॉ.. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृष्ठ - 37.
3. पूर्वांचलीय लोकसाहित्य- चेतना समिति, पटना, पृष्ठ- 33.
4. मैथिली लोकसाहित्य एवं लोकसंस्कृति- चेतना समिति, पटना, शीर्षक लोक गाथा नायक : जातीय जागरणक प्रेरणा स्रोत- डॉ. महेन्द्र नारायण राम, पृष्ठ- 87-88.
5. मणिपद्मक जीवन ओ साहित्य - डॉ. रणजीत कुमार सिंह, ऋतुराज प्रकाशन,
जेगियारा, दरभंगा, पृष्ठ- 40-41.
6. उपरोक्त, पृष्ठ- 38-39.
7. उपरोक्त, पृष्ठ- 39-40.
8. उपरोक्त, पृष्ठ- 41-42.
9. उपरोक्त, पृष्ठ- 42
10. उपरोक्त, पृष्ठ- 43. ❏❏❏

मैथिलीक समन्वयात्मक लोकगाथा : दीना-भद्री

✍ डॉ. निक्की प्रियदर्शिनी

आदि काल सँ मनुष्यक ज्ञान के अक्षुण्ण रखबाक सामान्यतः दू टा परम्परा देखल गेल अछि। एक त लिखित साहित्य ओ दोसर मौखिक साहित्य। लिखित साहित्य मे परम्परागत पौराणिक ग्रन्थ, जाहिमे विभिन्न प्रकारक संस्कृति ओ मानव जीवन सँ सम्बनि त विविध रूपक वर्णन कएल गेल अछि एवं दोसर रूप जे मौखिक साहित्य अछि, ताहिमे दृश्य-श्रव्यक परम्परा बहुत सम्बृद्ध रहल अछि। एहिमे मनुष्यक ज्ञान के अक्षुण्ण ओ अनुभव के स्मृति ग्राह्य बनेबाक लेल अनेक दृष्टान्त, आख्यान, श्रुति परम्पराक समावेश लोकजनभाषाक माध्यम सँ कएल गेल अछि। एहि दृष्टन्त ओ श्रुति परम्परा कँ जन-जन धार पहुंचेबाक हेतु लोकजन श्रुति कँ लोकगाथाक रूप दए मनुष्यक वास्तविक पहचान के स्थापित करबाक हेतु लोकगाथा, लोकनृत्य, लोकनाट्य आदिक जन्म देलक। साधारणतः मनुष्य अपन जीवनक सुख-दुखक अनुभव के अपन परिवेश ओ प्रकृतिमे घूलल-मिलल देखैत अछि आ ताहि सँ सहज रूपं उत्पन्न भाव के अपन वाणी तथा हाव-भाव सँ व्यक्त करैत अछि। अही प्रकार लोकजन अपन हृदय आ मस्तिष्क पर प्रभाव देमए बला घटना सभङ अनेक आख्यान, जनश्रुति, स्मृति ग्राह्य दृष्टान्त आदि कँ गाबि कए, नाचि कए, संगीतक भाव दए रागात्मक रूपमे प्रकट करैत अछि, एहि प्रकारक स्वभाविक प्रक्रिया कँ अनादि काल सँ मनुष्य भाषागत अभिव्यक्ति दए ओहिमे गीत, कथा, उक्ति आदि कँ जोड़ि अभिव्यक्त कएलक आ करैत छल। एहि प्रकारक स्वभाविक भाषागत अभिव्यक्तिये लोक साहित्यमे लोकगाथाक रूप लेलक अछि।

मुदा आजुक इलेक्ट्रोनिक माध्यमक बढ़ेत प्रभाव मिथिला की, भारत की, विश्व भरि मे एहि प्रकारक स्वभाविक भाषागत अभिव्यक्तिक परम्परा जकरा हम लोक साहित्य कहल अछि तकरा लेल गम्भीर संकट उत्पन्न भए गेल अछि। वर्तमान मनुष्यक सामाजिक जीवन मे व्याप्त पाश्चात्य संस्कृति, सर्वग्रासी अपसंस्.ति, वस्तु स्थितिक मूल स्वरूप के नष्ट-भ्रष्ट कए रहल अछि। एकरा हम एहि तरहें कहि जे बाजारू पाश्चात्य संगीत, फिल्मी, दूअर्थी गीत-संगीत सभक प्रभाव लोकगाथा गीत-संगीतक स्वरूप कँ भ्रष्ट कए दैत अछि। आजुक अनेक एहन क्षेत्रीय भाषा मे लोकगाथात्मक गीत परम्पराक तर्ज पर नव-नव भलगर संगीत सुनए मे अबैत अछि जे लोकगाथात्मक सांस्कृतिक विविधताक वास्तविक चिन्ह कैं समाप्त कए रहल अछि। एहि सँ मानव समुदाय कैं मात्र मनोरंजन छोड़ि आओर कोनो समन्वयात्मक स्वरूप प्राप्त नहि भ' सकैत छनि।

आधुनिकीकरणक एहि प्रबल प्रवाह बहितो हमरा लोकनिक लोक संस्कृति अत्यन्त महत्वपूर्ण साहित्यिक अंग बनि लोक विवेक मे स्थपित अछि। लोक विवेकक ई परम्परा जे वाचिक परम्परा छल, ताहिमे लोक संस्कृतिक अभिव्यक्ति शास्त्रीय साहित्य अथवा अभिजात्य साहित्य अथवा लोक ओ शास्त्र में निहित अछि जे एखन धरि जनमानसक पटल पर अपन छाप छोड़ने अछि आ जीबि रहल अछि। एहि प्रकारक लोकगाथात्मक सहित्यक विविध आयाम आदिकाल सँ वाचिक परम्पराक संग एक युग से दोसर युग आ दोसर युग सँ तेसर युग, एक पीढ़ी सँ दोसर पीढी, दोसर पीढ़ी सँ तेसर पीढ़ी धरि अनवरत चलैत, स्वरूप के परिमार्जित करैत, युगानुरूप बदलैत रहल अछि। समाज मे विभिन्न वर्गकक लोक अपन जीवन यापन अपना ढंग सँ करैत रहलाह अछि। पूरा लोक के आदिम मानव, आदिम प्रवृति अथवा आदिम युग के पर्याय नहि मानल जा सकैत अछि। 'लोक' ओ 'गाथा' सँ तात्पर्य अछि ओहि लोक मानसक अथवा लोक प्रवृतिक जे सहज ओ प्रकृतिगत मानसिक वृत्तिक पूँजी रहल अछि। एकरा हम मानव जातिक मस्तिष्कक उपज वा पूँजीभूत इकाई क रूपमे देखि सकैत छी। सहज ओ प्रकृतिक अर्थ हम अपन पूर्वज सँ नहि जोड़ि आजुक समाज मे विद्यमान सर्वकालिक रूप मे देखैत छी जे बदलैत युगक चेतना कँ आत्मसात करैत कृत्रिम प्रभाव सँ दूर रहल अछि। लोकभाषा ओ लोककण्ठ मे अवस्थित एहि प्रकारक साहित्य जकरा हम मनुष्यक अन्तर्गत निहित लोकतत्वक कारणे लोकसाहित्य कहैत छी से लोक मुखमे एखनो जीवित अछि। एहि प्रकारक लोकगाथात्मक काव्य मिथिला मे जातीय स्मृति ओ जीवन्त समाजक संकल्प बनि लोकजीवन मे अपराजय भाव सँ अन्तःसलीला जकाँ प्रभावित होइत रहल अछि।

मिथिलाक लोक परम्परा मे एहि प्रकारक जनवाणी, लोक मन, लोक मत, लोक संस्कार, लोक रीति आदि मनुष्यक जीवनक प्रत्येक पल कँ छुबैत लोक साहित्यमे सहज सम्वादक रूपमे जानल गेल अछि। एहि प्रकारक रचना मूल रूप सँ कोनो एक व्यक्ति द्वारा नहि रचल गेल अछि, गाओल गेल अछि वा सुनाओल गेल अछि। समयक संग एहि प्रकारक गाथा अन्य सामाजिक व्यक्ति द्वारा जोड़ल वा घटाओल गेल अछि। एहि प्रकारक रचना कोनो एक व्यक्तिक नहि भए पूरा समाजक भश

जाइत अछि आओर ओहि समाज मे रहए बला विभिन्न जाति धर्मक लोक अपन श्रम, सहयोग, शिक्षा, उपदेश, भक्ति, समाजिक आत्मीयता, सम्बन्धक परस्पर संयोग, पारम्परिक सहभागिता, जीवन मे संघर्षशीलताक प्रेरणा एक विशेष जातिक वाचिक परम्परा बनल ओ तें मिथिला मे विभिन्न जातिक लोकक लेल फराक-फराक लोकगाथा उपलब्ध प्राप्त होइत अछि। एहि प्रकारक लोकगाथा मात्र मिथिले टा मे उपलब्ध नहि अछि, अपितु सम्पूर्ण पूर्वांचल

ओ अन्य क्षेत्रक भाषा मे अपन-अपन बोलीक अनुसार, स्थानक अनुसार, देश-काल-पात्रक अनुसार अभिव्यक्त भेल अछि आ भए रहल अछि। एहि भाषा सभ मे मैथिली, मगही, भोजपूरी आदि अनेक भाषा मे अपन संवेदना ओ मार्मिकता लए सत्यक अद्भूत सम्प्रेषण प्रस्तुत करैत अछि जे अपन लोक संस्कृति के उजागार करैत अछि।

मिथिलामे अधिकांश लोकगाथा कोनो जाति विशेषक वंशानुगत कथा पर केन्द्रित प्राप्त भेल अछि। यथा- लोरिक गाथा मे गोप समुदायक, सलहेस गाथा मे दुसाध समुदायक, दुलरा-दयाल गाथा मे मलाह समदायक, नैका बनिजारा में वैश्य समदायक छेछन गाथा मे डोम समुदायक, रायणपाल ओ लवहरि कुशहरि मे क्षत्रीय समुदायक चित्रण भेल अछि तहिना दीना भद्री लोकगाथा मे दलित-शोषित मुसहर समुदायक समिष्ट चित्तक अभिव्यक्ति भेल अछि जे अपन एहि मौखिक वचन द्वारा अपन सामाजिक जीवनक प्राप्त उत्साह-उल्लास, आशा-आकांक्षा, आस्था-संघर्ष, श्रम ओ जिजिवीषाक आवेग, पारिवारिक संघर्षपूर्ण समाजक एक सघन, सुदृढ आत्मीयता पूर्ण गाथाक गायन करैत अछि।

महामना ग्रिअर्सन महोदय जे डी एम जी अंक 39 पृष्ठ 617-671 मे दीना भद्री गाथाक मैथिली रूप जे प्रकाशित अछि, ओकर भाषा, विषय वस्तु आ शब्द.विन्यास सँ प्रतीत होइत अछि जे ई गाथा सोलहम-सत्रहम शताब्दी सँ बेसी पुरान नहि भए सकैत अछि। दीना-भद्री बंध-प्रबन्धक रूपमे मीर सुल्तान (पद 04) योगिया कैल गुजरान (पद 54), एक बेर दादा हुकुम दिअ (पद 247), देलैन्हि नालिस कराय (पद 254) फजिहति कएलक (पद 273) तथा गामक गुमस्ता (पद 349) आदि अनेक शब्द अछि जे अरबी-फारसी शब्द थिक। तें ई लोकगाथा सोलहम श्ताब्दीक बुझि पडैछ किएक त एहि सँ पूर्व मिथिला मे मुसलमानी शासनक प्रभाव पूर्ण रूपेण देखल गेल अछि।

एहि लोकगाथाक नामकरण जे लोकसाहित्यमे प्राप्त होइत अछि से अछि दीना-भदरी वा दीना-भद्री। दुनू रूपक शीर्षक हमरा मैथिली लोकसाहित्यक विश्लेषण-विवेचन मे लिखल प्राप्त भेल अछि। जेना कि शाब्दीक अर्थक अनुसार हम विचार करए छी तश हमरा दीना भद्री शब्द एहि लोकगाथाक हेतु उपयुक्त बुझि पहेत अछि। दीना भद्री शब्द मे भद्री शब्द अपभ्रंश भए 'भदरी' भ' गेल अछि। किएक त मैथिली मे बहुत एहन शब्द अछि जे अपन मूल स्थान के छोड़ि अपभ्रंश मे उच्चारण कएल जाइत अछि। एहिठाम हम स्पष्ट करए चाहैत छी जे एहि लोकगाथाक दीना भद्री नाम उपयुक्त अछि। दीना-भद्री एहि दू शब्दक शाब्दिक अर्थ पर यदि ध्यान दैत छी त' दीनक अर्थ - नम्र, विनित, दीनाक अर्थ- मुस, मुसिका, भद्रक अर्थ- श्रेष्ठ, साधु, भद्राक अर्थ- पृथ्वी एवं एक नदी, भ्रदीक अर्थ- भाग्यवान, शब्दक एहि प्रकारक अर्थ प्राप्त होइत अछि। एहि सभ अर्थक यदि जोड कएल जाइत अछि त' दीना-भद्री शब्दक अर्थ हमरा नम्र, विनीत, श्रेष्ठ साध-मस-मसिका, पृथ्वी नदीक नाम आ भाग्यवान प्रमुख अथक रूप मे प्राप्त भेल अछि। एहिठाम 'दीना-भद्री' एहि लोकगाथाक नाम हमरा उपयुक्त बुझि पडैत अछि। एहि लोकगाथा मे वर्णित पात्रक नाका थारू, दोनदार, नीरसी बुधबा, रजना, पोटरा गीदड़, रतन, मोती, कालू सादा, हीरीया, जिरीया, ताहिर मीयाँ, गुलामी जट, फेकुनी तथा जोराबर सिंह, नदीक नाम मे बौरम नदी, देवहा धार, कजरा नदी भेटैत अछि। दीना-भद्रीक जन्म स्थान जोगिया-जॉजरि नेपालक तराईक एकटा गाम सप्तरी मे अछि। गाथा मे वर्णित कटैया गाम, बगहा गाम, उरसी डीह, दौड़ा गामक नाम दौड़ी पट्टी, कनौली, नेपालक तराई सीमा पर कुनौली बाजार सँ जुड़ल अछि।

लोकगाथाक मूल कथाक विश्लेषण मे हम दीना एवं भद्री नामक दूटा भाइक गाथा, शौर्य-शक्ति आदिक वर्णन पबतै छी। आलौकिक शौर्य ओ पराक्रम सँ तात्पर्य अछि जे गाथा नायक दुनू भाइ मृत्यु प्राप्त कएलाक बादो जन-जीवन में प्रेम छायाक रूपमे प्राप्त होइत छथि। मुसहर जातिक रहन-सहन ओ स्वभाव .षि-कार्यक संग शिकार प्रवृति सँ जुड़ल रहल अछि। एहू गाथा कथा मे दीना-भद्री कृषि कार्य सँ जुड़ल रहैत शोषित जीवनक विरोध ओ शोषण ओ घृणाक जीवन नहि जीवि स्वतंत्र, स्वच्छन्द जीवन जीबाक आकांक्षा लेने छलाह। ई दुनू नायक एहि लोकगाथा मे दिव्यशक्ति सम्पन्न छलाह तें निरन्तर दीन-दुःखीक व्यथा-कथा सुनि ओकर निराकरणक उपाय लोक कँ कहैत छलथिन तें ई दुनू लोकदेवताक रूप मे एखनो पूजित-प्रतिष्ठित छथि। एहन जातिक कोटि मे दीना-भद्री लोक देवता बनि 'मनुस देवा' सेहो कहबैत छलाह। हिनक गाथा गीत-धार्मिक भावना सँ युक्त अछि आओर जन-जन मे ओही भावना सँ सुनल ओ गाओल जाइत अछि। दुनू भाइक क्रिया-कलाप अत्यन्त उच्च विचारक रहल अछि। लोभ लालच, याचना, खुसामद कैं अस्वीकार करैत एक विशिष्ट महानायकक परिचय दैत कहैत छथि कबहु ने कैल खुरपी कोदारि बोनि कहियो ने जनिओ हो धामी, पैंच उधार। लोकगाथाक सबसँ महत्वपूर्ण तथ्य ई अछि जे कटैयाक

जंगल मे शिकार करैत काल दीना ओ भद्री दुनू 'फोटराश नामक पशु सँ लडैत मारल जाएत छथि। मारल गेलाक बाद लोक देवता सलहेस द्वारा दू बेर जिऔलाक बादो फोटरा द्वारा दुनू नायक मारल जाएत छथि। तकरा बादक कथामे दुनू नायक प्रेतात्मा बनि गाथा मे चित्रित भेल अछि। दीना-भद्रीक चरित्र कठोर, संयमी, नम्र, विनीत, श्रेष्ठ साधुक रूपमे वर्णित भेल अछि। छदम भेष धारण कए ओ अपना घर आएल छथि मुदा माय, पत्नी पर्यन्त हुनका चिन्हि नहि सकैत अछि। भिक्षुक रूप धारण कए अपन घर मे आएल अतिथि-सत्कार करैत ई लोकनि दुनू भाइ म कोठली मे बन्द क' दैत अछि। हीरिया तमोलिनियाँ एवं जीरिया तमोलनियाँ दुनू कनियाँ छलीह, जकरा डोली पर लए दुनू भाइ विदा भेल छथि। भद्रीक आत्मा दीनाक आत्मा सँ गप-शप करैत गुलामी जट सँ दूध अनबाक आज्ञा लए भद्री गुलामी जटक घर तकैत, गुलामी जट सँ भेटि करैछ। ओहिठाम मारि-पीट में गुलामी जट विजय प्रापत करैछ बाद मे एहि दुनू कथा नायक कॅ जोरावर सिंह सँ लडाइ मे विजय प्राप्त करबा मे मददि करैत अछि। जोरावर सिंह अत्याचारी, बलात्कारी एवं शोषक छल तकरा गुलामी जट मल्ल युद्धक प्रतियोगिता मे मारि दैत अछि।

एहि लोकगाथाक नायक दीना-भद्री एक सफल महानायकक रूप में चित्रित भेल छथि। ओना दीना-भद्री गाथाक कथा कतौ-कतौ संक्षेप मे, कतौ कतौ मूल कथा अतिविस्तृत ओ भिन्नता लए वर्णित भेल प्राप्त होइत अछि। एहि लोकगाथा में नायक ओ पात्रक संग एक एहन अदभुत कथाक प्रसंग वर्णित भेल अछि जे अतिरंजित, लोकरूढ़िक व्यापारक रूपमे सम्बृद्ध कथा कहैत अछि जे तर्क संगत ओ बुद्धिगम्य नहियो रहैत गाथा, गायकक मुँह ओ श्रोता समाजक श्रवण के अभिभूत कएने रहैत अछि। लोकगाथा गीतक गायन स्पष्ट रूप सँ पराक्रम ओ लोकजीवनक पृष्ठ भूमि मे गाओल गेल अछि, जाहि सँ मिथिलांचलक प्रत्येक समाजक विभिन्न कुल परिवार, जाति उपजातिक, सुख-दुःख, सर्दी-गर्मी, रौदी-दाहीक समन्वयात्मक रूप स्पष्ट भेल अछि। लोकगाथा मे पूजा-वन्दना, भक्ति-भावनापूर्ण, भगवान श्रीरामक बारम्बार उच्चारण सम्पूर्ण समाजक जीवन धारी व्यक्तिवर्कं लोक कल्याणकारी सिद्ध करैत अछि। एहि प्रकारक पौराणिक गाथा आंचलिक रहितो सम्पूर्ण मिथिला, देश, राष्ट्रक हेतु लोक परम्परा युक्त लोक धारणा के जीवित रखने अछि। मिथिला मे पूजित एहि प्रकारक देवी-देवता समाजक हेतु पूजित ओ आदर्शक पात्र रहलाह अछि। एहि विषयक लोकगथामे समाजक समन्वयात्मक स्वरुप, व्यक्तित्व, दर्शन, ध्यान, गुण-कथन, पराक्रम, चमत्कार, गहबरक शोभा, मनौती, निवेदन आदिक अभिव्यक्ति स्पष्ट रूपसँ भेल अछि जे लोकजीवनक व्यापार कँ अक्षुण्ण रखने अछि।





मैथिलीक ऐतिहासिक उपन्यास 'लोरिक विजय'मे कथानक

✍ देवेश झा

मैथिली साहित्यमे लोकसाहित्य प्राचीन कालक धरोहर अछि। ई अत्यन्त समृद्ध आ व्यापक अछि। "लोकसाहित्यक महत्त्वक अभिज्ञान कतोक शताब्दीक पूर्व कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर एवं महाकवि विद्यापतिकेँ भ' गेल छलनि, से ऐतिहासिक तथ्य अछि।"1 लोकसाहित्य मानव समाजक ओहि कालक साहित्य अछि जखन कि सभ्यता औपचारिकता सामाजिक संस्कारसँ बहुत दूर मनुष्य आदिम प्रवृत्ति लए सहज अवस्थामे जीवन व्यतीत करैत छल। आदिमानवक सभटा क्रियाकलाप भावधारा विहीन अंतहीन रूपसँ प्रवाहित होइत छल। सामाजिक जीवनमे नायकक कोनो कथ्य तात्कालीन मानवपर लागू नहि होइत छल। धीरे-धीरे सम्यताक विकास भेल। मनुष्यक नैसर्गिकता, उद्गार सहज स्वाभाविक रूपेँ मुखसँ बाहर भए सम्पूर्ण आशा, आकांक्षा, उल्लास, सुख-दुखकेँ वाणी भेटलैक। इएह वाणी परंपराक आधारपर जन-जीवनमे संचित ओ सुरक्षित रहल आ बहुत बादमे आबि लोकसाहित्य कहओलक।

"यथार्थतः लोक साहित्य ओतबे स्वाभाविक अछि जतेक वनमे प्रस्फुटित पुष्प, ओतबे स्वच्छन्द, जतेक आकाशमे उड़यवाली चिड़ै-चुनमुनी, ओतबे सरल एवं पवित्र, जतेक गंगाक निर्मलध ारा। संक्षेपमे हम कहब जे आदिकालीन परंपरापर आधृत जनवाणीमे मुखरित ओ अभिजात्य संस्कारसँ दूर रहयवला मनुष्यक उदगारक मौखिक अभिव्यक्ति सरल-तरल लोकसाहित्य अछि।"2

लोक भावनाक उदय आ विकासमे मनुष्यक जन-जीवनमे लोक आ वेद दुनूक महत्व अछि। भारतीय साहित्यक ऐतिहासिक परंपरामे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेदमे लोक शब्दक प्रयोग स्थान आ जीवक लेल भेल अछि। जेमिनीय उपनिवद् ब्राह्मणमे लोक शब्दक प्रयोग भेटैत अछि। आदिकवि बाल्मिकी तीन लोकक वर्णन कयने छथि। दुर्गाशप्तशतीमे लोक शब्दक प्रयोग स्थान आ प्राणी दुनूक लेल भेल अछि। भरतमुनिक 'नाट्यशास्त्र'मे अनेक लोक धर्मी तथा नाट्य धर्मीक प्रवृत्तिक उल्लेख लोक शब्दक रूपमे भेल अछि। अशोकक शिलालेखमे शब्दक प्रयोग प्रजागणक लेल भेल अछि। महाकवि कालिदास राजा दिलीपसँ लोक-परलोकक वर्णन करओने छथि। ज्योतिरीश्वर आ विद्यापति सेहो अपन रचनामे लोक भावनाकेँ प्रस्तुत कयलनि अछि। मैथिल अतिथिकेँ कुशल-मंगल पुछैत जिज्ञासा कयल जाइत अछि जे- 'लोक-वेद सभ कुशल छथि ?

लोकसाहित्य प्रवृत्तिमे लोकगाथा लयात्मक रूपमे जानल जाइत अछि। मैथिलीमे जतेक लोकगाथा प्राप्त भेल अछि जाहिमे लोक-भावनासँ निहित तथ्यक निरूपन प्राप्त होइत अछि। लोकगाथा ओहि वर्गमे बेसी प्रचलित अछि जे वर्गक अभिजात्य संस्कृति, सभ्यता एवं शिक्षासँ छूटल रहल अछि। लोकगाथा लोककाव्यक रूपमे स्मृतिक परंपरामे लोकानुरंजक रूपमे प्रसिद्ध अछि।

"उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे अंग्रेज विद्वान जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सन मैथिलीक अस्पृष्ट क्षेत्रक दिशामे बढ़बाक पहिल प्रयास कयलनि। ओ मैथिली भाषा-भाषीक तत्विक अध्ययन, प्राचीन साहित्यक अन्वेषण-संकलन ओ मैथिलीक शब्द सम्पदाक संचयन संगहि एकर लोकसाहित्यहुक संकलन प्रकाशन करौलनि जाहिमे मैथिलीक कतोक प्रसिद्ध लोकगाथाकेँ सेहो महत्वपूर्ण स्थान देलनि।"3

मैथिलीमे उपलब्ध लोकगाथाक वास्तविक संख्या कतेक अछि? ई नहि कहल जा सकैत अछि। एहि संदर्भ इतिहासकार लोकनि मौन छथि। डॉ. जयकान्त मिश्र अपन पोथी 'लोक साहित्यक भूमिकामे लोरिक, सलहेस, दीनाभद्री कमला मैयाक चर्चा कयलनि अछि। एहि परंपराक जीवन देनिहार अथवा "मैथिली साहित्य मे ई श्रेय डॉ. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' (1918-1986) के छनि जे लोकगाथाक वास्तविक स्वरूपक संकलनार्थ गहन भावें डुब्बी मारिक' एहि दुर्लभ मोती सभक संग्रह कयलनि तथा हुनका अनुसार लोरिक, सलहेस, नैका बनिजारा, दीनाभद्री, दुलरा दयाल, अनंग कुसुमा, राय रणपाल एवं लवहरि-कुशहरि अछि। परवर्ती काल मे कतिपय लोकगाथाक चर्चा भेल अछि, किन्तु ओकर ऐतिहासिकता एवं प्रामाणिकता पर प्रश्न चिन्ह अछि।

उपर्युक्त लोकगाथान्तर्गत द्विजेतर जाति पर केन्द्रित रहलाक कारण मैथिली साहित्यक अनुसंधाता लोकनि एहि गाथा सभक संकलनार्थ उन्मुख नहि भेलाह, कारण एहि साहित्यक अधिष्ठाता लोकनिक मान्यता छलनि जे मैथिली मात्र ब्राह्मणक भाषा थिक। किन्तु मैथिली आइ जीवित अछि ओही ग्रामीण परिवेश मे रहनिहार द्विजेतर जाति मे जनिक बोली-चाली मे पुश्त-दर-पुश्त एकरा अपना हृदय में अद्यापि संयोगि क' रखने अछि। अन्यथा मैथिली तँ कहिया ने मरि गेल रहैत। द्विजेतर जाति सँ अभिप्राय थिक लोरिक गाथा मे गोप समाजक, सलहेस गाथा मे दुसाध समाजक, दुलरा दयाल गाथा मे मलाह समाजक, दीनाभद्री गाथा मे दलित मुसहर समाजक, नैकाबनिजारा गाथा मे

वैश्य समाजक, छेछन गाथा मे डोम समाजक, रायरणपाल एवं लवहरि-कुशहरि गाथा मे क्षत्रिय समाजक चित्रण अछि। एहि ऐतिहासिक विभूति लोकनिकें प्रकाश मे आनि मणिपद्म मैथिली भाषा आ साहित्यक आ मिथिलांचलक सामाजिक जीवनक संगहि भारतीय साहित्य एवं समाजक एहन प्रकाश स्तम्भ आलोकित कयलनि जे कोटि-कोटि जनमानसक अन्धकारमे टापरटोइया द' रहल छल। वस्तुतः मिथिलाक ई लोक महाकाव्यक ऐश्वर्य भारतीय लोकगाथाक अन्तर्गत अपन ऐतिहासिक, सांस्थतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक वैभवक गरिमा ओ दीपित छटाक कारण अतुलनीय अछि।"4

लोरिकविजय- गोप सम्प्रदायमे प्रचलित मिथिलाक लोकगाथा सम्पूर्ण लोकगाथामे सबसँ दीर्घ आ प्राचीन अछि। एहि प्रसंग मणिपद्म जीक कथन अछि- "सामाजिक संघर्षक तऽ महाकाव्य सप्राण दस्तावेज जकाँ बुझि पडैत अछि। एक आध टाकेँ छोड़ि एकर सभटा पात्र असवर्ण छथि। सामाजिक अत्याचार, अनाचारक बड़ सजीव चित्रण छैक एहिमे।

लोककण्ठक काव्यक भाषा कोनहुना एक स्वरूप मे व र्मान नहि रहैत छैक। हँ ताल, लय आ छन्दक सभ दिन आ सगरे एके रंग रहलैक। एकर काव्य प्रवाह प्रचण्ड निर्झर जकाँ प्रवाहित छैक। एकर शब्द-सौन्दर्य, अर्थ-सौन्दर्य, भाव-चित्र, पात्र-चरित्र आ प्रबन्ध-सौन्दर्य एकर अपन खास विभूति छैक जे कतहु मेटए बला नहि।

हमरा प्रसन्नता अछि जे हम एहि कण्ठ महाकाव्य भूमिक मौलिकताक अधिक समीप आबि सकलहुँ। एकर खोज शोध, व्याख्या, विश्लेषण आ आलोचन जे प्रस्तोत कएल अछि से कतोक खण्ड पोथीक रूप लए लेलक अछि जकर प्रकाशन सम्प्रति मे असंभव नहि कठिन अवश्य अछि।"5

एहि लोकगाथा केँ उपन्यासक स्वरूप प्रदान करबामे मणिपद्म जी अत्यन्त सतर्क रहथि। मौलिक कथावस्तुक सूक्ष्मता कैँ योजनाबद्ध तरीका सँ प्रस्तुत कएलनि अछि। एहि सन्दर्भ हिनक कथन अछि- ''अइ पोथी मे, लोरिकाइन केँ उपन्यासक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। ओना तऽ ई उपन्यास संस्मरण सालंकार प्रस्तुत कैल जाइत तऽ सात सै पृष्ठ सँ कम नहि अँटैत। प्रकाशनक संकुलताक कारण एकरा संक्षेप कहितो अइ बातक ध्यान राखल गेल जे यथास्थिति सुरक्षित रहैक।"6

एहि लोकगाथात्मक उपन्यासक कथावस्तु एहि प्रकारेँ अछि- उधरा पवार उधरा ग्रामक अत्याचारी, व्यभिचारी मुदा बलशाली राजा रहथि। हुनक कुदृष्टि माँजरी पर छलन्हि। माँजरि गौरा गामक महरक कन्या छलीह। माँजरिक गाम सेवाचन अपन भगिनीक सतीत्वक रक्षा लेल एक अतिबलशाली मल्ल लोरिक केँ माँजरिक वरक रूपमे प्रस्तुत कएलन्हि। विवाहोपरान्त लोरिक उधरा पवारक वध कएलन्हि। ओम्हर राजा सहदेवक पुत्री राजकुमारी चैननक पति शिवधर, इन्द्रक शाप सँ नपुंसक भऽ गेल रहथि। ता धरि चनैनक द्विरागमनक सेहो नहिं भेल छल। अस्तु उदार हृदयक राजकुमार शिवधर अपन पत्नी चनैनके सहर्ष त्याग करैत कोनो आन पति खोजि लेबाक सलाह देलन्हि। घुरैत काल बाट मे अति बलशाली मल्ल बंठा चमारक कुदृष्टि चनैन पर पड़ल। ओ हिनक शीलहरण करए चाहलक। तखन चौननक चित्कार सुनि लोरिक ओतय आबि गेल आ ओ बंठाक मुड़ी छोपि लेलक। क्रमशः लोरिक आ चनैनमे प्रेम भऽ गेल। माँजरि एखन अल्प वयसक छलीह, तेँ लोरिक अपन परकीया प्रेयसी चनैनक संग बारह बरिष धरि प्रवासमे रहलन्हि। एहि प्रवासक क्रममे ओ कतेको दुर्धर्ष मुदा अत्याचारी-दुराचारी योद्धा सबहिक संहार कएलन्हि। बारह बरिषक पश्चात जखन ओ धुरि कऽ अपन पत्नी सती माँजरी लग आबय चाहलनि तऽ परकीया चनैक कतेको कुचक्र रचलीह जाहि सँ लोरिक माँजरि कैँ त्यागि देथि, मुदा माँजरिक सतीत्व, श्रद्धा ओ भक्तिक सोझा चनैनक किछु नहि चलल आ अन्ततः ओकरा माँजरिक समक्ष नतमस्तक होमए पड़ल। सती माँजरी चनैन द्वारा कतेको रूपें प्रताड़ित कएल गेल छलीह मुदा तखनो दया-करुणा ओ क्षमाशीलताक प्रतिमूर्ति सती माँजरि सम विसरि कऽ चनैन केँ अपन छोट बहिन स्वीकार कए रहए लगलीह। लोरिक कैँ स्वकीया आ परकीया दुनू पत्नी सँ एक-एक पुत्रक प्राप्ति भेलैक। दुनू पुत्र एवं घर केँ चनैन केँ सुपुर्द कए लोरिक माँजरीक प्रेरणा सँ भैरव एवं भैरवीक रूपमे शिव उपासना एवं शान्ति प्राप्त करबा लेल काशी विश्वनाथक शरणमे चल गेलाह, ठीक ओहिना जहिना कलिंग विजयमे भीषण रक्तपातक पश्चात सम्राट अशोक बौद्धधर्म ग्रहण कऽ शान्तिक खोजमे प्रस्थान कएने रहथि।

संदर्भ सूची :-

1. मैथिली लोकसाहित्य : स्वरुप ओ सौंदर्य- डॉ. रामदेव झा, पृष्ठ सं.- 3
2. मैथिली लोकसाहित्य का अध्ययन - डॉ. ताराकान्त मिश्र, पृष्ठ सं.- 3
3. मैथिली लोकसाहित्य : स्वरुप ओ सौंदर्य- डॉ. रामदेव झा, पृष्ठ सं.- 21
4. मैथिली लोकगाथाक इतिहास- मणिपद्म, पृष्ठ सं.- ग
5. मणिपद्मक उपन्यासमे दलित चेतनाक विमर्श : विश्लेषणात्मक अध्ययन - डॉ. रोहित रमण राघव, पृष्ठ सं.- 154
6. उपरोक्त, पृष्ठ सं.- 153



मैथिलीक प्राचीन कालक लोक साहित्यमे डाक-घाघ वचनावली

✍ विनीत कुमार लाल दास

नेना जखन जन्म लैत छैक, तखन ओकरा मुँहमे बकार नहि रहैत छैक मुदा जेना-जेना समय बितैत जाइत छैक आ लोक सभसँ जे-जे शब्द, वाक्य सुनैत छैक, तकरा धीरे-धीरे बजबाक प्रयास करय लागैत छैक। बादमे आगू चलि क पूरा-पूरा शब्द, फेर वाक्य बाजय लागैत छैक। प्रारंभिक अवस्थामे शब्दक अर्थ नहि बुझैत छैक मुदा आगू चलि क ओकर अर्थ सेहो बुझय लागैत छैक। बाजब आ अर्थ बुझब, ई तखने संभव होइत छैक जखन कियो सीखाबैत छैक। जखन सीख लैत छैक तखन ओहीमे ओकर जीवनक अनुभव सेहो संग भ जाइत छैक आ जखन कियो अपन अनुभवक आधारपर किछु विशेष बात विशेष परिस्थितिमे कहैत छैक, तखन ओ बात ओकर वचन कहबऽ लगैत छैक। जखन वचन सभक संकलन कयल जाइत छैक, तखन ओकरा वचनावली कहल जाइत छैक।

एहि संसार जतेक लोक बाजैत अछि, सभक बोली एक रंग नहि होइत छैक। कियो कहुना बाजैत छैक, त कियो कहुना। एहनो होइत छैक जे दू व्यक्ति दू स्थानक रहैत छैक आ ओकर बोली या त एक जकाँ रहैत छैक, या त एक जकाँ नहि रहैत छैक। जखन एक क्षेत्रक रहनिहार लोक रहैत छैक, तखन ओकर भाषा प्रायः एके होइत छैक। एहि संसारमे अनेकानेक भाषा बाजल जाइत अछि जाहिमे एक टा नाम मैथिली भाषाक सेहो आबैत अछि। ई भाषा अति प्राचीन आ अति समृद्ध भाषा अछि।

एहि संसारमे लगभग जतेक प्राकृतिक भाषा अछि सबहक स्थान वा क्षेत्र निर्धारित अछि आ ओहि भाषाक नामकरण ओहि क्षेत्रक नामक आधारपर कयल जाइत अछि। एहि संसारमे मिथिला एक क्षेत्र अछि आ एहि क्षेत्रक भाषा मैथिली अछि। एकर नामकरणक संबंधमे कहल जाइत अछि जे प्राचीन कालमे एहि क्षेत्रमे 'मिथि' नामक एक महान लोक छलाह जे एहि क्षेत्रमे रहैत छलाह आ हुनके नामपर एहि क्षेत्रक नाम 'मिथिला' भेल अछि आ मिथिलाक भाषा मैथिली।

मैथिली भाषापर सबसँ पहिने ध्यान देबयबाला लोक भेलाह- यूरोपीय विद्वान कोलब्रुक। एहि संबंधमे डॉ. दिनेश कुमार झा अपन पोथी 'मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास'मे लिखने छथि - "जे भाषा आइ मैथिली नामे जानल जाइत अछि तकर उल्लेख सर्वप्रथम यूरोपीय विद्वान कोलब्रुक द्वारा 1801 ई0मे भेल अछि। डा. ग्रियर्सनक अनुसार कोलब्रुक अपन संस्कृत तथा प्राकृत संबंधी अनुसंधानात्मक निबंधमे मैथिलीक बंगलाक संग संबंधपर विचार कयने छथि तथा ओहि क्रममे ईहो लिखने छथि जे मैथिल भाषाक प्रयोग साहित्यमे नहि होइत अछि तेँ एहि संबंधमे विशेष लिखब अनावश्यक अछि। एकर पश्चात सिरामपुरक मिशनरी लोकनि अपन सोसाइटीक 1816 ई0क 67म मेमोआयरमे अन्य आर्यभाषा सभक संग तुलना करैत मैथिलीक उल्लेख कयने छथि। मैथिलीक दोसर नाम 'तिरहुतिया' सेहो भेटैत अछि। एकर उल्लेख सन् 1771 ई0क बेलिगत्ती कृत 'अल्फाबेटुम ब्राह्मनिकम'क अम्दुजक भूमिकामे भेल अछि। एहिमे कतोक भाषाक संग तुरुतियन (ज्वनतनजपंदे) अथवा 'तिरहूती'क उल्लेख सेहो भेटैत अछि। एकर अतिरिक्त फैलेन, हार्नले, केलॉग तथा ग्रियर्सन सदृश भाषाशास्त्रक विद्वान लोकनिक स्वरचित ग्रंथ सभमे सेहो समय-समयपर एहि नाम सभक उल्लेख भेल अछि किन्तु एकर प्राचीनतम उल्लेख 'आइने अकबरी'मे भेटैत अछि जतय लेखक एकरा एक टा पृथक भाषाक रुपमे स्वीकार कयने छथि। मिथिलामे मैथिली भाषाक हेतु सर्वप्रथम विद्यापति 'देसिल बयना' शब्दक प्रयोग कयलनि-

देसिल बयना सब जन मिट्ठा।
तत्र तइसन जम्पओ अवहट्टा।।

हिनक पश्चात 17 शताब्दी लोचन अपन रागतरंगिनीमे विद्यापति पदावलीक भाषाक हेतु 'मिथिलापभ्रंश' शब्दक प्रयोग कयने छथि-

देयामपि स्वदेशीयत्वात् प्रथमं मिथिलापभ्रंशभाषया।
श्री विद्यापति कवि निबद्धास्ता मैथिली गीतगतयः प्रदर्श्यन्ते।"1

लोकसाहित्य आदिकालीन मानवक जनजीवनक साहित्य अछि जे सभ्यता, सामाजिकता आ नागरिक संस्कारसँ बहुत दूर धरि संबद्ध नहि रहल। हुनक समस्त भाव धारा आदिम विरामहीन, अंतहीन चलैत रहल। परंपराक आधारपर जनभाषाक रुपमे लोकसाहित्य जानल जाय लागल। श्रुति-स्मृतिक माध्यमसँ लोकसाहित्य जनजीवनमे सुरक्षित रहैत अछि आओर इएह सुरक्षित सामग्री अनुकुल परिस्थितिमे गीत-काव्यक माध्यमसँ लोक कंठमे प्रचलित भ जखन समाजक समक्ष अबैत अछि त ई आख्यान लोकसाहित्य कहबैत अछि। एहि ठाम हम लोक आ साहित्य दुनूक संबंधमे विद्वान लोकनिक विचार प्रस्तुत करब। पहिले हम 'साहित्य' शब्दक चर्चा करब। "लोकसाहित्यक साहित्य शब्द अपन व्यापक अर्थमे प्रयुक्त होइत अछि। एकर अन्तर्गत मात्र भावनात्मक चित्र

काव्यात्मक वर्णने टा नहि अपितु लोकजीवनक वाणीगत समग्र एहिमे अभिव्यक्त भ समाहित रहैत अछि।"2

लोकसाहित्यमे हम विविध भाव आ रसक अतिरिक्त भोजन, परिधान, आस्था, टोना-टोटका, जन्म-मरण, विभिन्न संस्कार, अनुष्ठान एवं कृषि कर्म आदिक विवरण प्राप्त करैत छी। लोकसाहित्य जनसाधारणक साहित्य अछि। एहिमे लोक मानसक प्रधानता रहैत अछि। लोकसाहित्ये रचयिता प्रायः अज्ञात रहैत छथि। ई साहित्य मौखिक एवं परंपरागत होइत अछि। लोकसाहित्यमे प्रतिपाद्य विषयक अभिव्यंजना अत्यन्त सरल ओ औपचारिक रुपसँ होइत अछि। एकर भाषा मनगढ़ंत आ अपरिमार्जित होइत अछि। आजुक समयमे लोकजीवनक नहि उपेक्षा कयल जा सकैत अछि आ नहि एकरा परित्याग कयल जा सकैत अछि। लोकसाहित्यक आविर्भावक कथा लोक भावनाक उद्‌भव आ विकासमे निहित अछिं आ ई मिथिला की? सम्पूर्ण भारत वर्षमे अत्यन्त प्राचीन कालसँ चलल आबि रहल अछि आ स्वीकृत अछि। 'लोक' शब्द ओ भावनाक उदय आ विकास दिस जखन हम दृष्टिपात करैत छी त पबैत छी जे मिथिलाक जनजीवनमे लोक आ बेद दुनू अत्यन्त मह वपूर्ण स्वीकृत शब्दावली अछि। अपना एहि ठाम कहलो जाइत अछि जे 'लोक-बेदक हाल-चाल कहू', लोक-बेद कोना छथि? से कहू। एहि ठाम हम भारत वर्षक प्राचीन ग्रंथ सभ एवं पारंपरिक शास्त्रीय पक्षकेँ लोकभावनाक उदयसँ जानि सकब।

ऋग्वेदक पुरुषसूक्तमे 'लोक' शब्दक प्रयोग स्थान आ जीवक लेल कयल गेल अछि-

''नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शिष्णोर्द्ययो समवर्तत।

पद्‌भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रा काथा लोकां अकल्पयन्।।"3

जेमिनीय उपनिषद् ब्राह्मणमे सेहो 'लोक' शब्दक प्रयोग भेटैत अछि-

''बहु व्याहितो वा अयं बहुतो लोकः।।"4

आदि कवि वाल्मीकि रामायणमे तीन लोकक वर्णन कयने छथि-

''अयानामपि लोकानां येन ख्याति गमिष्यति ।

नच तो राममासाद्य शक्तो स्थातुं कथंचन ।।"5

'दुर्गासप्तशती'मे 'लोक' शब्दक प्रयोग स्थान आओर प्राणी दुनूक लेल कयल गेल अछि-

''त्रैलोक्यवासिनामोड़ये लोकानां वरदा भव"6

वैयाकरण पाणिनि 'अष्टाध्यायी'मे 'लोक' तथा 'सर्वलोक'क उल्लेख कयलाह अछि- ''लोक-सर्वलोकाट्ठञ"7

भरत मुनि 'नाट्यशास्त्र'मे अनेक लोकधर्मी तथा नाट्य धर्मी प्रवृत्ति सभक उल्लेख करैत 'लोक' शब्दक प्रयोग कयलाह अछि। महाभारतकार पुण्य कर्म करय बाला 'लोक'क विशद वर्णन कयलाह अछि।

''प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः"8

अर्जुनकेँ उपदेश दैत भगवान श्री.ष्ण सेहो 'लोक'केँ वेदसँ अलग बता क ओकर महत्त्वक प्रतिपादन कयलाह अछि-

''यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।

अतोस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।।"9

अशोकक शिलालेख सभमे 'लोक' शब्दक प्रयोग प्रजागणक लेल कयल गेल अछि आओर प्राकृत एवं अपभ्रंशमे व्यवहृत 'लोकजता', 'लोअप्पवाय' आदि शब्द निश्चये लोक सत्ता तथा लोक महत्ताकेँ प्रतिपादक अछि। कवि शिरोमणि कालिदास राजा दिलीपक मुहसँ लोक-परलोकक वर्णन करबओने छथि।

डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' लोकसाहित्यक सर्वमान्य परिभाषाकेँ विद्वान मतकेँ स्पष्ट करैत कहने छथि- ''शास्त्र पद्धतिसँ विहीन एवं नगरसँ वहिर्भूत ग्राम्य-साहित्य मात्र लोकसाहित्य थीक किन्तु कतोक विद्वान एहि मतकेँ भ्रम मानैत छथि। एहि श्रेणीक विद्वान मानैत छथि ले लोक शब्दक अर्थ ग्राम्य अथवा जनपदीय नहि थीक। 'लोक'क तात्पर्य होइत अछि नगर ओ ग्राम्यमे प्रसारित समस्त जन समूह जकर व्यवहारिक ज्ञानक आधार शास्त्र नहि होइत अछि।"10

प्राचीन कालक उपलब्ध सामग्रीमे सिद्ध-साहित्य 'चर्यापदक अतिरिक्त डाक-घाघ वचनावली कोनो सुदूर परिवाश्वक दिशा संकेत करैत प्राप्त होइत अछि। सिद्ध-साहित्यक अधिकांश रचनाकार विदेह अथवा ओकर समकक्ष अर्थात मिथिलावासी छलाह। सिद्ध-साहित्यक रचना वर्णरत्नाकर, कीर्तिलता, कीर्तिपताका एवं विशुद्ध विद्यापतिक पदावलीमे भाषाक रुपमे प्रयुक्त प्राप्त होइत अछि। एहिमे चर्याचयविनिश्चय, दोहा-कोश, विशुद्ध मैथिली पदावली अछि। एहि कालक आसपास मैथिली साहित्यमे जे कोनो लोक कंठक सामग्री मह वपूर्ण रुपक प्राप्त भेल अछि, से अछि- डाक-घाघ वचन। एहि ठाम वचनक अन्तर्गत लोकसाहित्यमे उपयोग होमयबाला ऐतिहासिक लोक कंठक सामग्री मुख्यतः कृषि-ज्योतिष अथवा लोक व्यवहारपरक प्राप्त होइत अछि तकरा हम लोकसाहित्य सूक्ति सेहो कहि सकैत छी। एहि ठाम वचनक निर्माणकर्त्ता डाक-घाघ नामक कृषि-ज्योतिष विशेषज्ञ भेल होयताह जे अनुमानतः अपन वचनसँ जन जीवनकेँ आशा-आकांक्षाकेँ पूर्ण करबाक अथक प्रयास कयने छथि। एहि प्रकारक वचन सभक उपयोगिताक आँकलनमे किछु वचन एहि ठाम प्रस्तुत क रहल छी-

''1. जौं पुरबैया पुरबा बहै,

सुखलो नदिया नाव बहाबै।।

2. आदिमे बरसे आद्रा, अन्तमे बरसै हस्त

कतबो राजा डारै बान्है, सुखी रहै गृहस्त।।

3. हथिया बरसै चित मड़राइ।
घर बैसल गिरहत मड़राइ।।
शुक दिनके वादरी रहे सनीचर छाय।
कहे भड्ड सुनु भड्डरी बिनु बरसा नहि जाय।।"11

"प्राचीन कालक उपलब्ध सामग्रीमे 'डाकार्णव', डाक वचनावलीक सृजनकर्त्ता लोकनिमे डाक-घाघ नामक एकहि व्यक्तिक चर्चा होइत अछि।"12 हिनक जन्म कहिया आ कतय भेल? ई विवादस्पद अछि मुदा ई रचना सभ हिनके द्वारा कहल गेल अछि। से त निश्चिते सिद्ध अछि। प्राचीन कालक उपलब्ध सामग्रीमे ई वचन सभ ततेक प्रसिद्ध भेल जे मिथिला, बंगाल आ उत्तर प्रदेशक प्रान्तमे किछु भाषा परिवर्त्तन ल लगभग समान रुपसँ अध्ययन कयल जाइत अछि। "श्री जीवानन्द ठाकुर कतिपय अकाट्य प्रमाणक आधारपर ई सिद्ध क' देने छथि जे डाक मैथिल छलाह तथा हिनक समय 10म शताब्दी थिक। कृषि प्रधान क्षेत्र मिथिला मध्य सभ दिनसँ कृषि ओ ज्योतिष सम्बन्धी डाक वचनावलीक विशेष महत्व रहलैक अछि। वस्तुतः डाक वचनमे लोकजीवनसँ सम्बद्ध प्रायः प्रत्येक तथ्यक समावेश अछि। .षिसँ सम्बन्धित डाकक प्रस्तुत वचन अद्यावधि प्रायः प्रत्येक लोकक कण्ठमे निवास क' रहल अछि। .

थोड़कए जोतिह', अधिक महिअबिह
ऊँच क' बन्हिह' आरि।
ताहू पर यदि नहि उपज तँ
डाकके ँ पढ़िह' गारि।
सावन पछवा भादव पुरवा
आसिन बहै इसान।
कातिक कन्ता सिकियो ने डोले
कहाँ क' रखबह धान?

वस्तुतः गामक अपढ़ एंव अनुभवी किसान लोकनिक मुखसँ एहि प्रकारक वचन उपयुक्त समयपर सहजहिं सुनल जाइत अछि। डाकक एही अनुभव सिद्ध वचन सभक अनसार ग्रामीण कृषक लोकनि अपन कार्यक्रम निर्धारण करत छथि तथा आशा एवं निराशा भरल अपन जीवनक कल्पना करैत छथि। हिनक ज्योतिष सम्बन्धी ई पद कतेक धरि सत्य अछि से आइयो काल्हि अनुभव कयल जा सकैछ -

शुक दिना करे बादरी/रहे शनिचर छाय।
कहे घाघ सुनु घाघनी/बिनु बरिसे नहि जाय।।

एतबे नहि, डाकक निम्नलिखित पदमे जीवनसँ सम्बन्धित कटु सत्यक सेहो अनुमान कयल जा सकैछ-

कपटी मित्र कोशलिआ माय/बुड़िबक बेटा टेटा जमाया।
कहहि डाक चारू परिहरी/बुड़िबक सन सासुरो नहि करी।।
महतमसँ भेल बहिया बरी/कहथि डाक सन्तापहि मरी।।

एकर अतिरिक्त हिनक आओर पद सभमे निम्न पद सभ सेहो पूर्ण प्रसिद्ध अछि तथा कटु सत्य रूपमे गृहीत अछि -

(1) ई नहि कहिहह डाक निर्बुद्धि।
नाशे काल विनाशय बुद्धि।"13

डाक-घाघ वचनावली चर्यापद जकाँ मैथिली अपभ्रंशमे लिखल अछि। ई मैथिलीक आदिम साहित्य अठि जकरा फकरा ओ वचन कहि व्यवहारिक जीवनक लेल उपयोगी मानल गेल अछि। लोक कंठमे प्रचलित तथा क्षेत्रीय प्रसारक कारणे ँ एकर भाषामे निरंतर परिवर्त्तन परिलक्षित होइत अछि। डाक वचन कृषि, यात्रा, लग्न एवं ज्योतिष संबंघित व्यावहारिक जीवनक अत्यन्त उपयोगी वचन सभक संकलन अछि जे एक सूक्तिक रुपमे जनजीवनक आस्थाकेँ जीया क रखने अछि। ई वचन सभ आदिकालीन मानवीय सभ्यताक उदयमान वचनावलीक रुपमे जानल जाइत अछि।

संदर्भ सूची :-

1. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास- डॉ. दिनेश कुमार झा : 2012, मैथिली अकादमी, पटना; पृष्ठ सं. - 9, 10।
2. मैथिली लोक साहित्य का अध्ययन - डॉ. ताराकांत मिश्र, पृष्ठ सं. - 4
3. ऋग्वेद, मंडल 10, अध्याय 8, सूक्त 90, श्लोक 14, आर्य साहित्य मंडल लि., अजमेर, 1959, पृष्ठ सं. - 224
4. जेमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण, 3/28
5. वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 19, श्लोक 11, गुजराती प्रिंटिग प्रेस, मुम्बई-1, शक संवत् 1834, पृष्ठ सं. - 176
6. दुर्गासप्तशती : अध्याय 11, श्लोक 35, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2015 वि.सं, पृष्ठ 166
7. पाणिनि : अष्टाध्यायी, अ. 5, पाद 1, श्लोक 44, श्रीधर गुरुकुल ग्रंथमाला, वृंदावन, 1996 सं. पृ.142
8. महाभारत, आदिपर्व 1/101-102, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2023
9. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 15, श्लोक 18, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2010 सं., पृष्ठ 377
10. मैथिली साहित्यक इतिहास - डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृष्ठ सं.- 36
11. मैथिली साहित्यक इतिहास - ड०. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृष्ठ सं.- 49
12. मैथिली साहित्यक इतिहास - मायानंद मिश्र, पृष्ठ सं.- 58
13. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास - ड०. दिनेश कुमार झा : 2012, मैथिली अकादमी, पटना ; पृष्ठ सं. - 51



मिथिला आ मैथिलीक संरक्षण ओ संवर्धन लेल तत्पर होथि युवा

✍ **कल्पना झा**

ज्ञान, कर्म, तंत्र, ज्योतिष विद्या ओ कलाक क्षेत्र मे मिथिलाक योगदान आन कोनो सामाजिक-सांस्कृतिक समूह सँ कम नहि रहल अछि। हमर ज्ञान आ कर्म आधारित संस ति राजा वेदहक भूमि में जगज्जननी माँ जानकीक आँचरक छाहरि में पलल बढल अछि, दार्शनिक याज्ञवल्क्य आओर मंडन प्रभृत विभूति सँ उदात्त, नैयायिक गौतम केर ज्ञान सुधा सँ मर्यादित, कवि कोकिल विद्यापतिक मीठगर भक्ति आ श्रृंगार रस में बोरल, राजा सलहेसक वीर गाथा सँ ऊर्जान्वित अछि। मिथिला संस्कृति केँ अनेकों कवि, लेखक, गायक, चित्रकार समय पर चमकाबैत रहलाह। हमर ज्ञान-कर्म केर महिमा स्वयं आदिगुरु शंकराचार्य केँ शास्त्रार्थ करबाक लेल खिंची आनलक आ ओहि अद्वितीय शास्त्रार्थक निरनायिकाक कार्य संपादन हमर मिथिलाक बेटी परम् विदुषी भारती कतेक नीक जेकां केलीह, अहि सँ हमरा सबहक माथ गर्व सँ उठि जाइत अछि। मिथिला-मैथिलक परिचय अहि सँ सुन्नर कि भ सकैत अछि जे आधुनिक मिथिलाक यशस्वी गीतकार रविन्द्रनाथ ठाकुर देने छथि- शिरमा में सीता बियन डोलोथिन, सपनहु मे रहता दहिन भ' राम गे,--बिलमि जो गुजरिया, अई मिथिला के धाम गे।

मैथिल ललना सुकुमारि सीता केँ अभिशाप सँ 14 बरखक कष्ट सहय पड़लनि आ बुझाइत अछि जे ओ अभिशाप हमरा सबहक नियति बनि गेल अछि। सब साल कोसीक विभीषिका सँ हम झमारल छी। स्वतंत्रताक बादो सतत हमर गौरवमयी मिथिला सरकारी उपेक्षाक कारणे आर्थिक रूप सँ पिछड़ल अछि। 'जल, जमीन आ ज्ञान' संपदा में धनिक रहितहु मिथिला ओ सब नहि पाबि सकल जकर ई हकदार रहल। जल संपदा प्रति वर्ष बाढ़िक विभीषिका बनि अभिशाप बनि जाइत अछि, उद्योग आ रोजगारक सर्वथा अभाव मे 'जन पलायन' आ 'निर्धनता' हमर नियति बनि गेल अछि।

देखल जाय त' मिथिलामे सांस्कृतिक ओ सामाजिक चेतनाक नितांत अभाव अछि। लोकमे अपन भाषा, कला, शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, परिवहन आदि लेल उपेक्षाकें भोगबाक आदति भऽ गेल अछि। तथाकथित नेता जनताक आकांक्षाक प्रतिनिधित्वक बदला अपन स्वार्थपूर्ति एवं चमचागिरीमे बेसी व्यस्त छथि। सम्पूर्ण मिथिला मे एक्को हाथक आंगुर पर गानय योग्य सक्रिय मैथिली संस्था नहि अछि। साहित्यकारमे अपनाके यात्री - नागार्जुनक उत्तराधिकारी साबित करक होड़ ते मिथिलाक मध्य आगि नहि धधकत ता; कुंभकर्णी निद्रा सं सरकार नहि जागत। एहि लेल सबसं पहिल आवश्यकता अछि जे गाम- गाममे नहियो त प्रत्येक प्रखण्डमे एकटा सां तिक संस्था अवश्य खुजए जे कमसे कम अपना क्षेत्रक जागरूक लोकके जोड़ध्य। ओ संस्था गामे-गामे जनताके जागरूक करय जे कोनो क्षेत्रक भाषाकें उचित अधिकार नहि भेटला सं की दुष्परिणाम भऽ सकैछ।

जाधरि आम जनता एहि महत्व कें नहि बुझत ता धरि ओ अपन प्रारंभिक उद्देश्य नहि प्राप्त क सकत । दोसर काज अछि जे युवा पीढ़ी केर सहायतासं मिथिलाक उपेक्षाक विरुद्ध अभियान तेज होमय ई काज शहरे सं भ सकैछ, गामसँ नहि।

शक्तिशाली संस्था एहन सेमिनार करथि जाहिमे मिथिलाक भिन्न-भिन्न भागक लोक आबथि आ' अपना-अपना क्षेत्रक कल-कारखाना, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि समस्या पर सर्वेक्षण क आलेख प्रस्तुत करथि आ' ताहि आधार पर ओकर अध्ययन क' एकटा कमेटी चार्टर ऑफ डिमाण्ड तैयार करवथि ई मांग पत्र सम्बद्ध सरकारके देल जाए सकए। एहि आधार पर क्षेत्रक जनप्रतिनिधिके घेडुल जाए। आ सम्बद्ध विधायिकामे संगहि मंत्रालयमे आवाज बुलंद कएल जाए।

वर्तमान परिस्थिति केँ देखैत, आवश्यक अछि जे हम सब मिथिलावासी जे जतय छी, जातीय, क्षेत्रीय, सांप्रदायिक संकीर्ण सोच सँ ऊपर उठि, जागरूक आ संगठित होई। कोनों समाजक प्राण थिक संस्कृति आ संस्कृतिक संवाहक होईत अछि ओहि समाजक मातृभाषा-माने मायक भाषा। हमर संस्कृति समृद्ध आ गौरवपूर्ण अछि, हमर भाषा सरल, सुमधुर, सुंदर आ मर्यादित अछि। अतएव, हमरा सबहक ई जिम्मेदारी अछि जे जे जतय छी, जहि हाल मे छी, अपन सभ्यता-संस्कृति आ भाषाक संरक्षण-संवर्धन में यथा साध्य योगदान लेल तत्पर होई।



कएकबेर अग्निपरीक्षा देतीह-मैथिली..?

✍ मोहन मुरारी

मिथिलाक चर्च आदि कवि वाल्मीकिक आदि काव्य रामायणमे भेटैत अछि। भाषाक रूपमे अशोक वाटिकामे जखन हनुमान सीताक समक्ष अबैत छथि तखन हुनका एकगोट असमंजस होइत छनि जे सीतासँ कोन भाषामे गप्प कएल जाय, आ ओ निश्चय करैत छथि जे-

वाचं चोदाहरिष्यामि मानुषीमिह संस्कृतामृ।।
यदि वाचं प्रदास्यामि ह्नर्जिातिरिव संस्कृताम्।
रावणं मन्यमाना सा सीता भीताभविष्यति।
वानरस्य विशेषेण कथं स्यादभिभाषनम् ।।
अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत्।
(सुन्दर काण्ड, सर्ग-10 श्लोक-17-19)

एहिमे विर्द्धिन लोकनि मतैक्य नहि छथि जे हनुमान मानुषी भाषाक रूपमे कोन भाषाक उपयोग कएने रहथि आ ने आदि कवि एहि सम्बन्धमे स्पष्ट कएने छथि, तथापि एक गोट तर्क अछि जे हनुमान अनेक भाषाविद् छलाह तेँ हनुमान सीतासँ हिनक मातृभाषामे बजबाक निर्णय कएने हेताह। अस्तु मतभिन्नता ओ ठोस प्रमाणक अभावमे ई नहि कहल जा सकैत अछि जे हनुमान ओ सीताक मध्य गप्प मैथिलीमे भेल अन्यथा मैथिली साहित्यक आदितम स्वरूप हमरा लोकनिकेँ एहि संवादमे भेटैत।

उपलब्ध प्राचीन साहित्यमे विदेह जनपदक संस्   त मानुषी भाषा अथवा ओकर स   श भाषाक आदितम स्वरूप हमरालोकनिकेँ बुद्धवचन आ महावीर वचनमे भेटैत अछि। मुदा राजनीतिक स्वतंत्रताक अभावमे मिथिलाक भाषा अदौसँ साहित्यिक दृष्टिएँ उपेक्षित रहल जकर एकगोट मूल कारण छल एहि भू-भागमे पैघ राजाक अभाव जे एखनो धरि देखना जाइत अछि। एखनो मिथिलाक अधिकांश भू-भाग बिहार प्रदेशक अंग अछि जकर सिंहासन पर मैथिलकेँ नहिये बरोबरि अवसर भेटलनि अछि। परिणाम स्वरूप मैथिली एखनो धरि बनवास भोगि रहल अछि। मैथिली नामे प्रसिद्ध हमरा लोकनिक मातृभाषाक एहि नामक उल्लेख सर्वप्रथम यूरोपीय विर्द्धिन कोलब्रूक द्धिंरा 1801ई0मे कएल गेल। एकर पश्चात् सिरामपुरक मिशनरी लोकनि अपन सोसाइटीक 1816ई0क 67म मेमोआयरमे अन्य आर्य भाषाक सङ्ग तुलना करैत मैथिलीक उल्लेख कएने छथि। मैथिलीक दोसर नाम तिरहुतिया सेहो भेटैत अछि जकर उल्लेख सन 1771ई0क बेलीगत्ती   त 'अल्फाबेटुम ब्राद्धनिकम'क अम्दुजक भूमिकामे भेल अछि। एकर अतिरिक्त फैलेन, हारनले, केलॉग आ ग्रियर्सन सदृश भाषाशास्त्रक विर्द्धिन लोकनिक ग्रन्थमे सेहो समय-समय पर एहि भाषाक उल्लेख भेल अछि परञ्च एकर प्राचीनतम उल्लेख 'आईने अकबरी'मे भेटैत अछि जतय लेखक एकरा एकटा पृथक भाषाक रूपमे स्वीकार कएने छथि। विद्यापतिर्द्धिर्द्धिंरा सर्वप्रथम मैथिली भाषा लेल 'देसिल बएना' शब्दक प्रयोग कएल गेल अछि।

देसिल बएना सब जन मिट्ठा।
तञ तइसन जम्पञे अवहट्ठा।

हिनक पश्चात 17म शताब्दी लोचन अपन रागतरंगिणीमे विद्यापति पदावलीक भाषा लेल 'मिथिलापभ्रंश' शब्दक प्रयोग कएने छथि-

देश्यामपि स्वदेशीयत्वात् प्रथमंमिथिलापभ्रंशभाषया।
श्रीविद्यापति कवि निबद्धास्ता मैथिलीगीतगतय प्रदश्यन्ते।।

एहि तरहेँ देखबामे अबैत अछि जे एतेक समृद्ध ओ ऐतिहासिक भाषा मैथिली कालान्तरमे शासनक उपेक्षाक कारणे लोकसँ दूर होइत गेल। एक समय एहनो आयल जखन बिहार लोक सेवा आयोगसँ सेहो मैथिली विषयकेँ हटा देल गेल। मैथिलीकेँ एक जाति विशेषक भाषाकेँ रूपमे गैर मिथिला क्षेत्रीय नेता लोकनि द्धिंरा कुप्रचारित कएल गेल। मैथिली पढनिहार छात्र लोकनि लेल बिहार लोक सेवाक परीक्षा दुरूह भऊ गेल। हालाँकि वर्ष 2003 मैथिली लेल एक गोट हर्षक समाचार लऊ कऊ आयल जखन मैथिली आन्दोलनी लोकनिक मनोरथ तत्कालीन कवि हृदय भाषा अनुरागी प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित कएल गेल। एकर उपरान्तो मैथिलीक विकास मन्थरे गतिसँ होइत रहल। झारखण्डमे मैथिली 2018मे ह्नर्तिीय राजभाषाक दर्जा पाओल जे हमरा सभलेल एकगोट आर हर्षक गप्प अछि मुदा जाहि क्षेत्रमे सभसँ बेसी मैथिली बजनिहार ताहि ठाम एखनहु मैथिली अग्निपरीक्षा लेल ठाढ़ अछि। अस्तु हमरा जनैत कोनो भाषाक समृद्धि लेल आवश्यक अछि जे ओहि भाषाक माध्यमसँ रोजगारक अवसर खुलैक जाहि लेल सरकारक सहयोग अपेक्षित अछि। नऊब शिक्षा नीति जे भारत सरकार द्धिंरा लागू कएल गेल अछि ओहिमे प्रारम्भिक कक्षामे मातृभाषामे पठन-पाठन पर जोड़ देल गेल अछि जे स्वागत योग्य अछि, एहिसँ मिथिला क्षेत्रक नेना सभकेँ मैथिली पढबाक अवसर भेटतैक आ युवा लोकनिकेँ मैथिली विषयक शिक्षकक रूपमे रोजगारक अवसर सेहो भेटतैक मुदा ताहि लेल प्रदेश सरकारक इच्छा शक्ति आ मिथिलाक जनप्रतिनिधिकेँ सचेत रहऊ पड़तैक जे कोनो राजनीतिक दाव-पेंचमे मैथिलीकेँ बनवास नहि भेटै।

सहायक ग्रन्थः-

1. डॉ. दिनेश कुमार झा मैथिली अकादमी,पटना- मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास
2. श्रीरमानाथ झा राज लाइब्रेरी, दरभंगा- प्रबन्ध-पञ्चक संग्रह



नेपालक मैथिली साहित्य : संक्षिप्त विवेचना

✍ राम भरोस कापड़ि ’भ्रमर’

पृष्ठभूमि- नेपालमे पाओल जाएबला एक सय सँ बेसी भाषासभमे सँ मैथिली दोसर सँ बेसी बाजल जाएबला भाषा मात्र नहि, अत्यन्त समृद्ध साहित्य रहल भाषा सेहो अछि। विद्वानसभ सातम् आठम् शताब्दीक सिद्धसभ रचना कएने पदसभ, जे बादमे बौद्धगान ओहोदा कहि प्रकाशित भेल अछि। जाहिमे मैथिलीक शब्दसभ भेटल छल आ एहिके सातम्(आठम् शताब्दीदिस लड गेल। महाकवि विद्यापति (लगभग 1360 ई.(1450 ई.दिस) मैथिलीके देसिलवयना, अबहठ आ मिथिला प्रभंस कहि चिन्हेबाक प्रयास कएलनि। कर्णाट शासक हरिसिंह देव (12851324 ई.) मे ज्योतिरीश्वर ठाकुरद्वारा रचित गद्यग्रन्थ श्वर्णरत्नाकरश मैथिली साहित्यमे गद्यलेखन परम्पराकै अति प्राचीन स्वरूप प्रदान कएने अछि। भारतीय भाषामे ई प्राचीनतम अभिलेख मानल गेल अछि। नेपालमा मैथिली साहित्य लेखन परम्परा कर्णाट शासक नान्यदेव सँ हरिसिंह देवधरि प्रशस्त रूपमे भेल छल। यद्यपि एहि अवधिक बहुत सामग्री एखनो खोजक विषय बनल अछि। हरिसिंह देवक मन्त्री चण्डेश्वर योद्धा मात्र नहि निपुण शास्त्रवेत्ता सेहो छलथि। हुनकाद्वारा लिखल गेल संस्.त ग्रन्थक पाण्डुलिपि अभिलेखालयसभमे एखनो सुरक्षित अछि। ओ उपत्यका विजय क एकवर्षधरि ओतय रहि पशुपतिपूजन आ तुलादान कएने तथ्य गोपाल वंशावलीमे उल्लेख अछि।2

महामन्त्री आ विद्वान् चण्डेश्वर (सं. 13571407) लिखने ग्रन्थसभमे व्यवहार रत्नाकर, विबाद रत्नाकर, कृत्य रत्नाकर, दान रत्नाकर, शुद्धि रत्नाकर, गृहस्थ रत्नाकर, पूजा रत्नाकर कय सातगोट रत्नाकर अछि।3 ओ मैथिलीभाषी विद्वान् छथि। मैथिली भाषामे सेहो रचना अवश्य कएने हेताह जे खोजक विषय अछि। सम्भवतः हुनका बादे ज्योतिरीश्वर ‘वर्ण रत्नाकर’ लिखने हेताह। मैथिली साहित्यक ई आद्यग्रन्थक प्रमाणिक प्रति सेहो नेपालक दरबार लाइब्रेरी सँ प्राप्त कपं हर प्र. शास्त्री 1905 मे विशद् भूमिका सहित प्रकाशित कएने छल।4

कर्णाट शासनक बाद सप्तरीक द्रोणवार वंश, महोत्तरीक ओइनवार वंश, मोरंगक राजवंश, सेनवंशसभ मैथिली भाषा, साहित्यमे बहुतो काज कएने छथि। मैथिलीक अपन लिपि अछि जाहिक तिरहुता, मिथिलाक्षर कहल जाइत अछि, जे एखन न्यून प्रयोगमे रहल अछि तँ प्राचीन अभिलेखसभमे सीमित भऽ गेल अछि। प्राचीन मैथिली लिपि बंगाली आ प्राचीन नेवारी लिपि सँ मिलल जुलल रहला सँ बहुतो प्राचीन ग्रन्थसभ भ्रमवश बंगाल आ काठमाण्डूक निजी संग्रहालयधरि पहुँच ओभरा गेल अछि। एहि क्रममे राष्ट्रिय अभिलेखालयमे रहल करिब पहिचान भेल 1200 मैथिली ग्रन्थक अतिरिक्त आशा सफ गथी सहितक निजी संग्रहालयमे विद्यापति लगायत मैथिली कविसभ, मल्ल राजासभ, आश्रित विद्वानसभक दर्जनो गीत, पद, नाटकसभ जकथक परल अछि। जाहि मध्ये किछए दिन पूर्व अपना लेखमार्फत् पंक्ति लेखक दूगोट अप्रकाशित विद्यापतिक पदसभ सार्वजनिक कएने अछि।5

एहि रुपे देखला सँ सातम आठम शताब्दी सँ एखनधरि विभिन्न अवस्थामे मैथिली साहित्य नेपालमे लिखाएल अछि, संरक्षित क राखल अछि। एहि कालखण्डक निक जकाँ बुझय नेपालमे लिखल जाएबला मैथिली साहित्यक समयावधि के निम्नानुसार चारि कालखण्डमे बाँटल जा सकैत अछि।6 काल विभाजन- काल विभाजन करैत काल नेपालमे पाओल जाएबला साहित्यके आधार बनाओल गेल अछि। ई विभिन्न समयमे फरक फरक स्रष्टासभद्वारा रचल गेल अछि। आदिकाल (750 ई. सँ 1350 ई. धरि)- मैथिली साहित्यक प्रारम्भिक स्वरूप पाल शासनकालमे प्राप्त भेल अछि। बौद्ध भिक्षुसभक संरक्षक सेहो इएह पाल राजासभ छलथि। विक्रम विश्वविद्यालयमे ओ 84 गोटे भिक्षुसभ रहैत छलथि। सरहपा, भुस्कपा आदिक रचनामे प्राचीन मैथिली शब्दसभ पाओल जाइत अछि।

कर्णाट शासन 1097 ई. मे शुरु भेल, जतय अनेको साहित्य रचल गेल। एक सँ एक महान साहित्यकार विद्वानसभ भेलथि। श्वर्ण रत्नाकरश, धुर्त समागम सहित अनेको कतिसभ अन्तिम राजा हरिसिंह देव (1324 ई.) धरि जारी रहल। कर्णाट शासनक अन्तधरि मैथिली साहित्य लेखनमे आबि चकल छल। मध्यकाल (1350 ई. सँ 1768 ई. धरि) - नेपालक साहित्यिक इतिहासमे मध्यकाल स्वर्ण युगक रूपमे चिन्हल जाइत अछि। मिथिला क्षेत्रमे विद्यापतिक अवतरणक बाद ओकर प्रभाव क्षेत्र विस्तार होइत नेपालक मल्ल राजासभ धरि अबैत उपत्यकाक तीन राजदरबारमे स्वयं राजासभ सँ मैथिली भाषामे पद आ नाटकसभक रचना भेल छल। मल्ल वंशीय राजासभ गीत, संगीत आ नाटकक प्रेमी छलथि। ओसभ डबलीमे नियमित गीत, नृत्य आ नाटकक रसास्वादन करैत छलथि। अपने सेहो लिखैत छलथि आ अपन आश्रित विद्वानसभ सँ सेहो लिख बैत छलथि।

अन्धकार काल (1786 ई. सँ 1950 ई. धरि)- 1768

ई. मे नेपाल एकीकरण अभियानक नायक तत्कालीन गोरखाक राजा पृथ्वीनारायण शाहक उदयके बाद गोरखा भाषा (नेपाली) के स्थापित करबाक क्रममे अन्य क्षेत्रीय भाषासभके हतोत्साहित कएल गेल। मैथिली सेहो ओहिमे परल। एहि बीचमे ‘एकरारनामा’, बहिखत, अजातपत्र, निस्तारपत्र, दानपत्र, राजकीय अभिलेख, चिठी आदिमे मैथिली भाषाक प्रयोग देखल गेल होइतो मौलिक साहित्य रचना नहि भेटैत अछि। तएँ एहि मैथिली साहित्यक लेल अन्धकार काल कहल जाइत अछि।

मदा शाह कालक अढाई सय वर्षक अवधिमे मैथिली भाषाक पदसभ विभिन्न विद्वानसभक हात सँ प्रतिलिपि करा राखल गेल ताम्रपत्र, प्राचीन कागज (पहेंलो सभ निजी अभिलेखालयमे प्राप्त भेल अछि। एहिक निक जकाँ अध्ययन कएलाक बाद ओहि कालमे सेहो नेपाली बाहेकक भाषासभमे रचना सुरक्षित राखयके प्रचलन रहल तथ्य आओर प्रमाणिक रूपमे भेटि सकैत अछि। आधुनिक काल (1950 ई.(आद्यपर्यन्त)- वि सं 2007 सालमे राणाशासन सँ मुक्त भेलाक बाद साहित्य लेखनदिस स्रष्टासभ आग आबय लगलथि। राणाशासनमे सेहो रचनासभ अन्य भाषामे भेल पाओल जाइत अछि। मदा मैथिलीमे नहि पाओल गेल अछि। राणा सँ स्वतन्त्र भेलाक बाद संस्.तक विद्वानसभ अपन मातृभाषामे लिखब शुरु कएलनि। जे क्रमशः आजक समृद्ध साहित्यधरि निरन्तर बढि रहल अछि।

नेपालमे आधुनिक कालक पृष्ठभूमि के रूपमे 1950 ई. मे संस्.त शिक्षकक रूपमे भारत सँ जनकपुर आएल पं जीवनाथ झाक साहित्य रचना सँ भेल। ओ अपने सेहो मैथिली आ संस्.तमे लिखैत छलथि आ अन्यके सेहो उत्साहित करैत छलथि। 1951 मे दरभंगा जिल्ला सँ पं मथुरानन्द चौधरी ‘माथुर’ महोत्तरी अएलथि। मैथिली पद्य लेखनमे सिद्धहस्त माथुर अनेकों खण्डकाव्यक रचयिता छथि।

2014 सालमे जनकपुर सँ त्रैभाषिक पत्रिका श्नव जागरणश्क प्रकाशन प्रारम्भ कएल गेल जे कारणवश 2016 सालमे मात्र प्रकाशित भेल छल। 2017 सालक बाद मैथिली लेखन गति लेबय लागल, जकर श्रेय भारते सँ मैथिली हिन्दी शिक्षणक लेल जनकपुर आएल डा.धीरेश्वर झा ‘धीरेन्द्र के जाइत अछि। ओ अपन लेखन संगहि नयाँ पिढीए जन्मौलनि, जकर वर्चश्व निरन्तर आई धरि साहित्यक विभिन्न विद्यामे देखल जाइत अछि। एहन साहित्यकारमे पं रमाकान्त झा, डा. लक्ष्मण शास्त्री, पं. कृष्णप्रसाद उपाध्याय आदि परान पिंढीक छलथि त राजेन्द्र प्र. विमल, रामभरोस कापडि भ्रमर, महेन्द्र मलंगिया, भुवनेश्वर पाथेय, अयोध्यानाथ चौधरी, रेवतीरमण लाल, उपाध्याय भूषण आदि नयाँ पिंढीक छथि।

एहिके बाद त साहित्यकारसभक लम्बा फेहरिस्त बनि गेल अछि, जे निरन्तर विभिन्न विधामे कलम चलबैत आबि रहल छथि। काव्य, कथा, उपन्यास, रिपोर्ताज, नाटक, निबन्ध, साक्षात्कार जेहन विधामे फुटकर रचनासभ संगहि पुस्तकाकार प्रकाशनसभ सेहो प्रशस्त भेल अछि। पत्रपत्रिकासभ सेहो विभिन्न समयमे प्रकाशित भए किछ बाँचि रहल, किछ बन्द भए चुकल अछि।

मैथिली साहित्यक श्रीबृद्धिमे जनकपुर, राजविराज आ काठमाण्डूक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि, जतय सँ नियमित पत्र (पत्रिकाक प्रकाशन भऽ रहल अछि तँ पुस्तकाकार प्रकाशन सेहो निरन्तर भऽ रहल देखल जाइत अछि।

नेपालमे रचलगेल, रचनाक क्रममे रहल मैथिली साहित्यक सम्बन्धमे नेपालीभाषी विद्वान् बीच सेहो सकारात्मक सूचनाक अभाव देखल गेला सँ अनेको स्थानमे अत्यन्त कमजोर प्रस्तुति होइत आएल अछि। ओतबे मात्र नहि भारतीय मैथिली क्षेत्रमे सेहो ओतुका साहित्यकार, इतिहासकार नेपालमे रचित, लिखल गेल मैथिली साहित्यक रचनासभ सम्बन्धमे अनभिज्ञता प्रकट करब कतह नहि कतहुँ दुःखद पक्ष भर जाइत अछि। पुस्तक किनय नहि सकब, सूचना प्राप्त करय नहि चाहब आ नेपालीय मैथिली साहित्यप्रति उपेक्षित व्यवहारक कारण एहन असहज स्थिति भेल मानय पडत। एहिमे सुधार करब आवश्यक अछि। साहित्य अकादमीक भूमिका एहिमे महत्वपूर्ण भऽ सकैत अछि जेहन हमरा लगैत अछि।

नेपालमे रचल गेल विभिन्न विधाक पुस्तकसभक एखन धरि प्राप्त विवरणिक निम्नानुसार राखल गेल अछि। 7 एहिमे सूचनाक अभाव सँ बहुत रास छटल भऽ सकैत अछि मुदा समयाभाव आ उपलब्धताक समस्याकै ध्यानमे रखैत छटलसभकें बादमे थपल जा सकबाक रहला सँ जानकारीक अपेक्षा कएल जा सकैत अछि।

1काव्यः- (क) महाकाव्य - नेपालीय मैथिली साहित्यमे एखनधरि सातटा महाकाव्यसभ प्रकाशित रहल पाओल जाइत अछि, ओ अछि (रावणबध (1995 ई.), जीवनाथ झा, धर्मराज युधिष्ठिर (1972 ई.), लक्ष्मण शास्त्री, प्रज्ञान रामायण (1993 ई), सीताराम मिश्र, भानुभक्तीय रामायण (अनु 1987 ई.), बद्री नारायण वर्मा, भगवान चित्रगुप्त (1987 ई.), बद्री नारायण वर्मा आ शकुन्तला (1978 ई.),यवंशलाल चन्द्र।

(ख) खण्डकाव्य - नेपालक मैथिली साहित्यमे एखन धरि प्रकाशित खण्डकाव्यसभ व्यथा(1970ई.) सुकन्या च्यवन (1986 ई.) प्रताप नारायण झा, कृषकवाला (1989 ई.) विनोद चन्द्र झा, त्रिशुली (1989 ई.) मथुरानंद चौधरी माथुर, मैथिली मिथिला माहात्म्य (1990 ई), पं.सुरेश झा, अछि।

(ग) कविता गीत गजल (हाइक : एहि दृष्टि सँ नेपालक मैथिली साहित्य काव्य विधामे कनेक बेसिए समृद्ध रहल पाओल

जाइत अछि। कविता(गीत गजल (हाइकुक 50 टा सँ सेहो बेसी कृतिसभ प्रकाशित रहल देखल जाइत अछि। जे अछि (शिव

मधुके भाग्यक रेखा (1989 ई.) रामेश्वर अर्याल, नहि, आव नहि (दीर्घ कविता, 1979 ई.) रामभरोस कापड़ि भ्रमर, हमरा नहि टोक (दीर्घ कविता, 2004 ई.),भुवनेश्वर पाथेय, एक दृष्टि एक कविता (दीघ कविता, 2000 ईं), धर्मेन्द्र विह्वल, बन्न कोठरी औनाइत धुआँ (कविता संग्रह, 1972 ई.),रामभरोस कापडि भ्रमर, हैंगरमें टांगल कोट (कविता संग्रह,1982 ईं) डा. धीरेन्द्र, मोमक पघलैत अधर (गीत गजल,1982 ई), रामभरोस कापडि भ्रमर, करुणा भरल ई गीत हमर (कविता संग्रह, 1984 ई.), डा. धीरेन्द्र, यंत्रणा (कवित संग्रह, 1986), शुभनारायण झा, हम नेपाली हम नेपाल (कविता संग्रह, 1989) चन्द्रशेखरलाल शेखर, अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह,1990 ई.) रामभरोस कापडि भ्रमर, पघलैत बर्फ (कविता संग्रह,1990 ई.) भुवनेश्वर पाथेय, तोरे छवि (कविता संग्रह, 1991 ई.) सुश्री यमुना राय, ओझा चालीसा (हास्य कविता, 1991 ई.) नरेश ठाकुर, भूषण भारती (कविता संग्रह, 1992 ईं) उपाध्याय भूषण, क्षितिजक ओहि पार (कविता संग्रह, 1993 ई.) अयोध्यानाथ चौधरी, रस्ता तकैत जिनगी (कविता संग्रह, 1993 ई.), धमेन्द्र विह्वल, कुसुम रचनावली (कविता संग्रह, 1993 ई.) महाकान्त झा, विदेहक नगरीसँ (सं.काव्य संकलन, 1993 ई.), सं. महेन्द्र मलंगिया, लावाक धान (काव्य संकलन, 1994 ई.), सं भ्रमर, चक्रायण (कविता संग्रह, 1995 ई.) आर एस भारद्वाज, दुर्दशा (कविता संग्रह, 1995 ई.), रुद्रनारायण झा, ‘मड़ई’, मैथिली पद्य संग्रह (काव्य संकलन, 1996 ई) सं भ्रमर, प्रेमर्षि, शूली पर संत (कविता संग्रह,2001 ई.), चन्द्रशेखरलाल शेखर काल प्रवाह (कविता संग्रह, 2002 ई.), डा. रेवतीरमण लाल, फूलक सुगंध (कविता संग्रह,2002 ईं) जयनारायण झा जिज्ञास्, कोन सुर सजावी (गीत संग्रह,2007 ई.) धीरेन्द्र प्रेमर्षि,एक समयक बात (हाइकु संग्रह, 2004 ई.), धर्मेन्द्र विह्वल, मिथिला मैथिली (कविता संग्रह, 2002 ई.), राजेश्वर नेपाली, विचार कान्ति कविता संग्रह, 2068) राजेश्वर नेपाली, आलोक (कविता संग्रह, 2004 ई.) सुन्दर झा शास्त्री, फुटल ढोल (कविता संग्रह, 2001 ई.), विनोद चन्द्र, छिलमिल्ली (कविता संग्रह,2005 ई.) कुवेर घिमिरे, धुंआएल आ. ति सभ (कविता संग्रह,2006 ई.), धमेन्द्र विह्वल, कन्दर्प कामिनी (कविता संग्रह,2006 इ कन्दर्पलाल कर्ण, सभटा दाग देखार (कविता संग्रह,2007 ई.), चन्द्रशेखर लाल शेखर, धधरा (कविता संग्रह, 2007 ई.) प्रेमविदेह ललन, सप्तंगी (कविता संग्रह, 2008 ई.), जग प्रसाद यादव, अखनो अन्हार लगैए (कविता संग्रह,2008 ई.) अर्जुन प्र. गुप्ता, संघर्षक पथ पर (गीत कविता संग्रह, 2005 ई.) अशोक दत्त, पोथरी (कविता संग्रह, 2009 ई.), भूपेश भूषण,सुनगैत जिनगी (कविता संग्रह) नित्यानंद मिश्र, आन्दोलन (कविता संग्रह) वृषेश चन्द्रलाल, सुन्दर सतसई (कविता संग्रह) सुन्दर झा शास्त्री, स्वार्थ सतसई (कविता संग्रह,1965 ईं) राम स्वार्थ ठाकुर, मुनामदन (नेपालीसँ मैथिली अनुवाद) सुन्दर झा शास्त्री, मेघदूत (संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद) पं. सूर्यकान्त झा, मैथिली गीता (संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद) पं. सुरेश झा, खैयामक संसार (उर्दू सँ मैथिली अनुवाद) डा. धीरेन्द्र, मानव (नेपाली सँ मैथिली अनुवाद) मथुरानंद चौधरी माथुर, समय सीला पर (कविता, हाइकु संग्रह, 2010 ई.) डा रामदयाल राकेश, बांकी अछि हमर दूधक कर्जा (गीत संग्रह, 2062 वि सं.) बिनीत ठाकुर, रक्तवर्षा (कविता संग्रह, 2067 वि.सं) रमेश रञ्जन आ मेघ शतक (काव्य संग्रह, 2012 ईं), श्याम शेखर झा ‘कमल’, करिछौंह आकाश (कविता संग्रह, 2065) की भार सांठ कविता संग्रह, 2062) हिमांशु चौधरी, गीतांजली (भावानुवाद 2068) चन्द्रकान्त झा चन्द्र, भगजोगनी(2069) करुणा झा, पैसा (2069) गंगा प्रसाद अकेला, अन्हिरियाक चान (गजल संग्रह 2070) रामभरोस कापडि भ्रमर,।

2 कथासाहित्यः नेपालक साहित्यकारसभ 1950 ई. सँ कथासाहित्यमे खापेनो दखल देब शूरु क चकल छथि। विगत छ दशकमे एहिमे उल्लेख्य प्रगति भेल अछि।

(क) कथा साहित्य- नेपालीय मैथिलीक अधिकांश कथासभ विभिन्न पत्रिकामे प्रकाशित रहल अछि मदा एतय संग्रहक चर्चा मात्र कएल जा रहल अछि। एखनधरि नेपालीय मैथिली कथासाहित्य क्षेत्रमे 12 टा कथासंग्रहसभ प्रकाशित रहल पाओलजाइत अछि। यथा (कुहेस आ किरण (1982 ई.) डा. धीरेन्द्र, पझाइत घूरक आगि (1984 ईं), डा. धीरेन्द्र, शतरुपा आ मन्। 1984 ई.), डा धीरेन्द्र, नेपालक प्रतिनिधि कथा (संकलन, 1981 ई.), सं. धीरेन्द्र, नेपालीय मैथिली उत्कृष्ट कथा (संकलन, 1989 ईं), सं सुरेन्द्र लाभ, तोरा संगे जएबौ रे कुजवा (कथा संग्रह, 1987 ई) रामभरोस कापडि भ्रमर, माधव नहि अएलाह मधुपुरसँ (कथा संग्रह, 1988 ईं), डा. रेवतीरमण लाल, ई हमरे कथा थिक (कथा संग्रह, 2003 ई डा. राजेन्द्र विमल, कथा यात्रा (कथा संग्रह, 2005 ई.), डा. सुरेन्द्र लाभ, एकटा हेराएल सम्बोधन (कथा संग्रह, 2009 ई.) अयोध्यानाथ चौधरी, हुगली उपर बहैत गंगा (कथा संग्रह, 2009 ईं), रामभरोस कापडि भ्रमर, कथा यात्रा (संकलन, 2067 वि सं.) सं रमेश रञ्जन, अशोक दत्त, चिडै(कथा संग्रह, 2068.) सुजित झा, सोमली (कथा संग्रह, 2067) आ सोहागिन, (कथा संग्रह, 2068.) राजेश्वर नेपाली, गंध (कथासंग्रह 2070) जित कुमार झा, ठौर (कथासंग्रह 2070) राजाराम राठौर, नरकपालिकाः डा. सुरेन्द्र लाभ, हाथक रेखा डा रेवती रमण लाल, कोइली घूरि आउः सुजितकुमार झा, इतिहासक घाओ (2071)

राजेन्द्र विमल, मैथिली कथा नेपाल(कथा संग्रह,2071) सं. डा रमानन्द रमण, भूकना महात्म(2071) श्याम सुन्दर शशी, एण्टीभायरस (2076) राम भरोस कापडि भ्रमर।

(ख) उपन्यास : नेपालीय मैथिली उपन्यास साहित्यक अवस्था संतोषप्रद रहल अछि। मौलिक उपन्यासक सृजना होबयक संगहि अन्य भाषामे लिखाएल उत्कृष्ट उपन्याससभक मैथिलीमे अनुवाद क प्रकाशित कएल गेल पाओल जाइत अछि। मौलिक आ अनुदित उपन्याससभ ईसभ अछि (भोरुकबा 1964 ई.), प्रो. धीरेन्द्र, बिन माइक बेटी(1967 ई.) श्रीमती श्यामा झा,कादो आ कोइला (1968 ई.) डा धीरेन्द्र, सेहन्ता (1968 ई.) कुँवरकान्त, ठुमुकि बहु कमला(1983 ई.) डा. धीरेन्द्र, विसूवियस (1986 ई) प्रदीप बिहारी, मर्सिनी (1993 ई.), डा. अरुणकुमार झा,सूर्यास्त (2006 ई.), डा. अरुण कुमार झा, (पत्रिकामे धारावाहिक रूपमे प्रकाशित), गामक भलादमी (2009 ई), राजाराम सिंह राठौर, मोदिआइन (नेपाली सँ अन्दित मैथिली उपन्यास, 2004), अनु बृषेश चंद्रलाल, मोदिआइन नेपाली सँ अनुवाद) 2049रू डा. राम दयाल राकेश, घरमहँा (उपन्यास 2069 रामभरोस कापडि भ्रमर, सडोर (उपन्यास, 2069) रमेश रंजन,परिकमा(कथा संग्रह) अयोध्यानाथ चौधरी।

(ग) रिपोतार्ज रू नेपालीय मैथिली साहित्य आ संस्कृतिक समेटि क दूटा रिपोतार्ज संग्रह सेहो प्रकाशित भेल आथा (ब्रह्मग्राम (1972 ई), प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन आ बाल्मीकिक देशमें (2005 ईं), प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन।

3 नाटक, एकांकी रू नेपालीय मैथिली साहित्यमे किछ नाटक, एकांकी तथा नाटकसभक संकलन कृतिसभ प्रकाशित रहल अछि। ओ अछि (लक्ष्मण रेखा खंडित(1970 ईं), महेन्द्र मलंगिया, ओकरा आंगनक बारहमासा (1980 ई.),महेन्द्र मलंगिया, ट्टल तागक एकटा ओर (एकांकी संकलन, 1983 ई.), महेन्द्र मलंगिया, रानी चन्द्रावती) 1995, ई.), रामभरोस कापडि भ्रमर, एकटा आओर वसंत) 1995, ईं) रामभरोस कापडि भ्रमर, महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक (1997, ई.) रामभरोस कापड़ि भ्रमर, मैथिली नाटक संग्रह (नाटक संकलन, 2009 ईं), सं रामभरोस कापड़ि भ्रमर, नेपथ्य (नाटक संग्रह, 2067 वि सं.), रेवतीरमण लाल आ भैया, अएलै अपन सोराज (नाटक संग्रह, 2010 ई), रामभरोस कापडि भ्रमर,एकटा आओर वसन्त एवं अन्य नाटक(2069) रामभरोस कापडि भ्रमर,चौआरि(2070)परमेश्वर कापडि।।

4 साहित्येतिहास : साहित्यिक रचनासभक अतिरिक्त सेहो महत्वपूर्ण .तिसभ छापल गेल अछि। ओ अछि। नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास, प्रफुल्ल कुमार सिंह, मौन, 2011ईं, नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य, प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, 1998, नेपालक मैथिली पत्रकारिता (सं.), रामभरोस कापडि भ्रमर, 1987 ई., मल्लकालीन मैथिली नाटक, डा. चन्देश्वर साह, 1998 ई., मैथिली गल्पमें चित्रित अन्तर्वस्तु डा रेवतीरमण लाल) मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा,मैथिली लोक साहित्यक भूमिका 2067,68) डा. रेवती रमण लाल,नवीन नेपाल (2070) भोला झा, राजकमलक कथा साहित्यमें नारी : रामभरोस कापड़ि भ्रमर।

5 लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति लोक साहित्य आ लोक संस्कृतिक क्षेत्रमे सेहो बहुत रास काज भेल अछि। एतय प्रकाशित कृतिसभक मात्र चर्चा कएल गेल अछि। यथा(थारु लोकगीत (1968, ई.) प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, मिथिलाक पावनि (2000 ई.) प्रो बासुदेव लाल दास, मिथिलांचलक किछ लोककथा (1998 ईं) डा. गंगा प्रसाद अकेला, खिस्सा पिहानी, (2002 ई) डा. रेवतीरमण लाल, लोकनाट्य जटजटिन (2007 ई), रामभरोस कापडि भ्रमर, कारिख महाराज (2004 ई.), डा चन्देश्वर साह आ मैथिली संस्कारगीत (2004 ई.), कालीकान्त झा तृषित,लोकनायक सलहेस(प्रथमखण्ड सम्पादक राम भरोस कापडि भ्रमर,लोकनायक सलहेस(दोसरखण्ड) सं भ्रमर,मिथिलाक लोकगाथा नायकःदीना भद्री,सं भ्रमर।

6. विविध साहित्य- नेपालीय मैथिलीक साहित्य भण्डारमे निबन्ध, यात्रा साहित्य, विचार संकलन आदिक .तिसभ सेहो प्रकाशित रहल पाओलजाइत अछि। ओ अछि। अध्ययन आओर विवेचन (निवेध संग्रह) व्रजकिशोर ठाकुर, 1968 ईं, काव्य शास्त्रक रूपरेखा (डा.धीरेन्द्र, 1979 ई., मैथिली गद्य संग्रह (डा. धीरेन्द्र, 1999 ई., भगता बैंकक देश भ्रमण (रूपाधीरू प्रेमर्षि, 2002 ई, ठेकानपर (विचार संकलन), रामभरोस कापडि भ्रमर, 2005 ई आ सृजनधारा (कविता संग्रह, 2010) सं मीना ठाकर, सात जपानी कथा(अनुवाद)2044ः डा. राम दयाल राकेश, थाई संस्.ति आओर परम्परा(अनुवाद)2045ः डा राम दयाल राकेश, अन्तर्राष्टीय सम्मेलन आ नेपालः(2008 ई.) सं राम भरोस कापडि भ्रमर, मैथिली लोकसंस्कृति संगोष्ठी(कार्यपत्रसंग्रह)सं. भ्रमर,समय सन्दर्भ विविध) राम भरोस कापडि भ्रमर,ओ जे कहलनि(अन्तरवार्ता संग्रह) सं राम भरोस कापडि भ्रमर।

7 यात्रा साहित्य : हमर विदेश यात्रा (डा. रेवतीरमण लाल, 2007 ईं,चीन जे हम देखल यात्रा संस्मरण 2070, 2014ई राम भरोस कापडि भ्रमर।

8. मैथिली पत्रपत्रिका : हमरासभके बझले अछि जे कोनो साहित्यक विकासमे पत्र पत्रिकाक भूमिका आवश्यक होइत अछि। नेपालीय मैथिली साहित्यक विकासकममे पत्र (पत्रिकाक भूमिका महत्वपूर्ण रहल पाओल गेल अछि। नेपालमे प्रकाशित रहल ई पत्र पत्रिकासभक भूमिकाके अस्वीकार नहि कएल जा सकैत अछि। नेपालमे मैथिलीक निम्नलिखित पत्र

पत्रिकासभ प्रकाशित रहल अछि (नवजागरण (त्रैमासिक) नमोनाथ झा, जनकपुर, 2014 साल, फूलपात, सं सुन्दर झा शास्त्री, काठमाण्डू, 2025 वि सं, इजोत, सं हरदेव मिश्र, काडमाण्डू 2027 वि सं., मैथिली (त्रैमासिक),सं प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, 2027, विराटनगर, अर्चना, सं रामभरोस कापडि भ्रमर, जनकपुर, 2030 वि सं, सनेस (द्वैमासिक), विनोद झा, काठमाण्डु, 2037, वाणी, सं प्रो. विजयेन्द्र झा, राजविराज, 2037 वि.सं., हिलकोर,सं प्रदीप कुमार, भद्रपुर, 2039 वि सं, गामघर (साप्ताहिसं रामभरोस कापडि भ्रमर, जनकपुर, वि सं 2039, जनक (कविता प्रधान) सं. उदयकान्त ठाकर, जनकपुर, वि सं 2040, द्विधान, सं. दुर्गा प्र देव,राजविराज, 2043 वि सं, आँजुर (द्वैमासिक) सं रामभरोस कापडि भ्रमर, जनकपुर, 2045, मिथिला टाइम्स (पाक्षिक), रामरीझन यादव, विराटनगर, 2048, पल्लव (हवाईपत्र), सं. धीरेन्द्र प्रेमर्षि, काठमाण्डू, 2050 वि सं, मिथिलांचल (दैनिक), सं रामनारायण देव, राजविराज, 2052 वि सं., नेमिकानन, सं. डा. रेवतीरमण लाल, जनकपुर, 2059, आँगन (वार्षिक), सं रामभरोस कापड़ि भ्रमर, काठमाण्डु, 2061, सीमाञ्चल (दैनिक) सं. उपेन्द्र भगत नागवंशी, जनकपुर, मिथिला (साप्ताहिक) राजविराज आ मिथिला डट कम (दैनिक),सं. सुजित कुमार झा, जनकपुर, अप्पन मिथिला (मासिक) सं हृदयकान्त झा, काठमाडू। एहिमध्य गामघर साप्ताहिक, सीमांचल दैनिक, मिथिला डट कम दैनिक, मिथिला साप्ताहिक, अप्पन मिथिला, नेमिकानन, आँजरपत्रिका सभ मात्र नियमित प्रकाशित भ रहल अछि।

स्रोत सन्दर्भ

2. धनबज्र बज्राचार्य गोपालवंशाबलीको एतिहासिक विवेचन, किर्तिपुर, 2064। 146
3. ज्ञानमणि नेपालः जयतरचित महिरावणबध नाटक, विवेचनात्मक अध्ययन, 2040, पृ.50
4 सुनिति कुमार चटर्जि र बबुआजी मिश्र(सं) वर्णरत्नाकराप्र रायल एशियाटिक सोसाइटी,बंगाल,1940 ई., भूमिका।
5. समय साल(मासिक) दिसम्बर 2011
6. राम भरोस कापडि भ्रमर नेपालको मैथिली साहित्य, समकालीन साहित्य, वर्षः1 अंकः4। प्र. सम्पादक कृष्णचन्द्र सिंह प्रधान। ने रा प्र.प्र।
7 डा. प्रफुल्ल कुमार मौन नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास,साझा प्रकाशन, 2068। अन्य
8. डा. जयकान्त मिश्रःमैथिली साहित्यक इतिहास।साहित्य अकादमी,1998 ई।
9 जार्ज ए ग्रियर्सनः मैथिली व्याकरणा(सं) डा रमानन्द झा रमण। चेतना समिति,पटना,2011ई।
10 राम भरोस कापडि भ्रमर(स) अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल (आलेख संग्रह) 2008। अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन, हंस भवन, नई दिल्ली।





नेपालमे मैथिलीक विविध आयाम

✍ 'धीरेन्द्र प्रेमर्षि

तरङ्ग त फैलिन्छ नै मनले शङ्ख फुकेपछि
जान्नुपछञ जागे मानिस राति कुकुर भुकेपछि

अपन एहि नेपाली गजलक शेरमे हम नेपालमे मैथिलीक वर्तमान अवस्था देखैत छी। एकर तात्पर्य जे नेपालमे मैथिली नीकजकाँ जड़ि पकड़ने अछि। पहिने मैथिलीक गतिविधि सामान्य रूपेँ होइत छलैक। बेसी स्वान्तः सुखाय आ किछु.किछु दायित्वबोधसँ। गतिविधि करऽ वला करैत रहैत छल आ देखऽ वला देखि लैत छल। बड़ बढ़ियाँ, मैथिलीयोमे लोक किछु-किछु भऽ रहल छै से सोचि लोक आगाँ बढ़ि जाइत छल। मुदा वर्तमान जे अवस्था अछि, ताहिमे मैथिलीसन विशुद्ध बालु पेरिकऽ तेल निकालबाक उद्योगमे सेहो जाहि तरहेँ योजनाबद्ध ढङ्गसँ प्रहार होइत देखल जा रहल अछि ताहिसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे बेस गहिराइधरि गेल मैथिलीक जड़ि अपन गात-पातकेँ सेहो नीकेजकाँ पुष्ट एवं हरियर बना लेने अछि। हमरासभकेँ एहि लेल मात्र एकर भान नहि होइत छल जे ओ एकबाइग नहि भऽ तिल-तिल कऽ बढ़ि रहल छल। जेना माए-बापकेँ अपन धीयापुता नमहर होइत गेल देखलासँ पता नहि चलैत छैक, ताही तरहेँ। मैथिलीकर्मीसभकेँ भलहि ई बहुत फौदाएल, हरिआएलसन नहि लागल हो, मुदा अहूपर चौतर्फी प्रहार शुरू भेलाक बाद वा कुकुरसभक 'भूक' प्रखर भेलाक बाद मोनसँ कएल गेल शङ्खक 'फूक' केहन जोरगर आ असरदार रहैक, से प्रमाणित भऽ गेल। लोक जागि गेल अछि, चहल-पहल बढ़ि गेल छैक, तकरो जानकारी अन्हारमे कुकुरेसभ देल करैत छैक।

मुठियाक चाउरसँ पोसाइत मैथिली नेपालमे वा भारतमे, मैथिलीक काज कोनो सरकारी/अर्द्धसरकारी संस्थान वा योजनासँ कम, लोकक मोनमे रहल अपन पहिचान आ आत्मसम्मानप्रतिक कर्त्तव्यबोधसँ बेसी भऽ रहल छैक। काजक आयतन कम छैक, मुदा जे-जतेक भेल छैक, ताहिमे अधिकांश ठोस प्रकृतिक। भारतदिस तँ अष्टम अनुसूचि वा पटनाक मैथिली अकादमी, दिल्लीक मैथिली-भोजपुरी अकादमी, साहित्य अकादमी आदिकेँ दिमागमे राखि सेहो साहित्यकर्मी/सृजनधर्मीसभ द्वारा किछु काज भऽ जाइत हेतैक, मुदा नेपालमे ताहि तरहक कोनो 'सरकारी घोषित' निकाय नहि छैक। हँ, सरकारी स्तरपर पछिला 5.7 सालसँ संस्कृति मन्त्रालयद्वारा विद्यापति पुरस्कारक व्यवस्था अवश्य कएल गेल छैक। मुदा वास्तविक र्सजनधर्मीलग ई कम्मे पहुँचलो छैक आ एहिसँ ओहन लोकमे कोनो असरि सेहो नहि पड़ल छैक। एहनमे जे किछु काज होइत रहलैक अछि, से बुझू लोक मुठियाक चाउर बेचि जे करैत अछि, सएह। मैथिलीक काज कएनिहार आ मैथिलीक लड़ाइ लड़निहारसभ अपन तिमनक लेल लाएल तेल कपचिकऽ अधिकांशतः मैथिलीक दीपकेँ बारि रहल अछि। एहनमे फेर अपनहि गजलक एक शेरसँ नेपालक मैथिली अभियानीसभक चित्र देखएबाक प्रयत्न कऽ रहल छी।

घसाइत आ खिआइत चोख फार भेल छी
गलाए-गलाए गात गजलकार भेल छी

मुदा एकर प्रभाव अवश्य होइत रहलैक अछि। जतऽ एकनिष्ठ भऽ काज कएनिहारसभ मैथिलीक सम्मान हेतु आवाज उठबैत छथि ओत्तहि आन एकर विरोधीयोसभक मूहमे मैथिलीएटाक नाम रहैत छैक। भलहि ओ राज्यद्वारा सम्बर्धित नेपाली भाषाक अभियानी होइक वा भारतीय बजारवादक अस्त्र हिन्दी झुनझुन्ना बजौनिहारसभ। एहि तरहेँ सभक लेल मैथिलीक प्रयोग अनिवार्यप्रायः छैक। नेपालमे चुनाव-प्रचार, सांसद-मन्त्रीसभक शपथग्रहण-सम्बोधन, बजारसँ लऽ घर-व्यवहार आ सामाजिक सञ्जालधरिमे प्रयोग, मिथिला चित्रकलाक सर्वव्यापकता, मैथिली गीत-सङ्गीतमे अनेक लोकक संलग्नता आ विविध प्रयोग, विद्युतीय सञ्चार आ पत्रकारितामे विना कोनो शोर-सराबा अधिकाधिक प्रयोग, मिथिला क्षेत्रक गामघरसँ लऽ अरब-कतारधरिमे मैथिलीक सङ्गठन आ यथेष्ट मात्रामा सञ्चालित भाषा-अभियान बेस चतरल स्वरूपमे देखल जाइत अछि। ई एक तरहक आन्दोलनेक प्रतिफल छी। से मैथिलीक आन्दोलन नेपालमे अनवरत चलि रहल अछि। यद्यपि मैथिलीक लेल आन्दोलन करैत पाँच सपूतसभ शहादत तँ नेपालहिमे देने छथि, मुदा एहिठाम मैथिलीक ओहन आन्दोलन कहियो नहि भेलैक जे लोक केँ एकदम्मसँ झकझोड़ि। झकझोड़बो केलकैक तँ मात्र लोक-मोनकेँ।

पराती गायनसँ जागृत मैथिली आन्दोलनक विभिन्न स्वरूप आ असरक मादे एकटा लम्बा उद्धरण किंवा कथन वा कही बतकही प्रस्तुत करऽ चाहब। हमसभ बहुत दिनसँ सुतल छी। उठाबऽ के (जगएबाक) पचासो तरीका होइ छै। एकदम झकझोड़ि दियौ, जकरा क्रान्ति कहै छै। क्रान्ति करऽ बला झकझोड़बे नइ करै छै कि टाङो काटि दै छै। आ कहै छै. सुतले रहबेँ कि उठबेँ? तोहर हम पएर काटि देबौ तँ दुखेतौ आ उठहि पड़तौ। एकर समस्या छै जे पएर काटऽ के बाते छोड़ि दियौ, पएरमे सुइयो भौँकबै तँ घाओ हेतै आ दुखेतै। अइसँ संक्रमण होबऽ के सम्भावना रहै छै। संसारमे बहुत लोकके मान्यता छै जे उठाबऽ के उपाय क्रान्तिए होइ छै। बिना चक्कू भोंकने आ बन्दूक चलेने नइ उठै छै समाज, सेहो मान्यता राखऽ बला लोक छै। लेकिन तक-वितर्कसँ भीतरके विश्वास नइ हटा सकै छियै। दोसर लोकके ई मान्यता भऽ सकै छै जे सुइया नइ भोंकबै, बन्दूक नइ चलेबै, पएर नइ कटबै .... मुदा बिना लाठीके सात-सात सय

वर्षसँ सूतल (मिथिला राज्यक पतनक बादसँ सूतल) लोक कोना उठतै ! .... ई आन्दोलनके भाषा भेलै। कहबै जे बिना आन्दोलनो केँ जागि जाइ छै कोनो-कोनो जाति वा राष्ट्र तँ ओहो एकटा विश्वास छै। कोइ आन्दोलनके बात करै छै तँ ओकरो निषेध नइ कऽ सकै छी। तकर बाद किछ लोक इहो कहै छै जे क्रान्ति आ आन्दोलनमे लाठी कतऽ लगतै से कोन ठेकान! माथपर लगतै तँ लोकक मृत्युओ भऽ सकैए। करबै आन्दोलन उठाबऽ लेल आ लोकक मृत्यु भऽ जेतै वा अपाङ्ग भऽकऽ रहि जेतै तँ ओकर कोन अर्थ? तेसर उपाय होइ छै- पराती गबैत रहबाक। अपनासभके पराती गाबऽ बला प्रचलन छै। एहन लोक तरवारोमे ओते विश्वास नइ रखै छै आ लाठीयोमे नइ। आनसभ जे-जेना करै जाइ, मुदा परातीयो गाबऽ बला लोकसभ लागल रही। अइ तरीकासँ तत्काले नहियोँ भऽ सकै छै। एक-दूटा परातीसँ लोक नइ उठि सकैए। दशोटा पराती गाबऽ पड़ि सकैए। पराती गाबऽ के प्रयास आ साधना सभसँ सम्भव नइ भऽ सकै छै। समाजमे बहुत कम लोक छै जे पराती गाबऽ मे लागल रहैए। एकबेर गामपर गेल रही तँ सोचलौँ जे कोइ पराती गाएत तँ सूनब। ताइ लेल साढे" चारिए बजेसँ उठल रहै छलौँ। मुदा पराती कतौ नइ सुनलौँ। हँ, अजान अवश्य सुनबामे आएल। पराती गाबऽ के संस्कृतिए हराएल जाइ छै तँ की करबै? प्रतीकात्मक रूपमे परातीके विचारसँ होइ, गीतसँ होइ, कवितासँ होइ, नाटकसँ होइ, लेखनसँ होइ से आनऽ के कोशिश करी। किए तँ अपनासभमे कहल जाइ छै जे पुरान बात आब की करब, छोड़ि दियौ। हारल समाजक क्षमायाचनाके व्याख्या एहिना कएल जाइ छै।

ई कहब छनि- नेपालक एक बहुआयामिक चिन्तक/लेखक व्यक्तित्व सीके लालक। किछु साल पहिने जनकपुरधाममे नियमित रूपेँ हुनकर एक प्रवचन श्रृंङ्खला चलैत छलनि। मुख्यतः राजनीतिजन्य विषयपर बजनिहार हुनक एकटा श्रृंङ्खला मिथिला.मैथिलीपर सेहो केन्द्रित छल। ओहिमे आन्दोलनक चरित्र आ मिथिलाक बेगरता सन्दर्भमे हुनकर बात एहि तरहेँ आएल छल।

जँ मिथिला आन्दोलनक बात करी तँ निर्विवाद रूपेँ ई मात्र पराती.गायनक आधारपर चलि रहल अछि- से चाहे नेपालमे हुअए चाहे भारतमे। पराती प्रकटमे सहज दिनचर्या छै। पराती गबैत काल गओनिहारोक मस्तिष्कमे ई बात नहि रहैत छैक जे हमर गाओल परातीसँ भोर भऽ जेतै। असलमे पराती गओलासँ भोर होइतो नहि छैक। मुदा भोरहरियाक शङ्खनाद अवश्य छियैक पराती। पराती सुनिकऽ महिँसवारसभ पसर खोलबाक, हरबाहसभ बड़दकेँ सानी लगएबाक, विद्यार्थीसभ होमवर्कक लेल इसकुलिया झोरा तकबाक, घरनीसभ आङन-घर निपबाक- बहारबाक मनस्थिति अवश्य बना लेल करैत छलथि तहिया, जहिया ई काजसभ जीवनक अंग छलैक। ओहुना अहदियाल मनस्थितिमे स्फूर्तिक छौंक लगबऽ वला सहज-स्वाभाविक फोरन भेल करैत छलैक पराती। मुदा जेना सीके लाल कहने छथि. ठीके आब गामोमे पराती सुनब दुर्लभ भेल जा रहल अछि। भोरेभोरे हरेक ठाम कनफाड़ू आवाजमे सूनि सकै छी। अजान आ भोजपुरिआएल टोनक पैरोडी भजनसभ।

हमसभ साहित्यिक तथा सांस्कृतिक गतिविधिक संगहि जीवन-व्यवहारक दृष्टिएँ परातीएक भासमे मिथिलाकेँ जगौने आ जोगौने छी। ताहूमे खास कऽ नेपालदिसक मिथिलाक जँ बात करी तँ अइठाम कोनो आन्दोलन वा योजनाबद्ध रुपेँ एहन पराती गएबाक काज नहि भऽ रहल अछि। अइठामक जनमानस राजनीतिक वा आन तरहक योजनाबद्ध कृत्रिमतामे बेसी नहि ओझराएल अछि अखनधरि। तेँ अइठाम मिथिलाक कला, संगीत, साहित्य आदि क्षेत्रमे जे-जते काज होइत अछि, से कोनो प्रोजेक्ट वर्क अन्तर्गत मात्र नहि भऽ जीवनक सहज सृजनशीलता होइत अछि। तेँ एहिमे परातीमे अन्तर्निहित भाव बेसी मुखर रहैत अछि। ताहूसँ बेसी रहैछ। भाषाक प्रयोगक सन्दर्भमे निरन्तर पराती गायन। अइठाम मैथिली भाषाक प्रयोग स्टेजपर मात्र नहि, घर-आङन आ बजारमे सेहो होइत अछि। जेना पहिने पराती गाबऽ वलाकेँ ई दाबी नहि रहैत छलैक जे पराती गाबिकऽ हम समाजकेँ जगएबाक कृपा कऽ रहल छी, तहिना नेपालक मिथिलामे आमलोक मैथिलीप्रति कृपाभावसँ ई बाजि देबाक कष्ट नहि करैत छथि। हमसभ जहिया कहियो भारतदिस जाइत छी तँ बोर्डर टपिते देरी बजारमे तँ सहजहिँ, कने पढ़ल-लिखल कहएनिहार लोकक घरोमे मैथिलीक प्रयोग निषिद्धजकाँ पबैत छी। कतबाधरि जे जिनकर पहिचाने मैथिलीकेँ लऽकऽ मात्र छनि तिनकोसभक घरक भाषा मैथिली नहि छनि। मैथिलीक बहुतो कारोबारीसभक लेल सेहो मैथिली जीवनक भाषा नहि बनि, फगत कारोबार वा व्यापारक भाषा अछि। यद्यपि पछिला चरणमे ई क्रम अहूठाम शुरू भऽ गेलैक अछि।

प्रजातन्त्रमे फौदाएल मैथिली एहि आलेखमे नेपालीय भूभागमे भेल मैथिलीक युगान्तकारी प्रकृतिक काज किंवा आन्दोलनक विषयमे किछु लिखबादिस नहि जाए चाहैत छी। कारण नेपालक मल्ल राजा वा सेन राजासभक समयमे भेल ओ काजसभ, जकरा हिसाबेँ एहि समयकेँ मैथिलीक स्वर्णयुग कहल गेल तकर उल्लेख हरेक प्रामाणिक इतिहाससभमे अछिए। लम्बा अन्धकार कालक बाद नेपालमे वि.सं. 2007 साल (ई.सन् 1990) मे प्रजातन्त्र अएलाक बाद पुनः टुकटुकाए लागल मैथिली, पं. जीवनाथ झा स्कूल, डा. धीरेन्द्र स्कूल, मिथिला नाट्यकला परिषद्क योगेन्द्र साह नेपाली कालीन बहुआयामिकता, मैथिली विकास मञ्च काठमाण्डूक सक्रियता, विराटनगर-राजविराज-जनकपुर धाम-वीरगञ्ज आ काठमाण्डूमे सक्रिय रहल मैथिली साहित्य परिषदक गतिविधि आदि सेहो नेपालीय मैथिलीक एकटा महत्त्वपूर्ण इतिहासक रूपमे दर्ज भऽ चुकल अछि।

मैथिली आन्दोलनक दृष्टिएँ जँ देखल जाए तँ नेपालमे वि. सं. 2046 साल (ई.सन् 1990) मे भेल जनआन्दोलनक पछाति आएल प्रजातन्त्र सर्वाधिक उर्वर आ ऊर्जामय समय रहल। एहि समयमे लोकमे अपन पहिचानक प्रति स्वाभाविक रूपेँ गौरव

बोध करबाक आ अपन गौरवगाथासभकेँ संस्थागत करबाक मनस्थिति देखल जाइत छलैक। तेँ व्यक्तिगत रूपसँ होइक, संस्थागत रूपसँ होइक चाहे सरकारकेँ दबाव दऽकऽ होइक, मैथिलीक काज करबाक आ करएबाक वातावरण तथा ललक बेसी देखल जाइत छलैक। मिथिला नाट्यकला परिषद एही समयमे अपन गतिविधि नाटकक संगसंग साहित्यदिस सेहो विस्तृत करैत स्वयं राष्ट्रिय आ अन्तरराष्ट्रिय रूपमे पर्यन्त परिचित, प्रतिष्ठित आ प्रतिष्ठापित भेल। देशभरिक आन गाम-शहरमे उल्लिखित संस्थासभक अतिरिक्त अन्यान्यो कतोक संस्था अपन- अपन गतिविधिमे तीव्रता अनलक। मैथिलीकेँ लऽकऽ आगाँ बढ़ल कतेको व्यक्तित्व राष्ट्रिय आ अन्तर्राष्ट्रिय फलकपर अपनाकेँ स्थापित करबामे सफल भेलथि। रेडियो नेपालसँ केन्द्रीय प्रसारण अन्तर्गत मैथिली भाषामे समाचार देनाइ शुरू भेल। नेपाल टेलिभिजन मैथिलीक किछु टेलीफिल्म आ सिरियलक निर्माण तथा प्रसारण कएलक। नेपाल सरकारक पाठ्यक्रम विकास केन्द्रसँ प्राथमिक शिक्षा मातृभाषामे देबाक अवधारण अन्तर्गत कक्षा 1 सँ 5 धरिक पाठ्यपुस्तकक निमाण भेल। एही कालखण्डक अन्तिम चरणदिस नेपालमे एफएम रेडियोक स्थापना आ तकरेसंग हेल्लो मिथिला सहित मैथिली कार्यक्रमसभक प्रसारण मैथिली गतिविधिमे विशेष तीव्रता अनबामे सहायक भेल। हमर स्वयं हेल्लो मिथिला सञ्चालकक रूपमे जे अनुभव अछि, ताहि आधारपर ई कहैत गर्व होइत अछि जे तहिया प्रति सप्ताह कमसँ कम 10 टा उल्लेख्य मैथिली गतिविधि मादे समाचार देबाक अवस्था रहैत छलैक।

मुदा बादमे जखन वि.सं. 2063 साल (ई.सन् 2006) मे लोकतन्त्रक स्थापना भेल तँ ओहि तेवरक उत्साह नहि देखल गेल मैथिलीक सन्दर्भमे। असलमे नेपालमे मात्र 16 वर्षक अन्तरालमे दूटा पैघपैघ राजनीतिक आन्दोलन भेल। पहिलमे लोककेँ लम्बा समयक एकतन्त्रीय शासनसँ उन्मुक्ति भेटल रहैक तेँ आमजनमे बेस उत्साह, उमंग रहैक। सरकारमे आएल लोकसभ सेहो प्रजातन्त्रक पढ़ाइ आ लड़ाइक आधारपर काज कऽ रहल छल। तेँ किछु समधानल प्रकृतिक प्रजातान्त्रिक डेग बढ़ाओल गेल। लोकमे सेहो ओही भावक प्रतिबिम्बन भेलासँ सभ सहज-स्वाभाविक भावसँ विविध क्षेत्रमे क्रियाशील होइत गेल। प्रजातान्त्रिक वातावरणसँ आएल उत्साहमे बढ़ल साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधिदिस आकर्षित भऽ नव पीढ़ीक उत्साही लोकसभ सेहो अपन प्रतिभा आ अभिरुचिअनुसार मैथिलीक विभिन्न क्षेत्रमे सक्रिय भेल।

मुदा समय.क्रममे बढैत गेल सत्तालिप्सा, राजनीतिक खिँचातानी, सांसद्सभक खरिद-बिक्रीसन क्रियाकलापसँ हरेक क्षेत्रमे अनाचार, भ्रष्टाचार व्याप्त होइत गेल। मैथिलीसँ सम्बद्ध कतिपय महत्त्वपूर्ण अभियन्तासभ सेहो राजनीतिक दलसभक छत्तातर आबि ओकरेसभक सुरमे सुर मिलाबऽ लगलथि। अही समयमे एकटा चरण एहन एलै जखन तत्कालीन राजा प्रजातन्त्र केँ बर्खास्त कऽ शासन सत्ता अपन हाथमे लऽ लेलथि। एहन समयमे सत्तासँ सदति सटल रहऽ वला प्रवृत्तिक किछु सक्रिय मैथिलीकर्मी जनभावनाक विपरीत चलि रहल राजतन्त्रक सुराकीध्सहयोगी बनि गेलथि।

जनतामे राजाक कदमप्रति आक्रोश त बहुत छलैक, मुदा राजनीतिक पार्टीसभक जे चक्रचालि देखल गेल छल विगतमे ताहिसँ ओकरोसभक प्रति वितृष्णेक अवस्था रहैक। जनताक बीचसँ नागरिक समाज बहराएल। ओ तत्कालीन राजनीतिक अवस्थाक विरुद्ध विगुल फुकलक। अपन-अपन गऽर धएलहा सामाजिक अभियन्ता कहएनिहारसँ लऽकऽ मैथिलीकर्मीसभ सेहो खासे नहि सुगबुगुएलाह। ओहि भयाक्रान्त अवस्थामे किछुएगोटे मात्र जनआन्दोलनक पेनी छाननिहार नागरिक समाजक क्रियाकलापमे सक्रिय देखल जाइत छलाह। अन्ततः उएह नागरिक समाजक जनसङोर जनआन्दोलनमे रूपान्तरित भऽ गेल आ लोकतन्त्र तथा गणतन्त्रक स्थापना भेल। एकर पृष्ठभूमिमे प्रजातन्त्रक बिगड़ैत चालिक दऽरसँ शुरू भेल माओवादी आन्दोलनक बड़ पैघ भूमिका रहल। माओवादी राजनीतिक मूल धारमे आबि प्रमुख शक्तिक रूपमे आगाँ आएल।

लोकतन्त्रमे लङ्गडाएलसन मैथिली ओना त प्रजातन्त्र आ लोकतन्त्र पर्यायवाची शब्द अछि, मुदा नेपालक सन्दर्भमे ई आंशिक रूपेँ अलग-अलग अर्थ रखैत अछि। खास कऽ ई दू भिन्न-भिन्न आन्दोलनक रूपमे सेहो जानल जाइत अछि। सन् 1990 क आन्दोलन प्रजातन्त्रक नामपर भेल छल तँ 2006 क आन्दोलन लोकतान्त्रिक आन्दोलन कहाएल। जतऽ पहिल आन्दोलनक बाद प्रारम्भिक चरणमे लोक हर्षित आ समर्पित भावेँ प्रजातान्त्रिक आचरण वा क्रियाकलाप देखएबादिस अग्रसर छल, ओत्तहि दोसर आन्दोलनक बाद लोकतन्त्र केँ अपन निहित स्वार्थक सिद्धि करबामे लोक उद्यत देखल गेल। बहुतो लोक मोन जेना ई अवधारि लेने छल जे प्रजातन्त्र, लोकतन्त्र, राजतन्त्र सभ अपन गोटी सुतारबाक पृथक.पृथक नाम आ व्यवस्था छैक। पहिने प्रजातन्त्र अचानक अएलापर लोक ओहीअनुरूप रूपान्तरित होएबाक प्रयत्न कएलक। मुदा डेढ़ दशकमे प्रजातन्त्रकेँ स्वार्थक खापड़िमे भुजबाक भाँज बूझि गेल लोकसभ लोकतन्त्रमे जड़िएसँ तदनुरूप जाल बिछबैत चलि गेल।

एकर असरि एहन भेल- जे आदमीसभ लोकतन्त्र विरोधी कित्तामे बैसि प्रकारान्तरसँ राजतन्त्र वा अधिनायकवादक पक्षपोषण कऽ रहल छल, उएहसभ लोकतन्त्रक नामपर फानिकऽ हरेक क्षेत्रमे आगाँ चलि आएल। अइसँ नव पीढ़ीमे ई सन्देश गेलैक जे सङ्घर्ष वा सृजनशीलतामे ओझराइत रहब बेकार छैक। स्पष्ट भेल जे साधनासँ बेसी जोगार जरूरी होइत छैक आगाँ बढ़बाक लेल। ताहीसँ लगभग लोकतन्त्रक प्रारम्भिक एक दशक पूरा जोगारक पाछाँ दौड़ैत रहल युवासभ। कोनो राजनीतिक छोटछिन लाभ, एनजीओ-आइएनजीओमार्फत थोड-बहुत कमाइ आदिमे सभ अपस्याँत देखल गेल। अपन आत्मबलक धरातल मजबूत बनएबादिस निट्ठाहे ध्यान नहि देखल गेलैक। युवासभ साहित्य.कलासन सृजनात्मक क्षेत्रमे अपन समय.श्रम लगएबासँ बेसी ध्यान लोकतन्त्र अएलाक बाद

अस्त्विमे आएल अनेको मधेशी राजनीतिक पार्टी आ राजनीतिक नामपर सक्रिय भेल अनेको हथियारबन्द समूहदिस आकर्षित होबऽ लागल। जेसभ प्रत्यक्षतः ओम्हर नहि गेल सेसभ सञ्चालनमे आएल घनेरो रेडियो, टिभी, अनलाइन आदिमे आवद्ध भऽ गेल। एहिसँ ओकरासभकेँ थोड़े नाम आ किछु दाम भेटऽ लगलैक, जाहिसँ सृजनात्मक क्षेत्रमे सहज रूपेँ आबऽ वला लोक कमैत गेल। ओहुना मोनमे अहुरिया कटैत विचार जे अक्सर साहित्यध्कलाक रूपमे बाहर होइत अछि, से कोनो माध्यमे जखन बहराए लगैत अछि तखन सृजनाक प्रसवपीड़ा अपनहि मद्धिम होइत चलि जाइ छै। जइमे जखन पीड़ो नहि होइक आ उपरसँ किछु आमदसहित सर्जक कहएबाक सेहो अवसर भेटि जाइक तखन स्वाभाविक छैक जे लोक ओहीदिस बेसी दौड़त। से दर्जनोक संख्यामे रहल रेडियोसँ सामाजिक सञ्जालसभ पर्यन्त ओही रूपमे आगाँ आएल।

माओोवदी जनयुद्धसँ बहुतरास सकारात्मक बातसभ भेल छलैक। मुदा ई आन्दोलन पूर्ण निष्कर्षपर नहि पहुँच एक तरहक सम्झौतामे विश्राम लऽ लेने छल। एहिसँ लाठी-बन्दूकक हाथेँ समाज आ राजनीतिमे स्थापित होएबाक चाहना रखनिहार आ ओहि तरहक विश्वासकेँ प्रमाणित कएनिहार लोकसभ बढ़ैत चलि गेल। ई प्रवृत्ति बहुतो युवाकेँ सृजनशीलताक मार्गमे जएबाक अपेक्षा दबङ्गइदिस जाएमे उत्प्रेरित कएलकैक। अपना किछु नहि कएनिहारसभ करऽवलासभकेँ गरिआएब अपन काज बुझऽ लागल।

स्थापित अभियानीसभक सेहो राग अलग-अलग ढङ्गसँ बहराए लागल। पहिने जतऽ व्यक्ति-व्यक्ति मिलिकऽ संस्था बनैत छल आ संस्था हनहनाकऽ आगाँ बढ़ैत छल ओत्तहि बादमे संस्थाक हरेक व्यक्ति अपना भीतर दू-चारिटा एनजीओ पोसऽ लागल, जे अक्सर अनकर उद्देश्यअनुसार अपन काज करैत अछि। एहिसँ काजसभ जनअपेक्षासँ नहि भऽ धनअपेक्षासँ सञ्चालन होबऽ लागल। एहन गतिविधिसँ मैथिलीक लेल पहिने जे सामूहिक बल लागल करैत छल से ओतेक बलशाली एवं प्रभावशाली नहि रहल।

ब्राह्मणवादक ससरफानीमे कछमछाइत मैथिली अनेक प्रतिकूलताक अछैतो सर्जनाक बीयासभ जे-जते छिटाएल रहए से अपन काज करैत रहल। एहिसँ अनेको संस्था आ व्यक्ति नव-नव रूपेँ स्वतः जनमैत आ बढ़ैत रहल। सङोर मिथिला नेपाल, मैथिली साहित्य-कला प्रतिष्ठान, प्रवासी मिथिला एकता समाज, साँझक चौपाड़ि, मैथिल समाज बुटवल आदि एहि तरहक नमूना संस्थाक रूपमे आगाँ आएल जे सर्वथा नव भाव, नव उत्साह, नव लोक आ नव दिशाबोधक संग सक्रिय अछि। आ एही आधारपर खास कऽ ओ शक्ति जे मात्र मैथिलीकेँ समाप्त कऽ देलासँ नेपालक सम्पूर्ण मैदानी भूभाग तथा भारतक बिहारसहित क्षेत्र केँ हिन्दीक गुदरी बजार बनाओल जा सकबाक बातपर विश्वास रखैत अछि, मैथिलीक विरुद्ध विभिन्न शस्त्रक प्रयोगमे व्यापकता आनि देने अछि।

ओहि शक्तिक सभसँ पहिल मोहरा बनि रहल अछि मिथिलामे मात्र जनाधार रहल मधेशी पार्टीसभ, जे ओहि क्षेत्रक जनता, मुद्दा आ भाषा-संस्कृतिसँ बेसी हिन्दीक लेल जान.परान लगौने रहैत अछि। दोसर मोहरा बनाओल गेल अछि ओहि वर्गक किछु कथित अगुआ जे राजनीतिकध्सामाजिक रूपसँ पाछाँ पाड़ल गेल समुदायसँ अबैत अछि। ओकरासभक माध्यमेँ एहि बातक ढोलहा दिआओल जा रहल छैक जे मैथिली जातिविशेषक भाषा अछि आ हमरासभक दुर्गतिक कारण सेहो इएह अछि। जखन कि यथार्थतः ई ब्राह्मणवादक सभसँ मजबूत हथकण्डा देखल जा रहल छैक। कोनो समुदायकेँ पछाड़बाक लेल वा पछुआ देबाक लेल ओकरा अपन धरातलक वैशिष्ट्यसँ सोझासोझी होबऽ नहि देल जाइत छैक। अखनुक अवस्थामे ब्राह्मणवादीसभ तँ घरसँ लऽकऽ बाहरधरि हिन्दी, नेपाली, अङरेजी आदि भाषा केँ अङेजि लेने अछि। मात्र मूंचपर ओ मैथिली बाजल करैत अछि। मुदा जकरासभक जीवनमे, ज्ञान.परम्परामे, सपनामे मात्र मैथिली छैक तकरेसभकेँ कतहु चिढ़ाकऽ आ कतहु बढ़ाकऽ विरोध करबाओल जा रहल छैक। लोकतन्त्रमे मैथिलीसहितक मातृभाषासभक आधारपर सेहो आगाँ बढ़बाक वातावरण तैयार होइत गेलाक बाद ओकरासभक दिमागमे मैथिलीएक प्रति जहर घोरिकऽ मैथिली वा ओकरासभक मातृभाषासँ पर्यन्त ओहि लोककेँ उखाड़ि देबाक षड़यन्त्रक अन्तर्गत चलि रहल अछि अभियान।

ब्राह्मणवादीसभ ई जनैत अछि जे मैथिली वा मातृभाषाक माध्यमे पछुआएल समुदायकेँ आगाँ बढ़बामे कोनो समय नहि लगतैक। एहनमे जल्दीए ओसभ हमरासभक बराबरिमे आबि जाएत। तखन किछु एहन गोटी फेकियै जे ओसभ स्वयं मातृभाषा छोड़ि आन आयातीतध्आधुनिक भाषासभदिस चलि जाए, जाहिमे दक्षता हासिल करबामे ओकरासभकेँ आओर 25.50 वर्ष लागि जाउक। ताबत हमसभ अन्तर्राष्ट्रिय भाषाक माध्यमे विश्वबजारमे अपन जगह सुरक्षित कऽ लेब। एहि तरहेँ मैथिलीकेँ ब्राह्मण.कायस्थ आदि कथित उच्च जातिक संग मात्र जुड़ल होएबाक दुष्प्रचार असलमे ब्राह्मणवादीएसभ कऽ रहल अछि। एहि रूपमे चोरबा स्वयं चोर-चोर कहैत दरबर मारि रहल अछि। एकर हत्कण्डाक रूपमे ब्राह्मणवादीसभ अनकर काज केँ मोजर नहि देबाक, अनका मूलधारमे अएबासँ रोकबाक प्रयत्न करबाक, आबियो गेलापर ओकरासभकेँ विभिन्न तरहेँ हीनभावक शिकार बनेनाइसन क्रियाकलाप करैत देखल जाइत अछि। से नेपालमे रहल ब्राह्मणवादीसभ मात्र नहि, भारतसँ नेपाल आबिकऽ सेहो एहि तरहक प्रपञ्च रचल जाइत छैक।

नेपालमे मिथिला-मैथिलीक गतिविधिमे ब्राह्मण.कायस्थसँ बाहरक जातिक संलग्नता सेहो उल्लेखनीय छैक। एहनमे विगतमे एक पुस्तक मेलामे भारतसँ आएल एकटा समूह चूनिचूनिकऽ ब्राह्मणे.कायस्थकेँ आगाँ देखबैत विभिन्न कार्यक्रमसभक आयोजन कएलक। कोनो-कोनो सत्र/कार्यक्रममे जे थोड़बहुत ओहि जातिध्समुदायक लोकक सहभागिता भऽ पाएल रहैक, रिपोर्टिङमे चुनिचुनिकऽ ओकरासभक नाम हटा देल गेलैक। ई एहन कृत्य

छलए जाहि माध्यमे देखाओल गेलैक जे मैथिली ठीके ब्राह्मण-कायस्थक मात्र छियैक। आ एकर आयोजकसभ जातीय रूपमे ब्राह्मण आ प्रवृत्तिगत रूपमे ब्राह्मणवादी छल।

विद्यापति मिथिला-मैथिलीक सामूहिक पहिचान-प्रतीकक रूपमे स्थापित आ सम्मानित छथि। एहनमे किछु ब्राह्मण संघ-संस्था अरबधिकऽ विद्यापति समारोह आयोजन कऽ ई जनाबऽ चाहैत अछि जे विद्यापति सभक नहि, ब्राह्मणक छथि। तहिना नेपालदिस जनकपुर धाम, राजविराज आदि जगहपर राजनीतिक, शैक्षिक, पत्रकारिता, व्यावसायिक आदि कोनो प्र.तिक समारोहमे लोक केँ सम्मानित करबाक एकटा उपकरणक रूपमे स्थापित होइत गेल पागपर सेहो ब्राह्मणवादीसभक नजरि पड़लैक आ ओकरासभ केँ इहो अखड़ि गेलैक। तेँ ब्राह्मण संघ-संस्थाक आयोजनमे पाग जुलुसक आयोजन कएल गेलैक। तात्पर्य उएह जे मिथिला-मैथिलीसँ सम्बन्धित चीज ब्राह्मणेसभक छियैक से देखएबाक। किछु अन्यान्यो संघसंस्थाद्वारा भेनिहार कार्यक्रमसभमे सम्मान नामधारी गोटीक बँटवारा एहन होइत छैक जाहिमे किछु इतर ब्राह्मण सुयोग्य लोककेँ सेहो देल तँ जाइत छैक, मुदा अलाय.बकच नामपर ततेक ब्राह्मणसभकेँ दऽ देल जाइत छैक जे बेचारा यथार्थ सम्मानक हकदारसभकेँ सम्मान पाबियोकऽ ई नहि बुझबामे अबैत छनि जे एहिसँ हमर सम्मान भेल वा अपमान! एहिसभसँ लोकमे भ्रम उत्पन्न करबामे विखण्डनकारी मातृहन्तासभ किछु ने किछु तँ सफल भइए रहल अछि। तेँ कतारमे रहैत श्रमजीवी कवि रामसोगारथ यादव लिखैत छथि- मैथिलकेँ मैथिल कहबाबऽ लेल सेहो पोलहाबऽ पड़ै छै।

मैथिलीक विरुद्ध सुनियोजित षड़यन्त्र देखबामे भलहि किछु नहि लागौक, मुदा मैथिलीक जड़ि बेसी गहिराइधरि गेलाक कारण एकरा सहजहिँ उखाड़ि फेकबाक सोच रखनिहारसभ पछिला समयमे योजनाबद्ध ढङ्गसँ अपन अभियानकेँ आगाँ बढ़ा रहल अछि। एहिसभ उपक्रममे एक्केठामसँ एक्के प्रवृत्तिक दू तरहक पात्र 'आका'सभद्वारा खटाओल जाइत छैक। एकटा ब्राह्मणवादक विरोधक नामपर मैथिलीक माथपर आगि बारैत अछि आ दोसर ब्राह्मणवादक नामपर ओही आगिमे घी ढारिकऽ मैथिलीकेँ सुड्डाह करऽ चाहैत अछि। भऽ सकैत अछि जे ओ दुनू पात्र साँझखन संगहि बैसिकऽ चियर्स कएल करैत हो। कारण नेपालक राजनीतिमे एहि तरहक उदाहरणसभ देखल जा चुकल अछि। मैथिली आन्दोलन एहन विकट जालमे ओझराइयोकऽ अपन आत्मबल आ सहज यात्राक कारणेँ ठमकल नहि अछि- स्रोत-साधनविहीन अवस्थामे चौतर्फी प्रहार झेलितो जाहि तरहेँ ई जीवन्त आ जगजियार अछि, तकरा मैथिलीक सबल अवस्था मानैत छी हम।

अखन नेपालमे प्रत्यक्षतः मैथिलीपर तीनटा शक्ति तीन तरहेँ आक्रमण कऽ रहल छैक। पहिल तँ हिन्दीक बजार विस्तार करबाक भारतीय षड़यन्त्र। मैथिलीपर हिन्दीक बोली कहिकऽ, प्रत्यक्ष विरोध कऽकऽ जखन ओकरासभकेँ पार नहि लगलैक तँ आब मैथिलीएकर्मक नामपर मैथिलीक दुर्दशा करबाक करबामे ओसभ कतोक कथित अभियानीसभक सेहो उपयोग करैतसन प्रतीत होइत अछि।

दोसर, नेपाल सरकारक मैथिलीकेँ छोट देखएबाक लेल सेहो अपनहि तरहक कसरतसभ कऽ रहल अछि। ओ मैथिलीक नाम तँ यदाकदा लऽ लैत अछि मुदा नेपालीक बाद सभसँ पैघ भाषाक रूपमे जनस्तरपर रहल एकरा खण्ड-खण्ड करबाक वा तुच्छ देखएबाक कोनो अवसरसँ चुकैत नहि अछि। तकरे प्रतिफल छैक जे अइठाम जनगणनामे देखाएल 123 भाषामे सभसँ निच्चाँ रहल कोनो भाषा आ द्वितीय स्थानपर रहल मैथिलीक स्टाटसमे कोनो भिन्नता नहि छैक। सरकार 100 गोटेद्वारा बाजल जाइत कोनो भाषा आ 30 लाख लोकक भाषा मैथिलीकेँ नामसँ समान आ काजसँ कोनो स्थान नहि देनै छैक। मैथिलीभाषी क्षेत्रमे विभिन्न कृत्रिम भाषासभ ठाढ़ कऽ तकरा सरकारी रेडियो, अखबार आदिमे स्थान देने छैक। ईसभ एहि लेल भऽ रहल छैक जे प्रदेश नं. 2, जाहिठाम मैथिली आ भोजपुरी अधिसंख्य लोक बजैत अछि, ताहिठाम ओ सत्ताधारी जातिक मातृभाषाकेँ स्थापित करऽ चाहैत अछि। ओ जनैत अछि जे मैथिली आ भोजपुरी भाषाकेँ तोड़ि देलापर 10.5 वर्षमे नेपाली सभसँ पैघ भाषा भऽ जएतैक। एहि तरहेँ बाँकी छओ प्रदेशजकाँ एहू प्रदेशमे नेपाली छोड़ि आन भाषाक लेल माथा दुखबैत रहबाक प्रयोजन नहि रहि जएतैक।

तेसर शक्ति अछि- क्रिश्चनिटी। ओकर प्रत्यक्ष संलग्नता तँ नहि देखल जाइत छैक मुदा ओकर सहयोगसँ किछु पक्ष मैथिलीपर जमिकऽ प्रहार कऽ रहल अछि। ओकरासभक यात्रा दूरगामी प्र.तिक छैक। ओसभ जनैत अछि जे धर्मक आधार संस्कृति होइत छैक आ संस्कृतिक आधार भाषा। जखने सभसँ पेनीमे रहल चीज भाषाकेँ अपना जगहसँ घुसका देल जएतैक तँ संस्कृति शिथिल भऽ जाएत आ धर्मक विस्थापन सहज भऽ जएतैक।

मुदा प्रहार कएनिहारसभ किरायापर वा मजूरीपर काज करैत अछि तेँ ओकरासभक प्रयास ओतेक प्रभावशाली नहि भऽ पबैत अछि जतेक प्रभावशाली अपन अन्तर्मनसँ एकर सम्बर्द्धनमे लागल लोकसभक स्वस्फूर्त कर्त्तव्यबोध छैक।

समग्रमे नेपालक मैथिली कतारक मरुभूमिमे रहैत मैथिलीक हरियरी लेल घाम सिँचनिहार समूहक एक गजलकार "मो. अशरफ राइन"क एहि गजलक भाव आ आस्थासभक बदौलति जगजियार अछि।

हर एक मैथिलकेर मूहपर मैथिलीकेर स्वाद रहे
अपन मायक बोल मैथिली सदति जिन्दाबाद रहे

मायक बोलसन अनमोल भाषा कोनो नइ जगमे
सम्मान पहिले मातृभाषाके, दोसर भाषा बाद रहे

हम भले पिछड़ल वर्ग रही ताहिसँ हमरा गम नइ
हम भले बर्बाद रही बस हमर मैथिली आबाद रहे

विनती एतबे अछि कतौ रहू बिसरू ने अपन भाषा
'अशरफ' हृदयमे सदति मिथिला-मैथिली याद रहे



नेपालक इन्द्रधनुषी संस्कृति

✍ विष्णु कुमार मण्डल

वर्षाकालमे कहियो काल आकाशमे सात रङ्गक धनुषाकार आकृति देखल जाइत अछि, जकरा इन्द्रधनुष कहल जाइत अछि। एहिमे लाल, सन्तोला रङ्ग, पियर, हरियर, आसमानी, नील आ बैगनी सहित सात रङ्ग होइत अछि। ई सातो रङ्ग एक- दोसरसँ अभिन्न रूपेँ सम्मिश्रित रहबाक कारणेँ सुन्दर आ आकर्षक होइत अछि। एही तरहेँ भौगोलिक विविधताक सङ्ग नेपालक संस्कृति सेहो विभिन्न तरहक अछि, जे इन्द्रधनुष सदृश एक-दोसरसँ सम्मिश्रित होएबाक कारणेँ देशकेँ सुन्दर बनबैत अछि।

कोनहु समुदायमे मूल रूपमे प्रचलित भाषा, कला, साहित्य, परम्परा, चालिचलन, रीतिरिवाज, खानपीन, पावनि-तिहार तथा विविध संस्कारसभक समष्टिगत स्वरूपकेँ संस्कृति कहल जाइत अछि। विश्वक कुल क्षेत्रफलक 0.3 प्रतिशत भूभागमे रहल छोट देश नेपाल सांस्कृतिक विविधतासँ परिपूर्ण अछि। एहिठामक भाषा, धर्म, कला, साहित्य, पहिरन-ओढ़न, पावनि-तिहार सहित अन्य सामाजिक संस्कारसभमे सेहो विविधता अछि।

नेपालक जनसंख्या लगभग पौने तीन करोड़ पहुँचि गेल अछि। एहिमे 80 प्रतिशतसँ बेसी हिन्दू, 9 प्रतिशत बौद्ध, 4.4 प्रतिशत इस्लाम, 1.4 प्रतिशत इसाइ सहित सिख आ जैन आदि धर्मावलम्बी बसोवास करैत अछि। एहि तरहेँ धार्मिक रूपेँ सेहो विविधता रहल देशमे आपसी समझदारी विद्यमान अछि, जे एतुक्का सौन्दर्य मानल जाइत अछि। नेपालकेँ भौगोलिक रूपेँ हिमाली, पहाड़ी, मध्य तराइ आ तराइ-मधेश सहित चारि क्षेत्रमे विभाजित कएल जा सकैत अछि। हिमाली क्षेत्रक अति ठण्ढ आवोहवा आ पहाड़ी क्षेत्रक जाड़ ओतुक्का खानपीन, कृषि-उपज, रहन-सहन आदिकेँ प्रभावित करैत अछि। तहिना मध्य तराइ क्षेत्रक समशीतोष्ण तथा तराइ-मधेशक उष्ण जलवायु अनुसार एहि क्षेत्रक हरेक क्रियाकलाप चलैत अछि। एहि विविध क्षेत्रमे आर्य मूलक जनसमुदायसँ लऽकऽ भोट-बर्मेली समुदायक लोकसभक बसोवास अछि। तहिना आदिम संस्कृति आ रहन-सहनकेँ अङ्गीकार कएनिहार राउटे समुदायक बसोवास सेहो कमोवेस अछि। नेपालमे विभिन्न क्षेत्रक जलवायु अलग-अलग होएबाक कारणेँ ऋतु अनुसार खानपीन, पावनि-तिहार मनाओल जाइत अछि। तेँ एतुक्का संस्कृतिकेँ ऋतुप्रधान सेहो कहल जाइत अछि।

नेपालक उत्तरमे चीन (तिब्बत) आ दक्षिणमे भारत अवस्थित रहलाक कारणेँ एहिठामक संस्कृति स्वाभाविक रूपेँ किछु तिब्बतसँ तँ किछु भारतसँ मिलैत छैक। विविधतामे एकता नेपाली संस्.तिक मूल विशेषता छियैक। नेपाली संस्.तिमे देखल जाइत ई विविधता देशक सम्पदा आ सौन्दर्यक आधार अछि। नेपाली संस्.तिक एहि इन्द्रधनुषीपनक विविध पक्षक सम्बन्धमे एहिठाम संक्षिप्त चर्चा कएल जा रहल अछि।

भाषाः विक्रम संवत 2068 सालक जनगणना अनुसार नेपालमे 123 टा भाषा बाजल जाइत छैक। कुसुण्डा, द्रविड़, आग्नेय, भोट, बर्मेली आ भारोपेली सहित 5 महापरिवारक भाषा होइतो नेपालक अधिकांश जनसमुदाय भारोपेली तथा तिब्बती (भोट-बर्मेली) भाषा-परिवारक भाषा बजैत अछि। मातृभाषाक रूपमे नेपाली भाषा बजनिहारक संख्या नेपालक कुल जनसंख्याक 44.64 प्रतिशत अछि तँ मैथिली भाषा-भाषीक संख्या 11.67 प्रतिशत रहल अछि। तहिना भोजपुरी 5.98, थारू 5.77, तामाङ 5.10, नेवारी 3. 19 आ उर्दू भाषीक संख्या 2.61 प्रतिशत रहल छैक। एतेक छोट भौगोलिक आकार रहल देशमे विविध भाषा-भाषी होइतो एतऽ भाषिक सहअस्तित्वक भावना अछि। एहिठामक लोक एक-दोसरक भाषाक आदर आ सम्मान करैत अछि। नेपालक संविधानमे सभटा भाषाकेँ राष्ट्रभाषाक स्थानपर राखल गेल अछि।

साहित्यः कोनहु भाषाक वाचित वा लिखित (शास्त्रसमूह) केँ साहित्य कहल जाइत छैक। नेपालक विभिन्न कालखण्डमे साहित्य-सृजन कएल गेल अछि, जाहिमे संस्कृत, नेपाली, मैथिली, नेपाल भाषा (नेवारी), भोजपुरी, अवधी, हिन्दी, राइभाषा, तिब्बती भाषा आदि अछि। एहिठाम एकटा साहित्यक सम्मान दोसर साहित्यकार करैत छथि। मैथिली भाषाक साहित्यकारलोकनि नेपाली, हिन्दीमे सेहो साहित्य-रचना करैत छथि आ एहिना आनो.आन भाषाक साहित्यकारलोकनि सृजनधर्ममे लागल रहैत छथि। परस्पर साहित्यिक आदरभावक उदाहरण एहि तरहेँ देखल जा सकैछ जे नेपालक मैथिली, नेपाली, हिन्दी आदि भाषाक अनेक विधाक साहित्यिक कृतिसभक अनुवाद सेहो एक-दोसर भाषामे कएल जाइत अछि।

कलाः लोकक विभिन्न तरहक व्यवहार, कल्पना आ व्यावसायिक कौशलद्वारा सृजित सन्दर्भ वा वस्तुकेँ कला कहल जाइत अछि। शुक्रनीति आदि ग्रन्थमे कलाक संख्या 64 कहल गेल अछि। मनुष्य अपन भावक अभिव्यक्तिकेँ कलाद्वारा प्रदर्शित करैत रहैत अछि। कलाकार अपन भावकेँ क्रिया, रेखा, रङ्ग, ध्वनि आ शब्दद्वारा अभिव्यक्त करैत अछि। प्राचीन ग्रन्थसभमे

कलाकेँ सात भागमे विभक्त कएल गेल अछि : स्थापत्यकला, चित्रकला, मूर्त्तिकला, सङ्गीतकला, काव्य, नृत्य आ नाट्यकला।

नेपाल प्राचीन लोककलामे समृद्ध रहल अछि। हिमाली आ पहाड़ी क्षेत्रमे ञ्चयाउरे, स्याब्रू, मारुनी, बालन, गौरा, टप्पा, घाँटु आदि नृत्य तथा सङ्गिनी, ख्याली, रोइला, देउडा, चुड्का आदि गीत जतबए लोकप्रिय अछि, मिथिला-मधेश क्षेत्रमे झिझिया, जट.जटिन, डोमकछ, झर्री आदि नृत्य आ सोहर, बटगवनी, समदाओन, लगनी आदि गीतसभ सेहो जन-जनमे भीजल अछि। नेपालक एक स्थानक गीत-सङ्गीत आ आनो.आन कला दोसर स्थानमे अति प्रचलित आ लोकप्रिय अछि। काठमाण्डूक नेवार समुदायमे गाएल जाइत विद्यापति रचित मैथिली गीतक भास मिथिलाक भाससँ फराक अछि, मुदा भाव ओहने गहींर होइत अछि। भक्तपुरक चित्रकला आ मूर्त्तिकला तथा तराइक मिथिला चित्रकलाक अपन अलगे विशिष्टता अछि।

रहन-सहन, पहिरन-ओढ़नः नेपालक विभिन्न स्थानक जलवायु अनुसार खानपीन, पहिरन.ओढ़न आ रहन.सहन अलग. अलग अछि। पहाड़ी आ हिमाली क्षेत्रमे सालोभरि ठण्ढ रहैत छैक, तेँ ओतुक्का लोकसभ सालोभरि गर्म वस्त्र पहिरैत अछि। दौरा.सुरुवाल, गुन्यू.चोलो, बक्खू आदि पहिरनाइ ओतुक्का लोकक बाध्यता अछि। मुदा तराइ-मधेशक गर्म जलवायुमे धोती.कुर्ता, सूती साड़ी, गोलगला, पएजामा आदि शरीरकेँ बेसी आराम दैत छैक। उत्तरी क्षेत्रक लोक सालोभरि मोट सिरक ओढ़ैत अछि, मुदा दक्षिणी क्षेत्रमे किछुए मास सिरक-कम्बलक प्रयोग कएल जाइत अछि। बिजलीक पङ्खा हिमाली क्षेत्रक लोक नइ किनैत अछि आ रूम.हीटरक आवश्यकता तराइमे कमे पड़ैत छैक। पहाड़मे बस्ती बेसी सघन नहि रहैत छैक आ घरसभ दूर-दूर रहैत छैक। तेँ एक.दोसरकेँ शोर पाड़बाक लेल जोरसँ हल्ला करबाक लोकक आदते पडिघ गेल रहैत छैक। एहि तरहेँ नेपालक भौगोलिक आ जानसांख्यिक विविधताक कारणेँ एतुक्का खानपीन, पहिरन. ओढ़न आदिमे इन्द्रधनुषीपन अछि।

संस्कारसभः संस्कार शब्दक मूल अर्थ होइत छैकः तरासल गेल, परिष्.त बोली.चाली, पहिरन, धर्म, श्रम, आर्थिक क्रियाकलाप, शिष्टाचार आदि मानवीय सभ्यताक परिचायक व्यवहार आ अभ्यास। मनुष्य एहि सभक ज्ञान अपन माए-बाप, परिवार, गुरु, सङ्गी-साथी, समाजसँ प्राप्त करैत अछि। एकर अतिरिक्त धर्मग्रन्थमे बताओल गेल संस्कारसभक संख्या 16 अछि। ई सोलहोटा संस्कार जन्म, शिक्षा, विवाह आ मृत्युसँ सम्बन्धित होइत छैक। मान्यता ई अछि जे जहिना सोनाकेँ तबेलाक बाद चमक अबैत अछि, तहिना संस्कारसँ युक्त मानवक मानसिकतामे परिवर्तन होइत अछि। नेपालक अलग-अलग समुदायमे एहि संस्कारसभक प्रक्रियामे विभिन्नता पाओल जाइत छैक। पहाड़ी भूभागक विवाहक पद्धति, श्राद्ध विधि तराइ मूलक लोकक पद्धतिसँ किछु फराक होइत अछि।

पावनि-तिहारः नेपालक हरेक समुदायमे पावनि-तिहार केँ संस्कृतिक मेरुदण्ड मानल जाइत अछि। मुख्यतः प्रकृतिपरक आ ऋतुपरक पावनि.तिहार रहल नेपालमे भौगोलिकता आ सामाजिकताक आधारपर किछु-किछु भिन्नता होइतो अधिकांश पावनि-तिहारक मूल मर्म एक्के देखल जाइछ। दशमी, सुकराती सदृश पावनिसभ सामान्यतया देशेभरि मनाएल जाइछ। मुदा खास जाति, समुदायद्वारा मनाएल जाएवला किछु पावनिसभ सेहो छैक। नेपालक मिथिला-मधेश क्षेत्रमे जुड़शीतल, विवाह पं्चमी, रामनवमी, जानकी नवमी, कोजगरा, छठि, चौरचन, लबान, नागपं्चमी आदि पर्वसभ विशेष रूपसँ मनाएल जाइछ। तहिना नेवारी समुदायमे गाइजात्रा, धान्यपूर्णिमा, म्ह पूजा आदि पर्वसभ आयोजित होइछ। किरात समुदायक चासोबुआ यक्वा, गुरुङ समुदायक तमु ल्होसार, तामाङ समुदायक सोनाम ल्होसार आ शेर्पा सभक ग्याल्वो पर्व प्रसिद्ध अछि। बौद्धमार्गीलोकनि पञ्चदान पर्व आ इस्लाम धर्मावलम्बीलोकनि इद, बकरीद, मुहर्रम आदि प्रमुखतासँ मनबैत छथि। जैन धर्मावलम्बीलोकनिक महावीर जयन्ती, सिखलोकनिक गुरु गोविन्द सिंह जयन्तीकेँ प्रमुख पर्वक रूप दैत छथि।

एहि तरहेँ नेपालमे विभिन्न समुदायद्वारा अलग-अलग पावनिसभ मनाएल जाइतो सभ समुदायक बीच धार्मिक सहिष्णुता अछि। मिथिलाक पर्व छठि, जितिया, चौरचन आब सौंसे तराई. मधेशक होइत पहाड़ी मूलक लोकसभक बीच सेहो पसरि रहल अछि। इस्लाम धर्मावलम्बीलोकनिक इद आ दाहामे समाजक सभ समुदायक सहभागिता देखल जाइत अछि। हिन्दूसभक दिआबाती, होलीमे मुसलमान बन्धुक संलग्नता देखल जा सकैछ।

निष्कर्षः नेपाल भौगोलिक हिसाबसँ छोट देश होइतो एतऽ धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषिक विविधता प्रचुर मात्रामे पाओल जाइत अछि। इएह विविधता नेपालक सांस्कृतिक शौष्ठवक परिचायक सेहो छियैक, जेना इन्द्रधनुषमे सम्मिश्रित सातटा रङ्गे एकर सौन्दर्य होइत अछि। जँ इन्द्रधनुषमे एके-दूटा रङ्ग रहितैक तँ ई एतेक सुन्दर नहि होइतैक, तहिना नेपालक सभ समुदायक संस्कृति एक्के रङ्गक रहितैक तँ ई चारि वर्ण छत्तीस जातिक फुलवारी नहि कहबितए। नेपालक विविधतापूर्ण इन्द्रधनुषी संस्कृति देशक आभूषण अछि। जँ एहि विविध सांस्कृतिक पक्षमे सह- अस्तित्व आ सहकार्यक भावना हुअए तँ देशक उत्तरोत्तर समृद्धि आ विकास अवश्यम्भावी अछि। नेपाल धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र भऽ गेलाक बाद प्रत्येक जाति आ समुदाय अपन मौलिक संस्कृति अवलम्बन करबाक लेल स्वतन्त्र अछि। नेपालसनक धार्मिक आ जातीय सद्भाव आ सहिष्णुता आन बहुतो देशमे भेटब मुश्किल अछि। ❑❑❑

मिथिलाक वैदुष्यक आदर्श उदयनाचार्य

✍ पं. श्री शशिनाथ झा

वेदसिद्धन्तक संरक्षक ओ सम्पोषणमे उदयनाचार्यक स्थान बड़ महत्त्वपूर्ण अछि। ई न्यायदर्शन ओ वैशेषिक दर्शनमे अनेको गौरवशाली ग्रन्थक रचना कएने छथि। चिरकाल सँ पसरैत नास्तिकमतक ई तेना कए खण्डन कएलनि जे ओ सब किछु तव पड़ाए भेल आ शेष वैदिक धारामे मिलि गेल। एकर बाद एको टा नास्तिक मूड़ी उठाए नही तकलक आ ई सगुन-मण्डनक परम्परे दबि गेल आ वैदिके दर्शन सभमे परस्पर शास्त्रार्थक परम्परा आगू बढ़ल। ई उदयनाचाय्रक असाधारण अवदान थिक।

स्थान- उदयनाचार्य समस्तीपुर जिलाक रोसड़क समीप करियन गाममे बसैत छलाह। एहि ठाम प्राचीने कालसँ उच्च विशाल परिसर उदयनाचार्यक डीह नामे अवस्थित अछि जतए स्मारक स्थल पर भव्य मन्दिरमे हिनक भव्य मूर्ति स्थापित अछि। एक संस्कृत पाठशाला 1937ई0 सँ चलि रहल अछि। प्रतिवर्ष वृहत् समारोह होइत अछि, स्मारिका छपैत अछि।



ग्रन्थ- न्याय ओ वैशेषिक दर्शनमे हिनक ग्रन्थ सभक आदर विश्वस्तर पर अछि-

(1) लक्षणावली- वैशेषिक दर्शनक पदार्थलक्षणात्मक लघु पुस्तिका, जाहि पर ठाढ़ी गामक नैयायिक विश्वनाथ झा (1890 ई.) व्याख्या कए प्रकाशित करओने छलाह। (2) लक्षणमाला- न्यायदर्शक पदार्थलक्षणात्मक लघु पुस्तिका जकर व्याख्या नैयायिक शशिनाथ झा (रॉटी निवासी) कएलनि जे मिथिला संस्कृत शोध संस्थान, दरभंगा सँ छपल। (3) आत्मतत्त्व विवेक- आत्माक स्थिति साधन करैत बौद्धक नैरात्म्यवादक प्रबल खण्डन एहिमे भेल अछि। ई काशीसँ प्रकाशित अछि। एहि पर शंकर मिथक व्याख्या अछि। (4) न्यायकुसुमाङलि-ईश्वरसिद्धिक प्रतिपादन कए एहिमे बौद्धक अनीश्वरवादक खण्डन कएल गेल अछि। वर्धमान उपाध्याय, वरदराज मिश्र आ शंकर मिश्र एकर व्याख्या कएने छथि। (5) किरणावली- ई वैशेषिक सूत्र ओ भाष्य पर आधारित विस्तृत विवेचनात्मक ग्रन्थ थिक। एहि पर अनेक मान्य विद्वानक टीका अछि। (6) न्यायवातिकतात्पर्यपरिशुद्धि- गौतमक न्यायसूत्र पर वात्स्यायन भाष्य, ताहि पर उद्योतकराचार्यक वार्तिक, ताहि पर परिशुद्धिटीका अछि आ ताइ पर अनेक व्याख्या प्राप्त अछि। एहिमे मुख्यतः बौद्धाचार्यक मतकेँ खण्डित कए न्यायमतक समर्थन तेना कएल गेल जे पुनः तकर खण्डन नहि भए सकल। (7) न्यायपरिशिष्ट- एकर दोसर नाम प्रबोधसिद्धि वा न्याय-निबन्ध थिक जे न्यायसूत्रक पाँचम अध्यायक व्याख्यान थिक।

वंश- परम्परानुसार ई करियनए मूलक शाण्डिल्य गोत्रीय1 ब्राह्मण छलाह।

समय- ई एगारहम ईस्वी शताब्दीमे भेल छलाह। यद्यपि हिनक लक्षणावली ग्रन्थमे रचनाकाव्यक उल्लेख भेल अछि। मुद्रित पुस्तकमे श्लोक अछि-

तर्काम्बरांकप्रमितेष्वतीतेषु शकाब्दतः।
वर्षेषूदयनश्चक्रे सुबोधां लक्षणावलीम्।।2

तर्काम्बरांक शाके भेल 906, तदनुसार 984 ईस्वी। परन्तु ई अंक समुचित नहि लगैत अछि। कारण 1038ई. मे प्रोढ़ावस्थाक बौद्ध ज्ञानश्रीमित्रक अनेक ठाम खण्डन उदयनाचार्य कएने छथि आ पुनः ज्ञानश्री तकर उत्तर नहि देने छथि। तेँ स्पष्ट अछि जे ज्ञानश्रीक बादे उदयनाचार्य भेल छलाह।

अतः स्वतः सिद्ध अछि जे उपर्युक्त श्लोकक पाठ लिपिकारक प्रमादसँ भ्रष्ट भए गेल अछि जकर संशोधन अपेक्षित अछि। एहिमे शुद्ध पाठ की रहल होएतैक? तकर ऊहि कए प्रो0 अनन्त लाल ठाकुर एवं विद्यावाचस्पति नैयायिक पं0 शशिनाथ झा कहने छथि जे मिथिलाक्षरमे म्ब आ स्व मे अल्प भेद अछि, तेँ 'स्व'क स्थानमे 'म्ब' भए गेल होएतैक।4 तदनुसार उचित पाठ 'तर्कस्वरांक' 976 शाके = 1054ई. मानल गेल आ तखन रत्नश्रीक बाद हिनक समय समुचित भेल। दोसर बात जे संस्कृतमे 'चक्रे' ई लिट्लकारक प्रयोग अपना लेल नहि होइत छैक, किएक तव सूत्र छै- 'परोक्षे लिट्'5 अर्थात् परोक्षेमे एकर प्रयोग हो। तेँ मानल जाए सकैछ जे जतए लिट्लकारक प्रयोग अछि ततए ओ शिक्षक कृत थिक। तेँ प्रमाद होएब स्वाभाविक।

लक्षणावली उदयनाचार्यक प्रथम ग्रन्थ थिक, तेँ ताहि समय हुनक आयु 24 वर्षक जँ मानी तँ हुनक काल 1030 सँ 1110 ई. मानल जाएब उचित थिक।

उदयनाचार्यक ग्रन्थक आदर- हिनक ग्रन्थ पर अनेक महान् विद्वान् व्याख्या कएलनि बुधवालवंशीय प्रभाकर उपाध्याय (1175ई.), घुसौतवंशीय दिवाकर उपाध्याय (1175ई.), केशवमिश्र तर्कभाषाकार, गेष्श उपाध्याय (1250ई.), वर्धमान उपाध्याय (1275ई.) शंकर मिश्र (1475ई.), भगीरथ ठाकुर (1500ई.) इत्यादि। किछु विद्वान हिनक खण्डनो कएल- नैषधीयचरितकार श्रीहर्ष (1150ई.), मुक्तावलीकार विश्वनाथ पंचानन (1500ई.) इत्यादि। उदयनाचार्य वैदिक शर्म ओ दर्शनक समर्थन कए नास्तिक सभकेँ परास्त कएलनि जाहिसँ वैदिक संस्कृति पुष्पित-पल्लवित भेल। तेँ हिनका भारवर्षक सभ प्रान्तक विद्वान ओ राजा सहित प्रजावर्ग देवतुल्य मानए लगलाह।

शास्त्रार्थ- मिथिलाक राजाक दरबारमे गर्व कएनिहार हीर पण्डित (गौड़देशीय)केँ ई परास्त कएलनि। हुनक मत छल अद्वैतवाद, जखन कि उदयनाचार्य न्यायसम्मत द्वैतवादक विजयपताका फहराए देल। हीर पण्डित पराजयक व्यथा सँ मरबा काल पुत्र श्रीहर्ष केँ कहल जे तोँ हमर विजेता केँ परास्त करिहह। श्रीहर्ष खूब अध्ययन कएलनि, किन्तु यावत् ओ समर्थ भेलाह तावत् उदयनाचार्यक निधन भए गेल छल। तेँ ओ अपन ग्रन्थ खण्डन- खण्डखाद्यमे उदयनक खण्डन कएलनि, जखक प्रत्युत्तर शंकर मिश्र आदि देने छथिन।

उदयनाचार्य केँ बौद्ध विद्वान सँ अनेक शास्त्रार्थ भेल। राजाक समक्ष परास्तो भेला पर ओ सब दिव्य परीक्षाक प्रस्ताव देलकनि। ओ मायाजाल सँ किछु कए सकैत छल, तेँ कहलकनि जे हम अहाँक शालग्राम शिलाकेँ नास्तिक मत सँ पानि बनाए देव। जँ अहाँ तकरा पुनः शिला बनाए दी तँ अहाँक विजय मानव⁄ तहिना भेल ओ पानि बनल शिलाकेँ उदयनाचाय्र आस्तिकमत सुनाए पूर्ववत् शिला बनाए देल।6

पुनः आन बौद्धाचार्य तकरा नहि मानि वाग्युद्धे करए लागल। ताहि पर एक वैदिक विद्वान् ताड़क गाछ चढ़ि कुदबाक प्रस्ताव दुनूवादी केँ देल। उदयनाचार्य ताड़क गाछ पर चढ़ि प्रतिज्ञावाक्य पढ़ल-'वेदाः प्रमाणम्'। ई कहि कुदि गेलाह। नीचामे बुझि पड़लनि जे क्यो लोकि लेलक। हुनका किछु नहि भेलनि।7

बौद्धाचार्य ताड़क गाछ पर चढ़ि बजलाह- 'वेदाः अप्रमाणम्'। ई कहि कुदलाह आ चकनाचूर भए भरि गेलाह। सब नास्तिक पड़ाए गेल। उदयनाचार्य विजयी भेलाह। एक बेर आचार्य जगन्नाथपुरी गेलाह। ओतए दर्शन लेल जहाँ द्वारि पर गेलाह कि द्वारि बन्द भए गेल। पण्डा कहलथिन अहाँ ब्रह्मवध कएने छी, तेँ प्रायश्चित कए आउ। हमरा रातिमे भगवान् स्वप्न देने छलाह।

उदयनाचार्य बिगड़ि भगवान् के कहलथिन-

ऐश्वर्यमदमत्तोवसि, मावज्ञाय वर्तसे।
पुनबौद्धे समायाते, मदधीना तव स्थितिः।8

अर्थात् अहाँ ऐश्वर्य सँ मदमत्त छी आ हमर अपमान करैत छी, किन्तु फेरो जखन बौद्ध आओत तखन अपनेक स्थिति (अस्तित्व) हमरे अधीन रहत। तुरत द्वारि खुजि गेलैक आ आचार्य दर्शन कएलनि। उपर्युक्त बात सब 'उदयनचरितम्'मे छैक जकरा विद्वानलोकनि भ्रमवश भविष्यपुराणक कहि देने छथि, मुदा ई थिक मैथिल म0म0 चन्द्रदत्त झाक (हरिनगरवासी 1800ई.) भक्तमालाक एकतीसम अध्याय जे 1905ई.मे बम्बई सँ छपल छल आ भगवद् भक्तिमाहात्म्य नामसँ हालहिमे दिल्लीक राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान सँ मुद्रित भेल अछि। उदयनाचार्यग्रन्थावली- उदयनाचार्यक सकलग्रन्थ मुख्य प्रसिद्ध टीकाक संग 'उदयनाग्रन्थावली' नाम सँ पाँच खण्डमे आचार्य प्रखर श्री किशोरनाथ झाक सम्पादनमे 1911ई.मे प्रकाशित भेल अछि। एकर व्ययभार स्वीकृत कएल- श्रीवल्लभविद्यापीठ, श्री विठ्ठलेश प्रभुचरण आ0हो0 कोआपरेटिभ सोसाइटी, पूना-बंगलोर रोड, कोल्हापुर-416008 ग्रन्थक सारांकन- उदयनाचार्यक सभ पोथीक विषय संक्षेपमे परिचय सहित हिन्दी भाषामे डॉ किशोरनाथ झा स्वरचित ग्रन्थ-'' न्यायशास्त्रमे आचार्य उदयन का अवदान''मे प्रस्तुत कए देने छथि। प्रस्तरमूर्ति-उदयनाचार्यक मन्दिर बहुत भव्य करियन गाममे अछि जाहिमे हुनक पाथरक सुन्दर मूर्ति स्थापित छनि जे नीचाँ प्रस्तुत अछि।

संदर्भ-

1. यद्यपि पंजीमे एखन धरि उदयन नहि भेटलाह अछि। म0म0 परमेश्वर झा हिनका नोनौतिकारमूलक काश्यप गोत्र कहने छथि आ हुनक वंशज केँ आचार्य उपाधिधारी कहैत छथि तथापि आचार्य उपाधि बादमे देखैत छी, पूर्व सँ नहि। तेँ प्रसिद्धि मूलके बात लिखल।
2. लक्षणावलीक अन्तमे। ई श्लोक केवल एक हस्तलेखमे अछि, आनमे कतहु नहि। कोनो टीकामे नहि अछि।
3. हिस्ट्री ऑफ नव्यन्याय इन मिथिला, पृ0-15
4. न्यायशास्त्रमे उदयन का अवदान-डॉ किशोरनाथ झा, पृ0-17
5. अष्टाध्यायी, सूत्र-3.2.115
6. भक्तमाला-म0म0चन्द्रदत्त झा, अध्याय-31
7. भक्तमाला-म0म0चन्द्रदत्त झा, अध्याय-31
8. भक्तमाला-म0म0चन्द्रदत्त झा, अध्याय-31, श्लोक-68



मिथिला-मैथिलीक उन्नायक : पं. विनोदानन्द झा

✍ डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी

महान समाजसेवी, कुशल राजनेता, प्रखर स्वतंत्रता सेनानी, अमर विभूति, बिहारक पूर्व मुख्यमंत्री, मिथिला-मैथिलीक उन्नायक पंडित विनोदानन्द झाक जन्म 17 अप्रैल 1900ई0मे झारखण्डक देवघर जिलान्तर्गत बाबा बैद्यनाथधामक एक सुप्रतिष्ठित तीर्थ पुरोहित (पंडा) परिवारमे भेल छलनि। पितामह गिरिजानन्द झाक पावन सानिध्यमे ई संस्कृत आ सनातन सांस्कृतिक अध्ययन करैत प्राथमिक शिक्षा देवघरक मिश्रा उच्च विद्यालयसँ केलाह। ततूपश्चात आगाँक पढ़ाईक लेल कोलकाता गेलाह, जतऽ हुनक नामाकंन विक्टोरिया हाई स्कूलमे कराओल गेलनि। ओहिठाम सामान्य शिक्षाक संग-संग शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षण सेहो प्राप्त केलाह। शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षणमे प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण कऽ ई प्रेसिडेंसियल कॉलेज, कोलकातामे बी0ए0 कक्षामे अपन नामांकन करवौलाह, मुदा हुनक मन ब्रिटिश कालक क्रूरतासँ क्षुब्ध भऽ उठलनि आ कॉलेजक पढ़ाई छोड़ि देश सेवामे लागि गेलाह। 'कुर्त्ता, हल्लुक रंग बंडी, पैरमे साधारण चप्पल, ललाट पर लाल ठोप, माथ पर गाँधी टोपी'' इएह छल सादगीसँ भरल पण्डित विनोदानन्द झाक वेश-भूषा-

पं. विनोदानन्द झाक वंशवृक्षः सदुपाध्याय रामदत्त ओझा/ सदुपाध्याय आनन्द दत्त ओझा/सदुपाध्याय परमानन्द ओझा/सदुपाध्याय सर्वानन्द ओझा/सदुपाध्याय ईश्वरीनन्द ओझा/पूर्णानन्द ओझा गिरिजानन्द ओझा/उमेशानन्द ओझा/सच्चिदानन्द ओझा/विनोदानन्द झा/तारानन्द झा

देवघर आगमनक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः पं. विनोदानन्द झाक पूर्वज सदुपाध्याय रामदत्त ओझा देवघरक बैद्यनाथधाम मन्दिरक सरदार पण्डा वा मठाधीश छलाह। हुनक समय 1791ई0 मानल जाइत अछि। एहिसँ पूर्वहि सँ हिनक वंशज मिथिलासँ आबि देवघरमे रहैत छलाह। देवघर आ संताल परगनामे आगमनक समय 1790ई0 मानल जाइत अछि। एहिसँ सैकड़ो वर्ष पूर्वहि सँ एहि क्षेत्रमे मैथिल सांस्कृतिक उपस्थितिक इतिहास अछि। मिथिला सँ ब्राह्मण आ हुनका संग आनो समुदायक लोकक आगमन एहि क्षेत्रमे शिवोपासनाक उद्देश्यसँ दशम शताब्दी मानल जाइत अछि। इतिहासकारक इहो मत छन्हि जे मुस्लिम आक्रमणक समय अपन धर्मक रक्षार्थ लेल मिथिलाक कुलीन ब्राह्मणक पलायन कयलनि। मुस्लिम स्रोतसँ इहो ज्ञात होइत अछि जे राजनीतिक उथल-पुथलक कारणेँ मिथिलाक ब्राह्मण लोकनि आन ठाम जयबाक लेल विवश भऽ गेल छलाह। 1312 सँ 1324ई0क मध्य एहि तरहक पलायन विशेष रूपेँ भेल। ई लोकनि बैद्यनाथ ज्योर्तिलिंगक ख्याति आ धाम्रिक भावनासँ प्रेरित भऽ कऽ देवघरमे रहि-बहिस गेलाह आ तीर्थ पुरोहितक वृत्ति करए लगलाह। एहि क्षेत्रमे मैथिल लोकनिक आगमनक एक कारण मिथिला एवं बंगालक सांस्कृतिक संबंध सेहो छला। बंगालक नदियामे तर्कशास्त्रक केन्द्र स्थापित भऽ गेला पर मिथिलावासी नदिया जाऽ कऽ अध्ययन-अध्यापन करैत छलाह। ई लोकनि दरभंगा, मधुबनी, सहरसा, पूर्णियाँ, भागलपुर, हवेली खड़गपुर, देवघर-संताल परगना होइत नदिया जाइत छलाह। एहि मार्गमे संताल परगना वन्य क्षेत्रमे बाबा बैद्यनाथ, बासुकीनाथ, मन्दार आ तारापीठ आदि सिद्ध स्थान पड़ैत छल, जे मैथिल लोकनिकेँ अपन अनुकूल बुझि पड़लनि आ ओ लोकनिक एतऽ रहि बसैत गेलाह।

पं. विनोदानन्द झाक राजनीतिमे प्रवेश कोलकातामे जखन विनोदानन्द झा इन्ट्रेंस परीक्षा पस कऽ कोलकाता (कलकत्ता) विश्वविद्यालयमे बी0ए0 कक्षामे नामांकन करबौलनि तखन हुनक ध्यान क्रान्तिकारी गतिविधि दिश गेलनि आ 1920क महात्मा गाँधीक असहयोग आन्दोलनक क्रममे ई पढ़ाई छोड़ि कठोर संकल्पक संग काँग्रेसक सदस्यता लऽ लेलाह। 1920 सँ लऽ कऽ 1971 धरि हुनक राजनीतिक यात्रा आजादीक एक निष्ठावान सिपाही जकाँ रहलनि। विनोदानन्द बाबू सर्वप्रथम 10 सँ 15 फरवरी 1927 धरि ब्रसेल्स (यूरोप)मे आयोजित साम्राज्य विरोधी अन्तर्राष्ट्रीय काँग्रेसक अधिवेशनमे शामिल भेलाह आ ओहिमे भारतक पूर्ण आजादीक माँग कऽ अपन कार्यक्षमताक परचम फहरौलाह। 1923ई0मे बिहार प्रान्तीय स्वराज पार्टीक संताल परगना क्षेत्रक हिनका कार्यभार देल गेलनि तँ अवज्ञा आन्दोलनक नेतृत्व केलाह। भारत छोड़ो आन्दोलनक क्रममे हिनकहि नेतृत्वमे पहिल बेर देवघरमे 11 अगस्त 1942ई0मे ऐतिहासिक जुलुस निकालल गेल छल।

विनोदानन्द बाबू लगभग चारि दशक धरि बिहार प्रदेश काँग्रेस कमिटि आ अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटिक सम्मानित सदस्य रहलाह। राजनीतिक क्षेत्रमे ई सर्वप्रथम 1937मे देवघर-जामताड़ा विधानसभा क्षेत्रसँ निर्वाचित भऽ विधानसभामे संसदीय सचिवक रूपमे अपन पहुँच सत्तामे बनौलाह। 1937क बाद 1946ई0मे पुनः देवघर-जामताड़ा क्षेत्रसँ विधायक बनलाह। 1952ई0मे महगामा विधानसभा क्षेत्रसँ उपचुनावमे बिहार विधानसभाक सदस्य बनलाह। पुनः 1957 एवं 1962ई0मे राजमहल विधानसभा क्षेत्रसँ निर्वाचित भेलाह। 1967ई0मे विनोदानन्द बाबू दरभगा जिलाक बेनीपुर विधानसभा क्षेत्र सँ निर्वाचित भेलाह। एहि क्रममे 1946ई0मे डॉ0 श्रीकृष्ण सिंहक मंत्रीमण्डलमे चिकित्सा एवं स्वायत्त शासन मंत्री बनलाह। एहि पद पर रहि पहिल बेर पंचायत राज कानून 1947मे बनौलाह। 1959मे जखन विनोदानन्द बाबु पुनः 'स्वायत्त शासन' विभागक मंत्री बनलाह तऽ कए वर्ष संघटित बलवन्त राय मेहता समितिक अनुशंसाक आधार पर सत्ताक विकेन्द्रीकरण आ ग्राम, प्रखण्ड एवं जिला स्तर पर त्रिस्तरीय प्रशासन व्यवस्था क्रियान्वित करबाक अथक प्रयास कयलाह। परिणामस्वरूप बिहार पंचायत

समिति आ जिला परिषद अधिनियम-1961क विधिवत लागू कएल जाऽ सकल। प्रारंभमे ई नव कानून भागलपुर, राँची आ धनवाद जिलामे प्रयोगात्मक रूपमे क्रियान्वित कयल गेल छल, पाँछा एकर सफलता देखि, क्रमशः राज्यक अन्य जिलामे एहि योजनाकेँ विस्तारित कएल गेल। विनोदानन्द बाबू बिहार राज्य पंचायत परिषदक आदि पर्वतक नेता छलाह आ मृत्युपर्यन्त एहि परिषदक अध्यक्ष रहलाह। इएह कारणें हुनक पुनीत स्मृतिमे राज्य सरकारक उदार सहयोगसँ पं0 विनोदानन्द झा पंचायत सभा भवन'क निर्माण, पटनाक बैंक म्युजियम रोडमे कएल गेल, जाहिमे हुनक प्रतिभा स्थापित अछि। देवघरक हिन्दी विद्यापीठक पथ हिनकहि नाम पर 'बी0ए0 झा मार्ग' अछि। 18 फरवरी 1961ई0 के श्रीकृष्ण सिंहक निधनक पश्चात् पं0 विनोदानन्द झा बिहारक मुख्यमंत्री बनलाह। 1962क प्रारंभमे राज्य विधानसभाक आम चुनावमे पं0 जवाहरलाल नेहरूक नेतृत्वमे काँग्रेस दलकेँ पुनः विजयश्री भेटल तँ हिनका पुनः बिहारक मुख्यमंत्री पदकेँ 1963 धरि सुशोभित करबाक गौरव प्राप्त भेलनि।

1961 सँ 1963 धरि बिहारक मुख्यमंत्रीक अपन कार्यकालमे पं0 विनोदानन्द झा भारतीय संविधानक पैतालिसम अनुच्छेदमे व्यक्त संकल्पक अनुसार 6 वर्ष सँ 14 वर्ष धरिक बच्चाक लेल अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा व्यवस्थाकेँ लागू करवौलनि। बोधगयामे मगध विश्वविद्यालयक स्थापना करबौलनि, बिहार विश्वविद्यालय सेवा आयोगक गठन करबौलनि, पटना विश्वविद्यालयमे आवासीय शिक्षण महाविद्यालयक स्थापना करबौलनि। छात्रमे राष्ट्रप्रेम जागृत करबाक उद्देश्यसँ हजारीबागमे जिलान्तर्गत तिलैयामे 2 जुलाई 1963 ई0मे सैनिक स्कूल स्थापना करबौलनि। औद्योगिक विकास हेतु बोकारो इस्पात उद्योगक स्थापना करबौलनि आदि।

सितम्बर 1963ई0मे जवाहर लाल नेहरूक नेतृत्वमे जखन अखिल भारतीय स्तर पर काँग्रेसकेँ सुदृढ़ करबाक उद्देश्यसँ कामकाज योजनाक गठन कयल गेल तँ मोरारजी देसाई, जगजीवन राम, लाल बहादुर शास्त्री सन दिग्गज नेताक संग विनोदानन्द बाबू मुख्यमंत्रीक प्रशासकीय पदकेँ सहर्ष परित्याग कऽ अपन सम्पूर्ण समय काँग्रेस संगठनकेँ सुदृढ़ करबामे लगा देलनि। एहि क्रममे जयपाल सिंहक नेतृत्व वाला झारखण्ड पार्टीक काँग्रेसमे विलय करबाएबामे हिनक अहम् भूमिका रहलनि। परिणामस्वरूप 1971मे दरभंगा संसदीय निर्वाचन क्षेत्रसँ विनोदानन्द बाबू लोकसभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह।

मिथिला-मैथिलीक उन्नयन लेल कएल गेल कार्यः मिथिला-मैथिलीक उन्नयन लेल पं0 विनोदानन्द झा निम्नांकित प्रमुख कार्य केलनि- 1. झारखण्डक मैथिली भाषी जिला देवघरमे 'देवघर कॉलेज, देवघरक स्थापना करबौलनि। एहि महाविद्यालयमे 1966सँ स्नातक कक्षा धरि मैथिलीक पढ़ाई भऽ रहल अछि। 2. एस0पी0 कॉलेज, दुमकामे 1961सँ मैथिलीक विद्यापीठ आ देवघर वेद विद्यालयक स्थापनाप करबौलनि। 3. साहिबगंज आ दुमकामे पोलिटेकनिक कॉलेजक स्थापना करबौलनि। 5. कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना दरभंगामे करबौलनि। 6. मिथिलाक कोशी परियोजनाक क्रियान्वयन केलनि। 7. मैथिलाक आस्थाक सुविख्यात बैद्यनाथधाम मन्दिर, देवघरमे हरिजनक प्रवेश पर लागल रोककेँ हटबौलनि। एहिसँ मैथिल समाजमे सामाजिक समरसता स्थापित भऽ सकल। 8. मिथिलांचलक उत्कृष्ट शिक्षण संस्थान सी0एम0 कॉलेज, दरभंगाक कला संकायक लेल किलाघाटमे भवन निर्माण करबौलनि आ 30 मार्च 1962ई0 केँ सी0एम0कॉलेज, दरभंगा केँ अंगीभूत कॉलेजक रूपमे मान्यता प्रदान करबौलनि। 9. बिहारमे मुस्लिम लीगक सम्मेलनमे राजा गनीफारक अध्यक्षतामे मई 1947मे पूर्णियाँमे भेल छल, जाहिमे पूर्णियाँ, उत्तर भागलपुर, उत्तर मुंगेर आ संताल परगनाकेँ बंगालमे मिला देबाक प्रस्ताव पारित भेल छल, तकर पूर्ण विरोध केलनि आ मिथिलाक एहि क्षेत्रकेँ बंगालमे शामिल नहि होमए देलनि। 10. 1956ई0मे पुनः देवघर क्षेत्रकेँ बंगालमे मिलएबाक प्रयास भेल तँ ई जमिकेँ विरोध कयलनि। हिनक प्रबल विरोधक कारणें देवघरकेँ अलग नहि कयल जा सकल।

विदेश यात्राः पं0 विनोदानन्द झा मजदूरक लोकप्रिय नेता छलाह। जनमजदूरक समस्याक ओ गहन अध्ययन कयने छलाह। मजदूरक समस्याकेँ लऽ कऽ दू बेर विदेशक यात्रा केलाह।

(i) 1940ई0मे अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठनात्मक रासायनिक औद्योगिक समितिमे भारतीय शिष्टमंडलक सदस्यक रूपमे पेरिस गेलाह। (ii) 1950ई0मे जिनेबामे आयोजित श्रम संगठनक चौआलिसम सत्रमे भारतीय शिष्टमंडलक नेतृत्व कयलाह।

अंतिम यात्राः पं0 विनोदानन्द झा 1971क मध्यावधि चुनावमे दरभंगा संसदीय क्षेत्रसँ निर्वाचित भऽ 15 मार्च 1971ई0 केँ दिल्ली गेलाह तँ अस्वस्थ भऽ गेलाह। इलाज करएबाक लेल 06 अगस्त 1971केँ केरल आर्य बैद्यशाल्म गेलाह आ ओतहि 09 अगस्त 1971केँ हुनक निधन भऽ गेलनि। हवाई जहाजसँ हुनक पार्थिव शरीरकेँ पटना आनल गेल आ पटनासँ विशेष ट्रेन सँ देवघर। जतऽ वैदिक रीतिसँ हुनक मृत शरीर पंचतत्वमे विलीन भऽ गेल। ओ अपना पाछाँ दू पुत्र आ भरल-पुरल परिवार छोड़ि गेलाह। हुनक छोट पुत्र पं0 कृष्णानन्द झा बिहार सरकारक मंत्रीमण्डल पदकेँ सुशोभित कऽ चुकल छथि। झारखण्ड काँग्रेसक नेता छथि। आ हिन्दी विद्यापीट देवघरक व्यवस्थापक (निदेशक) छथि।

बिहारक पहिल झारखण्डी मुख्यमंत्री पं0 विनोदानन्द झा भनहि आय हमरा सभक बीच नहि छथि मुदा मिथिला-मैथिलीक उन्नयन लेल कएल गेल हुनक कार्य अविस्मरणीय रहत। हुनक निःस्वार्थ सेवा आ देश हितमे कएल त्याग वर्त्तमान पीढ़ीक लेल सदैव प्रेरणादायक बनल रहत।

संदर्भ-

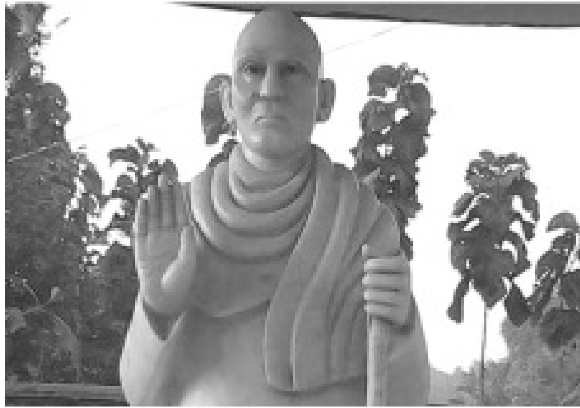
1. झारखण्डमे मैथिली- डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी
2. पं0 विनोदानन्द झा स्मृति ग्रंथ-संपादक-श्री नरसिंह पंडितजी आ डॉ. मोहनान्द मिश्र।
3. ओ लोकनि- पंचानन मिश्र
4. देवघर परिसरमे मैथिली-डॉ0 मोहनानन्द मिश्र
5. पूर्व मंत्री कृष्णानन्द झा संग भेंटवार्ता-डॉ0 रवीन्द्र कुमार चौधरी



पृथक मिथिला राज्यक अलख जगोनिहार : डा. लक्ष्मण झा

✍ हीरा कुमार झा

मिथिला, मैथिली आ मैथिल केर विकासक लेल सतत चिंतन केनिहार अपराजेय पुरुष मिथिला विभूति डा. लक्ष्मण झा उर्फ लखन बाबू मिथिलाक चतुर्दिक विकासक लेल अलग मिथिला राज्यक कल्पना कें मूर्त रूप मे देनिहार प्रथम व्यक्ति छलाह। ओ सब सं पैघ समस्याक रूपें प्रस्तावित पृथक मिथिला राज्यक उपयुक्तता के मानैत छलाह। तकरे परिणाम छल जे 1 जनवरी, 1943 ई. कें हिनक सतत प्रयास सं दरभंगा कारा मे मिथिला परिषदक गठन संभव भेल। जकर गठनक मूल उद्देश्य मिथिलाक सुसम्बद्ध इतिहासक रूपरेखा तैयार करब छल। एहि हेतु वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार करबाक उद्देश्य सं ओ पहिने 13 जनवरी, 1947 ई. कें मिथिला यूनिवर्सिटी कमेटी बनाओल तत्पश्चात सन 1952 ई. मे सरकारक समक्ष मिथिला मे शिक्षाक विकासक हेतु पांच गोट विश्वविद्यालयक निर्माणक योजना प्रस्तुत कएल।



1951 मे प्रगतिशील मैथिल लोकनिक संग मिथिलाक साहित्य, संगीत, कला ओ विज्ञानक उन्नति हेतु 'मिथिला मंडलक' स्थापना सेहो मिथिलाक हृदय स्थली दरभंगहि मे कएल जकर कार्यालय कालांतर में पटना, कोलकाता, कटक ओ बनारस मे सेहो स्थापित भेल।

प्रस्तावित पृथक मिथिला राज्यक गठनक वैचारिक अखाड़ा तैयार करबाक लेल विभिन्न विषयक पुस्तक लिखलन्हि, छपोलन्हि आ बांटलन्हि। एहि मे लखन बाबूक 'मिथिला ए यूनियन रिपब्लिक' (1952), 'मिथिला भाषा' (1952), 'मिथिला इन इंडिया' (1953), 'मिथिला ए सोवरेन रिपब्लिक' (1954), 'मिथिला बिल राइज' (1955), 'द नौर्दर्न बोर्डर' (1955), 'द वोटर्स ऑफ मिथिला' (1956), 'यूनिवरसिटी फॉर मिथिला' (1956), 'द टीचर्स इन मिथिला' (1956) केर नाम उल्लेखनीय अछि। एकर अतिरिक्त आन्दोलन के गति प्रदान करवा लेल दिसम्बर 1952 सँ अगस्त 1953 धरि 'मिथिला' नामक समाचार पत्रक प्रकाशन तऽ सफलतापूर्वक कएबे कएलन्हि जे 1953 मे मिथिला निर्माण सभा, मिथिला चौम्बर ऑफ कॉमर्स ओ मिथिला इंडस्ट्रीज नामक संस्थाक स्थापना सेहो कएलन्हि।

दरभंगा जिलाक विरौल थानान्तर्गत रसियारी गाम मे 5 सितम्बर, 1916 ई. कें जन्म लेनिहार लखन बाबू आरंभहि सं मेधावी रहलाह। हुनक लेखन प्रायः कॉलेज जीवनहि मे प्रारंभ भऽ गेल रहन्हि मुदा, हुनक पहिल गंभीर कृतिक रूप मे सन 1948 ई. मे लिखित 'मिथिला एंड मगध' (700 एडी से 1100 एडी) काफी प्रसिद्धि पओलक। एकरा ओ अपन शोध-पत्रक रूप में इंगलैंड मे समर्पित कएने छलाह। स्वदेश वापसीक पश्चात हुनक लेखन कार्य जे प्रारंभ भेल से जीवन पर्यन्त निर्वाध गति सं चलिते रहल। दर्जनहुँ भाषाक ज्ञाता लखन बाबू करीब 60 गोट पुस्तकक रचना कएलन्हि, जे मूल रूप सं संस्कृत, हिन्दी, मैथिली आ अंग्रेजी मे उपलब्ध ा अछि। लखन बाबू 1976-77 मे जेपी केर आग्रह आ तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुरक सद्प्रयास सं मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपतिक आसन ग्रहण कएलन्हि, जतय मासिक वेतनक रूप में मात्र एक टाका लेब स्वीकारलन्हि। ओ मिथिलाक्षर लिखवा पर बहुत जोर दैत छलाह, जाहि मे संयुक्ताक्षरक अधिकाधिक प्रयोगक कारणे एहि लिपि में लिखब अत्यंत कठिन छल। अतएव हलन्तक प्रयोग शुरू क' मिथिलाक्षर कें काफी सरल आ सुगम रूप प्रदान कएल। अंत मे हुनक लिखल पुस्तक 'द वर्ल्ड यूनियन' (1956) केर चर्चा सेहो आवश्यक बुझना जाइत अछि, कारण इएह ओ पुस्तक अछि जकरा पढ़लाक बाद मॉरिसस केर पूर्व राष्ट्राध्यक्ष श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ ततेक प्रभावित भेल छलाह जे भारतक सहयोग सं लखनबाबूक लेल नोबेल पुरस्कारक अनुशंसा करबाक प्रयास कएलन्हि। एकरे परिणाम छल जे पूर्व प्रधान मंत्री श्री नरसिंहाराव द्वारा हिनका शुभकामना पत्र सेहो पठाओल गेल छल। 23 जनवरी, 2000 कें 84 वर्षक अवस्था मे मिथिलाक ई गांधी पंचतत्व में विलीन भऽ गेलाह। मुदा आइयो समाजक हृदय मे हुनक देल भाव ओंघा रहल अछि, अनेक आशा कुलबुला रहल अछि, कतोक उमंग लीक ताकि रहल अछि। एहना मे मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकास लेल पृथक मिथिला राज्यक गठन केर अलख जगोनिहार, जागरूक मैथिल लेल रचनाधर्मिक ओ मिथिलाक विकासक प्रेरणा श्रोत लखन बाबूक प्रति असली श्रद्धांजलि भऽ सकैछ।



मिथिलाक संत शिरोमणि लक्ष्मीनाथ गोसाँई

✍ डॉ. सुषमा झा

मिथिलाक सन्तशिरोमणि लक्ष्मीनाथ गोसाँई के जन्म मध्यकालक उत्तरार्द्ध मे कोशी प्रमण्डलक सहरसा जिला अन्तर्गत परसरमा ग्रामा में 1787 ई. मे जन्म भेल छलन्हि। बाल्यकालक प्रारम्भिक किछु वर्ष मातृके मे हिनक बितल, कहि सकैत छी जे गोसाँईजीक भावी जीवन दिशाक परिवर्तन मे अपूर्व योगदान मातृकक छल। किछु दिनक उपरांत पिता पं. बच्चा झा, गाम लअनलखिन आ गायक चरवाही म लगा देलखिन, मुदा अना बच्चा के अपेक्षा हिनक रूचि किछु भिन्न छल। जल-क्रीड़ा म बरीकाल धरी डुबकी मारब, पायर बन्हबाय घंटो उल्टा लटकब, कब॥ी-चिक्का मे बहुत काल धरी दम साधब, एके आसन मे निरन्तर बेशी काल धरि बेसल रहब, जे लोक के अद्‌भूत चम्तकारी आ रहस्यमयी लगैत छल। पुत्रवत्सल पिता लक्ष्मीनाथ के उपनयन संस्कारक बाद जोकि महिनाथपुरक वेदान्त, तत्र-साधना आ ज्योतिष मे लब्धप्रतिष्ठित गुरू पं. रत्ने झाक ओहिठाम विद्याध्यन हेतु पठा देलनि। गुरू सँव शिक्षित आ दिक्षित भए इ पुनः गाम आयव गेलाह।

गाम अएलाक उपरान्त हिनक विवाह सोखादत ठाकुरक पुत्री संग भेल मुदा सुखद दाम्पत्य जीवनधारण करबाक उचाठ लागि गेलनि। समयक सहमति सँ वैराग्य धारण केलनि। लक्ष्मीनाथ गोसाँई जी मूल रूप सँ वैरागी सत्न ओ साधक भक्त छलाह। गुरू लम्बनाथक आदेशक पालन करबा हेतु भजन आ कीर्त्तन करैत छलैथ। बाल्यकाल सँ ई कविता सृजन करैत छलाह। सन्त हृदयी गोसाँईजी नव-नव भजन बनाक शिष्य मंडलीक संग गायन करै छलाह। हिनक भजनक लोक लिखि के रखैत छल जे बाद कएक टा पुस्तकाकार भेल। राम गीतावली, कृष्णगीतावली, भजन सार महेशवाणी, निर्गुणवाणी आदिक संग्रह कएल गेल अछि। गोसाँई जीक रचना म ज्ञान, भक्ति, उपासना, दर्शन, निर्गुण, वैष्णव, षाक्त-भाव, तंत्र, योग आदिक बारह मासा, चौमासा, तिरहुती, पराती, गंगा-वन्दना, विष्णुपद, चुमाओन, सोहर, अम्बा-स्तुती, समदाउन सोहर आदि गीत व्यवहार मे रहैत अछि। किछु प्रसिद्ध गीत - गोसाईं जीक लेखनी अंकुरित निर्गुण -

''चलव कन्त आहि देश जतय निज घर अपना
पंचरंग महल देखि नहि बिसरह, इ सुखस जानइ निशि अपना,
इ संसार फूल सिमर के अन्दर रूइया रे सुगना,
सुत वित नारि भवन कुल परिजन, इ सब चमकय चारि दिशा।

युगल स्तुति राम आ कृष्ण के -

''जय राम कृष्ण गोपाल मनोहर, दुहु मूरति बलिहारी
अयोध्या नाय अति सुखदायक, गोकुल के दुखहारी।।

गंगाजीक महिमा गायन परातीक रूप मे कयल जायत अछि -

जय गंगा जी जय सुर सरिता, जय सुरमरि सुखदाई
सुमिरन सकल सिद्धि सज्जनकेँ, दुर्ज तरि जाई।।

राम-जन्मोत्सव सोहर - बधैइया गीत

बाजय बधाई आजु राजा दशरथ राज हो रामा
नगर महल द्वार, घर-घर साजल साज हो रामा।

बालचरित्र - आजु ललन गति कहलोन जाय,
दुख ककरा कहब गे माई।
दिन भरि आयल नकहि खेलाय, साँझ पड़ैत देल कननि लगाय।

शिव पार्वती होरी -

गिरिजा संग हर फागु मचाई।
अरधांगी ररंगी रति संगी, मंगी मूर्ति चढ़ाई।
अंग भरि राख रमाई।।

शिव स्तुति जे जन-जन मे प्रचलित अछि

''एक बेर हर हमरा दिस हेरू, पार्वती पति दरिद्र फेरू।

स्ंगहि गोसाई जी भक्ति रचना राम, कृष्ण, शिव के अलावा अम्बा-स्तुति विषयक रचना सेहो कयलनि, जेना कि

''अम्बे आब उचित नहि देरी।
अम्ब आब जमदूत पहुँचि गेल प्एर अछि बेरी।।

मर्यादावादी कवि लक्ष्मीनाथ गोसाँई आजीवन काव्य-साधना में तल्लीन रहलाह। सम्मानीय खुशीलाल झाजीक वैरागी साधु रहितो गोसाँई जी सामाजिक कार्य आ समाजक सुख-दुख मे सतत रूचि बनल रहलनि, हिनक काव्य-कलेवर, मैथिलीये भाषा मे निर्मित भेल, संगहि जन्मभूमि आ कर्मभूमि त सेहो मिथिलांचले रहलनि, जाहि कारणे मिथिला के जन-जन के हिनक गीत प्रचलित अछि।

लक्ष्मीनाथ गोसाँई प्रत्येक व्यक्तिक इश्वर सँ स्नेह कव कृतार्थ होयबाक संदेश देलनि। लक्ष्मीनाथ गोसाँई के व्यक्तित्व आ कवित्वक समेटनाई असंभव अछि।



प्रवासी लेखक सीताराम झा

✍ डॉ. अशोक कुमार मेहता

मैथिली भाषा-साहित्यक संवर्द्धनमे प्रवासी साहित्यकारक अवदान किनकोसँ नुकायल नहि अछि। सर्वविदित अछि जे मैथिली पत्रकारिता आब शताब्दी पूरा कऽ चुकल अछि, तकर पहिल किरिन मिथिलासँ सुदूर क्षेत्र अजमेरमे छिटकल छल। ततबे नहि, आरंभिक कालक अधिकांश पत्र-पत्रिका मिथिलासँ बाहरहि प्रकाशित भेल आ सभटा अपना-अपना ढंगे मैथिली साहित्यक श्रीवद्धिमे योगदान देलक। संगहि, प्रवासी मैथिलमे मातृभाषाक प्रति अनुराग तथा साहित्य-सर्जना लेल चेतना जगौलक। परंच एहि ठाम प्रवाससँ प्रकाशित मैथिली पत्रिकाक विश्लेषण करब हमर अभिप्रेत नहि अछि। हम ई कहऽ चाहैत छी जे विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा, पं. चन्द्रदत्त झा, म. म. मुरलीधर झा, पं. रामचन्द्र मिश्र 'जैत', पं. रघुनाथ मिश्र 'पुरोहित' आदि अनेको मैथिल प्रवासी स.श विगत शताब्दीक आठम-नवम दशक मध्य सीताराम झा नामक व्यक्ति सेहो मैथिली साहित्यमे प्रवेश कयलनि आ अद्यपर्यन्त मातृभाषाक सेवा एवं साहित्य-साधनामे लागल छथि। अद्यावधि हिनक तीन गोट मैथिली पोथी 'भारत विभूति विद्यापति' (1985), 'छीटल दाना' (2001) आ 'विद्यापति शतक' (2003) प्रकाशित छनि। एकर अतिरिक्त हिन्दीमे 'बिखरे विचार' तथा 'गाँव की यादें', (काव्य), अंग्रेजीमे 'एन आर्चर', 'द इस्ट विण्ड' (काव्य) एवं 'कबीर एण्ड हिज कल्ट' (निबन्ध) सेहो छनि।

सीताराम झाक जन्म 2 जनवरी 1936 ई. केँ उत्तर प्रदेशक इटावा (सम्प्रति ओैरैया) जनपदक बिचौली गाममे भेलनि। सम्प्रति ई इटावासँ उपटि कानपुरक गुजैनीमे आबिकऽ बसि गेल छथि। प्रायः तीन शताब्दी पूर्वहि हिनक पूर्वज मिथिला छोड़ि ओहि ठाम जाकऽ बसि गेल छलाह। पिता पं. नाथूराम झाक छत्रच्छाया बेसी दिन नहि रहि सकलनि। अतएव जीविकोपार्जनक हेतु मात्र बीसे वर्षक अवस्थामे रेलवेमे नोकरी धऽ लेलनि। मुदा, अध्ययनक प्रति रुचि रहलाक कारणेँ एम.ए. धरिक शिक्षा प्राप्त कयलनि। हिन्दी, अंग्रेजी आ उर्दू भाषाक ज्ञाता श्री झा अपन उमेरक पाँचम दशकमे मैथिली भाषाक ज्ञान प्राप्त कयलनि। ई स्वयं लिखने छथि। ''सन् 1982 ई. मे हम मैथिली भाषा आ साहित्यमे प्रवेश कयलहुँ।''1

हिनक मैथिलीमे प्रवेशहुक बड़ रोचक ओ मार्मिक प्रसंग अछि। ''भेलैक ई जे गोरखपुरमे गनल-गुथल मैथिल लोकनि एक बेर विद्यापति समारोह मनौलनि। हुनका लोकनिकेँ पता लगलनि जे रेलवेमे कोनो 'झा' छथि। हिनका आमंत्रणपत्र भेटलनि। ई गेलाह। मैथिली भाषा कानमे पड़लनि। हिनकोसँ बजबाक आग्रह कयल गेलनि। 'झा' होइतो मैथिलीमे बाजि नहि सकबाक कारणेँ ई संकोचे गड़ि गेलाह। आत्मग्लानि भेलनि।''2

यैह आत्मग्लानि हिनका आत्मप्रेरित कयलकनि। फलतः मातृभूमि आ मातृभाषाक प्रति दायित्वक निर्वहनक हेतु कतोक बेर मिथिलाक विभिन्न ऐतिहासिक स्थलक (सर्वाधिक विद्यापतिसँ सम्बन्धित) परिभ्रमण कयलनि, विश्वविद्यालय आ महाविद्यालयक मैथिली विभाग एवं मैथिली संस्थासँ सम्पर्क स्थापित कयलनि, मैथिली वर्णमालाक अभ्यास पुस्तिकासँ लऽकऽ व्याकरण ओ विविध विषयक मैथिली पुस्तक कोनि तकर अध्ययन-मनन कयलनि। मात्र तीन वर्षक अभ्यासक परिणाम अत्यन्त सुखद रहल। जेँ कि प्रायः पहिल बेर विद्यापति समारोहमे मैथिली भाषा ओ शब्द कर्णगोचर भेल रहनि आ संगहि विद्यापति साहित्यक अधिकाधिक अध्ययन कयलनि तेँ 1985 ई. मे 'भारतविभूति : विद्यापति' नामक पहिल ओ उत्तम कोटिक शोधपरक ग्रंथक प्रकाशन कयलनि।

मैथिलीमे विद्यापति विषयक आलोचनात्मक ग्रंथमे पं. शिवनन्दन ठाकुरक प्रो. विद्यापति ठाकुर द्वारा अनूदित 'महाकवि विद्यापति', प्रो. शैलेन्द्र मोहन झाक 'विद्यापति', प्रो. रमानाथ झाक कुलानन्द मिश्र द्वारा अनूदित 'विद्यापति'क कड़ीमे सीताराम झाक 'भारतविभूति : विद्यापति' अबैत अछि। एहि ग्रंथक प्रसंग आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' लिखने छथि जे- 'श्रीयुत झाजी मधुपवृत्तिएँ कविकोकिलक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक बड़े मार्मिकतासँ एहिमे अध्ययन प्रस्तुत कयने छथि। भाषा नम्य ओ शैली रम्य तथा संक्षेपमे प्रत्येक पक्षपर दक्षतासँ प्रकाश देने छथि।'3 पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एकरा प्रवासी साहित्यकारक एकटा अनुकरणीय प्रयास मानलनि अछि- 'एक प्रवासी होइतहुँ जाहि तत्परताक संग मैथिली भाषा सीखि महाकवि विद्यापतिक ग्रंथसभक अनुशीलन कयलनि अछि से प्रशंसनीये नहि अनुकरणीय सेहो कहल जा सकैछ।'4 डा. वासुकीनाथ झाक . ष्टिमे 'विद्वान सहित सामान्य पाठकक हेतु ई पोथी उपयोगी सिद्ध होयत।'5 डा. रामदेव झाक उक्ति छनि- 'एहि ग्रंथमे लेखक महोदय विद्यापति केर संबंधमे अपन मौलिक चिन्तन प्रस्तुत कयने छथि। एहि ग्रंथसँ विद्यापतिक प्रति जिज्ञासाक पूर्ति होयत से विश्वास कयल जा सकैछ।'6 डा. भीमनाथ झा एहि ग्रंथक कारणेँ लेखकके ँ प्रवासी मैथिल समाजक बीच विद्यापतिक प्रचारक मानलनि अछि-

श्रीयुत सीतारामजी, बसितथि जँ न प्रवास।

होइत की विद्यापतिक, व्यापित ओतऽ सुवास?7

वस्तुतः विद्यापतिसँ संदर्भित आलोचनात्मक कृतिक रूपमे 'भारतविभूति : विद्यापति' एकटा महत्त्वपूर्ण रचना थीक। नओटा मूल शीर्षक आ पन्द्रहटा उपशीर्षकमे निबद्ध एहि ग्रंथमे नव .ष्टिक

संग विद्यापतिक मूल्यांकन-विश्लेषण कयल गेल अछि। चारिम अध्यायमे 'विद्यापतिक विद्वत्ता' शीर्षकान्तर्गत लेखक आ कवि, राजनयिक, संगीतज्ञ, इतिहासकार, भूगोलवेत्ता, स्मृतिकार, गणितज्ञ आ ज्योतिर्विद् आओर नीतिशास्त्री 'उपशीर्षक' मे महाकविक व्यक्तित्वक विविध आयाम केँ रेखांकित कयल गेल अछि। एतेक विशदताक संग वर्णन एहिसँ पूर्वक मैथिली ग्रंथमे बड़ कम ठाम भेटैत अछि। 'विद्यापतिक रहस्यवाद' शीर्षकमे लेखक महोदय सर्वथा नव तथ्यक उद्घाटन कयलनि अछि।

महाकवि विद्यापतिक प्रति हिनका ततेक आस्था छनि जे अपन इष्टदेवता सदृश विद्यापतियोक पूजा-अर्चना करैत छथि आ से नित्यप्रति। एतबे नहि, विद्यापतिक स्मृति दिवस (कार्तिक धवल त्रयोदशी)केँ परिवारमे पाबनि जकाँ मनबैत छथि। हिनकेँ सत्प्रयासक प्रतिफल थीक जे प्रत्येक विद्यापति स्मृति दिवसकेँ आकाशवाणी गोरखपुरसँ विद्यापतिपर एकटा विशेष वार्ता प्रसारित होइत अछि।

विद्यापति-प्रेम सीताराम झाकेँ गद्यक बाद पद्य रचना लेल सेहो प्रेरित कालकनि आ 2003 ई. में 'विद्यापति शतक' नामक काव्यकृतिक सृजन कयलनि। एहि प्रसंगमे रचनाकार लिखने छथि- 'यद्यपि मैथिल समाज विद्यापतिक नामसँ परिचित अछि, मुदा प्रस्तुत रचना करबाक अभिप्राय एक गुटकाक रूपमे कविताक माध्यमसँ आ संक्षेपमे विद्यापतिक जीवनक विषयमे सामान्य जानकारी पाठक लोकनिक मध्य उपलब्ध करायब अछि।8 ठीके, एक सय पद्यक माध्यमसँ कवि सीताराम झा महाकवि विद्यापतिक व्यक्तित्व ओ .तित्वकेँ बड़ सहज ओ बोधगम्य भाषामे प्रस्तुत कयलनि अडिछ। धार्मिक भावनाक प्रधानता एहि पुस्तिकाक अतिरिक्त विशेषता थीक। एकर आरंभ ओ अंत दुनू अत्यन्त प्रणम्य भावसँ कयल गेल अछि-

विश्व-कवि, भारत-विभूति, विद्यापतिकेँ शत-शत प्रणाम।
मिथिला-गौरव, कविकोकिल, शंकरक सखाकेँ शत-शत प्रणाम।।
हमहुँ निवेदन करै छी बाबा, हमराकेँ दी ई वरदान।
अपनेक शरणमे सदिखन रहिकऽ, ईश्वर केर गाबी गुणगान।।

'विद्यापति-शतक' सीताराम झाक दोसर काव्यकृति थिकनि। एहिसँ पूर्व हिनक 2001 ई. मे 'छीटल दाना' नामक काव्यसंग्रह प्रकाशित भेलनि। एहि संग्रहक मादे डा. भीमनाथ झाक मंतव्य छनि- 'कवि प्रस्तुत कृतिकेँ भनहि 'छोटल दाना' कहलनि अछि, किन्तु हमरा दृष्टिमे तँ ई बहुमूल्य मोतीक माला थीक, जे माय मैथिलीक गरदनिमे सुशोभित भऽ हुनक प्रसन्नताकेँ बदौलक अछि।9

दू खण्डमे विभाजित एहि काव्य-रचनाक खण्ड 'क' मे एक सय चौदह टा मुक्तक तथा खण्ड 'ख' मे विभिन्न शीर्षकसँ बारह गोट कविता अछि। मुक्तकक संबंधमे कवि स्वयं लिखलनि अछि- 'एहि मुक्तकमे किछु तीत आ किछु मीठ छैक। ई हमर भावक उद्‌गार छैक से स्वतः प्रस्फुटित भऽ गेल अछि। विषयवस्तुक दृष्टिएँ एहि मुक्तकमे बहुत विविधता अछि। अध्यात्मसँ दर्शन धरि, संयोगसँ वियोग धरि, पर्यावरण-संरक्षणसँ वन्यप्राणीक संवर्द्धन धरि, कल्पनासँ यथार्थ धरि, साहित्यसँ समाज धरिक विचार अभिव्यक्त भेल अछि। अधिकांश पदमे अत्यंत गूढ़ भावक संग कोनो-ने-कोनो संदेश निहित अछि। कतोक पद रोचकतासँ परिपूर्ण अछि। यथा-

द्रुतगामी गाड़ी मे साइकिलहुक अछि नाम
बिनु तेल चलैत अछि नगर वा गाम
बाल, वृद्ध, युवकक हल्लुक सवारी अछि
निर्धनहुकेँ प्रिय अछि, सस्त अछि दाम।

खण्ड 'ख' मे संगृहीत कविताकेँ कवि नवकविता कहलनि अछि। दिनानुदिन होइत जा रहल सामाजिक अवमूल्यनकेँ रेखांकित करब प्रायः सभ कविताक मूल स्वर थीक। 'कबीरक परिवार नियोजन' शीर्षक कविता समकालीन मैथिली कविताक एक नव चित्र उपस्थित करैत अछि। अधिकांश कवितामे कवि यथार्थक धरातलपर ठाढ़ भऽ कतोक रास प्रश्न पाठकक सोझाँ रखलनि अछि। चाहे ओ साहित्यकारक दुर्दशा हो अथवा गंगा-प्रदूषणक समस्या, मानवीय संवेदनाक ह्रासक विषय हो वा साम्प्रदायिक सौहार्दक विचार। एहन नहि लगैत अछि जेई सीताराम झाक प्रथम काव्यमय अभिव्यक्ति थीक। पहिल गद्यग्रंथ जकाँ पहिल पद्य-पोथी सेहो अत्यंत प्रभावोत्पादक एवं सशक्त अछि। 'छीटल दाना'क रूपमे सीताराम झा मैथिली काव्यसाहित्यकेँ नव उपहार देलनि अछि। एहि तीनू कृतिक अतिरिक्त सीताराम झाक कतोक निबंध, यात्रावृत्तांत, संस्मरण, कविता आदि वैदेही, कर्णामृत, मिथिलायतन, पुष्पांजलि प्रभृति मैथिली पत्रिका एवं चेतना समिति पटनाक स्मारिका आओर 'श्री सुमन साहित्य सौरभ' एवं 'श्री अमर-अर्चना' अभिनंदनग्रंथमे प्रकाशित छनि।

मैथिली भाषाक संदर्भमे हिनक सत्प्रयास समस्त प्रवासी आ अप्रवासी लेल अनुकरणीय अछि। कतोक पीढ़ी पूर्व बिसरल मातृभाषा केँ स्वयं सिखलाक बाद अपन तीनू पुत्रीकेँ सेहो सिखौलनि। एखन हिनक पुत्रीसभक परिवारक प्रत्येक सदस्य मैथिली बजैत छथिन। पुत्रीलोकनि सेहो अपन मातृभाषा मैथिली लिखैत छथिन।

बहुत अल्प समयमे प्रवासी मैथिलरत्न श्री सीताराम झा द्वारा मैथिली भाषा ओ साहित्य लेल महत्त्वपूर्ण सेवा कयल गेल अछि।

संदर्भ-संकेतः

1. विद्यापति शतक, ले. सीताराम झा, पृ.- 16
2. भीमनाथ झा, वैदेही, नवम्बर- 1992
3. भारतविभूति : विद्यापति, ले. सीताराम झा, पृ. -05
4. तत्रैव, पृ.- 07
5. तत्रैव, पृ.- 06
6. तत्रैव, पृ.- 09
7. तत्रैव, पृ.- 10
8. विद्यापति शतक, पृ.-17
9. छीटल दाना, ले. सीताराम झा, पृ.-10
10. तत्रैव, पृ.-11

पुरातात्विक अन्वेषक मैथिली सेवी सत्यनारायण सत्यार्थी : एक संक्षिप्त परिचय

✍ सुशान्त कुमार

मिथिलाक इतिहास आ संस्.ति प्राचीन काल स समृद्ध अछि। एहि समृद्ध इतिहासक लेखन कार्य एहिठामक साहित्यकार, संस्.तिकर्मी आ सामाजिक कार्यकर्ता अपन अध्ययन आ चिंतन-मनन स कयने छैथि, जाहिमे उपेन्द्र ठाकुर, राधाकृष्ण चौधरी, योगेन्द्र मिश्र आदि सर्वमान्य छैथि मुदा महामहोपाध्याय परमेश्वर झा, महामहोपाध्याय मुकुन्द झा 'बख्शी' लोकनिक चर्चा क्रमशः मुख्य धाराक इतिहास लेखन मे नै होइत छैन्हि। एहि तरहक चर्चा नै होयबाक परम्परामे इतिहासक मुख्य धारा स अलग कला-इतिहास आ पुरातत्त्वक क्षेत्रमे अन्वेषण, लेखन आ सामग्री संग्रहणक कार्य करनिहार चन्दा झा, रामनिरेषण मिश्र, कृष्णकान्त मिश्र, विजयकान्त मिश्र, सत्यनारायण सत्यार्थी, पी. गुप्ता, सहदेव झा, प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' जेहन लोग सेहो छैथि, जे प्रतिकूल परिस्थितिमे गंभीरतास अपना-अपना हिसाबे काज कयने छैथि।

प्रस्तुत लेख मूलतः सत्यनारायण सत्यार्थी जीक सम्बन्धमे अछि, जे वर्ष 2000 ईस्वी क बाद सेवानिवृत्त भय मिथिलाक पुरातत्व सम्बन्धी क्षेत्रमे पुरातात्विक महत्वक सामग्रीक प्रति अनुरागक कारणे दरभंगा, मधुबनी आ समस्तीपुर जिलास प्राप्त मूर्ति, मूर्ति अभिलेख आदिक संकलन कय ओकर फोल्डर आ पुस्तिकाक प्रकाशन कयलनि, हुनक कयल काज आई एकटा महत्वपूर्ण दस्तावेज बनि गेल अछि। प्रस्तुत लेखक बाद समाजक बौद्धिक वर्ग सत्यार्थी जीक अवदान के समझि बुझिके हुनक काजक का सम्यक मूल्यांकन कय सकत। सत्यार्थीजी द्वारा हिन्दी आ मैथिली भाषामे लिखल कतेको पोथी अछि, मुदा हम हुनक निम्नलिखित पोथीकेँ जनैत छी -

01. पौराणिक कोर्थ,
02. 'प्राचीन पाषाण प्रतिमायें' दरभंगा जिला,
03. मिथिला की पौराणिक मूर्तिकला (सर्वेक्षण सार-संक्षेप),
04. मिथिला की पौराणिक मूर्तिकला प्रथम भाग,
05. मिथिलाक्षर उद्भव और विकास,
06. मिथिला की पौराणिक मूर्तिकला द्वितीय भाग,
07. पुरातात्विक एवं आध्यात्मिक 'दर्शनीय मिथिला' का प्रथम पुष्प,
08. पुरातात्विक एवं आध्यात्मिक 'दर्शनीय मिथिला' का द्वितीय पुष्प,
09. पुरातात्विक एवं आध्यात्मिक 'दर्शनीय मिथिला' का तृतीय पुष्प,
10. पुरातात्विक एवं आध्यात्मिक 'दर्शनीय मिथिला' का चतुर्थ पुष्प,
11. पुरातात्विक एवं आध्यात्मिक 'दर्शनीय मिथिला' का पंचम पुष्प,
12. पुरातात्विक एवं आध्यात्मिक 'दर्शनीय मिथिला' का षष्ठ पुष्प,
13. पुरातात्विक एवं आध्यात्मिक 'दर्शनीय मिथिला' का सप्तम पुष्प,
14. पुरातात्विक एवं आध्यात्मिक 'दर्शनीय मिथिला' का अष्टम पुष्प,
15. भगवती स्थान नवादा,
16. रत्नगर्भा मिथिला,
17. पुरातात्विक एवं आध्यात्मिक 'दर्शनीय मिथिला' का नवम पुष्प आ पुरातात्विक एवं आध्यात्मिक दर्शनीय मिथिला के सबटा नौ पुष्पक संकलन
18. दर्शनीय मिथिला नौ खण्ड।

एहि तरहे सत्यार्थी जीक अठारहटा पोथीक जानकारी उपलब्ध भय जाइत अछि। सत्यार्थी जीक द्वारा बनाओल फोल्डर सेहो महत्वपूर्ण अछि। सत्यार्थी जी के द्वारा मिथिलामे कयल गेल अन्वेषण संबंधी काजक जानकारी पुरातात्विक एवं आध्यात्मिक 'दर्शनीय मिथिला' के विभिन्न पुष्पक प्रकाशन सअ देल गेल अछि। पुरातात्विक एवं आध्यात्मिक 'दर्शनीय मिथिला' क कुल नौ टा पुष्प निकलल। धरोहरके जानब आ बुझब के जाहि प्रक्रियाक शुरूआत सत्यार्थी जी पुष्पके रूपमे पोथीक प्रकाशनस कयलनि, ओ पुष्प दर पुष्प कुल नौ टा पुष्प बनि गेलैनि। एहि सबटा पुष्पक संकलित कय सत्यार्थीजी मई, 2003 मे द्वितीय संस्करणक सङ्गे प्रथम पुष्प स नौ पुष्प तक संपूर्ण जानकारी 'दर्शनीय मिथिला' नौ खण्ड नामक एकटा पोथी मे बनाकय मात्र तीन टा प्रति प्रकाशित कयलनि। तीनों पोथी तीन ठाम उपलब्ध अछि, हम जेखनि सत्यार्थीक सबटा पोथी स संबंधित जानकारी एकत्र करय लगलहुँ तय दर्शनीय मिथिलाक संबंध मे जानकारी भेटल जे एकटा पोथी सत्यार्थीजी अपन ग्रामीण मित्र के देलखिन्ह, एकटा पोथी नरेन्द्र नारायण सिंह निराला के देलखिन्ह आ एकटा पोथी ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगाक प्राचीन इतिहास विभागके पुस्तकालयमे देलखिन्ह।

हमर दृष्टिमे सत्यार्थी जीक दर्जनाधिक रचना संसारमे 'दर्शनीय मिथिला' नौ खण्ड नामक पोथी सत्यार्थी जीक समग्र एवं निष्पक्ष मूल्यांकनक एक मात्र आधार भय सकैत अछि। 'दर्शनीय मिथिला' नौ खण्डमे एस. एन. सत्यार्थी 96 टा पुरातात्विक

महत्व आ ऐतिहासिक रूप स समृद्ध जगहक विस्तृत चर्चा कयने छैथि। एहि पोथीमे शामिल सबटा 96 स्थल अपने आपमे एक-एक टा अध्याय अछि। जगह सबहक नाम छै- 'अंदामा, अवाम, असगाँव, अरई, अहिरैन, अंधराठाढ़ी, अकौर, उजान, उच्चौठ, इटवा शिवनगर, इटहरवा, कपिलेश्वरस्थान, कनहई, कालिकापुर, कुर्सोंनदियामी, कोईलख, कोर्थ, खड्रक, गोनौन, गाण्डीवेश्वरस्थान, गन्धवारि, गिरिजा स्थान, छर्रापट्टी, जयनगर, जमथरि, जरहटिया, जितवारपुर, डिहलाही, डोकहर, तारालाही, तिलकेश्वरस्थान, तिरहुता, तुमौल, दरभंगा शहर, देकुली, दामोदरपुर, धरौरा, नरार, नगरडीह, नवादा, नेहरा, परसा, पस्टन, परोरिया, पोखराम, पाली, बरसाम, बनगांव, बलिराजगढ़, बाथो, बिरौल, बोरवा, बनवारि, बहेड़ा, बुढ़ेव, बैद्यनाथपुर, भच्छी, भरौरा, भरिहर, भवानीपुर, भजनाहा, भगवतीपुर, भोजपरौल, भीठ भगवानपुर, भंडारीसम, भैरव-बलिया, मदरिया, महिया, महिषी, महादेव मठ, मंगरौनी, रतनपुर, रखवारि, रहुआ संग्राम, रामपुर, रूपनगर, लहेरियासराय, लोहना, लदहो, बासुदेवा, वारी, विष्णु बरूआर, विदेश्वरस्थान, विस्फी, शिवनगर, साहोपररी, सवास, सिमरिया भिण्डी, सोनहर, सौराठ, सिरूआ, हावीडीह, हाबी भौआर, हुलासपट्टी और होरलपट्टी।'

सत्यार्थी जी स्वास्थ्य विभागस सेवानिवृत्त भेलाक बाद मिथिलामे यत्र-तत्र फैलल मूर्ति कलास संबंधित विभिन्न तथ्यके ताकय के क्रममे क्षेत्र भ्रमण करैत मात्र अन्वेषणे टा करैत छलाह बल्कि लेखन आ पाठन कार्य सेहो करैत छलाह। जाहि कालखण्डमे सत्यनारायण सत्यार्थी मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रमे भ्रमण करैत अन्वेषण आ लेखन काज मे लागल छलाह, ओ कालखण्ड मिथिला आ मैथिली आन्दोलनक का काल रहय, जाहि समय एहिठामक लोग मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम अनुसूचीमे शामिल करेबाक लेल विभिन्न स्तर पर विभिन्न तरीका स लागल छलाह। मिथिलावासीक विभिन्न तरहक मांग पर सत्यार्थी जी अपन पोथी दर्शनीय मिथिलामे अपन बातकेँ रखैत लिखने छैथि।

सत्यार्थीजी हिन्दीमे लिखैत छैथि -'वर्षों से मिथिलावासी केन्द्रीय सरकार से दो माँग करते रहे हैं, मैथिली भाषा को अष्टम सूची में स्थान और मिथिला को पृथक राज्य घोषित करना। मिथिला का इतिहास जनकवंश से प्रारंभ होता है जब यह स्वतंत्र राज्य था। जनककाल का इसका गौरव जगजाहिर है। विश्व का प्रथम गणतंत्र वज्जि महासंघ था, मिथिला इसका प्रथम घटक थी। कर्णाटकाल में मिथिला का चहुमुखी विकास हुआ, जिसके साक्षी हैं, कर्णाटकालीन सैकड़ों प्राचीन पाषाण प्रतिमायें। मेरा अन्वेषण इस माँग का एक सशक्त प्रमाण है। इसके लिए मेरी पुस्तक-मिथिला की प्राचीन देवी-देवताएँ प्रमाण रूप प्रस्तुत की जा सकती है। मैथिली भाषा अत्यंत प्राचीन है। इसकी अपनी लिपि रही है। इसे प्रमाणित करती है मेरी पुस्तक मिथिलाक्षर उद्भव और विकास। यह पुस्तक प्राचीन मूर्ति अभिलेख और कुछ प्राचीन पाण्डुलिपियों पर आधरित है। मुझे खुशी है, यह पुस्तक भाषा की माँग के लिए केन्द्रीय सरकार के समक्ष प्रमाण के रूप में प्रस्तुत की गई है। इसी तरह यदि दर्शनीय मिथिला, मिथिला राज्य की मांग के औचित्य-रूप में प्रस्तुत की जाय तो और किसी भी प्रमाण की आवश्यकता नहीं। प्राचीन मिथिला के चिंतन से सैकड़ों वर्षों तक भारत की सांस्कृतिक एकता और सभ्यता का विकास प्रभावित होता रहा था। यह पुस्तक इसका दर्शन है। इस पुस्तक का एक-एक लेख, इसके एक-एक सर्वेक्षण इसमें संकलित है। मुझे विश्वास है आज नहीं तो कल मिथिला वासी इस विषय का महत्त्व समझेंगे और इससे पुरातात्विक लाभ उठाने का प्रयास करेंगे। सर्वेक्षण जिन स्थानों के हुए हैं मानचित्र एवं सूची है। यही कार्यक्रम मेरा सम्पूर्ण मिथिला का है।'

सत्यार्थीजीक ई कथन हिन्दी मे अछि, जे हूबहू हुनक 'दर्शनीय मिथिला नौ खण्ड' नामक पोथीकेँ माध्यम स उतारल अछि। एहि कथन स बुझना जाइत अछि जे सत्यार्थीजी भारत सरकारक समक्ष मिथिलाक पुरातत्व आ इतिहास स संबंधित जानकारीक लेल छोट-छोट पोथीक निर्माण करैत छलाह। ई महज संयोग अछि जे सत्यार्थी जीक इ गप दर्शनीय मिथिलाक 30 मई, 2003क तारीखमे पोथीक आमुखमे प्रकाशित अछि। ओना मिथिला-मैथिलीक माँग पर अटल बिहारी वाजपेयी जीक सरकार द्वारा 2003 दिसम्बर माह में मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूची में शामिल कयल गेल। पूर्वहि जानकारी दयने छी जे दर्शनीय मिथिला नौ खण्ड, मात्र तीन प्रतिमे प्रकाशित भेल छल, जाहिमे मिथिला मैथिली स संबंधित गप सत्यार्थीजी लिखने छैथि। एहि बातक बेसी संभावना अछि जे मिथिलाक पक्षमे सत्यार्थीजी लिखबाक ई आशय होयतनी जे कि सत्यार्थी जीक द्वारा दर्शनीय मिथिला आ अन्य पोथी, जे फोल्डर बा छोट-छोट पुस्तिकाक रूपमे प्रकाशित कयल गेल, ओकर एक मात्र उद्देश्य मिथिलाक गौरवकेँ समाजक समक्ष उपस्थापित करब छलैन्ह ताकि मिथिला-मैथिलीक आंदोलनमे एकर इस्तेमाल एकटा प्रमाणक रूपमे कयल जा सकय। एहि बातक संभावना अछि जे हिनक पोथीकेँ प्रमाणक रूपमे राखल गेल होइन। मैथिली के अष्टम अनुसूचीमे आनब कतेको वर्षक मुद्दा छल, जे आदरणीय अटलजीके द्वारा फरिछाओल गेल। कतेको मैथिली प्रेमी व्यक्ति आ संस्था अभियानी बनि एहि काज स जुड़ल छलाह। दरभंगा आ मधुबनीये टा नै बल्कि पटना राँची, इलाहाबाद आ दिल्लीमे जुड़ल मैथिलीक विकास लेल प्रयत्नशील आदमी सब एहि लेल छोट पैघ आंदोलन चलबैत छलाह। एक बेर मिथिला-मैथिलीस सम्बन्धित कोनो गपक दौरान शंकरदेवझा कहने छलाह जे 'सत्यार्थी जीक पोथीके उपयोग मैथिली क अष्टम सूचीमे शामिल करय सँ

सम्बन्धित कोनो प्रस्तावमे एकटा साक्ष्यक रूपमे शामिल कयल गेल छलनि'।

मैथिली भाषाक आंदोलनमे भारत सरकारके देल गेल प्रस्तावमे सत्यार्थीजीक पोथी लगलिन वा नै लगलिन, ओ एकटा अलग मुद्दा अछि, मुदा ई सहज रूपस अनुमान लगायल जा सकैत अछि जे कोनो मैथिली साहित्यकार स अलग ऐतिहासिक महत्व स संबंधित पुरातात्विक धरोहर पर काज करनिहार सत्यार्थीजीक योगदान मैथिली लेल सेहो भेलनि। इहो एकटा बिडम्बना अछि जे पुरातात्विक एवं आध्यात्मिक 'दर्शनीय मिथिला' प्रथम पुष्प स नवम पुष्प धरि पोथीक प्रकाशन करय वला सत्यार्थी जीक चर्चा इतिहास आ पुरातत्व विषयक क्षेत्रमे काज करय बला व्यक्ति सबहक लिस्ट मे नै राखल गेल अछि। पिछला एक डेढ़ दशक मे हम इतिहास आ पुरातत्व स संबंधित काज करय के दरमियान कतहुँ हुनक लिखल पोथीक चर्चा नीक जेका नै देखने छी। गंभीरताक संग सत्यार्थी जी जगह जगह घुमैत छलाह आ फुर्सत पाइब जगह-जगह गेल आ घूमल गामक चर्चा करैत पोथी लिख दैत छलखिन्ह। हुनक पोथीकेँ विशेषता छैन्ह जे हुनक पोथीमे मन्दिर आ मूर्तिक संकलन नीक जेका कयल गेल अछि, जेकरा आधार बना कय कोनो शोधार्थी द्वारा दरभंगा आ मधुबनी जिला स संबंधित पुरातात्विक इतिहासक लेखन कयल जा सकैत अछि। सत्यार्थीजी के ऊपर एकटा आलेख पाँच छरू बरिख पहिने, आर. के.कॉलेज, मधुबनी के इतिहास विभाग के तत्कालीन विभागाध्यक्ष प्रोफेसर नरेन्द्र नारायण सिंह श्निरालाश् द्वारा ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगाक प्राचीन भारतीय इतिहास,पुरातत्व एवं संस्.ति विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठीमे शोध आलेख पढ़ल गेल छल। एहि पंक्तिक लेखक द्वारा किछु बरख पहिने इंडियन हिस्ट्री कॉग्रेसक अधिवेशनमे सत्यार्थीजीके ऊपर एकटा शोधालेख पढ़ल गेल छल आ ओकर प्रकाशन दोसर ठाम स भेल छल। आब ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगाक प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्व एवं संस् ति विभागक किछु शोधार्थी सत्यार्थीजीक पोथीक उल्लेख अपन-अपन शोध प्रारूप मे करबाक कोशिश कयलनि अछि।

सत्यार्थीजीक पोथी एहि इलाकाक पुरातत्वक उपलब्ध स्रोत अछि। एहि पोथीकेँ अध्ययनक मुख्य धारामे शामिल करेबाक लेल फेर स प्रकाशन आ ओकर मैथिली अनुवाद आवश्यक अछि। बुझना जाइत अछि जे सत्यार्थी जी स्वास्थ्य विभागस सेवानिवृत्त भेलाक बाद मिथिला-मैथिलीक आंदोलन में एकटा योद्धा बनि कय अमरावती जेहन महत्त्वपूर्ण आ वैभवशाली नगरीक खोजमे लागल छलाह आ घुमैत घुमैत कमोबेश पुरातात्विक महत्त्वक लगभग एक सौ स्थानक सर्वेक्षण कर चुकला। सत्यार्थीजीक योगदानक मूल्यांकन पुरातत्व आ मिथिला-मैथिलीक प्रयोजन हेतु कयल जयबाक चाही।

अंततः इ कहबाक मे कोनो दिक्कत नै होयबाक चाही कि सत्यार्थीजी नै तय इतिहासक छात्र छलाह आ नै पुरातत्व के, बावजूद मिथिलाक इतिहास आ पुरातत्वक सङ्गे सङ्ग मैथिलीक प्रति अगाध प्रेम आ रूचि छलैन्ह। अपन व्यक्तिगत रूचि आ लगावके कारण सत्यार्थीजी ऐतिहासिक-पुरातात्विक अन्वेषणक कार्य कयलाह, जाहिक परिणामस्वरूप एहि क्षेत्रमे यत्र-तत्र राखल विभिन्न प्रकारक शताधिक, ज्ञात-अज्ञात प्रतिमा आ पुरातात्विक स्थल कोनो एक ठाम एकत्रित भय सकल आ हुनक अन्वेषित स्थलस प्राप्त प्रतिमा प्रतिमा विज्ञानक अध्ययनके मुख्य धारामे एकटा स्रोतक रूपमे शामिल भेल जे मिथिला आ मैथिली भाषाक विकासमे शामिल भेल। निःसंदेह कठिन काज करैत शताधिक प्रतिमाक संकलन करनिहार पुरातात्विक अन्वेषक मैथिली सेवी सत्यनारायण सत्यार्थीजीके मिथिला आ मैथिलीक इतिहास मे याद राखब जरूरी अछि।

❑❑❑



मैथिली, मैथिल आ मिथिला राज्य संघर्ष, दश-दिशा ।

✍ श्री विष्णु देव झा ''विकल''

1957 ई. नवम्वर मासक प्रारम्भ मे हमरा गाम मे श्री सीताराम झा प्रधन वैद्य जे जिला परिषद द्वारा स्थापित आयुर्वेदिक स्पताल मे हमरा गाम मे पदस्थापित छलाह। श्रीमान् प्रधन वैद्यजी सरिसव ग्रामवासी सोति ब्राह्मण छलाह आ मातृभाषा भूमिक समर्पित व्यक्तित्व छलाह आ सुव्यवस्थित संस्थाक समवाहक छलाह। समाजक सुशिक्षित व्यक्ति सभ सँ सम्पर्क कऽ आदर्श मैथिली परिषद आसीक स्थापना भेल। हम ओहि काल खण्ड मे चारिम वर्गक छात्र नावालिग रही किन्तु ओहि समय मे हमरा मे भाषा आ भूमिक सेवा भाव प्रगाढ़ छल तैं हमरो एहि संस्थाक कार्यकारिणी मे अनुशासित सदस्यक रूप मे राखल गेल। एहि संस्था द्वारा प्रथम कवि सम्मेलन 24-12-56 के कैँ प्रवर साहित्यकार हमर साहित्य पिता गोलोकवासी कवि चूड़ामणि काशि कान्त मिश्र ''मधुप'' जीक अध्यक्षता मे कवि सम्मेलन भेल जाहि मे हम अपन पहिल कविता ''पफाटल पुराण'' शीर्षक कविता पाठ केने रही जेकर सम्मेलन प्रति मधुपजीक गोलोक गमन धरि सुरक्षित छलैन्ह आ हमर प्रथम पुस्तक 1982 मे हुनके निर्देशन संग मार्ग दर्शन मे छपल छल आ ओ पुस्तक भूमिका ''कण-विकिरण'' शीर्षक नाम सँ लिखल गेल आ ओ ''मानसरक मुक्ता जे हमर एकादश पोथीक रूप मे पुनः मुद्रण मे जेबाक विचार कऽ रहल छी।

1956 सँ अध्यावधि जतेक हम कवि, कवि सम्मेलन आ संस्था के देखल सुनल ओहि मे 1975 धरि अनुशासित अवधि छल आ आब अनुशासित आ मैथिली केर गायक बादक हम सभ विकौआ भऽ गेल छी जे हमरा अपन पफाटल पुराणक अनुभूति भऽ रहल अछि। संक्षिप्त मे एतबे कहबाक अछि जे मातृभाषा, मिथिलाराज्य जे पूर्व मे सार्वभौम सम्पन्न एकटा राष्ट्र छल। राज तंत्रक युग मे मिथिलाक राजा जनक छलाह जकर राजधनी जनकपुर छलैक जे सम्प्रति नेपाल मे पड़ैत अछि। अंग्रेजी हुकुमत मे अंग्रेज आ नेपालक सम्झौता भेलैक जाहि मे मिथिलाक आठ गोट जिला जे नेपाल मे मधेश कहल जाइत अछि आ नेपालक दू गोट जिला दून आ दार्जिलिंग पड़लैक भारत मे। मिथिला दू भाग मे बँटि गेलैक। हमरा सभक भाषा आ भूमिक संघर्ष मे सपफलता नहि भेटि रहल अछि। मैथिलक आ मैथिला केर संस्थाक बढ़ोतरी केर गति द्रुत गति सँ बढ़ैत गेलैक। हमरा सभक पदलोलपुता आ अपन यश-सम्मान एकर मुख्य कारण अछि। हम साहित्यकार सभ विगत 25-30 वर्ष पर अपन गरिमा विसरि गेल छी। परम अनुशासन हीन आ सट्टेबाज भऽ गेल छी आ पदलोलुपत, पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल आ ककरो पर विश्वास नहि बांचल। मिथिलांचल क एक एक टा गिनबैत कैक गोट ग्रंथ उपन्यास बनि जायत। तैं संक्षिप्त मे एकजुटताक पसाही पजारय पड़त।

तैं एतय हम अपन एकटा भाषा आ भूमि हेतु संघर्ष परक रचना अंकित कऽ रहल छी। ओना मैथिली संस्था सभक एकीकरणक प्रयास सर्वप्रथम 80 क दशक मे सहरसा सँ मैथिक प्रधन प्राध्यापक चलौल गेल जाहि मे हुनक पत्रक समर्थन सर्व प्रथम बाबू साहेब चौधरी द्वारा अ0 भा0 मिथिला संघ, कलकत्ता सँ कयल गेल आ दोसर हमरा द्वारा आदर्श मैथिली परिषद दरभंगा सँ कयल गेल। समग्र राष्ट्र (भारत) सँ हुनका मात्र 10 टा संस्थाक समर्थन आ स्वीकृति भेटि सकलैन्ह आ अभियान समाप्त भऽ गेल।

अन्तर राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, विरार (महाराष्ट्र) मे संघर्षक दशा-दिशा पर हमर आलोक बाद महासचिव डा0 वैद्यनाथ चौधरी द्वारा सम्पूर्ण देशक मैथिली, मिथिला संघर्ष हित सभ संस्था सभ के दूरभाष किम्बा पत्र द्वारा सूचित कऽ म0 म0 ठाकुर महाविद्यालयक सभागार मे बैठक आयोजित कयल गेल जाहि मे मात्र दरभंगाक संस्था सभ आ मधुबनीक एकटा संस्था एहिकाक श्वेताम्बर बाबू उपस्थित भेलाह आई सँ तीन वर्ष पूर्व आ पूनः बैठक एकमासक बाद रहिका मे आयोजित हेबाक विचार सर्व-सम्मति सँ भेल जे अद्यावधि नहि भेल। एतबा तऽ हमरा अनुसारे जाधरि हमरा सभ साहित्यकार ......सभ ग्रसित व्याधि सँ मुक्त नहि होइत छी ता धरि हम सभ सपफल नहि हयब, अंत मे हमर एहि विषय परक इ गोट रचना देखल जाय।

1.

लुटैत वाणी
के लूटि रहल अछि
करूण काव्य ?
के लूटि रहल अछि
लक्षक लक्ष
ललित लावण्य लोकक वाणी ?
लोकोकित गढ़ल छै पूर्व जखन
अधिकारक हित संघर्ष ....
आ ''शान्तिक हित क्रांति'' चाही
तक्र की लिखी,
शास्वत सरस, सरिताक काव्य ?
अपमान मान सम्मान ककर,
जे लूटय शान्तिक स्वर ?
हम की करू
कोन पथ अछि स्वस्थ ?
शान्तिक स्वर

सास्वतक पृष्ठ पोषक।
जीवन संकेतक बालकिरण
कर्तव्यक पृष्ठ पोषक।
की छोड़ि दी आत्मनाद ?
की छोड़ि दी कोटि-कोटि सन्तानक
मायक नोरक रून्न रूप ?
रोहितक जन्म दाव,
आयाचीक अंकुर दाव,
ओहि मायक
जे मौन अछि ?

2.
लागत कखन पसाही
हमरा अपन ताज चाही,
हमर अपन राज चाही।
मिथिलाक सर्वागिन विकास,
हमर अपन अहम अधिकार
फुटकरबा बानरो झपटय
बाज बुझय पाही।। 1 ।।
सुनैत सुनैत कानो बहीर,
फेसबुक पर भेल नैनो मलीन।
अपनहि ताल पर नाचैछी
बिजक अहम मे सभ छी प्रवीण।
अहिवातक टेमी जरैत छै तखने,
जँ दीप तेल बती छै सभ एकटार
बिनु एक भेने सभटा असम्भव
तखन तऽ निर्रथक लैत ढाही ।। 2 ।।
जा ने बोझ झमटगर बान्हब
छिन्न भिन्न सभ हेब करब
जन गण मन सभ आंकि रहल
अपटी खेत सभ मरबे करब
युग-युग क इतिहासक पन्ना
भड़ल पड़ल विस्तार सँ
चेत जाउ हे मैथिलीक संताति
आंकि रहल सभटा लाही ।। 3 ।।
विकलता सकल केर
भूमि भाव भाषा पर
अनुरागक आंतर मे छै
सकल बेतहासा पर
आशा अछि खाम्ह बनहायत
हम तऽ विकल छी हे ।। 4 ।।



मिथिलामे दलित दर्शन

✍ डॉ0 राजकुमार मल्लिक

मिथिला बिहार केर पावन व पूज्यनीय भूमि अछि जाहि जगह माता जानकीकेँ जन्मक स्थल व कवि कोकिल विद्यापति कर्म भूमि अछि। मिथिलांचलक भाव, मान-सम्मानक आइ विश्व विख्यात अछि जाहिमे मिथिला पेंटिंग लेल विश्वमे अपन ख्याति हासिल कलेलैझ।'

दलित शब्दक व्याख्या करबामे दलित होबाक नाते मन लज्जित व गुस्सा सँ तिलमिला जाइछि दलित के अर्थ होइत अछि- ह्दय गाठो द्वेग द्विधा तू न विद्यते हिन्दी शब्द कोषक अनुसार, दलित-इटल, चीरज, फाइल, फाटल, कुचलल, अछुत अन्त्यज्य, अस्पृश्य होइत अछि। डॉ0 रूद्रदेव त्रिाठी सस्कृत विद्वानक अनुसार 'दल'मे 'इत्' प्रत्यय लगौलासँ दलित शब्द बनल अछि।

दलित मूल रूपसँ मराठी भाषाकेँ एकटा शब्द अछि जाहिमे लेल दमन व शोषण के मारल व शिकार भेल लोग अछि सब दिन दबाइल के दवाइले रहि गेल बाबा साहेब अम्बेडकर इशब्दक प्रयोग सामाजिक, आर्थिक व उत्पीड़ितक शिकार भेल लोग के लेल संज्ञा देने अछि दलित आन्दोलन व अग्रदूत ज्योति राव फूले पेरियार, बाबा अम्बेडकर, बाबा काशीराम, जगजीवन राम, मिथिला विभूति भोला पासवान शास्त्री छल महल मानव कृपासँ दलित के दशा व दिशामे तनिक सुधार भेल अछि। दलितक आगाँ सबसे बरखा चुनौती जातिवाद पायत जगतीकरण साज नवका आर्थिक नीति, अशिक्षा, बाल-विवाह, रूढ़ीवादी व जादू टोना खासकेँ मिथिला पावन भूमि पर जाइत-पाइत बड़ी घिनौना हरकत बनल अछि। दलित के बच्चों जन्मइते, मात्र 60 प्रतिशत मानसिकता गिरा दैत अछि। जे एकरा छोटका व नीच जाइतमे जन्म भेला सँ भेदभाव के दुनियामे जीवह पड़ि अछि। हमरा देशमे सबसे पहिल बेड़ डॉ0 अम्बेडकर राजनीतिक व सामाजिक चिन्तनक बोल अपन मनसा बनैले। जाहि सँ दलित समाज केँ लोग जागत व अपन हक-हक कुकुर के समझत मुदा इ काम गारल मुरदा उखड़बाक काम छथि। मिथिला के पावन भूमिमे दलित महिला साक्षरता व तनिक सुन बुझाइए अखिनो दलित समाज जेना डोम, मुसहर, मेहतर लड़की के कम उम्रमे विवाह होइत अछि। एवं जेकर कारण इ समाज पाछा के पाछा अछि। मिथिला दर्शनमे हमरा सबक विकास होबाक चाही। सामाजिक काम केनिहार सब लागल अछि। दलित सजग भए रहल अछि।



मिथिला राज्य के औचित्य (आन्दोलन परिदृश्य दशा आ दिशा)

௴ दीपक कुमार झा

जहां तक मिथिला राज्य के लेल भ रहल आन्दोलन के गप्प अछि तँ, नहिं दशा ठीक अछि आ नहिं दिशा ठीक अछि। हँ ! सोच धरि अंशतः बढ़ियां अछि। अंशतः एहि लेल जे, मिथिला राज्य कें लेल समस्त मिथिलावासी नहिं सोचौ छी। स्यात किछु प्रतिशत मिथिलावासी, मिथिला राज्य बनेबाक प्रति जागरूक अछि। मिथिला राज्य के औचित्य की छैक। से बड्ड बेसी औचित्य छैक। किएक तँ मिथिला क्षेत्र, समाजिक, सांस्.तिक, आर्थिक आ व्यवसायिक रुपे बड्ड बेसी पिछड़ल अछि। जा धरि जनता के प्रवल इच्छा राज्य मे विकास के प्रति सशक्त संवेदनशील नहिं रहत, ता धरि सरकार के मंशा मिथिला के प्रति उदासीन रहत। सौ बरख सँ मिथिला राज्य के मांग उठि रहल अछि। मुदा ढाक के तीन पात वाला मुहावरा सिद्ध भ जाए अछि। आजादी के पहिने 1912 मे जखन बंगाल प्रोविंस सँ निकलि बिहार अलग राज्य बनल तखनहि सँ मिथिला राज्य के मांग तेज होमै लागल। तहिया सँ वर्तमान धरि, 1936 मे बिहार सँ अलग उड़िसा राज्य स्थापित भेल आ 2000 मे झारखंड राज्य के निर्माण भेल। मुदा, मिथिला राज्य के अवधारणा कें गतिशीलता नहिं भेटल।

टुघरि टुघरि कें सौ साल तक आन्दोलन चलल, लेकिन कोनो आन्दोलन एहेन सामर्थ्यवान नहिं रहल जे, सरकार कें राज्य बनेबाक लेल मजबूर करितथि। अनेक गणमान्य लोकनि मिथिला राज्य कें लेल आगू बढल मुदा सार्थक डेग के अभाव मे आन्दोलन दम तोड़ैत गेल। मिथिला के लोक देशे टा नहिं बल्कि विदेश तक प्रत्येक क्षेत्र मे परचम लहरा रहल अछि। बिहार के राजस्व मे प्रमुख भूमिका निभाबै अछि, तथापि मिथिला के लेल कोनो सरकार कारगर साबित नहिं भेल। मिथिला के लोक कें मजदूरी करेबाक लेल देश के अनेको भाग मे भेजल जाइ छै। जँ मिथिला सँ लेबर सप्लाई बंद भ जाएत तँ, देश के चारु तरफ पसरल फैक्ट्री सब मे काज के करत। किएक तँ सरकार जानै छै जे, बिहार के जनसंख्या मे 65 प्रतिशत तक आबादी मिथिलावासी के छैक। जखन पलायन रुकि जेतै तँ उद्योग धंधा पर बेसी असर पड़तै। लोकल मजदूर महग भेटतै, एहि सब मौनोपौली के कारण, मिथिला राज्य के मांग कें केंद्र सरकार वा राज्य सरकार टारैत आबि रहलै। पुर्वो मे एहने किछु एहने अवधारणा सरकार के छलै। जखन बंगाल सँ बिहार अलग भेल, तखनहि सँ सरकारी तंत्र आ बिहार के किछु चाटुकार सब, मिथिलावासी कें मिथिलांचल कहि कें षड्यंत्र रचने शुरू देलक। जे कि अनवरत रुपे एहि शब्द कें प्रचारित प्रसारित करै मे मीडिया वाला सेहो बढि चढि कें हिस्सा लेलक। जखन मिथिला के रहन सहन सांस्.तिक सामाजिक परिवेश अलग अछि, भौगोलिक स्थिति अलग अछि, अपन लिपि अपन साहित्य अछि, उपजाऊ धरती अछि, कर्मशील आ मेहनती लोक अछि, तखन मिथिला के लोक किएक गरीबी बेरोजगारी के दंश झेलत, किएक कुपोषण के कारण, दबाई के अभाव मे लोक दम तोड़त।

देश के पैघ सँ पैघ बुद्धिजीवी आ राजनितिज्ञ मिथिला क्षेत्र सँ रहितो बाढि मे महामारी मे मिथिला के लोक किएक ग्रसित रहत। मिथिला मे नहि आईआईटी नहिं आईआईएम, जर्जर अस्पताल। कोटा आ बंगलौर मे कर्ज ल कें धिया पूता कें पढाबै लेल नाकोदम भेल माय बाप सब। आइ जँ प्राथमिक शिक्षा मे मातृभाषा कें महत्व देल जाइतै तँ, लाखो लोक कें रोजगार भेटल रहितै। धिया पूता मातृभाषा मे पढि विकसित भेल रहितै। मिथिला के विकास मे सब सँ पैघ बाधक छै,मातृभाषा मे शिक्षा सँ वंचित करब। सबटा सरकार के अकर्मण्यता के कारण एहेन स्थिति मिथिला क्षेत्र के बनल अछि।

एहि सब के मात्र एकेटा कारण अछि मिथिला राज्य। जा धरि अलग मिथिला राज्य नहिं बनत ता धरि मिथिलावासी अभाव के दंश झेलैत अभागा बनि छिछियाबैत रहत। जहां तक मिथिला राज्य आन्दोलन के सवाल अछि तँ, हम सब एखन धरि लकीरे पिटैत एलहुं। सौ साल पहिने एना भेल, इ भेल, ओ काज केलथि ओ टांग अड़ेलथि, ओ टांग खिचलथि। आ हम बेसी काबिल,किएक तँ हमरा लग आन्दोलन के बेसी दस्तावेज अछि।

मुदा आब एहि सब सँ काज नहिं चलत। मात्र मुठ्ठी भरि लोक झंडा बैनर लगा कें बसि जायब, सड़क पर नारा लागा देबै, सरकार कें ज्ञापन द देबै, एहि सब सँ मिथिला राज्य नहिं भेटत आ नहिं सफल भ पायब। जा धरि मिथिला के जनता नहिं जागत ता धरि मिथिला राज्य के सपना अधुरा रहत। कतबो टेक्नोलॉजी युग आबि गेल अछि, मुदा 95 प्रतिशत मिथिलावासी एखनो धरि मिथिला राज्य सँ अवगत नहिं अछि। जमीन स्तर पर नहिं बल्कि युद्ध स्तर पर घर घर जा कें जनता कें जागरुक करै पड़त। वर्तमान मे अनेक संस्था आ संगठन मिथिला राज्य कें लेल आन्दोलन क रहल अछि, धरना प्रदर्शन क रहल अछि ! सोशल मीडिया पर लागत जे समस्त मिथिला अहल भोरे मिथिला राज्य ठाढ क लेल।

मुदा जतेक जांघ पर ताली बाजै छै, ततेक ढोलक पर नहिं बाजै छै। किनको आन्दोलन सँ केओ खुश नहिं रहै अछि। सब कें अपने काज नीक बुझना जाइ छै, जाहि मुंडेर मुंडेर मतिर्भिन्ना के कारण सौ साल सँ चलि रहल आन्दोलन एखन धरि सफल नहिं भ सकल। आन्दोलन कें सीख लेमै पड़त तेलंगाना सँ, बंगाल सँ, पंजाब सँ। जते के जनता, घर द्वारि छोड़ि, अपन आपसी मनमुटाव कें बिसरि, अपन अहंग कें बिसरि, अपन धन संपत्ति ओहदा कें बिसरि

कोनो भी समाजिक सरोकार के काज वा आन्दोलन मे निरूस्वार्थ योगदान दै छैक। मिथिला के लोक कें सब बराबर सम्मान दिऔ, सब गोटे कें आन्दोलन मे जोड़ल करियो, मिथिला राज्य के औचित्य पर, हुनका सब संग गहन चिंतन करियो, लाभ हानि कें फरिछाबियौ। तखन सर्वहारा समाज राज्य के मतलब जानत। तहन संग देत। जहिया मुठ्ठीयो भरि सर्वहारा समाज आन्दोलन सँ जुड़ि जाएत, तहिये केंद्र के सिंहासन हिलै लागतै मिथिला राज्य के सपना साकार होएत। ग्रियर्सन एना कहलकै, अटल जी एना कहलकै, जवाहरलाल नेहरू किछु कहलकै, मोदी जी किछु कहै छै। एहि सब सँ काज नहि चलत। हमरा सब कें भूतकाल सँ सबक लैत, वर्तमान परिदृश्य कें देखैत, सामुहिक निति बना कें मैदान मे उतरै पड़त। जा धरि लुत्ती (चिंगारी) आगि नहिं बनत ता धरि खापरि पर रोटी नहिं सेकाऔत। आन्दोलन कें स्वरुप देमै पड़त, निष्ठावान बनै पड़त, संकल्पित होमै पड़त। देश विदेश मे रहि रहल बुद्धिजीवी मिथिलावासी सँ कहै चाहब जे, अहां सब मिथिला राज्य कें लेल अपन अपन विचार, सरकार कें पोर्टल पर प्रेषित करैत रहु, आन्दोलनकारी आ आन्दोलनरत्त संस्था सब कें, अपन सुझाव सेहो देल करै जाउ।

जखन चारु तरफ सँ हवा चलत तखनहि आगि सुलगत। आ जा धरि दावानल नहिं भड़कत ता धरि कोनो सरकार सुनै वाला नहिं अछि। सरकार के द्वारा छोट राज्य बनेबाक अवधारणा पर मिथिलावासी के उम्मीद तँ जागैत अछि, मुदा अविश्वसनीय सन्ह लागै छन्हि। तथापि नव जनरेशन सँ किछु उम्मीद अछि जे, एक नहिं एक दिन जरुर जागतै आ अपन स्वाभिमान कें सेहो जगेतै, मिथिला राज्य कें हृदय मे सेहो बसेतै। जहिया मिथिला राज्य बनि कें ठाढ भ जाएत, तहिया जरुर देखै जाइ जेबै की विकास के मामला मे उपेक्षित मिथिला क्षेत्र, कोन तरहें विकास रुपी ब्लास्ट करैत, सबटा राज्य कें पाछू छोड़ि शिखर पर पताका फहराबैत उदाहरण प्रस्तुत करतै।

मिथिला मे रहि कें वा प्रवास करितौ अनेकों मैथिल सेवी सब छथि जे मिथिला राज्य कें लेल अपन यथोचित योगदान दैत आबि रहल अछि, आ एखनहुं योगदान द रहल अछि। किछु नाम कें काज करैत जे सोझा मे देखि रहल छी, ओहि मे अखिल भारतीय मिथिला राज्य संघर्ष समिति के अध्यक्ष आ विद्यापति सेवा संस्थान के महासचिव, आदरणीय वैद्यनाथ चौधरी बैजू जी! जे कि दशको सँ मिथिला राज्य कें लेल आन्दोलनरत अछि। वैद्यनाथ चौधरी बैजू जी, मिथिला मे अपितु देश आ विदेशो मे मिथिला के प्रति लोक सब कें जागृति करैत रहै छथि। प्रोफेसर अमरेंद्र झा जी, शिशीर जी, डॉ धनाकर ठाकुर जी, मिथिला राज्य संघर्ष समिति के महासचिव उदयशंकर मिश्र जी, युवा वर्ग मे मिथिला राज्य निर्माण सेना के कर्मठ कार्यकर्ता राजेश झा जी आ आऔर बहुतो समर्पित लोक सब छथि जे की मिथिला राज्य कें लेल शिक्षा कें लेल आन्दोलन मे सदैव ठाढ रहैत छथि। कतेको कवि साहित्यकार लोकनि छथि जे परोक्ष अपरोक्ष रुपे मिथिला राज्य के मांग लेल आन्दोलन मे मजबूत रुपे ठाढ रहैत मिथिला के सेवा मे लागल रहैत छथि। कवि साहित्यकार विमल जी मिश्र, राम बाबू सिंह, किसलय कृष्ण, प्रविन नारायण चौधरी जी, हेलो मिथिला के संचालक धीरेन्द्र प्रेमर्षी जी, कवि राजीव एकांत जी, हेमंत झा बुराड़ी, गायक कलाकार विकास झा जी आ देश भरि मे अनेक कलाकार विद्वान समाजिक संस्था मिथिला राज्य के मांग, प्राथमिक शिक्षा मे मातृभाषा मैथिली लेल अग्रसर भेल मुखर रहै छथि।

हम 1998 सँ मुंबई मे रहैत छी।मिथिला राज्य आ प्राथमिक शिक्षा मे मातृभाषा मैथिली कें लेल सदैव समर्पित भ कें यथाशक्ति तन मन धन सँ, माँ मैथिली के सेवा करैत आबि रहल छी। मुंबई मे प्रवास क रहल मैथिल समाज कें सदैव जोड़बाक प्रयास करैत रहै छी। मुंबई मे मिथिला राज्य के मुद्दा पर, आ साहित्यिक सांस्.तिक कार्यक्रम बहुतो समय सँ चलि रहल अछि। 2015 के अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन विरार मुंबई मे, यथोचित योगदान द सकलहु। मिथिला मैथिल कें लेल अनवरत सेवा दैत जतेक भ सकै अछि करैत रहै छी। सुचारू रूप सँ कोनो कार्यक्रम के देखरेख, सँ ल कें अतिथि लोकनि कें लेल उचित व्यवस्था करै मे, मातृभूमि, मातृभाषा के तुक्ष सेवक बनि सेवा करैत रहै छी। हम मिथिला के एकटा समान्य सेनानी बनि मां मैथिली कें सेवा मे लागल रहैत छी। दुई दशक सँ निर्लोभ बनि मातृभूमि के सेवा करैत अपना कें संतुष्टि भेटैत अछि। हाल के मैथिली पुनर्जागरण यात्रा मे मिथिला के चारि टा जिला मे जागृति अभियान चलेलहुं। जाहि मे मधुबनी दरभंगा समस्तीपुर बेगुसराय बरौनी धरि के मैथिली पुनर्जागरण यात्रा मे अनेक मैथिल सेनानी संग रहथि। देश भरि मे जतै कतहुं मिथिला राज्य आ कि मातृभाषा आ समाजसेवा कें लेल जरुरी महसूस करै छी, ओहि ठाम जा कें यथोचित योगदान दै छी। भाषा साहित्य कें लेल, लोक कें मातृभाषा सँ जोड़ै कें लेल, ''मिथिला दर्पण पत्रिका'' दशको सँ प्रकाशन कराबै आबि रहलहुं। कोरोना के महाप्रलय मे, आ की बाढि के विभिषिका मे, अपना आप कें परवाह नहिं करैत, समाज लेल काज करब अपन फर्ज बुझि सेवा केलहुं। दुई दशक मे अनेक सम्मान भेटल। 2016 मे मिथिला मिथिला विभूति सम्मान, 2017 मे मिथिला रत्न सम्मान, 2018 मे मिथिला गौरव सम्मान आ मिथिला आन्दोलनी सम्मान, मिथिला साक्षरता सम्मान, 2019 मे मैथिली भाषा संरक्षण सम्मान, संत शिरोमणि लक्ष्मी नाथ गोसाईं सम्मान, संजीवनी संरझक सम्मान, उत्कृष्ट समाजसेवा पुरस्कार आदि। मुदा हमरा भारत रत्नो भेट जाएत तँ नहीं खुशी भेटत, जा धरि मिथिला राज्य नहिं बनत, मिथिलावासी कें विकास नहिं होएत। चाहै छी जे सब गोटे अपन गिलहरी योगदान दैत रहब तँ ओ दिन दूर नहिं जे मिथिला राज्य सेहो बनत, आ मिथिला के विकास सेहो संभव बनि पड़त। दस के लाठी बोझ बनै छै। सब गोटे कें पुरना बात सब बिसरि नव सिरा सँ मिथिला राज्य लेल समर्पित होमै पड़त। समय एक दोसर कें छोट पैघ समझै कें नहिं छैक। समय छै सब गोटे मिल कें मिथिला लेल सोचब। मिथिला राज्य बनत मिथिला विकास करत, तखनहि कोनो आन्दोलन के सार्थकता सिद्ध होएत।

जय मिथिला जय मां जानकी। ❑❑❑

मिथिला राज्य : किछु तथ्यात्मक विश्लेषण

✍ डॉ. महेन्द्र नारायण राम

भारत में स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात् कतेको राज्य बनाओल गेल अछि। कतेको बनाओल जयबाक आन्दोलन चलि रहल अछि। पान, मखान आ माँछ लेल प्रसिद्ध मिथिला राज्यक पुनर्स्थापना लेल लगभग एक सय वर्ष सँ आन्दोलन चलि रहल अछि।

1905 आ 1912 ई. मे बंगाल सँ फराक भेलाक बाद 1936, 1956 आ फेर 2000 ई. मे बिहारक विभाजन भऽ चुकल अछि, मुदा आइ धरि मिथिलांचल केँ अलग नहि कयल गेल अछि। मिथिलांचल लेल जानकीनन्दन सिंह, डॉ. लक्ष्मण झा, डॉ. लक्ष्मी नारायण सिंह सँ लऽ कऽ बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू', पंडित ताराकान्त झा, डॉ. बुचरू पासवानक संगहि कतेको महारथी लोकनि आइ धरि आन्दोलनरत छथि, आन्दोलनकारी लोकनि स्मार-पत्र समर्पण, पोस्टकार्ड आन्दोलन, सभा-सम्मेलन आयोजन, धरना-प्रदर्शन, मिथिला सँ दिल्ली धरि करैत रहलाह अछि। विद्यापतिक कालजयी रचना 'जय-जय भैरवी'केँ सस्वर प्रस्तुति ठाढ़ भऽ राष्ट्रगानक रूपेँ करऽ लगलाह अछि। कटिबद्ध लेखक, प्रतिबद्ध राजनीतिज्ञ आ सक्रियतावादी लोक 'भीख नहि अधिकार चाही, हमरा मिथिला राज चाही'क नारा प्रस्तुत कऽ रहलाह अछि।

देवार-लेखन, पत्र-पत्रिका, पुस्तकादि प्रकाशन, पर्चा-लेखन आदि कयल जा रहल अछि। मुदा से किएक? मिथिला राज्य किएक, से गम्भीर प्रश्न अछि। एहि लेल सभटा परिवेश आ परिनियम सभ किछु सक्षम अछि? एकर औचित्यपरक प्रश्नक समाधान ताकेँ पड़त आ हमरा ई बताब पड़त जे पृथक राज्यक स्थापनाक सभ शर्त हमरा लग विद्यमान अछि। संक्षिप्तः मिथिला राज्य किएक से निम्नांकित बिन्दु उद्धृत करब हमर अभीष्ठ अछि-

■ मिथिला राज्यक अलग स्थापना लेल जे विशिष्टता होयबाक चाही से मिथिला मे वर्तमान अछि। प्राचीन काल सँ विभिन्न युग मे मिथिलाक स्वतंत्र छवि ओ ओकर भिन्न व्यक्तित्व छलैक। बाल्मीकि कृत 'रामायण' आ गोस्वामी तुलसी कृत 'रामचरितमानस' मे एकर विस्तृत ओ अनुपम वर्णन छैक।

■ मिथिलाक इतिहास अति प्राचीन अछि। एकरा विदेह, तिरहुत, तीरभुक्तिक नाम सँ सेहो जानल जाइत अछि। एहि भूमिक निर्माण पचास हजार वर्ष पूर्वक मानल जाइत छैक। एतरेय ब्राह्मण, उपनिषद, कौटिल्यक अर्थशास्त्र, पतंजलिक महाभाष्य, जातक कथा आ जैन साहित्य (धर्मसूत्र, कालसूत्र)मे मिथिलाक इतिहास वर्णित अछि। धर्मग्रंथ-रामायण, महाभारत, पुराण, विदेशी यात्रीक यात्रावृतान्त, मुस्लिम यात्री आ इतिहासकारक वृतान्त, कतिपय हस्तलिपि आदि सँ एकर विशिष्टता परिलक्षित होइत अछि। नीमि, सीरध्वज, जनक काल सँ एकर निरन्तरता प्राप्त अछि। जनक कुल मे 53 (तिरपन) राजा राज कयने छथि। जैन आ बौद्ध साहित्य विदेह राजक त्याग-गाथा बता रहल अछि। 326 ई. पू. सँ 1097 ई. बा. मिथिला मगध शासनक छत्रछाया मे छल। एगारहम सदी सँ चौदहम सदी धरि कर्नाट राजा नान्यदव सँ शक्तिदेव धरि (1197 ई. सँ 1324 ई.) एतय राज कयलनि अछि। पश्चात् ओइनवार वंश (1355-1526 ई.) कामेश्वर सँ कंश नारायण, लक्ष्मीनाथ धरि कतेको राजा राज कयलनि। एकर बाद खण्डवला राजवंशक शासन महेश ठाकुर सँ प्रारम्भ भऽ सर कामेश्वर सिंह बहादुर धरि रहल।

■ सभ्यता आ संस्.तिक क्षेत्र मे मिथिलाक महानता रहल अछि। एकरा यज्ञ देश सेहो कहल जाइत रहल अछि। सीता एहि भूमि मे जन्म लेने छलीह। जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम (न्याय-शास्त्र), कणाद् (वैशेषिक) जैमिनी (मीमांसा), कपिल (सांख्य), सल्हेस, लोरिक, दीनाभद्री, सती बिहुलाक भूमि मिथिला थिक। भारतीय चिन्तन, वैदिक, जैन, बौद्ध-दर्शन आदि सहित मिथिला अपन यशस्वी अतीत मे भारतीय वाङमय केँ समृद्ध कयल अछि। सर्वधर्म समन्वयात्मक संस्कृतिक समागम मिथिला मे सदा सँ साकार होइत आयल अछि। वैदिक-तांत्रिक संस्कृतिक सुन्दर समन्वय एहि ठाम विद्यमान अछि। वैष्णव आ शैव मतक सामंजस्यक संग एहि ठामक मुसलमान छठि-चौरचन ओ हिन्दू दाहा मे जंगी बन्हैत अछि, झरनी-मरसीया गबैत अछि। एहि ठामक लोक-संस्कृति सेहो विश्व मे अद्वितीय अछि।

■ मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा संगीतक क्षेत्र मे सेहो देखल जा सकैत अछि। प्राचीन मिथिलाक शासक लोकनि संगीत आ संगीतज्ञ केँ संरक्षण दैत छलाह। नान्यदेव स्वयं 160 रागक प्रतिपादन कयने छलाह। हरिसिंहदेव, सिंहभूपाल, जगधर, जगज्योतिर्मल्ल वंशमणि झा, शुभंकर ठाकुर, घनश्याम मल्लिक, लोचन, साहेबराम, चन्दा झा एहि क्षेत्र मे उल्लेखनीय भूमिका निमाहलनि अछि। माँगनि खबास ओ दरबारी दास सम्पूर्ण देश मे अपन नाम प्रतिष्ठिापित करौलनि। पंचोभ ओ पंचगछिया घराना मिफिल मध्य जन-जन मे संगीतक सरिता प्रवाहित कऽ रहल अछि। अब्दुल गनी खाँ, रामचन्द्र झा, नचारी झा, विष्णुदेव मल्लिक, रामेश्वर पाठक, ब्रह्मदेव नारायण सिंह, सोहनी सिंह, हरिनन्दन जी सनक व्यक्तित्व संगीत केर दुनियाँ मे अपन नाम चमकौने छथि। पराती, सोहर, बटगमनी, तिरहुत, योग, उचिती, लोकगीतक अतिरिक्त भाओ-भगैत-गहवर गीतक संगहि जाति आधारित संगीत यथा-दुसाध लोकनिक सलहेस, मुसहर लोकनिक दीनाभद्री, यादव लोकनिक

लोरिक, मल्लाह लोकनिक दुलरा-दयाल, कमला-कोयला आदि लोकगाथा प्रसिद्ध अछि। पमरिया नट-नटी, बक्खो-बक्खिन, खोद-पारनी, पचनियाँ, बसौनी भाँटक समृद्ध परम्परा मिथिला मे आइयो पसरल अछि। मिथिला (मधबनी) पेंटिंग गाम-घरक देवार पर माटि-गोबर सँ बनल लोकचित्र, अरिपन, कोहबर भारतक अन्य क्षेत्र मे नहि देखल जाइत अछि। कसीदा, सन्जाप, सुजनी, लाहक लहठी, माटिक मूर्ति, खेलौना, कुम्भकारी, नूआँक छपाइ-रंगाइ, पित्तरि आ काँसक बर्तन, मोथिक पटिया, सनक बनल विभिन्न वस्तु, बाँसक वस्तु आदि सँ मिथिलाक अपन विशेषता छनि।

■ मिथिलाक साहित्यक विशेषता सेहो अद्वितीय छनि। ज्ञानक कोनो शाखा एहि सँ अछूत नहि रहल अछि। संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, तिरहुता आदि मे कतेको पोथीक रचना भेल अछि। काव्य-शास्त्र, भाषा-शास्त्र, व्याकरण, आचार-शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, तंत्र-शास्त्र, दर्शन, राजनीति, इतिहास, धर्म-शास्त्र, खगोल-शास्त्र, आ आन कतिपय शास्त्र मे रचना भेल अछि।

■ जँ भाषिक विशिष्टता राज्य निर्माणक आधार होइत अछि तँ मिथिला एहि मे पाछाँ नहि अछि। मैथिली भाषा ओकर विशिष्ट लिपि मिथिलाक्षर वा तिरहुता राज्य स्थापनाक दोसर महत्त्वपूर्ण स्तम्भ अछि। मिथिलाक्षर ब्राह्मी लिपि सँ मिलैत अछि जे अति प्राचीन लिपि अछि। ई देवनागरी सँ भिन्न होइत अछि। देशी-विदेशी विद्वान लेखक लोकनि मे कोलबुक (1801), बीम्स (1878 ई.), हार्नेल (1880 ई.), ग्रियर्सन (1880-84 ई.) आ केलाग (1893 ई.) सँ लऽ कऽ नगेन्द्रनाथ गुप्त, महामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री, डॉ. प्रबोध चन्द्र बागची, बाबू मणिगोपाल, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, डॉ. सुकुमार सेन आदि लोकनि मैथिली केँ आधनिक सम्भ्रान्त आ सम्मानित भाषाक श्रेणी मे आनि प्रतिष्ठित कयलनि। मैथिली एक मात्र भाषा अछि जे साहित्यिक परम्परायुक्त अछि। दशम आ ग्यारहम शताब्दी मे ई भाषा निश्चित स्वरूप ग्रहण कयलक। ज्योतिरीश्वर ठाकुर 'वर्णरत्नाकर' एकर सशक्त प्रामाण अछि। अवहट्ठ अपभ्रंश स्थान मैथिली छी। द्वितीय चरण (1350-1830) मे विद्यापति, गोविन्ददास, विष्णुपुरी कंश नारायण, महेश ठाकुर, जगदानन्द, नन्दीपति, लाला देवी, बुधि लाल, रत्नमणि संग कतिपय गोटे जँ एहि कालक मूर्द्धन्य साहित्यकार भेलाह तँ हर्षनाथ, चन्दा झा, लालदास, रघुनंदन दास द्वितीय चरणक आधुनिक मैथिलीक वर्तमान स्वरूप लेलनि। बिहार, बिहारक बाहर कलकता, बनारस विश्वविद्यालय आदि मे मैथिली के स्वीकार कयल गेलै तँ सर आशुतोष मुखर्जी, प्रथम प्राध्यापक पंडित खुद्दी झा, बबुआजी मिश्र सनक व्यक्तित्व मैथिली भाषिक विशिष्टता मे अग्रणी भूमिका प्रदर्शित कयने छथि।

■ 1931 ई. क जनगणनाक अनुसार मैथिली भाषा-भाषी मिथिलांचल मे 1,39,2300 (एक करोड़ उनचालिस लाख तैस हजार) संख्या अछि तँ वर्तमान मे लगभग चारि करोड़क लगपास चलि गेल अछि। ई संख्या कन्नड़, उड़िया, मलयालम, कश्मीरी, असमी सँ बेसी अछि।

■ शब्दकोष आ व्याकरणक दृष्टि सँ एकर स्थान स्वतंत्र अस्तित्व अछि।

■ मैथिली सर्वजनीय भाषा थिक। मिथिलाक अधिकांश भू-भाग मे बहुसंख्यक पिछड़ा आ पछुआयल वृहत्तर समाज निवास करैत छथि। एकरा दलित, उपेक्षित, शोषित अल्पसंख्यक, महादलित सभ शब्दक उपयोग सेहो कयल जा रहल अछि। मुदा से ई वृहत्तर समाजक लोक मैथिलीक अतिरिक्त कोनो आन भाषा नहि बजैत छथि आ नहि लिखैत छथि। एहि वर्गक पद्म श्री बिलट पासवान 'विहंगम' विद्यावारिधी राम लषण राम 'रमण', बिन्देश्वर मण्डल, सुभाषचन्द्र यादव, किशोरी यादव, डॉ. बुचरू पासवान, डॉ. जय नारायण यादव, तारानन्द वियोगी सहित मोती लाल मुखिया, डॉ. मेघन प्रसाद, कमलाकान्त भंडारी, डॉ. अशोक कुमार मेहता, डॉ. फूलो पासवान, डॉ. लालती कुमारी, डॉ. लालपरी देवी, डॉ. राजाराम प्रसाद, डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी ओ फजलूर रहमान हासमी, आचार्य नाजिम रिजबी, हसन इमाम दर्द, एजाज कामिल, सैफ रहमानी, शेख शब्बीर अहमद 'जख्मी', मोहम्मद युसूफ, सुश्री टी. फातिमा, स्व. रहमान मियाँ, डॉ. मंजर सुलेमान लोकनि मैथिलीक अभ्यर्थना में लागल छथि।

■ भौगौलिक दृष्टियेँ मिथिलाक एकटा संपृक्त ओ सुमेलित क्षेत्र उपलब्ध अछि। यद्यपि एकरा उत्तर में हिमालय, दक्षिण मे गंगा, पश्चिम मे गंडक आ पूब मे कोशी नदीक धार सँ सीमांकन, पूर्व मे कतेको लोकनि कयने छथि। ग्रियर्सन सेहो एकर पृथक नक्शा प्रस्तुत कयने छथि। तथापि वर्तमान सीमा निर्धारण लेल विचार-विमर्श आ तर्क सँ पुनर्विचार कयल जा सकैत अछि।

■ पूर्व मे मैथिली भाषी लोकनि पर विमर्श आ जनगणना सँ निकलल सबूत सभक समक्ष उपस्थापित भेल अछि। 1961 ई. केँ जनगणना मे भागलपुर केँ हिन्दी भाषी मानल गेल छल जखनकि ओतः 85.24% व्यक्ति मैथिली भाषी छलाह। मुंगेर केँ हिन्दी भाषी मानल गेल छल किन्तु ओतऽ 79.77% लोकनि मातृभाष मगही ओ मैथिली छल। हिन्दी भाषी मुजफरपुर क्षेत्रक 77. 48% लोकनिक मातृभाषा मैथिली छल। दरभंगा केँ मैथिली क्षेत्र मानल गेल छल जला 69.85% लोक मैथिली बजैत छल। इएह हाल पुर्णियाँक छल। ओकर 47.45% लोकक मातभाषा मैथिली छलैक। सहरसा मे मैथिली मातृभाषा मानल गेल छल आ एहि भाषाक बाजएबलाक प्रतिशत छल 65.93%।

■ मिथिलाक संस्कृति, रहन-सहन अपन छनि आ अपन विशिष्ट भाषाक लेल विश्व-प्रसिद्ध अछि।

■ बिहारक बँटवारा कोनो नव बात नहि अछि। जँ पुरनका बिहार सँ बंगाल, उड़ीसा अलग भऽ सकैत अछि, झारखंड अलग भऽ सकैत अछि, मिथिलांचल किएक नहि। एहि सँ स्वायत्तता पर कोनो असरि नहि भऽ सकैत अछि।

■ मिथिला क्षेत्रक आर्थिक दशा सोचनीय अछि। औद्योगिक विकास, मजदूरक पलायनता, कृषि-परक धंधा मे ह्रास,

सिंचाइक साधन नगण्य, जूट, चीनी, कागज उद्योग बन्न भऽ गेल अछि। मखान, माँछ, तम्बाकूक खेती पान सहित कतेको आर्थिक उपार्जन सँ सम्बन्धित धंधा मरणासन्न अछि। फलतः एहि ठामक वृहत्तर समाज पलायन कऽ देश-विदेशक अन्य भाग मे प्रवास का रोजी-रोजगार लेल चलि जाइत रहल अछि। जखनकि मिथिलाक विकेन्द्रीकरण मिथिलाक विकासक पैघ उपलब्धि भऽ सकैत अछि।

■ इतिहास मे विलीन भऽ गेल एहि क्षेत्रक 44 गोट नदी, 700 पोखरि, उत्तर भारतक अन्न-भंडार' केँ विकसित का लाभ लेल जा सकैत अछ।

उपर्युक्त अवधारणाक विपरीत राज्य विरोधी तर्क सेहो किछु लोकनिक द्वारा प्रस्तुत कयल जा रहल अछि जाहि मे 'मैथिल' शब्दक अर्थ संकोच कयल गेल बताओल आ रहल अछि। मिथिलाक जातीय-गौरव ज्ञान आ सजगताक विकास में बाधा बनल रहल अछि। एहि ठामक लोकके आत्मपहिचानक कमी छनि ऊपर सँ एहि क्षेत्रक निवासी बिहारक अन्य क्षेत्रक लोकनि सँ भाषा-संस्कृति, भूगोल आ आनो दृष्टि सँ भिन्न जानि पड़ैत छथि, मुदा बाहरी भिन्नता केँ मिथिलावासी दृढ़ एकताक रूप मे नहि बदलि सकलाह अछि। एहि तरहक जागृति केँ हुनका मे सर्वथा अभाव देखल जाइत छनि। मातृभाषाक प्रति जागरूकता एहि लोकनि मे कम छनि। अधिकांश लोक अपन बालक-बालिकाक अध्यापनक काज हिन्दी आ अंग्रेजी माध्यम सँ कराबऽ मे प्रतिष्ठा बुझैत छथि। तथा कथित सम्भ्रान्त वर्ग अपन घरहुँ मे बाल-बच्चाक संग मैथिली मे गप्प नहि करैत छथि। माय-बाबूक बदला 'पापा- मम्मी-डैडी'क प्रयोग धारा प्रवाह भऽ रहल अछि। फलस्वरूप एहि भाषाक अलोकप्रियता आ एकांगीपन बढ़ि गेल अछि। एहि विषय केँ पढ़ऽवला छात्र-छात्रा लोकनिक संख्या दिनानुदिन घटि रहल अछि। अष्टम अनुसूची मे अयलाक बादो एहि भाषा केँ रोगारपरक नहि बनाओल गेल अछि। एहि भाषा केँ देहातक गामक भाषा निरुपित कयल जा रहल अछि। मैथिली भाषा संगठनक दुर्दशा सभक समक्षे अछि। एहि भाषा सँ किछु वर्ग-विशेष केँ लाभ छनि आ ईहो लोकनि तथाकथित दोसर जाति, नस्लक लोक सभ केँ आगा बढ़ाबऽ मे पेंच लगबैत रहैत छथि। मैथिल महासभाक कट्टरपन रहल अछि। राज्य लेल चलाओल सामाजिक, राजनीतिक संगठनक पुरान पंथी आ एकांगी सोच रहलनि अछि। क्षेत्रीय जागरुकताक अभाव रहल अछि। एहि राज्यक प्रतीकक अभाव एवं प्रस्तावित राज्यक चौहद्दी भ्रमोत्पादक अछि। जनसंख्याक आँकड़ा दोषपूर्ण अछि। राजनीतिक दलक जे उचित आ सम्यक समर्थन भेटबाक चाही से नहि भेटल अछि, एहि ठामक लोक केँ मात्र भोटक लेल उपयोग कयल गेल अछि।

सफल ओ समर्पित नेतृत्वक अभाव रहल छनि। आन्दोलन चलाओल गेल अछि मुदा धारविहीन रहल अछि। कोनहुँ आन्दोलन तखनहि सफल होइत अछि, जखन ओहि मे निरंतरता रहै, मुदा से तकरहु अभाव अछि। राज्य स्थापनाक सही औचित्य नहि बताओल गेल अछि। राज्य विरोधी लोकनि 'मिथिला' क माँग केँ विघटनकारी साबित करबाक कुत्सित प्रयास करैत रहलाह अछि। राष्ट्रीय एकताक एकटा आओर क्षति पहुँचाओत से चिचिआओल जाइत रहल अछि। एकर अतिरिक्त आओरो कतिपय वितर्क सेहो देल जा रहल अछि।

मुदा से उपर्युक्त वितर्कक पश्चातो मिथिला राज्य अलग भेला सँ एहि सभ मे सुधार सम्भव थिक। ई अवश्य कहल जा सकैत अछि जे मिथिला राज्य स्थापना सँ वर्षो-वर्ष सँ पिछड़ल-पछुआयल वृहत्तर समाज, समाजक मुख्य धारा सँ जुड़ि सकत आ मनुक्ख होयबाक सभ अहमियत पाबि सकत। राज्य बँटला सँ हानि नहि लाभे-लाभ छनि। गाँधीजीक विकेन्द्रीकरणक नारा सफल भऽ सकैत अछि। छोट राज्य भेला सँ सभ तरहक विचार-निर्णय सकारात्मक सफलता भेटि सकत।

एहि तरहेँ वर्गीय, जातीय, भाषिक, लैंगिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आ भेदभावक अन्त हेतुएँ मिथिला राज्यक स्थापना आवश्यक अछि। मिथिला लेल एक निश्चित भाषा-संस्कृति, एक रंग जीवन-पद्धति आ भौगोलिक वातावरणेँ एकर साहित्यिक समृद्धि, शैक्षिक पूर्वाधार रहने मिथिला केर एकटा स्वतंत्र प्रदेश घोषित करबा मे कोनो दोष नहि अछि।

मुदा से कुछ बिन्दु पर पुनर्विचार करऽ पड़तनि, खास कऽ सरकार, आन्दोलनी ओ आम जन केँ। मिथिला राज्यक परिसीमा की हो। पुरनका मिथिला केँ इतिहास मे छिन्न-भिन्न कयल गेल अछि। मोरंग, सुनसरी, सप्तरी, सिरहा, धनुषा, महोत्तरी, सरलाही, रौतहट मिलाकऽ एकटा मिथिला राज्यक निर्माण हो, ताहि लेल नेपाल मे अलगे आन्दोलन चलि रहल अछि। जहाँधरि बिहारक प्रश्न अछि तऽ परिसीमन मादे एहूठामक आन्दोलनी लेखक-विद्वान, राजनीतिज्ञ, आमजन एक मत नहि छथि। तैँ एहि प्रसंगे कतिपय बिन्दु पर गहन-गम्भीर, चिन्तन-मनन-विवेचन-विमर्श अत्यावश्यक। से जल्दी आ तीव्रतर होअए तखने मिथिला, मैथिली ओ सुच्चा मैथिलक कल्याण सम्भव। कतबो धकिआओल जाय, कतबो पछुआओल जाय मुदा से बहि रहल परिवर्तन बिरड़ो-बिहाड़ि मे हमर सुन्दर सकारात्मक सपना जे देखि रहल छी, निश्चित रूपेँ साकार हएत से स्वतंत्र पृथक राज्य स्थापना भेनहि।



एना बनत मिथिला राज्य ?

✍ पं. अजय नाथ झा शास्त्री

वर्तमान समय मे सब सऽ कठिन प्रश्न अछि पृथक मिथिला राज्य केर गठन? कठिन एहि लेल किएक तऽ एकर जे समाधानक राह छैक ताहि लेल मिथिलावासी प्रयास करताह तकर लक्षण देखब बड़ कठिन अछि। प्रायः दस करोड़ मिथिलावासी एखन छी जाहि मे बेसी सं बेसी एक लाख लोग मिथिला-मिथिला करि रहल छी अर्थात लगभग एक हजार में एक गोटा। आब एहू एक लाख में लगभग एक हजार संगठन निश्चिते रूप सं अछि, बल्कि हम औसतन प्रति संगठन एक सय लोक पकड़लौह तऽ एक हजार कहलहुं, जखन कि जँ गानब तऽ एहि सँ बेसीये होयत। कतेक संगठन मे तऽ असगरे संगठनकर्ता छथि। ताहू मे सोशल मीडिया के जहिया सँ प्रादुर्भाव भेल तहिया सं तऽ नित नवीन संगठन राताराति बनि रहल अछि। तैयो जँ एक्के हजार संगठन पकड़ि कऽ चलैत छी तइयो इ सभ संगठन प्रायः मिथिला के विकास, कुरीतिक अन्त वा मिथिला राज्यक पृथक गठन तऽ चाहैत छथि मुदा, सभ अपन-अपन शर्त पर अर्थात अपन-अपन मिथिला राज्य? अर्थात एक हजार संगठन के अपन-अपन एक हजार मिथिला राज्य चाहियैनि? की ई संभव छैक? एहि अनुपात पर ध्यान दियौ रू दस करोड़ मिथिलावासी मे लगभग एक लाख समर्थन मे आ ओहि एक लाख मे हजार टुकड़ा मुदा कियो ई मानय लेल तैयार नञि जे हम मिथिला राज्य नञिबना सकैत छी?

महाराष्ट्र मे मराठी के अस्तित्व पर एक रती आँच उठैत छैक तऽ सभ मराठी बिना कोनो घोषित सांगठनिक आह्वान के लाखक लाख एक दिन मे सड़क पर उतरि जाईत अछि। तमिलनाडु मे जलीकटू जानवरक अर्थात बड़ऽदक पर्व पर प्रताड़ना नाम पर सर्वोच्च अदालत से रोक लगैत अछि तऽ एक-एक तमिल नञिमात्र तमिलनाडु मे बल्कि देश विदेश मे कतौह अछि हुजूमक-हुजूम अपन संस्.तिक रक्षा के नाम पर सड़ऽक पर निकलि पड़ैऽत अछि आ शांतिपूर्ण ढंग सं बिना कोनो लोक के परेशानी उत्पन्न कयने अनुशासित विशाल धरना प्रदर्शन के मिशाल कायम कऽ दैत अछि आ देश-विदेशक मीडिया मे छा जाइत अछि। कोनो सामुहिक खर्च नञि, कोनो विशेष सांगठनिक घोषणा नञि। कोनो नेता नञि बल्कि स्वरुचि सँ निकलैत अछि क्षेत्रक स्वाभिवानक रक्षार्थ, अपन सभ्यता संस्कृतिक रक्षार्थ! मुदा, मिथिला मे मिथिला- मैथिली के नाम पर, सभ्यता संस्कृति के नाम पर करोड़्क्क करोड़ साले साल टाका बहि जाइत अछि। सैकड़ो साल सँ ई होइत आबि रहल अछि, मुदा उपहासक बात इ जे जतेक तीव्र गति सँ मिथिलाक सभ्यता-संस्कृति के ह्रास भऽ रहल अछि ततेक कोनो आन समुदाय के इतिहास मे आई तक नञि भेल हेतै। मिथिलाक्षर लूप्त भेल, भाषा लोक बिसरल जा रहल अछि, पावनि तिहार, रिति-रिवाज सभ प्रायः मंचक रूप मात्र नेने जा रहल अछि। एकरा की कहबै? तीनू लोक मे एतेक बूधियार छै कियो?

मंच पर सभ्यता संस्.तिक प्रतीक चिह्न बनाओल जाइत छैक तखन ततबा काल के लेल कतेक मिथिलावासी बुझैत छथि, मंच पर कला-संस्कृति आदि के पाठ पढ़ाओल जाइत छैक, जेना मंदिर में जा कऽ लोक भगवान के पूजा-अर्चना नमस्कार कऽ लैत छथि आ जन्म-जन्मान्तर के पाप कटित के अनुभव सं पुनः अपन सांसारिक दिनचर्या में लागि जाइत छथि, तहिना सभ्यता-संस्कृति आदि के पाठ आम अधिकांश मिथिलावासी मंच पर व मंचस्थ कार्यक्रम देखि औपचारिकता पूरा कऽ लैत छथि, फेर की मिथिला आ की मैथिली आ की क्षेत्रक स्वाभिमान वा विकास अथवा कुरीति? खैर, विषयान्तरमे गेला सँ की लाभ, प्रश्न छैक जे कोना भेटत मिथिला राज्य ताहि पर अपन मनः शान्तिक लेल कम सं कम चर्च तऽ कइये सकैत छी। एही सभ लक्ष्य कें लऽ कऽ नासिक सं हम मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश पत्रिका के प्रकाशन आरंभ कयल आ वर्ष १३ ई. सं चर्चे तऽ मात्र करैत आबि रहल छी? देखल जाय तऽ एकटा घर बनाबय मे सबहक भूमिका रहैत छैक आर्किटेक्ट पहिले खाँका तैयार करैत अछि पुनः ओहि आधार पर ओहि घरक निर्माण होइत छैक। अक्सर ई सूनय मे अबैत अछि जे साहित्यकार सभ कोनो ठोसगर योजना बनाकऽ नञि देलखिन्ह वा नञि द रहल छथि। हम साहित्यकार तऽ नञि आ नञि हमरा मे ओ सामार्थ्य जे मिथिला राज्य प्राप्तिक खाँका खींच कऽ दऽ सकैत छी, मिथिला राज्यक खाँका खींचय के लेल सेहो कतेको खाँका खिचनाहर के आवश्यकता छैक आ तखन जा कऽ खाँका तैयार होयत आ लक्ष्य साधन के आसार बुझायत। हम तऽ अपन राम सेतु बान्धक लुखीक क्षमतानुसार कर्तव्य पथ पर अग्रसर छी आ जे फूराइत अछि सुझावक चर्च करैत रहैत छी ओ चाहे अपन पत्रिका के माध्यम से होउ, सोशल मीडिया के माध्यम सँ होउ अथवा जतय मिथिलावासी के समूह देखैत छियैन्ह ओतय चर्चा चला कऽ होउ।

हमरा जनैत पृथक मिथिला राज्यक गठन होयब एकमात्र विकल्प अछि समस्त मिथिलावासी मे सामूहिकता केर निर्माण,

सामूहिकता के मतलब ई नञि जे सब संगठन मिलि कऽ एकटा संगठन बना लिअ जे संभव नञि ओहि पर चर्चा किएक, बल्कि सामूहिकता के माने ई जे सब संगठन अभियानी व समस्त मिथिलावासी मिलि कऽ एकटा साझा कार्यक्रम बनाउ, एतबा तऽ कयल जा सकैछ, ओहुना महागठबन्धन के प्रचलन आब चलि पड़ल छैक? ई बात एवं एहि मे बाँकी के बात कएक बेर हम कहि चुकल छी, संयुक्त मैथिल संगठन के प्रक्रिया सेहो सूझा चूकल छी, आरंभो भेल, ग्रहणो लागल, पुनः प्रक्रिया मे सेहो अछि, जेना जे हो करै जाउ एहि प्रसंग मे एकटा महाबैसार व महापंचायत के बात कहने छी जे सभ संगठन, अभियानी गण, विभिन्न क्षेत्रक विशिष्ट व्यक्तित्व सभ मिलिकऽ एकटा महापंचायत करु, साझा कार्यक्रम बनाउ, महाकोष बनाउ आदि आदि।

मुदा की बुझाइत अछि, इ संभव हेते? कम सं कम आशा तऽ राखि सकैत छी, से राखि कऽ दोसरो विकल्प दिस ध्यान केन्द्रित करू सभ विकल्प आखिर सामुहिकते के तरफ जाइत अछि। नव पीढ़ी मे व युवा वर्ग मे स्वाभिमानक भावना जागय, एखनुक संचार माध्यम के फलस्वरूप देश-विदेशक सभ स्थिति क्षण प्रतिक्षण ज्ञात होइत छैक आ ताहि के फलस्वरूप आन-आन क्षेत्रक लोक अपन भाषा संस्कृति, क्षेत्रक मर्यादा स्वाभिमान के कतेक पैघ युक्ति छैक आ तकर परिणाम ओहि-ओहि क्षेत्रक सम्पन्नता व आत्मनिर्भरता अछि इ सब बात ज्ञात भेला उपरान्त किंचित युवा पीढ़ी मे स्वाभाविमानक भावना जागैन आ बिना कोनो निजी स्वार्थ के स्वरुचि पूर्वक ई सभ मिथिलावासी मे जन चेतना जगाबय एक एक गाँव के प्रेरित करय के संकल्प लैत आगू बढ़ैत, स्वतः सब अपन गाम के प्रेरित करब, प्रखंड के प्रेरित करब, जिला-जवार के प्रेरित करब एहि तरहक मनोभावना लऽ जन-जागरण शुरू होय आ ई सिलसिला चलि पड़य, सभ वर्ण-धर्म-जाति पाइत के लोक मिथिला के नाम पर एक भऽ जनजागरण चलाबय लागय, जागृत होमय लागय, तऽ तखनौह परिवर्तन संभव छैक। एहि मे अनुभवी, बुजूर्गगण जे की प्रायः सभ गाम मे छथि, से सभ मार्गदर्शन करथुन जे रे बौआ सभ इ-इ बात पहिने अपन मोहल्ले मे सब के बूझाबह, अपन गाम मे सब के बुझाबह इ पर्ची सब घर में बाँटह आदि-आदि अपन गाम के पहिने जागृत करऽ आ एहि तरह सं सब अपन गामे के प्रेरित करय लागल ते सभ गाम प्रेरित भऽ जाओत। निःस्वार्थ भाव सं अपन स्वाभिमान के जगा एकटा हवा चलबय पड़ते। टोली बना कऽ लोक सभ सँ भेंटघाट कऽ ओकर दुःख दर्द बूझि आ ओहि केर समाधान मे हाथ बँटबैत सभ के अपना बना कऽ मिथिला राज्यक औचित्य पर प्रकाश डालय पड़तैक, लोक कें बूझाबय पड़तैक जे सामाजिक कुरीति दहेज प्रथा, भूण हत्या, जाति-पाति के नाम पर भड़ऽकेनाई, शिक्षा से विमुख केनाई समाज के गुलाम व अपंग बनाकऽ रखि देल गेल अछि से सब समझेनाई आदि-आदि तरह सँ अभियानी गण सभ के सभक मोन में स्थान बनबय पड़तैन तखनहिं टा सुगन्धित बयार बहतै तेसर बात जे मिथिलामय होमय पड़त, से कोना होयब? मिथिला मे अपना सभ सब व्यवहार मैथिली मे करब। विद्यालय, महाविद्यालय, सरकारी कार्यालय आदि यत्र-तत्र आवेदन आदि गर्व सँ मैथिली मे दियौ। महाराष्ट्र मे जखन हम पत्रिका के पंजीयन के लेल आवेदन लिखैत रही तऽ बहुत परेशान रही जे मंजूरी होयत कि नञि, हिन्दी मे लिखैत रही, पुनः मोन मे भेल जे अंग्रेजी मे लिखी तऽ शायद वजन बढ़तै एवं प्रकारे ताही क्रम मे एकटा स्थानीय मित्र सलाह देलाह जे मराठी मे लिखू, हम कहलियैन जे मराठी में आवेदन के तरीका हमरा नञि बूझल अछि, ताहि पर ओ मराठी मित्र कहलाह जे तरीका की होइत छैक, मानि लिअ जे साहेब आहाँ के पूछता जे आहाँ के कोन काज अछि तऽ बता सकैत छी कि नञि? हम कहलियैन जे निश्चित रूप सँ। पुनः ओ कहलाह जे बस सैह मराठी मे लिख देबाक छैक, एहि ठाम तरीका नञि देखल जाइत छैक, बस अहाँ की कहय चाहैत छी से बूझा जाय आ मराठी मे कहुना लिखि कऽ दय देबैक बाँकी कागज पत्तर ठिक रहत त मंजूर हेबे करत आ तुरत होयत, अंग्रेजी आ हिन्दीसेवी सँ पहिने। ते इ होइत छैक स्वाभिमान यौ मैथिली सांवैधानिक भाषा छैक त एकर प्रयोग सँ के रोकि सकैत अछि। ताहि लऽ क मिथिला मे सभ व्यवहार मैथिली मे करु। आमंत्रण - निमन्त्रण कार्ड आदि मैथिली मे लिखू, सड़क पर बैनर-पोस्टर सड़क के नियम के निर्देश आदि सब मैथिल मे लिखाउ आ लगबाउ यौ मिथिला मे आबिकऽ कोनो मिथिलावासी हिन्दी या अंग्रेजी मे मैथिलजन लग गप्प करैत छथि तऽ हुनका अनुभव कराउ जे इ मिथिला छैक, नेता सब हिन्दी मे भाषण करैत छथि तऽ हुनको सभ के अनुभव कराउ जे ई मिथिला छैक। यौ मिथिलावासी के लेल मैथिली सर्वोच्च्य भाषा हेबाक चाही, प्राथमिक शिक्षा विद्यालय में मैथिली मे शुरू हो तकर व्यवस्था कराउ यौ पहिने अपने महत्व देबय पड़त। मिथिलामय होमय पड़त अपना के महत्व देब तखनहिं क्षेत्रक महत्ता बढ़त, तखनहिं सबकिछु स्थान-मान-सम्मान प्राप्त होयत? शहर मे व प्रवास मे वा कतौह सब भाषा के मोजर दियो मुदा कि ताहि लेल अपन भाषा के हीनताई देखेनाई आवश्यक अछि कि? ते मिथिला राज्य के लेल, मिथिलाक स्थान के लेल, पहिने ढंग से त मिथिलावासी बनू, मैथिलमय होउ पुनः देखू कोना ने सब किछु प्राप्त होइत अछि?

चारिम बात जे मिथिलक्षर के जीयाबय पड़त हलाँकि एहि पत्रिकाक मिथिलाक्षर साक्षरता अभियान आब रंग पकड़ि लेलक अछि आ हमर पत्रिकाक पहिल अंक सँ जे वीया बाग भेल से आब रोपनी के लेल तैयार अछि। सब गोये मिथिलाक्षर सिखै

जाउ, हमरा लोकनि आब सब व्यवहार मिथिलाक्षर के माध्यम सँ मैथिली मे करब। एक बेर जँ पत्र-पत्रिका, पोथी-पतड़ा आदि मिथिलाक्षर मे यत्र-तत्र दिखाइ देबय लागत तऽ अपने मिथिलामय भऽ जायब, आ से सबके नजरि मे आ पुनः तखनि बिनु चिचियेने मिथिला राज्यो भेट जायत आ मान-सम्मान सब किछु भेटत, अपना ढंग सँ पुनः मिथिला के सजायब सुख-समृद्धि व आनंद के गंगा बहते जी हाँ मिथिलाक दुर्दशा के पहिल आ मुख्य कारण अछि अपना सभ अपन लीपि के छोड़ि देलौहं आ पुनः मिथिला राज्य प्राप्तिक सेहो इएह कारण होयत जॅ अपना सब मिथिलाक्षर अपना लेलौंह, इ बीज तत्व छैक, एकर गुढ़ रहस्य के बूझय के कोशिश करू ।

पाँचम आ सबसऽ महत्त्वपूर्ण बात जे मिथिलावासी लाजक भावना मन मे आनू, एहेन विशाल जनसंख्या आनि क्षमतावान लोक सभ आ तैयो मानचित्र मे मिथिला के नाम नञि, मुदा तथापि लाजपर्यंत नञि होइत अछि, संगठन-संगठन, मंच-मंच के खेल सैयो साल से खेल रहल छी? यौ आय स लगभग तीस साल पहिलूक लिखल प्रो. विश्वनाथझाक कथन हम राखि रहल छी जे ओ मिथिलाक्षर के पोथी में विद्यार्थी सम के अभ्यास देबय के क्रम में लिखने छलाह जे एकर अनुवाद मिथिलाक्षर मे करू देल गेल तऽ छलैक अनुवाद के लेल मुदा पढ़िकऽ हम सन्न रहि गेलौंह जे वास्तव मे हमरा लोकनि एखनि इ अनुभव करैत छी, मुदा इ त परंपरा बनि गेल अछि, निश्चित रुप सँ सभ लाज-धाख के घोंइट कऽ अपना सभ पी गेल छी। प्रो. विश्वनाथ झा जी लिखने छथि।

'आजुक युग में महान कवि, मनिषी वा राजनेता लोकनिक जयंती धूमधाम सं मनेवाक परिपाटी बड़ जोर पकड़लक अछि। परंपरा तऽ ई बड़ नीक। महान लोकक जयंती एही हेतु मनाओल जाइछ जे हुनका लोकनिक देखाओल बाट पर जनसाधारण चलि सकय। परन्तु एम्हर किछु दिन सँ जयंती समारोह विधि पुरौअलि मात्र भेल जा रहल अछि। चंदा एकत्र करब, मंच सँ भीषण भाषण झाड़व, कविता पाठ, नाच-गान आ चाह-पान आ जलपान धरि सिमित भय एहेन समारोह सभ औपचारिकताक रुप नेने जा रहल अछि। बड़का-बड़का संकल्प पारित कऽ सभा विसर्जित होइछ। बस, एकर बाद सभ किछु बिसरि लोक अपन-अपन नोन रोटी मे बेहाल भऽ जाइछ। सभ आदर्श ताख पर राखि पुनः अगिला साल गाओल गीत गयवाक तैयारी एक परंपरे भेल जा रहल अछि। ई खेदक विषय थिक। एकर समुचित समाधान अचिरहिं अपेक्षित।'

निष्कर्षतः कहबाक मतलब इ जे मिथिला राज्य मंच-मंच एवं संगठन-संगठन खेलय सँ नञि बल्कि सामुहिक शक्ति संचय कऽ कऽ एक सूत्र मे बाँध कऽ साझा कार्यक्रम बना, योजनाबद्ध तरीका सँ आगू बढ़ला सँ बनत। एहि के लेल मिथिला राज्य हड़पयवाला महत्वाकांक्षा नञि बल्कि मिथिला राज्य प्राप्त करयवाला स्वाभिमान जगाबय पड़त। जेना कोनो संभावित सूची में नाम आबय के आश रहैत अछि आ से जॅ नञि आयल तऽ जेना करेज मे दहक मारैत अछि आ जाबैत तक नाम नञि जूटैत अछि आमिल पीने रहैत छी आ नाम जोड़बा कऽ छोडैत छी, तहिना मानचित्र मे क्षेत्रक नाम के लेल अर्थात मिथिला जोड़य के लेल करेज में दहक उत्पन्न करय पड़त आ तखनि देखू कोना ने भेटैत अछि मिथिला राज्य। यौं हमरा लोकनि महाराष्ट्रक मराठा जँका किएक नञि लाखक लाख संख्या मे सड़क पर निकलि सकेत छी? यो हमरा लोकनि तामिलनाडू के जलीकट्टू आन्दोलन जॅका शांतिपूर्ण व अनुशासित धरना-प्रदर्शन के मिशाल किएक नञ दऽ सकैत छी? यौ हमरा लोकनि मैथिली दीवस पर किएक नञि मिथिलावासीक एकता व सक्षमता सरकार व दुनियाँ के देखा सकैत छी? यौ किएक नञि जे जतय छी धरातल पर सभ जीलावाला जीला मुख्यालय मे एवं प्रवास मे सभ नगर महानगर वाला अपन-अपन नगर महानगर के केंद्र स्थल पर एक्काहिं दिन किएक नञि जूटि सकैत छी? यौ संगठन सभ इ कहय के बजाय कि- हमर संगठन आहवान कऽ रहल अछि, सब अबै जाऊ।

इ किएक नञि कहि सकैत अछि जे मैथिली दिवस पर हमरो संगठन फल्लां जगह पहुँचत, अँहू सभ अपन-अपन संगठन के माध्यम से मिथिलावासी के इकट्ठा कऽ कऽ पहुँचय जाउ, इ आवाज सभ संगठन के तरफ सँ किएक नञि उठि सकैत अछि? किएक नञि संगठन के नेता सभ कहि सकैत छथि जे हँ यौ हमहूँ सोचने छी हम सब ते एबे करब, चलू इ सूनि जे अँहू सभ आबि रहल छी मन प्रसन्न भेल? एहि तरहक भाषा के प्रयोग कऽ दिल्ली प्रवासी जन्तर-मन्तर पर मुंबई प्रवासी शिवाजी मैदान, कोलकाता प्रवासी इडेन गार्डन व अन्य कोनो मैदान तहिना सभ नगरक मैथिल अपन नगरक केन्द्र मे एवं धरातल परक अपन अपन जीला मुख्यालय मे एक्के दिन मैथिली दिवस कऽ किएक नञि शांतिपूर्ण रैली, धरना-प्रदर्शन कऽ सकैत छी? जँ वास्तव मे मिथिला के लेल निर्मल रक्त धमनी मे प्रवाह भऽ रहल अछि तऽ कल्पना करु जे एक्के दिन मे की नञि भऽ सकैत छैक मात्र शांतिपूर्ण प्रदर्शन सँ, यौ राज्य सरकार, केन्द्र सरकार दुनियाँ सभ अचंभित भऽ जायत? देखाउ सामर्थ्य एहि बेर मैथिली अधिकार दिवस पर आ देखू कोना नञि बनैत अछि मिथिला राज्य?



मिथिलाक दुर्दशा आखिर किएक ?

✍ **प्रो. जीवकांत मिश्र**

कहबी छै जे सीता जनम वियोगे गेल। से तकरे पैरि सीताक नैहर मिथिलाक सेहो अछि। सयो वर्षक गुलामी सं देश स्वाधीन भेल। नव विहान भेल। मुदा, मिथिलाके स्वाधीनताक जे सुख, जे लाभ भेटबाक चाही, की से भेटलै? विचार करबाक प्रश्न थिक। जेना, जेम्स मिल सन इतिहासकार भारतक इतिहास कें वि.त करबाक चेष्टा कएलक आ ताहि बाटे भारतीय जनमानसमे हीनग्रंथि आरोपित करबाक योजना बनोलक, ठीक तहिना मिथिलाक इतिहासके उपेक्षित राखि, एहि ठामक माटि पानिकें उपेक्षित राखि, एहि ठामक भाषा-संस्.ति कें विखंडित करबाक चेष्टा लगातार चलि रहल अछि। जाहिसं प्रतिभाक बलें विश्वप्रसिद्ध मिथिला माथ उठाबय जोगर नहि रहय आ लल्लू-पंजूक राजनीति चलैत रहय। मिथिलाक जनताके मैथिलत्वक गौरव-बोध नहि होइक आ मिथिलामे एकताक भावनाक प्रसार किन्नहु नहि होमय, एहि सूत्र पर प्रायः समस्त राजनीतिक दल आ राजनेता चलैत रहलाह अछि, भनहि एहिमे सँ बहुतो मिथिला क्षेत्रहिक किएक ने होथि। मिथिलाके कतिया क' आ धकिया क' रखबाक लेल समस्त स्तर पर प्रपंच रचल जाइत रहल अछि।

भाषाक आधार पर भारतमे विभिन्न प्रान्त सभ बनल। मुदा, मिथिला राज्यक सुदीर्घ ऐतिहासिक आधार रहितहु एकरा राज्य नहि बनाओल गेल। भाषाक संवैधानिक मान्यता बेस नमहर संघर्षक बाद भेटल अछि आ सेहो संविधान प्रदत्त अधिकार सं एखन धरि वंचिते अछि। राज्य सरकार द्वारा राजकीय व्यवहार, शिक्षाक माध्यम वा आन बहुत उचित ठाम एखनो बारले अछि। सभ गोटे जनै छी जे जाहि भाषाके राज्याश्रय नहि भेटतै, तकर अस्तित्व बेसी दिन नहि रहि सकत आ भाषाक बिना संस्कृति सेहो अलोपित भ जायत तखन मिथिलाक पहचान की रहत? अहाँ एकटा धनलोलुपसँ बेसी आओर की रहि सकब? समस्त देश कें संस्कृति सिखओनिहार मिथिलाक संस्कृति अपनहि बेहाल भ जायत। एहि ठामक एहन महत्वपूर्ण कला-संस तिक संरक्षणक कोनो तरहक सरकारी चेष्टा एखनो नहि भऽ रहल अछि। आखिर किएक? मैथिलीक पढ़ौनी नहि होइछ। सरकारी पुस्तकालयक वास्ते मैथिली पोथी-पत्रिका नहि कीनल जाइछ । मैथिली पत्रिका कें सरकारी विज्ञापन नहि भेटेछ। मिथिलाक विभिन्न कलाक हेतु एक्कहुटा संग्रहालय नहि, पुरातात्विक स्थल सभके उजागर करबाक कोनो चेष्टा नहि। एना किएक? ई काज के करत? भाषा आ संस्.तिक नाम पर मिथिलाके खंडित करबाक कुचालि अनवरत चलल जाइत रहल अछि आ ताहिमे सरकारक लोक चारि डेग आगों बढ़ि भाग लैत अछि। से सब कहाँ धरि उचित?

आजादीक छिहत्तरि बर्षक बादो मिथिला सभ साल रौदी किंवा दाहीसँ त्रस्त रहैए। ने बाढ़िक पानिक निकासीक बाट आ ने पटौनीक निम्मन आ सर्वसुलभ साधन। विशेषज्ञ लोकनिक कहनाम छनि जे मिथिलामे जल-प्रबंधन यदि ढंग सं कयल जाय त' एहि ठामक माटिमे ओ शक्ति अछि जे आधा भारतक पेट भरि सकैयै। मुदा, सरकार किए सुनत? ओकरा मिथिला सं कोन मतलब? भोट टा चाही, बस्स! नहि त' कृषि उपजौनीक हेतु बजारक सुलभ व्यवस्था किएक नहि होइछ? किसान एखनो दलाल पर किए आश्रित अछि? अधिकांश किसान कोल्ड स्टोर केर नामो नहि जनैत अछि। से किएक? एहना स्थिति मे वैज्ञानिक खेतीक गप्पो करब व्यर्थ थिक। मुदा ई हाल आओर कहिया धरि रहत? कृषि आधारित उद्योग, जेना-चीनी, जूट, कागत आदिक नवका करखाना त' नहि फूजल, पुरनो सभ एकाएकी बन्न भ' गेल। एक-दूटा अछियो त' से दिन गानि रहल अछि। एहि ठाम लीची, आम, केरा, मखान, लताम आदि फल आधारित खाद्य प्रसंस्करण उद्योगक नीक संभावना अछि। मुदा सरकारके एहि सं जेना कोनो मतलबे नहि! दूध आ ताहिसँ सम्बद्ध नाना पदार्थ तथा मिठाई बनेबाक असीम संभावनावला मिथिला क्षेत्रमे विभिन्न तरहक दुग्ध उत्पादक आ माछ बाहर सं मंगाओल जाइछ। एकर सभक उत्पादन एहि धरती पर कहिया आरंभ होयत?

खादी, हथकरघा, लाह, काठ, माटि आदि आधारित विभिन्न घरैया उद्योग किएक बेहाल अछि? एहि ठामक विभिन्न हस्तशिल्पक विकास आ विक्रयक व्यवस्था सरकार कहिया करत? एकरा सभक अतिरिक्त प्लास्टिक, चमड़ा, दवाइ, जड़ी-बूटी, होजियरी, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक, सॉटवेयर आदिसँ सम्बद्ध छोट-छोट उद्योगक पैघ संभावना रहितो एहि मादे सरकार किएक नहि सोचौत अछि? एहि क्षेत्रक बंद पड़ध्ल विभिन्न उद्योग आ भम्ह पड़ैत औद्योगिक परिसर सभक लेल सरकारक की योजना अछि? मारिते रास ऐतिहासिक, धार्मिक ओ प्रा.तिक पर्यटन स्थलक समुचित विकास आ पर्यटककें एहि दिस आकर्षिक करबाक मादे सरकार कहिया सोचब प्रारंभ करत? ई समस्त काज आ ओरियाओन एहि क्षेत्रक आर्थिक विकाससँ सोझ रूपे जुड़ल अछि। तश की मानल जाय जे सरकार एहि क्षेत्रक आर्थिक विकास के नहि चाहैत अछि ?

सर्वांगीण विकास लेल जरूरी अछि पृथक मिथिला राजक गठन

✍ प्रवीण कुमार झा

मिथिलाक नाम सुनितहिँ मोन पड़ैत अछि ओहि युगक ओ दलदल भूमि जे यज्ञक आगि सँ सक्कत बनाओल गेल छल, ओ स्वर्णभूमि जतए सीता उपज जेकाँ धरती सं उत्पन्न भेल छलीह। ओ राजसभा जतय स्वयं योगी सुकदेव अध्यात्मिक प्रश्नोत्तर कएने छथि। ओ मंडनक पर्णकुटी जतए सुकसुकी स्वतः प्रमाणम् पश्तः प्रमाणम् कें रटि रहल अछि। मिथिलाक ज्ञानपिपासा कें विश्व सभ्यताक जननी वा उपदेशिका कहल जाइत अछि। तकर दर्शन- साहित्य, स्थापत्य, संगीत, चित्रकला जतेक अंग छैक, ओकरा यदि भारतक मानचित्र पर देखल जायत त' ओ स्थान मिथिला के भेटतैक। देखल जाय तत' जं राजर्षि विदेह जनक नहि होइतथि तँ ''कर्मणैवाहि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः'' केर दृष्टान्त गीता कें तकनहु नहि भेटैत। शुक्ल यजुर्वेदक द्रष्टा ब्रह्मर्षि याज्ञवल्क्य कें जं छोड़ि देल जाय तँ ईशावस्यक ज्ञानकांडक दुर्लभ ऋचा आई दुर्लभ रहैत । संसार के कोनो जननी मिथिलाक नारी सँ आइ धरि तुलना नहि क' सकलीह अछि, जेना- सती सीमन्तनी, सीता, उर्मिला, माण्डवी, श्रुतिकीर्ति, गार्गी, मैत्रेयी आदि। मिथिलाक महत्ता आई इ नहि रहैत यदि, उदयणक कुसुमांजली, गंगेश उपाध्यायक चिन्तामणि आदि नहि रहैत। हमरा सब जखन एनका मिथिला दिशि दृष्टिपात करैत छी त' महाकवि भवभूतिक श्लोक स्मरण भए अबैत अछि ''निवेशः शैलानां तदिदमिति बुद्धिं दृढयतिं।'' मिथिला सब दिन सँ धर्मक प्राण रहैत आयल अछि। धर्मक प्रसंगमे ई सूक्ति- ''मर्यादायां स्थितो धर्मः'' आई मिथिला के पतन भ' गेल अछि। परन्तु, एक समय छल जखन मिथिला तपोभूमि छल, त्यागक आदर्श छल एवं विद्वताक पराकाष्ठा पर पहुँच गेल छल। मिथिला मे केवल दू व्यवसाय छल। पहिल विद्योपार्जन आ दोसर विद्यादान। मिथिलाक परिसीमामे उत्तरमे हिमालय दक्षिण में गंगा, पूरब मे कोशी तथा पश्चिम मे गण्डकी तक अछि। एतबा अवश्य जे मिथिला संस्.तक केन्द्र स्थान छल।

देखल जाय तश वर्तमान परिदृश्य मे मिथिला, मैथिली आ मैथिलक चहुमुखी विकासक लेल पृथक मिथिला राजक आवश्यकता अनिवार्य रूप सं परिलक्षित होइछ। पौराणिक ओ ऐतिहासिक दृष्टिएँ मिथिला निरन्तर अपन शक्ति साधना ओ विद्या वैभवसँ भरल-पुरल क्षेत्र विशेषक रूपमे सिद्ध-प्रसिद्ध रहल अछि। मुदा, सम्प्रति मिथिलाक दशा ओ दिशा अत्यंत दयनीय आ चिन्तनीय प्रतीत होइछ। देखल जाय त' कतोक दशक पूर्वसँ मिथिला राजक मांग उठि रहल अछि। एकरा लेल गाम-घरसँ ल' क' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली धरि आम आ खास मैथिल आन्दोलनरत छथि। मुदा, राज्य सरकारसँ ल' क' केन्द्र सरकार धरि कोनो नेता वा पार्टी दत्तचित्त भ' अद्यतन मिथिला राजक लेल आवाज नहि उठौलनि । मिथिला परिक्षेत्रक जे केओ आन्दोलनी छथि ओहो सब आब विशेष रूप सं मुखर नहि भ' पाबि रहलाह। हुनकामे मुखरता प्रखरता ओ कटिबद्धताक अभावक पाछु बहुतो कारण छैक। किन्तु, नीक काजमे विघ्न त' स्वाभाविके होइछ। कहल गेल छै-श्रेयांसि बहु विघ्नानि परन्तु उत्तम प्रकृतिक लोक सब बिघ्न-बाधाके टारि अपन लक्ष्यक मार्ग पर अग्रसर होइछ। मिथिला राज्यक अभियानी लोकनि वस्तुतः जीवटगर छथि तें भारतमे चिरकालसँ अपन एहि अभियानके जीयौने छथि। इहो निर्विवाद सत्य जे शासन, सत्ता ओ साधनक अभावमे कोनो आन्दोलन मुखरित नहि भ' पबैत अछि, जतेक होमक चाही किन्तु टेमी मिझाएल कहियो नहि। आन्दोलन कमोबेश चलिते रहल अछि आ उत्तरोत्तर प्रखर लोकक आश्रय पाबि आइ निर्णायक मोड़ पर आबि चुकल अछि।

मिथिला राजक अस्तित्व वैदिक कालसँ पौराणिक काल धरि एकटा स्वतंत्र राज्यक रूपमे प्रसिद्ध अछि। पछाति गुप्त ओ हर्षक कालमे सेहो तीरभुक्ति नामसँ एहि राजक सत्ता छल। एकर पछाति कर्णाट, ओइनवार, खण्डवला आदि कुशल राजवंशक एतय सफल शासन व्यवस्था छल। जकर साहित्यिक ओ सांस्कृतिक वैशिष्ट्य आइयो जगत विदित अछि। स्वतंत्रता आन्दोलनमे सेहो मिथिलावासीक अवदान अविस्मरणीय रहल। किन्तु एतेक समृद्ध साहित्य ओ संस्कृतिक अछैत एक पर एक स्वतंत्रता सेनानीक ई क्षेत्र स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद पूर्णतः उपेक्षिते रहल। एकर राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक ओ शैक्षणिक अस्मिताक नजरंदाज कश देल गेलैक। जाहि राज्यक सीमांकन वृहदविष्णुपुराणमे वर्णित अछि से राज्य भारतीय संघक कखनो बंगालक तऽ कखनो बिहारक परिक्षेत्रमे केचुलीसँ छापल डबरा-दुबरी जकाँ ओझल कऽ देल गेलैक। अशिक्षा, बाढ़ि, सुखाड़, गरीबीक त्रासदीसँ त्रसित एतुक्का सामान्य जनता रोजी-रोटीक ताकमे पलायनवादी भ' गेल। एतुक्का लोकक श्रम ओ प्रतिभासँ देश ओ विदेशक कतेको भू-भाग विकासक प्रकाशसँ प्रकाशित भ' गेल। मुदा, एहि क्षेत्रक विकासक गति कहियो गतिमान नहि भ' सकल। जं ईमानदारी पूर्वक एहि स्थितिक पड़ताल करी तश एकरा सभक

मूलमे एहि क्षेत्रक जनप्रतिनिधिक अनमनस्कता एकटा पैघ कारण रहल। ओ लोकनि कहियो लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा ओ विधान परिषदमे एहि विषयक चर्चा मुखरित भ' नहि कैलन्हि । कॉ. भोगेन्द्र झा ओ पढ़ल लिखल समाजमे डॉ. लक्ष्मण झा सब सनक लोक जं आवाज उठबितो छलाह तऽ हुनका शासन सत्ताक ओ शक्ति हस्तगत नहि छलन्हि जाहिसँ निर्णय भ' सकैत छल।

प्रजातंत्रमे बहुमतक महत्व त' सर्वजनिक अछि आ एहन-एहन अगुलगण्य महामना सब जं समवेत स्वरो देबा लेल आगू अयबो केलाह त' एहि परिक्षेत्रक लोक ओहि उत्सुकता सं तैयार नहि भ' सकलाह, जकर ई परिणाम अछि। लोक सभा आ विधानसभा सदस्यक रूप मे एहि क्षेत्रसँ चुनि क' हेंजक हेंज पठाओल गेल जन प्रतिनिधिक बादो पृथक मिथिला राजक लेल समवेत आन्दोलन नहि भ' पबैत अछि तकरे परिणाम अछि जे 'मिथिला राज' एखनहु धरि कल्पने अछि।

देखल जाय तश प्रस्तावित मिथिला राजक जिला सभमे अवस्थित विविध सांस्.तिक, धार्मिक, शैक्षणिक ओ प्राकृतिक सम्पदाक अवलोकनसँ ई निर्विवाद लगैत अछि परञ्च किछु बात पर जं ध्यान देल जाय त' 'मिथिला राज' केर स्थापनाक बाट जरूर प्रशस्त हेतैक। एहि लेल मिथिला राज परिक्षेत्रक सब जनप्रतिनिधि कें दलगत भावनासँ फराक भऽ एक स्वरमे एहि मांग के मनावक प्रयास अविलम्ब करबाक चाहियैन, किएक तऽ ई समय एहि तरहक मांगक लेल सर्वथा उचित प्रतीत होइछ। शमिथिला राज्यश के माँगसँ सम्बन्धित जे कोनो संस्था, संगठन अलग-थलग कार्य करैत छथि सब एकत्र भ' जाथि आ एहि आन्दोलन कें जं जन आन्दोलनक रूप द' एहन सत्याग्रह करथि जकर प्रभाव केन्द्र सरकार पर अधिक हो आ ओ सकारात्मक निर्णय करक लेल बाध्य हो। किएक त विगत किछु वर्षक अन्तरालमे जाहि नव-नव राज्यक गठन कएल गेल ओहि सबमे सर्वाधिक मानकक पूरा करयवाला प्रस्तावित राज मिथिले अछि। छत्तीसगढ़मे जतय मात्र 13 जिला अछि, उत्तरांचलमे 16, झारखण्डमे 19, आ नवगठित राज तेलंगानामे तऽ मात्र 12 गोट जिला अछि। आबादीक दृष्टिएँ सेहो हमर मिथिला राज पूर्णतः मानक केर अनुरूप अछि।

ईहो कम महत्वपूर्ण नहि जे पृथक मिथिला राजक गठन वर्तमान समयक मूलभूत आवश्यकता थिक। जहन सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक ओ शैक्षणिक उत्थान एवं प्रशासनिक सुगमताक लेल छोट-छोट राज्यक गठन आवश्यक भऽ गेल छैक। एहि मान्यताक अनुरूपे तेलंगानाक गठन कएल गेल अछि। तहन फेर हमर चिरप्रतिक्षित योजना, समस्त मिथिलावासीक आद्यन्त विकासक परियोजना कें स्वीकार करबा मे अनेरे किएक बखेड़ा ठाढ़ कयल जा रहल। ई निर्विवाद सत्य जे मिथिलाक सर्वांगीण विकासक रास्ता तखने प्रखर हेतैक जखन कि 'मिथिला राज्यक' पृथक गठन हेतैक आ ओ दिन आ दूर नहि जखन जहिना अटलजी अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीके सम्मिलित कए अशेष यशक भागी बनलाह तहिना वर्तमानो सरकार ऐतिहासिक निर्णय लश सम्पूर्ण मिथिलावासीक मोन जीति लेतथि।

❑❑❑



रिपोर्ट

17म अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन

✍ प्रवीण नारायण चौधरी

17म् अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन विराटनगर मे अपार जनसहभागिताक संग सम्पन्न भेल मैथिली भाषा आ साहित्य अति प्राचीन अछि। ज्योतिरिश्वर ठाकुर, विद्यापति, कविश्वर चन्दा लगायत कतेको रास साहित्यकार, कवि, विद्वान् लेखक आ विचारक द्वारा मैथिली पोषित रहल। नेपाल आ भारत मे बाजल जायवला भाषा मैथिलीक इतिहास अत्यन्त समृद्ध अछि। मैथिलीक प्राचीन पान्डुलिपि नेपाल मे सुरक्षित भेटल। विद्यापति आ ज्योतिरिश्वरक कार्यक्षेत्र नेपाल रहल। ताहि नेपालक प्रदेश 1 केर राजधानी विराटनगर मे 17म् अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन अभूतपूर्व जनसहभागिता संग सम्पन्न भेल।

पुस 6 आ 7 गते विराटनगरक हाटखोला मैदान तथा जानकी सदनक रजत सभागार मे एक संग ई आयोजन भिन्न-भिन्न सत्र मे पूरा भेल अछि। करीब 300 प्रतिनिधिक सहभागिता नेपाल, भारत आ अन्य देश सँ देखल गेल। भाषा, साहित्य, संस्कृति, समाज केर समृद्धिक उत्सवक रूप मे आयोजित एहि सम्मेलन मे सौ सँ अधिक विशिष्ट लोक केँ सम्मानित कयल गेलनि। विद्वत् विमर्श, कवि सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आ झाँकी प्रस्तुति सँ भरल एहि दुइ दिवसीय आयोजन मे अलग-अलग कार्यक्रमक प्रस्तुति भेल छल।

हाटखोला मैदान मे 20 गोट स्टाल लगायल गेल जाहि मे मिथिला चित्रकला, हस्तकला, षि वैज्ञानिक उपकरण, खानपान, तयारी चाउचाउ, बिस्कुट, प्रदेश 1 सरकारक पर्यटन सूचना, पुस्तक आदिक प्रदर्शनी बिक्री कयल गेल। एहि सम्मेलन मे प्रदेश 1 केर सामाजिक विकास मंत्री जीवन घिमिरे सम्मेलनक पहिल सत्र शोभा-यात्रा मे भाग लैत त्रिमूर्ति चौकपर महाकवि स्मृति सभाक उद्घाटन कयलनि। तहिना हाटखोला मैदान मे उद्घाटन सत्रक मुख्य अतिथि तत्कालीन उपप्रधान, कानून तथा न्याय मंत्री उपेन्द्व यादव छलाह।

कार्यक्रमक दोसर दिनक मुख्य अतिथि प्रदेश 1 केर पर्यटन, उद्योग, वन तथा वातावरण मंत्री जगदीश कुसियैत केर सान्निध्य मे विशिष्ट व्यक्तित्व केँ सम्मानित कयल गेल। जानकी सदन मे आयोजित सत्रवार विद्वत विमर्श मे प्राज्ञ रमेश रंजन झा, डा. राम अवतार यादव, डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव एवं भाषा आयोगक अध्यक्ष डा. लबदेव अवस्थी केर विशिष्ट उपस्थिति छल। एकर अतिरिक्त भारत सँ पूर्व शिक्षा मंत्री डा. राम लषण राम 'रमण', अमैस अध्यक्ष डा. महेन्द्र नारायण राम, डा. बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू', अमैस नेपाल संयोजक डॉ रामभरोस कापड़ि भ्रमर, अखिल भारतीय मिथिला संघ (दिल्ली) केर अध्यक्ष विजयचन्द्र झा, प्रेमकान्त चौधरी, राजकिशोर झा, सुमन खाँ समाज, राम कुमार सिंह, रामनारायण देव, परमेश्वर कापड़ि, जीवनाथ चौधरी, श्यामसुन्दर शशि, सुजीत झा, सतीश दत्त, कमलाकांत झा आदि संस्था प्रमुख लोकनिक सहभागिता सम्मेलन लेल विशेष रहल।

तहिना अमेरिका सँ सम्मानित व्यक्तित्व अजय झाकेँ प्रतिनिधित्व करैत हुनक धर्मपत्नी नीरा झा आ मारिशस सँ डा. अनुभूति केर उपस्थिति सेहो विशेष भेल। अमेरिका मे कार्यरत वैज्ञानिक डा. संतोष मिश्र केर सम्मान ग्रहण करबाक लेल नई दिल्ली सँ विजय मिश्र भाग लेलनि। अन्त मे 10 बुंदे घोषणा पत्र जारी करैत सम्मेलनक आगामी आयोजन भारतक वृन्दावन मे करबाक निर्णय संग ई 17म् अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन समापन कयल गेल।

कि सब मांग कयल गेल अछि 10 बुंदे घोषणापत्र सँ 17म अंतर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन सम्पन्न 10 बुन्दा घोषणापत्र जारी संघीय नेपालक प्रदेश 1 केर राजधानी विराटनगर में 2076 पुस 6 आ 7 गते तदनुसार 22 आ 23 दिसम्बर धरि चलल। 17म अंतर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन पश्चात सार्वजनिक कयल गेल घोषणापत्र।

1. नेपाल में दोसर सब सँ बेसी बाजल जायवला भाषा मैथिली भाषा केँ संघीय नेपालक नेपाली संगहि मैथिली सरकारी कामकाजक भाषा बनाओल जाय।

2. प्राथमिक विद्यालय में मातृभाषा के लागू कराबय लेल स्पष्ट नीति बनाओल जाय संगहि विषय शिक्षक के नियुक्ति कयल जाय।

3. प्राथमिक विद्यालय में पढाओल जायवला विषयवस्तु एवं शिक्षण प्रणाली के बालमैत्री एवं बाल मनोविज्ञान आधारित बनाओल जाय।

4. संघीय आ प्रादेशिक स्तर पर मैथिली अकादमी गठन कयल जाय जाहि में मैथिली भाषा, साहित्य कला, संस्कृति संगहि मिथिलाक लोकगाथा, प्रदर्शनकलाक संरक्षण, सम्वर्धन, अध्ययन, अनुसंधान सहितक प्रकाशन आदि कार्य लेल पर्याप्त बजेट विनियोजन कयल जाय।

5. कलाकार, साहित्यकार, चित्रकार, आदिक हेतु

आजीविका अनुदान एवं स्वास्थ्य बीमा कयल जाय।

6. मैथिली भाषी बहुल्य प्रदेश 1 आ 2 में पर्यटन प्रवर्धन एवं सांस्कृतिक सम्वर्धन हेतु सरकारी स्तरपर ''मिथिलाग्राम'' योजना लाओल जाय।

7. मिथिलाक्षर पुनरुत्थानक लेल संघीय सरकार एवं प्रादेशिक सरकार मिथिलाक्षर शिक्षा आ मिथिलाक्षर में पुस्तक प्रकाशन करय।

8. मैथिली भाषी बहुल्य प्रदेश 1 आ प्रदेश 2 क त्रिभुवन विश्विद्यालय, पूर्वांचल, राजर्षि जनक, नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय सभक आंगिक महाविद्यालय (कैम्पस) सभमे स्नातकोत्तर धरिक शिक्षण व्यवस्था कयल जाय।

9. मिथिला चित्रकला के बाजारीकरण, विश्वव्यावसायिकरण हेतु संघीय आ प्रदेश सरकार द्वारा अनुदान आ सहजीकरण के व्यवस्था कयल जाय।

10. प्रदेश 1 आ 2 में प्रदेश स्तरीय नाट्य रंगशाला एवं मिथिला आर्ट गैलरी के स्थापना कयल जाय।

आभारः घोषणापत्र जारी कयनिहार सुपरिवेक्षक समिति श्री जीवनाथ चौधरी, श्री श्यामसुंदर शशि, श्री रामरीझन यादव व श्री सुजीत झा अभूतपूर्व छल शोभा-यात्रा-नगर-परिक्रमा हजारों महिला तथा पुरुष मिथिलाक पहिरन मे सजि-धजिकय संसारीमाईस्थान सँ त्रिमूर्ति चौक (बरगाछी) धरिक शोभायात्रा मे भाग लेलनि। एहि शोभायात्रा मे जनक, जानकी, विद्यापति आ सलहेशक संग मिथिलाक सांस्कृतिक पहिचानक प्रतीक पान, माछ आ मखान संग दही आदिक शुभकारी तस्वीर संग ढोल-पिपही, भार-भरिया, नारदी कीर्तन, पारम्परिक कीर्तन, झरी-झरी, साइकिल यात्री, मुशहर समुदाय, गनगाईं समुदाय, संथाल समुदाय, राजवंशी समुदाय विशेषक विभिन्न झाँकी सहित कलश यात्राक झाँकी आर समस्त सहभागी प्रतिनिधिक संग करीब 5 किलोमीटर केर यात्रा अति विशिष्ट भेल। एहि यात्रा मे सामाजिक विकास मंत्री (प्रदेश 1) जीवन घिमिरे सेहो किछु दूर संगे चलिकय अपन सदाशयता व्यक्त कयलनि।

उद्घाटन कयलनि उपप्रधान, कानून तथा न्याय मंत्री उपेन्द्र यादव देश-विदेश सँ आयल सैकड़ों प्रतिनिधि पाहुन तथा आमन्त्रित विशिष्ट अतिथिक संग एहि 17म् अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनक उद्घाटन दीप प्रज्वलित करैत कयलनि। वितीशा ओ प्रतिभा द्वारा प्रस्तुत भैरवि वन्दनाक नृत्य उपरान्त राष्ट्रगीत आ स्वागत गीत संग अभियान गीत सेहो एहि सत्रक विशेष प्रस्तुति छल। सोच नेपाल केर लोककलाकार द्वारा झरी-झरी केर प्रस्तुति अति विशिष्ट छल। गन्गाईं समुदाय द्वारा विदापत नाच आ धनपालथान सँ दर्जनों संख्या मे आयलि लोककलाकार द्वारा झुम्मर गानक प्रस्तुति सेहो उद्घाटन सत्रक खास होयबाक तथ्य केँ सिद्ध कयलक। एहि छोट-छोट झाँकी प्रस्तुतिक संग वक्ता लोकनिक विचार सेहो अबैत रहल।

उपप्रधानमंत्री यादव मैथिली भाषा आ मिथिला संस्कृति केर प्राचीनता जगविदित होयबाक बात कहलनि। परञ्च एकल भाषा नीति केर हावी होयबाक चलते मैथिली सहित विभिन्न मातृभाषा पाछाँ पड़ि जेबाक बात कहैत एहि दिशा मे अभियान चलाकय न्याय पेबाक प्रेरणा ओ सम्मेलनक प्रतिनिधि सहित आमजन केँ देलनि। ओ कहलनि जे जा धरि कोनो भाषा केँ सरकारी कामकाजक भाषा नहि बनायल जाइछ, रोजी-रोजगारक भाषा नहि बनायल जाइछ, ता धरि ओकर अस्तित्वक रक्षा संभव नहि छैक। एहि लेल अभियान चलाकय मैथिली केँ मजबूत करबाक आवश्यकता अछि। स्वयं अपन सहयोग लेल वचनबद्धता प्रकट करैत सम्मेलनक सफलता लेल शुभकामना सेहो देलनि।

बिहारक पूर्व शिक्षा मंत्री डा. राम लषण राम 'रमण' सेहो अपन वक्तव्य मे सम्मेलनक सफलता लेल शुभकामना देलनि। तहिना मधेशी आयोग प्रमुख विजय दत्त सेहो अपन संछिप्त मन्तव्य मे भाषा आ साहित्यक संग समाजक सम्बन्ध पर प्रकाश दैत सम्मेलन सफलता पेबाक शुभकामना देलनि।

एहि सत्रक संचालन किसलय कृष्ण, अध्यक्षता आयोजक संस्था मैथिली एसोसिएशन नेपालक अध्यक्ष प्रवीण नारायण चौधरी तथा स्वागत संबोधन स्वागताध्यक्षत्रय तेजलाल कर्ण, पंकज वर्मा ओ जीवानन्द झा देलनि। मिथिलाक आर्थिक विकास आ संस्.ति-साहित्यक संरक्षण लेल अहमदाबाद सँ आयल पाहुन राजकिशोर झा अपन ओजपूर्ण मन्तव्य रखलनि। प्रतिकूल मौसमक कारण कार्यक्रम देरी सँ आरम्भ भेल जाहि मे कतेको लोकक प्रस्तुति आखिरकार नहि लेल जा सकल, सम्मान प्रदान करबाक कार्यक्रम सेहो आधा-अधूरा मात्र संभव भऽ सकल। तथापि समग्रता मे कार्यक्रम सफल हेबाक प्रतिक्रिया प्रतिभागी लोकनि देलनि।

सम्मेलनक दोसर दिन-कोन-कोन विषय पर विद्वत विमर्श भेल सम्मानित व्यक्तिक व्यक्तित्व पर कुमुदानन्द झा प्रियवर, सतीश दत्त, डा. बैद्यनाथ चौधरी बैजू, राम सागर पंडित, डा. रामभरोस कापड़ि भ्रमर, नीरा झा द्वारा प्रकाश देल गेल छल। मोरंग आ प्रदेश 1 मे मैथिलीक इतिहास विषय पर रामनारायण देव केर व्याख्यान आयल। तदोपरान्त भाषाक महत्व आ 100% साक्षरता विषय पर प्रा. डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव केर व्याख्यान आयल। पुनः रमेश रंजन झाक संचालन आ भाषा आयोग प्रमुख डा. लबदेव अवस्थीक अध्यक्षता मे 'नेपालक संविधान आ छटपटाइत मातृभाषा' विषय पर गरमागरम बहस भेल। एहि विमर्श मे राजेश्वर नेपाली, रामरिझन यादव, प्रा. डा. विशाल पोखरेल, आदि विद्वान् लोकनि अपन विचार रखलनि। तदोपरान्त

मैथिली भाषाक वर्तमान अवस्था पर संछिप्त टिप्पणी केर विषय मे विभिन्न विद्वान् लोकनि अपन मत रखलाह। किछु आरो महत्वपूर्ण विषय पर विमर्श समयक चाप आ मौसमक प्रतिकूलता सँ देरी सँ आरम्भ होयबाक चक्कर मे छुटि गेल।

कवि-सम्मेलन भेल विशेष सम्मेलनक दोसर दिन समानान्तर रूप सँ दुइ अलग स्थान पर कार्यक्रम आयोजित छल। पहिल दिन समयक दबाव मे छुटल छल 'बहुभाषिक कवि सम्मेलन' से दोसर दिन हाटखोला मैदान मे दिनक 11 बजे आरम्भ भेल। एहि सत्रक संचालन प्रारम्भिक दौर मे वन्दना चौधरी कयलीह। पुनः विकास वत्सनाभ द्वारा संचालन कयल एहि भव्य कवि सम्मेलन मे सुमन समाज, भोगेन्द्र शर्मा 'निर्मल', मुकेश पूर्वे, पूनम झा मैथिली, ललिता झा, श्रीराम मंडल, कृष्ण मैथिल, शंभूश्री, रमण धीरू, विद्यानन्द बेदर्दी, रामकुमार मंडल, रघुनाथ मुखिया, कमलेश प्रेमेन्द्र, अर्जुन प्रसाद गुप्ता 'दर्दीला', प्रेमकान्त चौधरी, विभा झा, करुणा झा, प्रीति झा, रंजू झा, मंजू मंडल, शान्ति झा, प्रवीण नारायण यादव, गायत्री सिंह, गजेन्द्र गजूर, हृदय नारायण यादव, किसलय कृष्ण, शिव नारायण पंडित सिंगल व अन्य कवि लोकनि अपन सुन्दर काव्य पाठ कएने छलाह। तहिना नेपाली भाषा एक सुन्दर गजल मधू पोखरेल प्रस्तुत कयलनि।

काव्य संग-संग गायनक सेहो भेल प्रस्तुति दोसर दिन हाटखोलाक मुक्ताकाश मे 17म् अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक विभिन्न प्रस्तुति एक संग आयोजित भेल। काव्य पाठक बीच वीरेन्द्र झा, रचना झा, कंचन झा, लोककलाकार आ सोच नेपालक विभिन्न कलाकार संग अन्य विभिन्न स्थानीय कलाकार लोकनि अपन सुन्दर गीत सेहो परसैत रहलाह। एहि बीच मुख्य अतिथि पर्यटन मंत्री जगदीश कुसियैत केर हाथ सँ दर्जनों सम्मानित व्यक्तित्व केँ सम्मान पत्र सेहो हस्तान्तरित कयल गेलनि। सोच नेपाल केर कलाकार द्वारा आजुक विशेष प्रस्तुति पमरिया नाच केर भरपूर सराहना कयल गेल छल। होली गायन आ नृत्य सेहो ओतबे आकर्षक रहल। मैथिली फिल्म पर पूर्णेन्दु झा आ सामाजिक अभियान पर कुन्दन झा केर संबोधन संग मिथिलानी सशक्तीकरण केर विषय पर विभा झा केर संबोधन बहुत ओजपूर्ण रहल। आयोजक दिश सँ पूनम सिंह, वसुन्धरा झा, मंजू मंडल, सुधा ठाकुर, करुणा झा, रंजू झा, प्रीति झा, प्रीति मेहता आदिक सहयोग सँ संचालित दोसर दिनक मंच अत्यन्त सुसज्जित-सुशोभित सब कार्य केँ भव्यता सँ पूरा कयलक।

समापन सत्र मे भीजल आँखि सँ विदाई 17म् अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक समापन मे आयोजक संग आगन्तुक प्रतिभागी सब कियो काफी भावुकता सँ एक-दोसर कैँ विदाई कयलनि। संयोजक प्रवीण नारायण चौधरी सब गलती-त्रुटि कैँ क्षमा करबाक लेल समदाउनक स्वर मे 'कहल सुनल सब क्षमा करियौ यौ भोला बाबा, मेटि दियौ सब अपराध' गाबि भावुक भऽ गेलाह। तहिना पंकज वर्मा, तेजलाल कर्ण, वन्दना चौधरी, किसलय कृष्ण, किशोर चौधरी, कुन्दन मंडल, सुमन समाज, सन्दीप कश्यप, विवेकानन्द झा, आदि समस्त प्रतिभागी लोकनि एक-दोसर केँ सम्मेलनक सफल आयोजन लेल बधाई ज्ञापित करैत भावुकता सँ पुनः ऐगला बेर भेटबाक वचन देलनि। एहि अवसर पर अमैस महासचिव डा. बैद्यनाथ चौधरी बैजू द्वारा 101 सदस्यीय आयोजन समिति 18म् सम्मेलन लेल मनोनीत कयल जेबाक घोषणा कयलनि जाहि मे कुल 31 गोट सदस्य नेपाल सँ राखल गेल अछि। अन्त मे अमैस अध्यक्ष डा. महेन्द्र नारायण राम अध्यक्षीय संबोधन मे सब कैँ धन्यवाद करैत सम्मेलन केँ समापन घोषणा कयलनि।

17म अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन विराटनगर द्वारा विभिन्न सम्मान विभिन्न व्यक्तित्व लोकनि के देल गेल। जेना- मिथिला रत्न, अन्तर्राष्ट्रीय सद्‌भावना सम्मान, मैथिल कारपोरेट आइकन सम्मान, विशिष्ट अभियानी सम्मान, उत्कृष्ट नागरिक सेवा सम्मान ओ विशेष सहयोग लेल सम्मान।

17म् अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन केर प्रतिभागी लोकनिक सूची उपस्थिति पुस्तिका पर अपन परिचय व प्रस्तुतिक सम्बन्ध मे अपन जानकारी देल गेल। विराटनगर लेल ई अहोभाग्य भेल जे बहुतो लोकनिक एतेक दूर-दूर सँ एहि ठाम आबि सम्मेलन कैँ अभूतपूर्व बनेलैन। स्वागत आ सम्मान मे जे किछु कमी-बेसी भेल ताहि लेल क्षमायाचना करैत छी।

हरि!! हर!!



मिथिला आ ब्रजभूमिक पुरातन संबंध कें आओर बेसी मधुर आ प्रगाढ़ बनयबाक संकल्प संग आयोजित भेल दू दिवसीय 18म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन

✍ प्रवीण कुमार झा

मिथिला आ ब्रजभूमिक पुरातन संबंध कें आओर बेसी मधुर आ प्रगाढ़ बनयबा लेल ब्रज-मैथिली अकादमीक स्थापनाक प्रयास तेज करबाक संकल्प केर संग उत्तर प्रदेश के वृन्दावन धाम मे आयोजित 18म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन केर शुभारंभ भेल. संकल्प पर सहमति प्रदान करैत उत्तर प्रदेश सरकारक ऊर्जा मंत्री श्रीकांत शर्मा श्री वृंदावन धाम के फोगला आश्रम मे आयोजित 18म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन के उद्‌घाटन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित भेलाह। कार्यक्रमक विधिवत शुभारंभ स्वामी श्री गोविंदानंद तीर्थ जी महाराज अन्य अतिथि लोकनिक संग दीप प्रज्ज्वलित क' केलनि। कार्यक्रमक अध्यक्षता चारि संप्रदाय चेतन कुटी केर अध्यक्ष स्वामी श्री फूलडोल दास जी महाराज केलनि। जखन कि विशिष्ट अतिथि के रूप मे दरभंगाक सांसद गोपाल जी ठाकुर जीक गरिमामयी उपस्थिति रहल।

अपन उद्‌घाटन भाषण मे स्वामी श्री गोविंदानन्द तीर्थ जी महाराज जनक नन्दिनी सीताक जन्मभूमि मिथिला कें निराकार ब्रह्म कें साकार करय वला भूमि बतोबैत एकरा कुशल व्यवहारक माध्यम सं सभ्यता एवं संस्कृति केर संरक्षण एवं संवर्धनक केंद्र बिंदु बतोलनि। अपना उद्‌बोधन मे ओ मिथिला भूमि कें ज्ञान व प्रेम केर समन्वयक जीवंत प्रमाण कहलनि। दरभंगाक सांसद गोपाल जी ठाकुर महाकवि कोकिल विद्यापतिक कृतित्व एवं व्यक्तित्व केर चर्चा करैत विधान सभा, विधान परिषद एवं संसद भवन में विद्यापति केर चित्र लगाओल जयबाक बात उठोलनि।

अतिथि लोकनिक स्वागत स्वनामधन्य वेदाचार्य एवं सम्मेलनक स्वागताध्यक्ष पं गंगाधर पाठक कयलनि। जखन कि इंजीनियर अजय कुमार चौधरी सम्मेलन केर आयोजनक उद्देश्य पर प्रकाश देलनि।

कार्यक्रम मे संविधानक आठम अनुसूची मे शामिल विभिन्न भाषा मे उत्कृष्ट योगदान देनिहार साहित्यकार लोकनिक संग कला, संस्कृति, पत्रकारिता एवं अन्य विधा मे बेहतर कार्य केनिहार कें मिथिला रत्न सम्मानोपाधि सं अलंकृत कमल गेल। बैंकिंग सेवा क्षेत्र के लेल नीकेश्वर दत्त शर्मा, डिफेंस क्षेत्र मे श्री कैलाश पाठक, समाज सेवा के क्षेत्र में यतेंद्र मोहन झा, भुवनेश्वर शर्मा, इंद्रमणि पाठक, वीरेंद्र कुमार शर्मा, रमेश चंद्र शर्मा, मैथिली काव्य के क्षेत्र में बेहतर कार्य केनिहार हरिश्चंद्र हरित, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र मे उत्कृष्ट योगदान देनिहारि डॉ सुषमा झा, हिंदी साहित्य के क्षेत्र मे डॉ प्रभाकर पाठक एवं डॉ अमरकांत कुमर, गायन के क्षेत्र मे दुखी राम रसिया एवं ओम प्रकाश सिंह, संस्कृत साहित्य के क्षेत्र मे बेहतर कार्य लेल रामसेवक ठाकुर आदि कें मिथिला रत्न सम्मान सं सम्मानित कयल गेल। कार्यक्रम मे सम्मेलनक महासचिव डॉ बैद्यनाथ चौधरी बैजू, चेतना समितिक अध्यक्ष विवेकानंद झा, महात्मा गांधी शिक्षण संस्थानक चेयरमैन हीरा कुमार झा, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनक अध्यक्ष डॉ महेंद्र नारायण राम, मणिकांत झा, प्रो जीवकांत मिश्र, प्रो विजय कांत झा, प्रवक्ता प्रवीण कुमार झा, चन्द्र शेखर झा बूढाभाई, विनोद कुमार झा आदिक उल्लेखनीय उपस्थिति रही। एहि सं पूर्व प्रातःकाल बांके बिहारी मंदिर सं कार्यक्रम स्थल धरि पारंपरिक मैथिल परिधान में भव्य शोभा यात्रा निकालल गेल। जकर स्थानीय लोकनिक द्वारा ठाम-ठाम पर भव्य स्वागत कयल गेल।

दोसर दिन संगोष्ठी आ कवि सम्मेलन संग भेल रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन साल 2020 केर आगमनक संग शुरू भेल कोरोना महामारीक डर सालक अंतिम पड़ाव पर सेहो कायम रहल मुदा, विश्व केर आन हिस्सा मे एकर मचाओल तांडव केर मुकाबिला भारतक स्थिति नियंत्रण मे रहल। एकर मुख्य कारण हमर सभ्यता आ संस्कृतिक संग खानपान केर सदैव सं विश्वक आन हिस्सा सं अलग रहब रहल।

ई बात 18म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक दोसर दिन 'कोरोनाः कारण आओर निदान' विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता महात्मा गांधी शिक्षण संस्थानक चेयरमैन हीरा कुमार झा कहलनि। कार्यक्रम मे बीज वक्तव्य दैत मैथिलीक प्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार डॉ. जयप्रकाश चौधरी जनक कोरोना केर प्रमुख कारण मे सन्निहित प्रकृति सं छेड़छाड़ दिस लोकक ध्यान आकर्षित कयलनि ।

संगोष्ठी प्रभारी मणिकांत झा केर संयोजन आ संचालन

में आयोजित संगोष्ठी मे पं गंगाधर पाठक कोरोना सन महामारी केर स्थाई निदान लेल धर्म आ आध्यात्मक कारक कें महत्वपूर्ण बतबैत गो- संरक्षण कें समयोचित मांग बतोलनि। अपन संबोधान मे ओ सनातन धर्म मे महामारी सं बचबा लेल निहित उपायक रोमांचक ढंग सं व्याख्या कयलनि। कार्यक्रमक अध्यक्षता करैत अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक महासचिव डॉ बैद्यनाथ चौधरी बैजू अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन मे कोरोना केर कारण एवं निदान विषय पर आयोजित संगोष्ठी कें अत्यंत उपयोगी बतोलनि।

गंधर्व कुमार झा द्वारा प्रस्तुत वेदध्वनि संग शुरू भेल एहि कार्यक्रम मे अतिथि लोकनिक स्वागत सम्मेलनक कोषाध्यक्ष प्रो जीवकांत मिश्र ने केलनि जखन कि धन्यवाद ज्ञापन सम्मेलनक प्रवक्ता सह मीडिया संयोजक प्रवीण कुमार झा केलनि।

समां बान्हलनि अंतर्राष्ट्रीय कवि शंभू शिखर- दोसर दिनक कार्यक्रम केर द्वितीय सत्र मे भव्य कवि सम्मेलनक आयोजन कयल गेल। मैथिली साहित्य जगतक प्रसिद्ध कवि डॉ जयप्रकाश चौधरी जनक जीक अध्यक्षता आ हरिश्चंद्र हरित केर संयोजन संग मणिकांत झा केर संचालन मे आयोजित भव्य कवि सम्मेलन मे मिथिला आ ब्रजभूमिक कवि लोकनि अपन कविताक माध्यमे मिथिला आ ब्रजभूमि केर पुरातन संबंध कें विशेष रूप सं उजागर करैत अनेक वर्तमान संदर्भ कें अपन रचनाक विषय बनोलनि। ओतहि, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपन प्रतिभाक परचम लहरेनिहार मिथिलाक सौराठ गामक लाल शंभू शिखर अपन मैथिली रचना 'कन्हा पर हम हर उठौने पक्का ठेठ किसानी छी, मोन में रखने काशी छी, हम सब मिथिला वासी छी...' क प्रस्तुति संग समा बांधि देलनि। दर्शक लोकनिक जोरदार अनुरोध पर ओ अपन चर्चित हिंदी कविता 'हम धरती पुत्र बिहारी हैं...' सेहो सस्वर गाबि सुनोलनि।

कवि सम्मेलन केर खासियत रहल जे देश केर प्रधान सेवक कें श्रीरामजन्मभूमि पूजन करोनिहार प्रधान आचार्य पं गंगाधर पाठक सेहो कवि सम्मेलन मे एकटा कविक रूप मे मंचस्थ भेलनि। ओ स्वरचित मिथिला वर्णन केर भावपूर्ण प्रस्तुति देलनि। कवि सम्मेलन मे अपन रचना प्रस्तुत केनिहार आन कवि मे डॉ महेंद्र नारायण राम, दिनेश झा, शारदानंद सिंह, नीलम झा, डॉ सुषमा झा, प्रेमशंकर झा, जगदीश शर्मा नीलम, अशोक अज्ञ, इंद्रकांत झा, राहुल कश्यप, डॉ रामसेवक ठाकुर, प्रवीण कुमार झा, चंदन मिश्र, चंद्र प्रकाश वर्मा आदिक नाम उल्लेखनीय रहल।

सम्मेलनक तेसर सत्र मे रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन कयल गेल। केदारनाथ कुमर के गाओल गणेश वंदना 'गौरी के ललना...' केर संग शुरू भेल कार्यक्रम मे डॉ सुषमा झा कवि कोकिल विद्यापति रचित गोसाउनि गीत 'जय जय भैरवी...' प्रस्तुत केलनि। जखन कि मिथिला एवं ब्रजभूमिक गायक कलाकार दुखी राम रसिया, ओमप्रकाश सिंह, नवल-नन्द आदि अपन प्रस्तुति सं मिथिला आ बृजवासी कें झूमय लेल विवश कश देलनि। डॉ रामसेवक ठाकुर केर संचालन मे आयोजित कार्यक्रम में हीरा कुमार झा, रामबहादुर यादव एवं केशव विभिन्न वाद्य यंत्र पर अपन आकर्षक संगति देलनि।

❑❑❑



निकाह

✍ सोनू कुमार झा

मनोहर घर ऐले छल। देहक कपड़ा उतारि, हेंगरमे लटकेलक। लूँगी लपेटि पलंग पर परि रहल। की तखने मोबाइलक घंटी बजलैक। मोबाइल उठाक' देखलक। स्क्रीन पर कोनो नाम नहि छलैक। खाली नंबर छलैक। ओ फोनक म्यूट बटन दबाक' नीचा राखि देलक। थोरे कालमें फोन कटि गेलै। लगले फेर दोहराक' घंटी बजलैक। मनोहरक मोन खौझा गेलै। भरि दिनक थाकल ठेहियायल देह। घर अएलाक बाद जेना कोनो काजक नहि रहि जायत छैक। से एकर रोजक ई अभ्यास छैक। पहिने कनीकाल परि रहत। तकर बाद उठत त' वाशरूम जायत। तखन चाह पियत। तखने ककरो फोन करत। चाहे आन कोनो काज करत। से जखन लगातार दोहराक' घंटी बजलैक। त' मोबाइल हाथमे लेलक। एहि बेर स्क्रीन पर ट्रूकॉलर पर नाम आबि गेल छलैक। कोनो मुश्लिम नाम छलैक। ओकरा ठीकसँ पढ़ि नहि भेलैक। लेकिन फोन रिसिभ क' लेलक। ओम्हरसँ आवाज एलैक. 'हेलो..' मनोहर सेहो कहलक-हाँ हेलो। के? ओम्हरसँ फेर आवाज एलैक. हमरे चिन्हलहू ? मनोहरक मोन आर खौझा गेलै। ई अभ्यास लोक सभक बड़ खराब छैक। फोन करत आ तखन पूछत, हमरा चिंहलौ। कहू त हम के बजैत छी? भरि दिन त लोके के बीचमे रहैत छी। ककर ककर आवाज मोन राखू। कतेक नम्बरे मोबाइलमें सेव करू। मनोहर कहैय बला छल जे नहि चिंहलौ। ताहिसँ पहिने ओम्हरसँ फेर आवाज आएल- हेलो ना न चिन्हलहू यारा? अंतिम शब्द कानमे परिते मनोहरक दिमाग आवाज के स्कैन कर' लगलैक।

धीरे धीरे मनोहर के मोन पर' लगलैक। जेना जेना बितलाहा दिनक पन्ना उलटैत गेलै। तेना-तेना मनोहरक मोन अतीत दिस भागल गेलै। चल गेलै आइसँ दस-पंद्रह वर्ष पहिने। जहिया ओ कॉलेजमे पढ़ैत छल। घरक स्थिति ठीक नहि छलैक। तैं ओ एकटा बीमा कम्पनीमे अभिकर्ताक काज सेहो करैत छल। बीमा लेबाक लेल ओकरा लोक सभसँ भेंट सेहो कर' परैत छलैक। दिनमे मनोहरके कॉलेज रहैत छलैक। तेँ ओ अधिक काल लोकसँ भेंट करबाक लेल भोरे जाइत छल। चाहे साँझमे जाइत छल। बेसी लोक साँझेक' बजबैत छलैक। से जखन ओ हुनका सभक लगसँ वापस होइत छल। तँ अबेर भ जाइत छलैक। वापस होइत काल बजारक जे काज रहैत छलैक। से कइयेक' घर अबैत छल। बजारमे सामान किनबाक लेल अपन निर्धारित दोकान रखने अछि। जाहिमे ओ सामान किनैत अछि। से तरकारियों बालिक दोकान फिक्से छैक। संकर चौकसँ सटले उत्तर दिस एकटा तरकारी बाली बुढ़िया बैसैत रहै। मनोहर सभदिन ओकरेसँ हरियर तरकारी किनैत छल।

एकदिन साँझमे मनोहर घूमल त' बुढ़ियाक जगह पर एकगोट युवती बैसल छल। आदतन मनोहर ओतहि रुकल। पहिने तरकारी किनलक। तखन बुढ़ियाके नहि देखि ओकरासँ पुछलक-गै एत' जे बुढ़िया बैसैत रहै से कत' गेलै? अम्मी है हमर। बेराम परि गायल है। ताहि से हम बैठे हियै। ओ युवती कहलकै। मनोहर ओकरा पाई देलकै आ तरकारी लऽकऽ विदा भ' गेल।

आब सभदिन दोकान पर वैह बैसैक। ओकरा बैसने दोकानदारीयो बेसी चलैक। छौरा-माड़रि त सहजे। बूढ़ आ महिला सेहो बेसी ओकरे दोकान पर अबैक। देखैमे त छौरी रहै पीड़श्यामे रंगक। लेकिन मूँह पनिगर रहै। सबसँ पैघ बात रहै जे सभसँ हँसियेक' बात करै। एकोटा गँहिके के आपस नै जाय दैक।

मोन परलैक मनोहरकेँ। एक दिन ओ कतहुसँ घूमल रहय। चौक परहक सभटा तरकारी बला दोकान उठि गेल रहै। इहो छौरी सभटा समेटि लेने छल। मनोहर ओकरा लग रुकलै। रुकिते ओकरा पुछलकै- गै आइ तरकारी नै हेतै की?

काहे न होतै। लेकिन तू एतना अबेर से काहे एलहू?

की कहैत छैं। हमरा त एहिना अबेर भ जाइत अछि। कहियो काल त अहूसँ बेसी अबेर। लेकिन तू एखन तक किएक छिही? आइ गहिकी बेसी हो गेलै। एहे से अबेर हो गेलै। ओ छौरी कहलकै। मनोहर के जेना फेर किछ मोन परलै, पुछलकै- गे माय ठीक भेलौ?

हाँ आब आराम है। दू दिना से गहींकि बेरमे दुकानों पर अबे है। अच्छा जल्दी बोल' का लेबहू? कोबी की परोर ?

कोबी त महग हेतै एखन। परोरे द' दे। मनोहर कहलकै।

हो परोर पकल पकल है। तू कोबी ल' जा।

है। ओतेक पाई नै अछि गै।

हो तू ल' जा ने। पैसा कल द' दियहू।

उधार देबही ? तोरा बिश्वास छौ हमरा पर?

हाँ हो। बिश्वास काहे न होइहे। तू यारा जे छहू हमर। छौरी हँसीते बजलै। है ई की बजैत छै तू। मनोहर एकरती डपटैत बाजल। हो भरदिना रोड पर बैठल बैठल हमहू आदमिये के चिनहत हियै। अब तोरे बोल देलिय त बोल देलिय।आज से तू हमर यारा हो गेलहू। अब जा। बहुत अबेर हो गेलै । अम्मी पेरा ताकैत होतै। मनोहर तरकारीक झोरा साइकिलक हेंडिलमे लटकेलक आ बिदा भ गेल।

साइकिल चलबैतकाल मनोहर तरकारीबालीक मादे बहुत किछु सोचौत रहल। एकरा मोनमे तरकारीबालीक यारा कहबाक भाव.भंगिमा बेर-बेर अबैत रहलै। तरकारी त' रोजे ओकरासँ किनैत अछि। एहन कहाँ कहियो लागल रहै। आइ ओकर हँसब मनोहरक

मोनक कोनो कोनमे जक' जेना बैस गेल रहै। मोने मोन हँसैत साइकिलक पैडिल मारैत घर पहुच गेल। आन दिन भोजन केलाक बाद किताब उनटाक' पढ़ैत छल। से आइ ताहूमे मोन नहि लगलैक। किताब बंद क'क' परि रहल। आँखि बंद क'क' सुतबाक प्रयास केलक। से निन्नो नहि भेलैक। आँखि बंद करिते वैह छौरी सोझामे आबि जाइक। कच्छ-मच्छ करैत कहुना निन्न भ गेलै।

भोरमे उठल त बहुत अबेर भ गेल रहै। जल्दी-जल्दी तैयार भेल। कॉलेजक अबेर भ रहल छलै। से साइकिल उठेलक आ सोझे कॉलेज बिदा भ गेल। आइ कॉलेजमे एकर दुइयेटा क्लास रहै। दुनू क्लास केलाक बाद मनोहर घर दिस बिदा भेल। क०लेजक कैम्पससँ बाहर भेल। सरक पर अबिते साइकिलक हैंडिल घरक बदला संकर चौक दिस घुमि गेलैक। सोझे पहुँच गेल ओहिठाम जतश तरकारीक दोकान छैक। ओ छौरी एखन दोकान लगाइये रहल छल। मनोहरकेँ देखिते मुस्काइत पुछलकै। आइ एखनिये आबि गेलहू यारा ?

हाँ! कॉलेज आएल छलहुँ। घर जाए लगलहुँ। तँ मोन भेल जे एक बेर तोरा देख ली। मनोहरो ओहिना हँसिते कहलकै।

हमरा देखे एलहू? ओ छौरी मुड़ी उठाक' एकरा दिस तेना तकलकै। जे कनी देर लेल तँ मनोहर सहमि गेल। लेकिन ओकर ठोढ़क मुस्की देखिक' आश्वस्त भेल। ओहो कहलकै-किये नै आबि सकैत छियौ ?

हाँ हो, किये ने, तू हमर यारा जे छहू। अच्छा एगो बात बोलश त'?

की ?

तू कॉलेज पढ़े जाइ छहू?

हाँ ?

हुंआ किताबो आर मिले है पढ़े ला ?

हाँ गै। तोरो पढ़े के मोन होइ छौ से ?

हाँ हो।

पढ़' अबैत छौ से ?

हाँ हो। तोरे का बुझाय हश।

कतेक तक पढ़ल छिही से?

चौथी किलास तक पढ़ल हियै हो।

त पढ़ाई किये छोइर देलही ?

अब्बू के इंतकाल हो गेलै। तब अम्मी बेचे जाय लगलै। हम घरमे खाना पकबे लगलिये। इहेमे पढ़ाई छूट गेलै। ओ छौरी कहिते रहै की एकटा गाहक आबि गेलै। ओकरा तरकारी द क विदा केलक। फेर मनोहर पुछलकै-अच्छा कह' कोन किताब पढबिही ?

कोइ भी कहानी के।

ठीक छै काल्हि लेने एबौ। अच्छा एकटा बात त कहबे ने केलय?

का ?

तोहर नाम की छौ ?

महजवी ।

एकर मने की होइ छै से बुझल छौ ?

हो तोरा नाहित एते मतलब हम न बुझे हियै।

त हम कहै छियौ ने।

का ?

चाँद जइसन मुँह बाली। ई सुनिते छौरीक ठोढ़ सँ मुस्की छिहलि गेलै-अच्छा अखनी जा।

ठीक छै जाइ छियौ। फेर साँझमे एबौ। तरकारी रखने रहिये। कहिक मनोहर विदा भ' गेल। तकरा बादसँ दुनूमे खूब गप्प होइ। मनोहरकेँ जखन-जखन समय भेटै, संकर चौक चल जाय। महजवी लेल कोनो कहानीक किताब। चाहे कोनो पत्रिका ल' क'।

महजवीयो के बड़ मोन लगै एकरासँ गप्प करबामे। ओहो जेना एकर बाट तकिते रहै। गप्प करैत करैत दुनू एतेक लगीच भ गेल, जे कोनो बात एक दोसरा सँ चोरबैत नहि छल। से पारिवारिक गप्प त सहजे। नितांत पर्सनल बात सेहो करैत छल। जाहि दिन दुनूकेँ भेंट नहि होइ। ताहि दिन मोन नहि लगै। एक दिन मनोहर साँझमे घूमल तँ अबेर भ गेल छलै। जारह खसि परल रहै। तेँ बाजार सेहो सबेरे बंद भ गेल रहै। लेकिन गोटपगरा दोकान खुजल रहै। मनोहर संकर चौक पहुँचल। त देखलक जे महजवी दोकान समेट रहल छल। साइकिल ठाढ़ केलक। एकरा देखिते महजवी तामसे बिख भ गेलै - ई कोन टाइम है आबे के? तोरे ठंढा न लगे ह' त' का लोको के न लगे है? अम्मी सीतमे बैठल है, कुछो हो जेतै त' जिम्मा लेबहू तू? महजवी एके साँसमे सभटा बाजि गेल। मनोहर ओकर चुप-चाप सभटा सुनैत रहलै। मोन भेलै जे एक बेर कहि द-तू की हमर बौह छै? जे सभटा तोरे पूछि क करू। लेकिन बाजलकिछ ने। महजवी ओकरा दिस दूटा पन्नी बढा देलकै।

ई की छौ ? मनोहर पुछलकै।

एकटा में लबका तरकारी ह'। एकटा मे सबइ।

सबइ ? मनोहर अकचकाइत पुछलकै।

हाँ बौआ कल हमरा आर के पबनी है ने। उहे से ई इनका लागी लौने छलैय। हम कखनी से बोलै छलियै चले। लेकिन ई बोलै छलै जे बलू एबे करथिन। महजवीक माय कहलकै। महजवी अपने किछ ने बाजल। चुपचाप अपन दोकान समेटैत रहल। एकबेर मुरी उठा क खाली मुस्का देलकै। मनोहर चुपचाप ओकरा देखैत रहलै। दोकान समेटल भ गेलै त दुनू माय-धी बिदा भेल। मनोहर सेहो बिदा भेल। पाछू सँ महजवी टोकलकै- हो रुक'।

आब की भेलौ? मनोहर कहलकै।

कल दिनमे दू बजे अबिह'। काम है।

कोन काज छौ?

कल हमरे मोबाइल किन दिह'।

मोबाइल...? मनोहर तेहन भावमे बाजल जेना ओ मोबाइल किनबामे असमर्थ अछि। महजवी जेना ओकर मोनक बात बूझि गेलै। ओ कहलकै. हो तोरे पैसा न खरच होइह'। हमरे पास पैसा है। तू आर बुझे छहू बन्हिया-खराब। इहे से तू चलिह'। हमरा बन्हिया

मोबाइल किन दिह'। मनोहर गरदनि हिलाक' स्वीकृति द' देलकै- 'ठीक छै'। मनोहर अपन साइकिल ल' क' घर आबि गेल। आइ फेर एकरा नींद नहि भेलै। आइ सँ पहिने महजवी कहियो एना भ क नै बाजल रहै।

प्रात भेने कॉलेज जेबाक नै रहै। ईदक छुट्टी रहै। से नियारलक जे नहि जायत बाजार। अपन काजमे लागल रहल। मुदा बारह बजेक बाद जँ जँ घरिक कांटा टेढ़ होइत गेलै। तँ तँ एकर मोन सेहो झुकैत गेलै। ठीक टाइम पर पहुँच गेल संकर चौक। जत' पहिनेसँ महजवी ठाढ़ रहै। महजवीके देखिक' लगबे ने करै जे ई वैह छौरी अछि। आइ ओकर नामक सार्थकता सिद्ध क रहल छलै। ओकर स्वरूप। मनोहर एकटक ओकरा दिस तकिते रहि गेल। महजवी आँखि लग चुटकी बजाक' कहलकै- हो का देखे छहू ?

किछ ने। बस ओहिना किछो सोच' लगलियै।

'का'? महजवी पुछलकै

'किछ ने। चल।' मनोहर कहलकै आ दुनू बिदा भ गेल। दुनू एकटा मोबाइलक दोकानमे गेल। मनोहर अपन पसंदसँ महजवीके मोबाइल किनिक महजवीक हाथमे देलकै। महजवी हाथमे मोबाइल लेलक। उनटा-पुनटा देखलकै। नीक लगलै। फेर मनोहरसँ पुछलकै-हो ऐसे फोन कैसे करबै। मनोहर ओकरा सभटा बुझा देलकै। कोना फोन कएल जाइत छै। कोना नंबर सेभ कएल जाइत छै। कोना मैसेज कएल जाइत छै। फेर महजवी कहलकै- हो पहिले तू अपन नंबर सेभ क दहू।

हम अपन नंबर ? मनोहर कहलकै।

हाँ हो। एतना रात के जे आबे छहू। से पूछ लेब' ने। महजवी कहलकै। मनोहर एकबेर ओकरा दिस देखलकै। फेर पुछलकै- कोन नामसँ सेभ क' दियौ? यारा। तू हमर यारा छहू ने। उहे नाम से सेभ क दहू। महजवी कहलकै। मनोहर ओकर मोबाइलमे अपन नंबर सेभ क देलकै। आ अपनो मोबाइलमे ओकर नंबर सेभ क लेलक। दिन लुक-झुक कर' लागल रहै। दुनू ओतसँ बिदा भ गेल। राइत मे मनोहरके मोबाइल पर महाजवीक नंबरसँ एकटा मैसेज एलै। मनोहर चौंकि गेल। सोच' लागल जे की ओकरा अंग्रेजियो लिख' पढ़' अबैत छैक। इहो अंग्रेजीमे वैह लीखिकश पठा देलक। जे ओ लीखिक' पठेने रहै- आई लव यू।

बहुत दिन धरि दुनूमे एहिना चलैत रहलै। दुनूमे प्रेम झगाढ़ होइत रहलै। दुनू के एक दोसराक बिना चौन नहि भेटै। ओना आब बेसीकाल दुनूके गप्प फोने पर होइ। एक दिन मनोहर कहलकै- तोरासँ एकटा जरूरी गप्प करबाक अछि। का बोल' न? महजवी कहलकै। फोन पर नै। मनोहर कहलकै त ठीक है। कल आब' दोकान पर। महजवी कहलकै। थोरेक कालक बाद मनोहर ओकर दोकान पर पहुँचल। महजवीक माय नहि आएल छलै। से असगरे ओ गाहकमे व्यस्त छलै। गाहक सभ हटलै तखन मनोहर पर नजरि परलै- तू कखनी एलहू यारा?

एखने।

आब बोल' का बोले के ह'।

एकटा बात कहियौ।

का?

तोरा बुरा त नै लगतौ?

न हो। बुरा काहे लगिहै। तू हमर यारा छहू। यारा के कोइ भी बात बुरा न लागिहै। महजवी कहलकै। मनोहर देखलक जे दोकान पर एखन कियो नहि अछि। तेँ एखने कहब बेसी नीक। ओ कहलक-तू हमरासँ बियाह करबिही? महजवी मनोहर दिस देखैत मुस्काइत कहलक. बस एतने बात। ओ फेर कहलक- तू त जाने छहू यारा। तोरे कहला पे हम कुछो कर जैहै। अपन जान दे दिहै। पर एगो बात हम तोरे से पूछियो यारा।

की ?

तू हमरे से पिरेम करए छहू ?

हाँ अपन जानसँ बेसी।

तब हमरे इज्जत, हमरे घर के इज्जत तोरे होल' की ना।

हाँ एकदम भेल। लेकिन तू कह' की चाहैत छै से कह' ने। मनोहर कहलकै। सेहे त बोलै छिय' यारा। तोरे से अगर हम निकाह कर लेबै त लोक हमर अम्मी पर उंगली उठेतै। बोलतै जे बलू मसोमतिया भर दिन बेटी के दोकान पर बैठबैत रहै। एहे से बेटी उरहरि गेलै। आ ई दाग हमरे खानदान पे लग जैहें। हम ई अच्छे से जानत हियै यारा। तोरा नाहित शौहर न मिलि है हमरा। तभो हम निकाह ओकरे से करिहै। जेकरासे हमर अम्मी बोलतै।महजवी मनोहरसँ कहलकै। त की हमर प्रेमक कोनो महत्व ने? मनोहर धीरेसँ पुछलकै। ई तू का बोलै छहू यारा। हम तोरे से मोहब्बत करे हिय। तू हमरे यारा छहू यारा। तू हमरे यारा रहबहू। खाहे हमर शौहर कोई हो। महजवी कहलकै। मनोहर पूरना स्मृतिमे डूबले जा रहल छल। ओहिसँ तखन निकलल। जखन महजवी फेर कहलकै- 'हो ना चिनलहु का? हम महजवी बोले हिय।'

'हाँ चिन्हलियौ। एतेक दिन बाद कोना मोन परलौ से क'ह?' मनोहर पूछलकै। 'हो याद त तू रोजे आबे रहलू। पर तोरे ऊलम्बर पर कभियो फोने ने लागत रहे।'

'त आइ ई बला नम्बर कोना भेट गेलौ?'

'फेसबुक से हो।'

'त तोरा आब फेसबूको चलब अबैत छौ।'

'हाँ हो। हमरा बहुतो कुछो आब' है। पहले तू कल चार बजे आके मिलहू न। न त'....

'कत' गै?'

'हुए जहाँ पहले मिलत रहू।' कहिक' महजवी फोन काटि देलक...



अप्पन भाषा

✍ रेवती रमण झा

खटराक चाहक दोकान बड़ नामी अछि। भोर-साँझ ओत' लोक जमा होइयै आ गप्प-सरक्का चलैत रहैत अछि।

मुसहरी टोलसँ ल' क' राष्ट्रपति-भवन तक केँ गप्प सुनब ओहिठाम। ताहूमे एखन आबयवला पंचायत-चुनाव चौककेँ जीवन्त बनौने रहैत अछि। फलाँ मुखियामे ठाढ़ हेताह त' चिल्लाँ सरपंचमे। फल्लाँ हारि जेताह त' चिल्लाँ जीति जेताह। हुनका फल्लाँ टोलमे एतेक वोट छन्हि त' चिल्लाँके ँ ओहि टोलमे एतेक वोट छन्हि। लगनमे त' खटराक चाहक बिक्री आओर बढ़ि जाइत अछि। दिल्ली, सूरत, हैदराबाद, मुम्बई, कोलकाता आदि जगहसँ लोक सभ अपन गाम अबैत छथि। गाम-गमाइतमे नोत पुरलाक बाद घर घुरि खटराक चाहक दोकान पर जमा हेबे करताह। मुदा चाह त' एक बहाना रहैछ। असल बात छै जे अपन समांग सभ केँ मुँह देखब सेहन्ता भेल रहैत छनि। से देखि मन उल्लसित भ' उठै छनि हुनका सभहिक।

आइ घुरनानन्द गाम गेल रहथि। आन दिन तँ स्कूल, कार्यालय, बजार सभ खुजल रहैत अछि। मुदा आइ रवि छै तैँ सभकिछु बन्द छल। छुट्टी-दिन गामक चौकसँ बढ़ियाँ जगह कोन भेटतनि। से ओ पहुँचल छलाह खटराक दोकानपर। ओहिठाम गप्पक दौर चलि रहल छल। 'यौ घुरन भाइ! कहाँदनि अपन रुद्रकान्तक कनियाँ मैथिली गीतक कैसेट बहार केलीह अछि 'हमरा अँगनामे वसन्त' घुरनानन्दकेँ टोकैत कैलास मिसर बजलाह।

'ओकरा अँगनामे त' ओहिना वसन्त रहै छै। चारूकात जंगल-झाड़। आमक गाछ सभ पर गुरीचक लत्ती लतरल! बाड़ीमे सौंसे तिलकोर आर आन-आन चीजक लती सभ चतरल!' घुरनानंद कहलखिन कैलाश मिसरसँ।

'नहि यौ भाइ! हमर कहबाक अभिप्राय से नहि। माने ओ गीतगानि त' छलीहे, आब एकटा कैसेटो निकाललनि अछि।'

'रुद्रकान्त त' मैथिलीक घोर विरोधी छलाह। हुनका त' मैथिली गीत कनियो नहि सोहाइत छलनि। तखन हुनकर कनियाँ मैथिली गीतक केसैट कोना बहार कयलनि?' घुरनानंदक एहि प्रश्नपर तुरूछैत कैलाश मिसर बाजि उठलाह 'यौ भाइ! जखन लोकक पेट जरय लगैत छै त' किछु करय लेल तैयार भ' जाइ छै। ताहुमे ई त' नीक काज छै। हुनकर कनियाँ पहिनहिसँ नीक गीत गबै छलखिन। कुँज बिहारी मिश्र आ पूनम मिश्रक गीत सुनि प्रेरणा जगलनि आ रुद्रकान्तक सार जे मुम्बईमे रहै छथि, मदति केलखिन। एखन मार्केटमे कैसेट अयबे केलैए। काल्हि नोनियाँ टोलमे बजैत सुनलियै 'हम नहि आजु रहब एहि आँगन...।'

ताबत गामक ललन यादव आ विनोद सिंह पहुँचल। कैलाश मिसरक बातकेँ कटैत ललन बाजल 'धू! मैथिली भाषा, कोनो भाषा छै। खाली दुखे-दुख वला गीत! अरे गीत कने रसगर होयबाक चाही, जाहिपर लोक झुमि जाए। देखह भोजपुरीक कैसेट सभ कतेक चलै छै। सभठाँ वएह लागल रहै छै। हिन्दियो फिल्मी गीत ओकरा आगू फेल अछि।'

'एना नहि कहक ललन भाइ! दोष मैथिलीक नहि, दोष मैथिलक मतलब हमरे-तोहर सभक अछि। कनी गामोसँ बहराह आ बाहर जाकय देखहक! अपन भाषाक प्रति कतेक स्नेह छै लोककेँ। हालहिमे बेटा लग कोलकाता गेल छलहुँ। हिन्दीमे पुछियै ककरो त' उत्तर बंगलेमे दिअय। कहैत रहथि हमर बड़का भाइ साहेब जे रामेश्वरम् आ कन्याकुमारीमे भाषाक समस्या आफद भ' गेल छल। हिन्दी सुनैत सभ मुँह ताक' लागय, जेना हमसभ बौक-बताह रही। कनीमनी अंग्रेजीसँ काज चलि जाए। मुदा अधिकांश लोक अपन मातृभाषा तमिले बजैत छल। होटल, दोकान, कार्यालय सभक साइनबोर्ड तमिले लिपिमे छल।' कैलाश मिसर अपन पक्ष रखैत कहलनि।

कैलाश मिसरक बातक दहीमे सही करैत उदय पासवान बाजि उठल 'एखनि जे राष्ट्रपति छथि कलाम साहेब, हुनको स्कूली-शिक्षा अपन मातृभाषा तमिलेमे भेल छनि। हुनकर माय हुनका कोरान आ रामायणक खिस्सा तमिलेमे सुनबै छलथिन। ई बात हम नहि कहै छी। ओ अपने अपन आत्मकथामे लिखने छथिन।' 'यौ कैलाश काका! बाहरक बात अलग छै। हमर बात कने अनोन लागत। सांच कहै छी। मैथिली पढ़लासँ गुजर नहि चलै छै। पढ़ि-पढ़िक' सभ गाममे पड़ल रहयै, नेता सभक पाछाँ समय बर्बाद करयै। किछु कहियौ, मुदा रोजगार अंग्रेजिएमे भेटै छै। कनी-मनी संस्कृत आ हिन्दीमे सेहो गुंजाइश छै।' कैलाश मिसरक बात पर ललन यादव बाजि उठल।

'यौ कैलाश कका! ललनोक कहब बेजाय नहि छै। असल समस्या छै अपन भाषाक संग जे एकरा समाजक सभ जाति स्वीकार नहि करै छै। विद्यापति एकरा संस्कृतक बेड़ीसँ मुक्त कय आमजनक भाषा बनेबाक प्रयास कयलनि। भक्तिगीत, श्रृंगार-गीत, व्यवहार-गीत, संस्कार-गीत आदिक माध्यमसँ एकरा लोकप्रिय बनेबाक अद्‌भुत प्रयास कयलनि। मुदा समाजक प्रबुद्ध वर्ग एकरा पिछड़ा, दलित, मुस्लिम आदि वर्गमे स्वीकार्यताक लेल कोनो प्रयास नहि कयलनि। जे सभ दिल्ली पंजाब गेल ओ सभ ओही रंगमे रंगि गेल। फलतः ओ सभ अप्पन मातृभाषकेँ छोड़िये देलक। हिन्दीयो के 'तेरे

को, मेरो को' कयक' टांग-हाथ तोड़ि देलक।' विनोद सिंह कैलाश मिसरकेँ जबाव दैत कहलक।

घुरनानन्द नौकरी-पेशावला लोक छथि। कार्यालयमे कार्यक तनावकेँ दूर करबाक हेतु छुट्टीमे टाइम पास कर' लेल गेल छलाह गाम। मुदा गामक युवा तूर सभ हिनका फुसियाहीक गप्प-सप्पमे ओझरा देलकनि। गप्पकेँ विषयांतर होयबासँ रोकैक लेल घुरनानन्दकेँ कनेक हस्तक्षेप करब आवश्यक छलनि। से ओ कहलनि 'सुनै जाह!' फेर चाहक चुल्हि दिस देखि बजलाह 'रौ खटरा! चारि-पाँचटा स्पेशल चाह बना त'! पहिलुका पत्ती बदलिक' फ्रेश पत्ती दिहनि। महींसक दूध बाँचल होउ त' ओहीमे चाह बना।' घुरनानन्द चाहक दोकानक बेंचपर पएर मोड़ैत बैसलाह आ फेर गंभीर होइत बजलाह 'आइ मातृभाषा-दिवस छै। अजुका दिन हमरा सभकेँ संकल्प लेबाक चाही जे मातृभाषासँ उचित स्नेह करी आ एकरा सम्मान दी।'

'आइ मातृभाषा-दिवस कोना भ' गेलै?' ललन बात केँ कटैत बाजल। एहि बीच लोक सभ अबैत गेल, चाह पीबि जाइत गेल। आपसमे हालचाल होइत रहल। 'कहिया अयलहुँ?' 'कहिया जाएब?' गप्पक क्रम एहिना चलैत रहल। ताबत खटरा आँगुर आ तरहत्थीक सहारे पाँच कप चाह आनि सभक हाथमे द' देलक। चाहक प्रथम चुस्की लैत कैलाश मिसर बजलाह 'खटरा चाह बड़ नीक बनौलक अछि।' परीछन कातमे बैसल छल। चाहक कप ठोरमे सटबिते अलगटेँट जकाँ बाजल 'पत्ती कने बेसी द' देने छै।'

घुरनानन्द गप्पकेँ फेर मोड़ैत कहलनि 'हँ, कनी नीक बात सुनह। 21 फरवरी 1952 क' ढाकामे छात्रसभ बंगलाकेँ राष्ट्रभाषा बनेबाक मांग ल' क' पुलिसक गोलीसँ शहीद भ' गेल। संयुक्तराष्ट्र संघ एहि स्मृतिमे हर साल, एहि दिनकेँ मातृभाषा-दिवसक रूपमे मनेबाक निर्णय लेलक। आइ 21 फरवरी छै। तैँ आइ मातृभाषा-दिवस अछि। हमर सभक मातृभाषा मैथिली अछि। संकल्प लै जाइ जाह जे अपन बच्चाकेँ विद्यारंभ मैथिलीयेमे करायब आ अक्षरारंभ मिथिलाक्षरेमे।'

'वाह। बड़ नीक दिन अछि आइ।' विनोद सिंह एहि गप्पपर ध्यान दैत बाजल। 'आगू सुनह! बलराज सहनीक नाम सभगोटे जनिते छह! ओ बड़का फिल्मी अभिनेता छलाह। ओ पहिने शान्ति- निकेतनमे हिन्दीक प्राध्यापक रहथि। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोरसँ हरदम भेंट होइन। एक दिन गुरुदेव हुनका पुछलखिन 'बंगला सीखि रहल छी ने?'

बलराज कहलखिन 'जी, सीखि रहल छी।' लेकिन गुरुदेव बुझि गेल छलाह जे ओ मोनसँ बंगला नहि सीखैत छथि।

बलराजक मोनमे यक्ष-प्रश्न उमरय लागल जे एक तरफ 'विश्व भारती'क माध्यमसँ अखिल विश्वक बात करयबला टैगोर प्रांतीयताक शिकार कोना भ' गेलाह ओ त' शान्तिनिकेतनकेँ भारतीय संस्कृतियेटाक नहि, विश्व संस्कृतिक केन्द्र बनाबय चाहैत छलाह। तखन प्रांतक भाषा हमरापर थोपि ओ कोन ढोंग क' रहल छथि? ललन यादव आ विनोद सिंह ध्यानसँ घुरनानन्दक बात सुनैत छल। एखन जेना चाहक दोकान कोनो प्रबुद्ध वर्गक गोष्टी बनि गेल छै। चौकक फुहर भाषा आ गारि-गलौज जेना बिला गेल छै। विषय-वस्तुकेँ आगू बढ़बैत घुरनानन्द बजलाह 'एक दिन फेर टैगोर बलराजसँ पुछलथिन 'पढ़ेबाक अतिरिक्त आओर की सभ करैत छी अहाँ?' ओ हिन्दीमे जवाब देलनि 'हम अंग्रेजिओमे लिखैत छी, जे अंग्रेजीक प्रमुख पत्रिका सभमे छपैत अछि। एहिमे हम खूब नाम कमेलहुँ अछि।'

'लेकिन अहाँक भाषा त' पंजाबी अछि। पंजाबीमे किएक ने लिखैत छी?' 'हम कोनो प्रान्तीय भाषामे किएक लिखू, जखन कि हम अपन पूरा देसक लेल लिखि सकैत छी।' बलराज टेगौरकेँ उत्तर देलनि। वयोवृद्ध टैगोर हुनकर कन्हा पर हाथ रखैत कहलखिन 'हम त' बंगलामे लिखैत छी, लेकिन पूरा हिन्दुस्ताने नहि, सारा संसार हमरा पढ़ैत अछि। मायक भाषा अप्पन भाषा होइत छै। ओहिसँ बढ़िक' कोनो आन भाषाक नहि। अप्पन भाषामे लिखू। प्रतिष्ठामे कनियो कमी नहि आएत।'

शनैः शनैः रौद तेज होइत गेलै आ खटराक दोकान खाली होइत गेल। जन-बोनिहार अपन-अपन खेत दिस चलि गेल; मात्र दू-चारि गोटे बाँचल छलाह। खटरा जे आब चाहक बर्तन सभकेँ झामसँ माँजि रहल छल, बाजल 'घुरनबाबू! केहन नीक बात कहलखिन टैगोरबाबा बलराज सहनीकेँ! ओ ठीके कहलखिन। सत्ते अपन मातृभाषा बड़ प्रियगर होइ छै। जेहने अप्पन माए तेहने अप्पन भाषा नीक लगै छै। ओ कपूत अछि जे अप्पन मायक भाषामे नहि लिखैय-पढ़ैयै। ई सुनि घुरनानंद डिक्कीसँ एकटा मैथिली कथा-संग्रह आ उपन्यास दैत खटरासँ कहलनि 'ई राखि ले खट्टर। अपने भाषामे लिखल किताब छै। तू त' समाचार-पत्र पढ़ि लै छेँ। ई त' आओर बढ़ियासँ पढ़ि लेबेँ।' खटरा दुनू किताब हुलसिक' लेलक आ उनटा-पुनटाक' कहलक 'जेना बोलै छियै ओहने लिखल छै। ठीके बड़ निमनसँ पढ़ि लेबै हम। हमर मगरपट्टी वाली सेहो पढ़ि लेतै घुरनबाबू। बड़ नीक काज कयलौहेँ। मुदा हम मंगनीमे नहि लेब। एकर दाम द' क' लेब।' घुरनानंद कतबो मना केलखिन ओ नहि मानलकनि। अंतमे ओ कहलखिन 'अच्छा, दोसर दिन अबै छी त' द' दीहेँ।'

घुरनानन्द सरकारी नौकरीमे रहितहुँ अपन ईमानदारी के बचाक' रखने छथि। कथा-कविता त' नहि लिख' अबै छनि। मुदा संगमे किछु मैथिली पोथी सभ रखितहि छथि। अपनो पढ़ै छथि आ बेचियो लै छथि। सीधे प्रकाशकेसँ पोथी मंगवै छथि त' बेचलासँ कमीशनो बेसी भेटै छनि। नौकरी मे आइली-बाइली कमैतथि ताहिसँ त' नीक जे पाइयो भ' जाइ छनि आ अप्पन भाषाक सेवा सेहो क' लै छथि। स्नान-भोजन के बेर भ' गेल छलनि। से घुरनानन्द बाइक स्टार्ट कयलनि आ खटरा दिस मूड़ी हिला क' विदा भ' गेलाह।



अन्तिम स्त्री

✍ दीपिका झा

एक पख अन्हरिया त' दोसर पख इजोरिया ई त' ध्रुव सत्य अछि। धूप-छाँह जकाँ ई अन्हरिया-इजोरिया समस्त सृष्टि लेल एक रंग रहै छैक मुदा...

'मुदा की..? अहाँ की कहै चाहै छी सुमन..?'

'राजीव! पन्द्रह राति अन्हार रहलाक बाद फेर प्रकाश होइत छैक। ग्रहण के बाद उग्रास निश्चित होइत छैक। राति के बाद दिन हेबे करैत छैक। युग बीतैत छैक, समय बदलैत छैक, विकास होइत छैक, परिवर्तन होइत छैक मुदा, स्त्रीगण सभकेँ कपारपर जे ग्रहण लागल रहै छैक तकर उग्रासक कतेक आशा जगलै?' एकटा गहींर पोखरिमे जाठिसँ बान्हल स्त्रीगण जे ओहि पोखरिमे रहिक' हेलब जनैत छथि, हुनका स्वतंत्र छोड़ल गेलनि की..? स्वतंत्र छोड़बाक मात्र आभास द' हुनकर ओहि क्षणिक स्वतन्त्रता केर मान राखल गेलैक की...?

माउगी जकाँ कनैत छ'... माउगिये किएक हरदम कनैत छै..? एखनहुँ तक एहिपर शोध भ' सकलै की..? अपने नोरक बाढ़िमे दहाइत, अपने थड़थड़ाइत कोंढ़केँ सम्हारैत धरतीक दोसर रूप बनल सभटा सहैत रहैत छथि स्त्री।

अहि केर बदलैकेँ किछु युक्ति ताकल गेलै की..?

स्त्री जिनका विधाता रूप, गुण, कला सभसँ निपुण क' एहि धरापर पठौलथिन, अदम्य साहस, विलक्षण प्रतिभा और अपार शक्ति द' पठौलथिन ओ सभटा जनैत, सभ किछु बुझैत, एतेक सहासति सहैत रहै छथि। की ईश्वरक बनायल प्रकृति आ मनुक्खक प्रवृति हिनका सभ संग इंसाफ कयलक..?

न्याय-व्यवस्थाक नजरि पड़लैक की एहिपर..?

की स्त्रीक नीयतिमे अहि अन्हरियासँ इजोरिया होयब लिखल छै..? सुमनक प्रश्न त' तर्कपूर्ण रहनि। राजीव जे हिनकर नेनपनक संगी रहथिन, हिनकर प्रश्नमे नुकैल हिनकर हृदयक व्यथा सुगमतासँ अनुभव क' लेलथिन। एहेन बात नै रहै कि एहिमेसँ एकहु टा प्रश्नसँ ओ अनजान छला मुदा इहो सत्य रहै कि एहि बात सभपर एतेक गहींरतासँ ओ कहियो सोचनहों नहि रहथि। मोनमे अकानलनि त' वास्तवमे ई एक सुमन मात्र के मनोभाव आ व्यथा नहि अपितु एहेन कतेको सुमन छथि जे एहि तरहक' प्रश्नसँ घिरल जीवन भरि अहुरिया काटि रहल छथि।

सुमन और राजेश बच्चेसँ एके संग पढ़ैत रहथि। दुनू अपन कक्षाक बहुत मेधावी क्षात्रमेसँ रहथि। ई कोनो युगक कथा नहि अपितु एही पन्द्रह-बीस बरख पहिने के बात छल। जूनियर कॉलेज तक दुनू संगे पढ़ाइ केलनि फेर आगूक पढ़ाइ करबाक लेल राजेश दिल्ली चल गेला आ सुमन पटनामे रहि क' अपन कॉलेजक पढ़ाइ के संग कंपीटीशन सबकेँ तैयारीमे सेहो लागि गेली। बारहवीं पास सबकेँ लेल जतेक सरकारी नौकरी के फार्म अबै सब भरने चलि जाइथ। घरक लोककेँ इच्छा रहनि कि पढ़बामे नीक छथि त' कोनो सरकारी नौकरी भ' जाइन जाहिसँ भविष्य सुरक्षित भ' जेतैन। सुमन स्टेट बैंकमे क्लर्क के लेल परीक्षा देली जाहिमे ई पास भ' गेलथि। ज्वाइनिंग लेटर आबि गेलनि। ट्रेनिंग के बाद पहिल पोस्टिंग गुवाहाटीमे भेलनि। आब धी-बेटी आ सेहो कुमारी, ओतय जा असगर कोना रहती।

माइ संगमे गेलथिन। किछु दिन अहिना चलल। एम्हर हिनका लेल कथा-वर्ता ताकब सेहो शुरू भ' गेल रहैन। हिनकर नौकरी के देखैत कतेको ठामसँ हिनका लेल कथा आयब सेहो शुरू भ' गेल रहैन। सुमन के नौकरी के जहन लगभग छ मास होमयपर रहनि तहन हिनकर लाख मना केलाक वावजूद विवाह तय क' देल गेलनि।

कथा नीक रहै आ सुमनकेँ देखल-सुनल घर रहैन। ब'र बैंगलोरमे एकटा आइ टी कंपनीमे काज करैत छल। परिवार सेहो सुखी-संपन्न रहनि। सुमन के माइ कहलथिन

'आब कतेक दिन हम अहाँकेँ ओगरि क' बैसब..? अहाँक पिता पटनामे एसगर छथि, हुनका तकलीफ होइत छनि।

'त' अहाँ जाउ ने माँ। कियै हमरा ओगरने छी ..? हम रहि जायब आरामसँ। 'बताहि भ' गेल छी..? ई कामर-कामाख्या बला जगह, मनुक्ख के भ.ड़ा बना दैत छै। हम अहाँकेँ कोना छोड़ि जायब..।

बियाहक बयस भए गेल अछि। नीक घर-ब'र छै आ अहाँक देखल सेहो छै। अहाँ ओतय बहुत सुखी भ' रहब। विपिन सेहो नीक नौकरी करैत छथि। चिक्कन आमदनी छनि। सुनबामे आयल अछि कि बहुत जल्द विदेश सेहो जयबाक चलि रहल छनि।

'माँ तहन हमर नौकरी..? हम कोना मैनेज करब..? 'आब ओ अहाँ और विपिन गप्प क' लीय' आ दुनू गोटेकेँ सहमतिसँ आगूक विचार क' लीय'। ई विपिनकेँ नम्बर अछि।

सुमन बैंक के लेल निकलि गेली। बहुत सोचौत-विचारैत लंच ब्रेकमे विपिनकेँ फोन केलनि। गप्प-सप्प भेलाक बाद दुनू गोटेकेँ एक-दोसराक विचार नीक लगलैन। विपिन विवाहसँ पहिने भ.ट करबाक जिज्ञासा जतेलथिन। सुमनकेँ सेहो ई विचार नीक लगलनि, ओहो अपन सहमति द' देलथिन।

'ठीक छै। अगिला सप्ताह हम गुवाहाटी अबै छी। अहाँ जगह वगैरह तय क' लीय' तहन भ.ट करै छी। सैह भेल। सुमन अहि

गप्पक जानकारी अपन माइकेँ देलथिन। स्वीकृत सेहो भेटि गेलनि। तय तारीखपर विपिन गुवाहाटी पहुँच गेला। एकटा होटलमे भ.ट करबाक लेल दुनू गोटे पहुँचला। सामान्य गप्पक बाद विपिन अपन आगूक सबटा गप्प फरिछा क' कहि देलथिन। 'देखू, एखन अक्टूबर अछि। दिसम्बर या जनवरीमे हमरा जर्मनी जाय के चलि रहल अछि। ताहि लेल हमरा विचारसँ नवंबरमे विवाहक कार्यक्रम क' अहाँक संगे ल' जर्मनी चलि जैतौ। 'हमरा संग ल'..? 'त' अहाँकेँ छोड़ि क' जायब..? हमरा तीन सालक लेल ओहि ठाम जयबाक चलि रहल अछि। 'से जे होउ, हम अपन नौकरी कोना छोड़ि देब..! 'लेकिन अहाँ एतय हम ओतय, एहेन विवाहक कोन अर्थ..? 'हम नौकरी छोड़ि क' बैसब सेहो त' संभव नहि होयत। 'हमर छोड़ब हेतै आ अहाँक छोड़ब नहि हेतै..? 'सुमन, अहाँ बात बुझियौ। अहाँ नौकरी छोड़ब त' अहाँकेँ जे ग्रेजुयिटी अछि ओ भेटिए जायत। अहाँ योग्य छी, कतौ रहि क' कमा सकैत छी। जर्मनीमे अहाँ अपना योग्य कोनो काज क' लेब। अहाँ नृत्य कलामे सेहो निपुण छी, ओतहि कोनो क्लास शुरू क' लेब।

जे डीसीजन लेबाक अछि से जल्दी लेब जाहिसँ नवंबरमे आगूक' प्रोसेस भ' जाय। सुमन बहुत उदास मोनसँ घर वापस अयली आ माइकेँ सब गप्प कहलथिन। 'माय हम नौकरी नहि छोड़ब। 'फोनपर बाबूजी छथि, पहिने हिनकासँ गप्प क' लीय'। 'सुमन! 'प्रणाम बाबूजी। आइ अहाँक बोली कियै एहेन लगैये'..? 'बाउ, तौं माय लगसँ कात आबि क' गप्प कर'। 'हाँ बाबूजी कहूँ। 'बौआ हम तोहर माइसँ ई गप्प नुकेलहुँ कारण ओ जौँ बुझितथि त' लत्ते-पत्ते पड़ा क' हमरा लग आबि जाइतथि आ तौं समस्यामे पड़ि जइतह। 'अहाँ अस्वस्थ छी बाबूजी.? 'बौआ हमरा ब्रेन ट्यूमर भ' गेल अछि। डॉक्टर जल्दी कहलनि अछि ओपरेशन करै लेल मुदा ओपरेशन कतेक सक्सेस होयत तकर गारंटी नहि। हम चाहैत छी कि अहाँक विवाह देख ली। अहाँ हमर सभक एकलौती सन्तान छी।

एतबा बजति बोली भरिया गेलनि। चुप भ' गेलथि। सुमन बिना कोनो सोच-विचार के माइ के अपन निर्णय सुना देलथिन। 'माइ 21 नवंबर बला दिन के लेल अहाँ सभ तैयारी शुरू क' दियौ। विपिनकेँ मात-पिताकेँ अही दिनक प्रस्ताव छनि। हम बैंकसँ अबै छी। सुमनकेँ भरि बाट माथ टनकैत रहलैन कि, ई की भ' रहल अछि..!

विपिनकेँ फोन लगौलनि आ बैंकमे स्तिफा देबाक संगे विवाहक स्वीकृति द' देलथिन।

मनेजर बहुत तरहेँ बुझेलकनि कि अहाँक भविष्य उज्ज्वल अछि, एहेन गलती जुनि करू। मुदा सुमन एखन भावनामे बहल छली। ओ अपन भविष्यक नहि सोचौत अपन नौकरी के रिजाइन मारली आ अपन शरीर के अपन मोनकेँ द्वारा ठेलैत बैंकसँ बाहर निकाललनि। ओहि दिन घर जयबाक मोन नहि भ' रहल छलनि। बगल के एकटा पाकमे जा क' बैस रहली। कोनो गहींर सोचमे डूबल रहथि। साँझसँ राइत कखन भ' गेलै किछु नहि बुझि सकली। जखन चेतना भेलनि तहन पार्कसँ बाहर निकलथि आ एकटा टैक्सी के देखि ओकरा रोकबाक इशारा क' ओहिमे बैस गेली। जहन होशमे अयली त' माथपर सूर्यक इजोत रहैन। कुहरति अपन आँखि खोलली त' सौंसे देह थाल आ खूनमे डूबल बुझेलनि। गाड़ीक आवाज सुनि ई अंदाज भेलैन जे कोनो सड़कक' कातमे छी। ककरो सोर पाड़बाक शक्ति नहि बचल छलैन।

हिनका ओना अचेत पड़ल देखि कुक्कुर सभ भूकै लागल त' सड़कपर जाइत लोक के हिनका दिस ध्यान गेलैन। ओ हल्ला क' क' और लोक सभकेँ बजा लेलक। देखिते-देखिते सुमनकेँ चारू कात लोक जमा भ' गेल। किछु गोटे अपन मोबाइल बहार क' फोटो निकलै लागल त' किछु गोट. मुँहपर रूमाल ध' हिनका दिस घृणाक नजरिसँ देखैत ओतयसँ हटि गेल। कियो न्यूज रिपोर्टर के सेहो तुरत फोन क' देलक। चारू कात लोकक' हुजूम लागि गेल। दू टा लड़की सड़क द' क' जाइत छली। हुनकर सभक नजर ओहि जमा भेल भीड़ दिस पड़ल। लगमे अयली त' सम्पूर्ण देह सिहरि उठलैन। अपन माथमे लपेटल ओढ़नी खोलि सुमनकेँ झांपि देलथिन आ तुरन्त एंबुल.स के फोन क' हिनका हास्पिटल ल' गेलथिन। सुमनकेँ फोनमेसँ नम्बर ल' तुरत हिनका माइ के फोन क' बजाओल गेलनि। माइ हास्पिटल अयली आ बेटीपर जखनहि नजरि पड़लैन कि छाती फाटि क' कनै लगलैन। चीत्कार करैत ओतहि खसि पड़ली।

आइ अहि घटनाकेँ लगभग पाँच बरखसँ उपर भ' गेल अछि। सुमनकेँ संग ई घटित भेलाक बाद विपिन हिनकासँ विवाह करब अस्वीकार क' देलथिन। नौकरी पहिनहेँ छुटि गेल रहनि। दोबारा ओहि शहरमे रहि किछु करबाक कूबत नहि बचलनि। माइ-बाबूजी कियो नहि रहलथिन। सुमन अपन पटना बला घरमे रहैत छली आ ओतहि बैंकिक' के तैयारी करै बला विद्यार्थी सभकेँ पढ़बैत छली। आइ संयोगवश बजारमे राजेशसँ हिनका भ.ट भ' गेलैन। राजेश बहुत समय के बाद पटना आयल छला। पेशासँ डॉक्टर रहथि। सपरिवार जोधपुरमे रहैत छलैथ।

पटना बहुत कम काल अबैत छला। अहि बेर पटना अयला त' आस-पड़ोससँ सुमनकेँ सन्दर्भमे ज्ञात भेल रहैन। घरपर जा सुमनकेँ भ.ट करबाक साहस नहि भ' रहल छलनि। स्त्रीगणक विवशता, बेअपराध ओकर दंड भोगब सुनैत त' रहथिन मुदा आइ प्रत्यक्ष रूपसँ देखलैन।

'सुमन! अहाँक संग जे किछु भेल ओ दोसर के द्वारा कयल गेल अपराध छल। ओहि के कारण अहाँ स्वयं के दंड कियै द' रहल छी..? अहाँक जीवन के ग्रहण बला क्षण बीत चुकल अछि। अहाँक स्वयं हिम्मत क' आगू बढ़ै पड़त। खराब समय बीत चुकल अछि।

'राजेश! अहाँ अहि गप्पक आश्वासन हमरा द' सकैत छी कि बिना कोनो अपराधक दंड भोगनिहार हम अंतिम स्त्री छी..!



पश्चाताप

✍ डॉ. नवोनाथ झा

सोनी पतिक सभ गप्प सुनि कहलकि जे अहाँकेँ अपन कर्तव्यक फल भेटल। पता नहि अहाँ ओहन नीच कर्म किएक केलहुँ? हम अहाँसँ ओहन नीच कर्मक उम्मीद धरि नहि करैत छलहुँ। ओ ओहि अंगूठीकेँ लए पहिरबाक तँ दूरक गप्प ओकरा दिस तकलकि धरि नहि।

सोनी रूष्ट भए ओहिठामसँ उठि गेलि। पत्नीक गप्प सुनि नवीन अवाक् रहि गेल। ओ पत्नीक मुँहटा देखैत रहल। ओकरा चट अपन कुकर्मक आभास भए गेल। फलतः ओकरा बड़ पश्चाताप भेल, किन्तु पत्नीसँ ओहन व्यवहारक आशा ओकरा कहाँ छल?

नवीन गाजियाबाद रेलवे सेवाक लिखित परीक्षा देबाक हेतु जाय रहल छल। रेलवे विभिन्न पद पर नियुक्तिक हेतु रिक्तता प्रकाशित केने छल, जकर आवेदक नवीन सेहो छल।

नवीन एम.कॉम. पास छल। ओ कतेकहुँ पदक हेतु समक्षकार दय चुकल छल, किन्तु तखन धरि ओकरा जीविका कतहुँ कहाँ भेटल छल?

नवीन सकरी जंक्शन पर जयनगर-नयी दिल्ली स्वतंत्रता सेनानी द्रुतगामी गाड़ी पकड़ने छल।

नवीन द्वितीय श्रेणीक टिकट लेने छल, किन्तु एक तँ गाड़ी भरल छल, दोसर सकरी जंक्शन पर चढ़निहारक बड़ भीड़ छल। फलतः ओ शयनयान कक्षमे चढ़ि गेल छल।

टिकट जाँचकर्ता टिकटक जाँचक क्रममे नवीनकेँ कहने छल जे दरभंगामे सामान्य डब्बामे चलि जाएब। नवीन किछु नहि बाजल छल। ओ असगर थोड़हिँ छल। गाड़ीहिँ समक्षकार देनिहार छात्र ओ छात्रासँ भरल छल।

टिकट जाँचकर्ता जतेक बेर टिकट जाँच करबाक हेतु आएल। ओ प्रायः सभ बेर सैह बाजल, किन्तु ओ जखन छात्रक भीड़ देखलक एवं आरक्षित टिकटधारी सभकेँ जोर-जोरसँ बजैत सुनलक, जे ''अहाँ सभ रुपया लय-लय सभकेँ चढ़ा लैत छी। फलतः आरक्षित टिकट धारीकेँ बड़ कष्ट भए जाइत अछि, तँ टिकट जाँचकर्ता सेहो अपन प्रतिष्ठा बचाएबे उचित बुझलक। ओ कतहुँ जाय बैस रहल, से पुनः कहाँ आएल?''

गाड़ी अपन गतिसँ चलि रहल छल। आरक्षित ओ अनारक्षित टिकट धारीमे नोंक-झोंक भए रहल छल जे अहाँ हमरा सीट परसँ हटू, तँ अहाँ हमरा सीट पर सँ उठू। वस्तुतः अनारक्षित ओ आरक्षित दुहू टिकटधारी परेशान छल।

सभ तँ बेरोजगारहिँ छल, किन्तु ताहिमे नवीनक स्थिति भिन्न छल। ओकर आर्थिक स्थिति जर्जर छल जे ओकर फाटल-पुरान, सील, मैल वस्त्रहिँ सँ बुझा रहल छल। ओ चुपचाप डब्बाक एक कोनमे खड़ा छल। ओ ककरहुँ आरक्षित सीट पर बैसबाक प्रयासहुँ धरि नहि करैत छल, तथापि आरक्षित टिकटधारी ओकरा कहि रहल छल जे अहाँ दोसर ठाम जाय खड़ा होऊ।

राति क्रमशः क्रमशः भेल जाय रहल छल। देखितहि-देखितहि राति बेशी भए गेल। ''शयनयानक बीचला ओ उपरका सीटक यात्री प्रायः सुति रहल, किन्तु नीचला सीटक आरक्षित ओ खड़ा अनारक्षित यात्रीमे नोंक झोंक होइतहिँ रहल जे अहाँ टिकट कटा कय यात्रा कय रहलहुँ अछि, तँ हम बिना टिकटक छी की?''

डब्बाक अधिकांश यात्री प्रायः एक दोसरासँ उलझल छल। ताही क्रममे नवीनक नजरि नीचामे खसल एक अंगूठी पर पड़ल।

नवीन बड़ जुगुतसँ ओहि अंगूठीकेँ उठाय अपना जेबीमे राखि लेलक। ओ अंगूठी उठा तँ लेलक, किन्तु क्षणहिँ भरिमे बड भयभीत भए गेल। ओ सोचलक जे जँ पकड़ा गेलहुँ, तँ कतहुँके नहि रहि जाएब। लोक जीबय धरि नहि देत। तेँ ओ अगिला ठहड़ाव पर गाड़ीसँ उतरि गेल। गाड़ी बिना निर्धारित ठहरावकेँ सेहो यत्र-तत्र रूकि रहल छल, किन्तु ओ स्टेशन संयोगसँ टुण्डला छल, जतय वैह गाड़ी नहि, वरन् अधिकांश गाड़ी रूकैत छल।

नवीन आब दोसर गाड़ीक प्रतीक्षा करय लागल। गाड़ी अएबहुँ कैल, किन्तु गाजियाबाद दिसक गाड़ीमे समक्षकार देनिहार छात्र-छात्राक भारी भीड़ रहैत छल। फलतः ओ गाड़ी पर नहि चढ़ि पाबि रहल छल। ओ जखन बुझलक जे जँ आब गाड़ी नहि पकड़ब, तँ समक्षकारमे समिल्लित नहि भए पाएब, तँ कहुना एक गाड़ीमे चढ़ल, किन्तु गाड़ीकेँ गाजियाबाद पहुँचैत-पहुँचैत विलम्ब भए गेल। ओ जखन परीक्षा केन्द्र पर पहुँचल, तँ केन्द्रक मुख्य द्वारक फाटक बन्द भए गेल छल। तेँ ओ प्रवेश नहि कय सकल। फलतः ओकर परीक्षा छुटि गेल।

नवीन हतोत्साहित भए गामक हेतु विदा भए गेल। ओ जखन गाम पहुँचल, तँ पत्नी ओकर उदास मुद्राकेँ देखि भापि लेलकि जे ''हुनका अवश्य किछु भेलनि अछि।

सोनी पतिसँ पूछलकि जे किएक उदास छी? परीक्षा

नीक नहि भेल की?

नवीन किछु नहि बाजल। सोनी पुनः बाजलि जे एहि हेतु चिन्ता करबाक कोन प्रयोजन छैक? परीक्षाक तैयारी कइए रहलहुँ अछि ने।'' एकटा परीक्षा संतोष प्रद नहि भेल, तँ दोसर हैत, किन्तु तथापि नवीन किछु बाजल कहाँ? वस्तुस्थिति तँ किछु दोसरहिँ छल।

''सोनी पुनः कहलकि जे ओना घबड़ा जाएब, तखन तँ भेल। उठू भुखल ओ थाकल छी। दतमनि करू, जलखै करू ओ आराम करू। सोनी बहुत ढंगसँ पतिकेँ बुझा रहलि छलि। ओहो उच्च शिक्षा धारी महिला ने छलि, बी.ए. पास छलि।''

अन्ततः नवीन जखन पत्नीसँ वस्तुस्थिति कहलक, ''तँ पत्नी आक्रोशित भए गेलि। ओ बाजलि अँए केहन अहाँक बुद्धि भ्रष्ट भए गेल? केहन ज्ञानहीन भए गेलहुँ? केहन अविवेकी भए गेलहुँ? अहाँ किछु प्राप्त करबासँ पूर्वहिँ अपन ईमानदारी समाप्त कय लेलहुँ। कहू तँ जकर अंगूठी अहाँ लय अनलहुँ, तकरा कतेक कष्ट होइत हैत? ओ कतेक गारि ओ श्राप अहाँकेँ दैत हैत?''

नवीन पत्नीक गप्प सुनि आश्चर्यित भए उठल। ओ पत्नीसँ ओहन व्यवहारक आशा धरि नहि करैत छल। ओकरा तँ उम्मीद छल जे पत्नी उत्साहित भए अंगूठी लेति एवं पहिड़ति, किन्तु से तँ भेल नहि।

फलतः नवीनकेँ बुझबामे बाँकी नहि रहल जे ओ पैघ अपराध कय लेलक। ओ पत्नीसँ पूछलक जे ''हम अपराध तँ कय लेलहुँ, जकर हमरा बहुत पश्चाताप अछि, किन्तु आब ओहिसँ मुक्त होएबाक कोनो उपाय अछि की नहि?

सोनी ओतेक सुनितहिँ चट बाजलि जे अपराध लोक कए लैत अछि से वापस थोड़हिँ होइत अछि, ताहि हेतु ओकर आत्मा आजीवन ओकरा प्रताड़ित करैत रहैत अछि, तदनुकूलहिँ अहुँकेँ करत, किन्तु जीवनमे पुनः ओहन जघन्य अपराध नहि करब से प्रतिज्ञा करू।

नवीन राहतक साँस लेलक। ओ चट बाजल जे हाँ हम प्रतिज्ञा करैत छी जे आजीवन पुनः ओहन अपराध नहि करब।

सोनीकेँ संतोष भेल।

नवीनकेँ अंगूठी पत्नीकेँ देबाक साहस नहि भेल। ओ विस्मित छल जे जकर हम सभ गहना बेच देलहुँ, से अन्ततः कतेक संतोषी अछि? ओहन तँ कोनो विशिष्टे महिलासँ सम्भव अछि।''

नवीनकेँ पत्नीक प्रति असीम आस्था जागृत भए गेल। ओकरा स्मरण भए आएल रत्नाकर डाकूक पत्नी ओ परिवार जकरा कारणहिँ रत्नाकर डाकू महर्षि वाल्मीकि भए गेलाह, जनिक सम्मान समग्र संसार त्रेताकालहिँसँ करैत आबि रहल छनि एवं यावत् तक पृथ्वी रहतीहि, सूर्य ओ चान्द रहताह, तावत् तक पूज्यनीय, वन्दनीय बनल रहताह। ओकरा स्मरण भए अएलीहि रत्नावली, जनिक फटकारसँ रामबोला गोस्वामी तुलसीदास भए गेलाह, जे शताब्दीहुँसँ सम्माननीय बनल छथि एवं सतत् सम्माननीय बनल रहताह।

नवीन बड़ आशान्वित भए पत्नी दिस तकलक। ओ शायद मनहिँ मन कहि रहल छल जे हे देवि हमहुँ अहींक कारणहिँ यशस्वी बनि सकी, तँ बनब, नहि तँ हम आजीवन भटकितहिँ रहि जाएब।

''योगीकेँ कुकुर वलाय'' से ओ अंगूठी नवीनकेँ वलाय भए गेल। ओ अंगूठी स्वयं राखि लेलक।

पत्नी ओहि अंगूठीक कहियहुँ चर्च धरि नहि केलकि।

नवीन किछु दिन तँ मायुस रहल, किन्तु पत्नीकेँ बेर-बेर कहला पर ओ पुनः अपन गति पकड़लक। ओ यत्र-तत्र आवेदन देब प्रारम्भ केलक, समक्षकार देब प्रारम्भ केलक। एक बेर ओकरा जयपुर समक्षकार देबाक हेतु जेबाक छल। ओकर ओहन स्थिति छल जे ओकरा किराया धरिक व्यवस्था नहि भए पाबि रहल छल। फलतः ओहि अंगूठीकेँ बेच देबाक हेतु सोनारक दोकान पर गेल।

सोनार जहाँ अंगूठीकेँ आगिमे रखलक, तँ ओ कारी भए गेल। ''ओ कहलक जे ई सोन नहि, टल्हा अछि।''

फलतः नवीनकेँ बड़ कष्ट ओ पश्चाताप भेल, जाहि अंगूठीक हेतु ओ अक्षम्य अपराध कय लेलक, कुकर्म कय लेलक, समक्षकार धरि छोड़ि देलक, से टल्हा निकलल। ओ किछु नहि बाजल। ''अपन हारल बहुक मारल केओ किछु बजैत अछि की?''

अंगूठी तँ आएल गेल। ओकर कथा समाप्त भए गेल, किन्तु नवीनक पश्चाताप धरि शेष रहि गेल। जघन्य अपराध करबाक पश्चाताप, समक्षकार छुटबाक पश्चाताप, पत्नीसँ फटकारल जयबाक पश्चाताप, पत्नीक विशिष्टताकेँ तखन धरि नहि परखबाक पश्चाताप आदि पश्चातापे, पश्चाताप।



मखान ओ बौद्धिक सम्पदा अधिकार

✍ प्रो. विद्‌यानाथ झा

प्रकृति विचित्रतासँ भरल अछि। पानिमे उपजयवला मखानक गिनती सुखायल मेवाक रूपमे होइछ। आजुक तिथिमे उत्तम कोटिक फोका मखान (जकरा रसगुल्ला कहल जाइछ) प्रायः चारि सय टाका प्रति किलोक दरसँ बजारमे उपलब्ध अछि। मखानक अन्तरराष्ट्रीय वानस्पतिक नाम यूरेले फेरोक्स (Euryale ferox) अछि आ ई यूरेलेसी (Euryalaceae) कुलक सदस्य अछि जकरा पूर्वमे वृहत् कुल निम्फियेसी (Nymphaeaceae)क अन्तर्गत राखल गेल छल। सामान्य भाषामे एहि कुलकेँ जलपरी (Water lily) कुल कहल जाइछ। यूरेलेसी कुलक दोसर सदस्य अछि विक्टोरिया (Victoria) जकर पातक आकृति मखानक पात जकाँ होइछ परन्तु विक्टोरियाक पातक कान थारी जकाँ उठल रहैछ। 'विक्टोरिया' ओ 'यूरेले' दुनू केँ Giant Water lily कहल जाइछ। मखान केँ ओना Aiatic Cousin of Victoriaक नामेँ सेहो जानल जाइछ। जलाशयक कादोमे रेशेदार जड़ि बहुत नीचाँ धरि जाइछ। खेतीक क्रममे पोखरिक तलसँ बीयाक बहरियाक क्रममे तीक्ष्ण काँटवला मखानक गाछकेँ पहिने नष्ट करब आवश्यक होइछ आ तेँ एहि कारणेँ एकरा एकवर्षीय प्रवृत्ति (Annual plant)क मानल जाइछ। सामान्यतः पूबमे कोसीसँ लऽ कऽ पश्चिममे कमला नदीक बीचकेर चून रहित (Non-calcare-ous) माटिवला क्षेत्रक स्थिर पानिवला जलाशय (Stagnant water system) मे मखान उपजैछ।

मखानक खाद्य ओ औषधीय गुण पर भारत सहित अमेरिका, जापान, चीन ओ कोरिया सदृश देशमे विशद् शोधकार्य सम्पन्न भऽ रहल अछि। ई स्वाभाविक अछि जे वैश्वीकरणक एहि युगमे विश्वक कोनो कोनमे उपलब्ध गुणवत्तापूर्ण उत्पाद अधिक काल धरि दुनियाक नजरिसँ नुकायल नहि रहि सकैछ।

मखानक लाबा एवं एकर आन कायिक भागमे सूक्ष्म पोषक तत्व एवं अन्य जैव रसायनक उपस्थितिक कारणेँ एकरा आयुर्वेद, यूनानी एवं आन देशक चिकित्सा पद्धतिमे स्थान भेटल अछि। आइ खाद्य सुरक्षाक उद्देश्यकेँ ध्यानमे राखि विश्व भरिक वैज्ञानिक नव वनस्पतिक आ ओहि सभमे उपस्थित पोषक गुणक विश्लेषणमे लागल छथि। अपन उत्तम गुणवत्तावला प्रोटीन ओ स्टार्चक कारणेँ मखान एक उत्तम खाद्य अछि आ कतिपय रोगक शमनमे प्रभावी होयबाक कारणेँ सोयाबीन जकाँ एकरा एक गुणकारी खाद्यौषधि (nutraceutical) केर श्रेणीमे राखल जा सकैछ। वसाक नगण्य मात्रा एकरा मोट (obese) लोकक हेतु एक उपयुक्त आहार सिद्ध करैछ आ पश्चिमी संभ्रान्त देश सभमे एकर निर्यातक संभावनाकेँ बढ़बैछ। भारतमे मखानक प्राकृतिक प्रतिरूप पश्चिम हिमालय स्थित कश्मीरक शीतकटिबन्धीय झीलसँ लऽ कऽ पूर्वोत्तर हिमालयमे मणिफरक 'लोकतक' झील धरि पसरल अछि। कश्मीरक होकरसर, डल एवं मनसाबल आदि झीलमे पाओल जायवला मखानकेँ जुवार (Juwar) नामेँ जानल जाइछ। ओतय पर्यटक नौकाक परिचालनमे बाधक होयबाक कारणेँ मखानक पैघ पातकेँ नष्ट कयल जाइछ। झील सभमे बाहरसँ आयल अपवाहक कारणेँ तल पर जमा 'गाद'सँ मखानक प्राकृतिक आबादी प्रभावित भऽ रहल अछि। कश्मीरक परिस्थिति वैज्ञानिक लोकनि ओतुक्का झीलमे 'जुवार' केँ बचयबाक हेतु गोहारि लगौलनि अछि।

पूर्वोत्तर भारतमे असमक गुवाहाटी लगक प्रसिद्ध 'डीपार बील' सहित अनेक जलाशयमे उपजयवला मखानकेँ 'निखोरी' नामेँ जानल जाइछ। मणिफरक झील सभमे पाओल जायवला मखानकेँ 'थांगजिंग' कहल जाइछ आ स्थानीय बजारमे एकर विभिन्न भागकेँ आन तरकारी जकाँ बेचल सेहो जाइछ। ओतय केर 'मइतइ' आदिवासी एकर पत्रवृन्त (मखोक), कोमल छोट पात (खयोम) अर्द्धविकसित/अजोह फड़ (लोलांग), जुआयल फल (अरोबो), बीयाक उपरका झिल्ली (मापरम) अर्थात् एरिल (Aril) केँ सलाद, चटनी, झोरगर तीमन आदिक रूपमे उपयोगमे अनैत छथि। मिथिला सहित देशक अन्य भागमे मखानक लाबाक प्रयोग सहायक खाद्यक रूपमे कयल जाइछ। बीयाक अतिरिक्त एकर आनो भागमे पौष्टिक गुणक उपस्थितिक जनतब लोककेँ नहि रहबाक कारणेँ मिथिला क्षेत्रमे चैत-बैसाखमे घनगर गाछ सभमे अधिकांशकेँ निकालिकऽ फेकि देल जाइछ। एक गोट मखानक गाछकेँ पूर्ण विकसित होयबाक लेल आठ-दस वर्गमीटर जगहक आवश्यकता होइछ आ तेँ गाछक सघनता कम करबाक लेल अवांछित गाछकेँ हँटायब जरूरी होइछ। तेँ ई आवश्यक अछि जे मणिफरक तर्ज पर मखानक गाछक विभिन्न भागकेँ तीमन ओ संरक्षित खाद्य जकाँ व्यवहारमे आनल जाय।

सन्तानोत्पत्तिमे सहायक मखानक प्रजास्थापक गुणक भारतीय चिकित्सा पद्धतिमे विशद् उल्लेख अछि। मखान शब्द संस्कृतक 'मखान्न'सँ निकलल अछि जकर अर्थ होइछ 'यज्ञक अन्न'। भारत ओ नेपाल सहित विश्वक अनेक भागमे पसरल हिन्दू धर्मावलम्बी विभिन्न धार्मिक आयोजनमे एकर प्रयोग करैत

छथि। दिल्लीमे शवयात्रामे एकर उज्जर लाबाकेँ पवित्र मानि मृतक केर शरीरपर फेकल जाइछ। आर्युवेदमे मखानक औषधीय गुणक तुलना कमलसँ कयल गेल अछि। मखानमे शुक्रजनक (spermatogenic), कामवर्द्धक (aphrodisiac) एवं वीर्यक्षयनाशक (antispermatorrhoeal) गुणक उपस्थितिक विशेष चर्च अछि। यैह कारण अछि जे मिथिला क्षेत्रमे आश्विन पूर्णिमाक दिन मनाओल जायवला 'कोजागरा'क अवसर पर नवविवाहिता वधू पक्ष दिससँ वर पक्षकेँ मखान सनेसक रूपमे पठाओल जाइछ जे कर-कुटुम्ब ओ इष्ट मित्रक संग सभ टोल-पड़ोसक लोकमे परसल जाइछ। छत्तीसगढ़मे आदिवासी लोकनि सेहो एकर प्रयोग अपन चिकित्सापद्धतिमे करैत छथि। महिलालोकनिमे प्रसवोपरान्त दौर्बल्यकेँ दूर करबामे एकर विशेष उपयोग होइछ। लखनउ स्थित केन्द्रीय औषधि अनुसन्धान संस्थानमे भेल एक शोधमे मखानमे रोग प्रतिरोधक (immunostimulant) गुणक उपस्थितिक फष्टि भेल अछि। हालमे नव दिल्ली स्थित जामिया हमदर्द विश्वविद्यालयक पोषण वैज्ञानिक लोकनि प्रसवोपरान्त स्तनपान कराबयवाली महिला लोकनिक हेतु एक संपोषक Nutribar बनौलनि अछि जाहिमे मखानकेँ सेहो सम्मिलित कयल गेल अछि। हालमे भारतीय वैज्ञानिक लोकनि मखानक चूर्णक उत्प्लवनशीलताक गुणक उपयोग एक अक्वथनीय संजालीय टिकिया (non-effervescent floating matrix tablet) बनयबामे कयलनि अछि जकर मदतिसँ मानव शरीरक भीतर कोनो दवाइ केर उचित रूपेँ प्रभावी निस्तरण (effective drug delivery) करायब संभव भेल अछि।

चीनक प्राथमिक चिकित्सा व्यवस्थामे देसी उत्पादक अधिक प्रयोग कयल जाइछ। ओतय मखानकेँ 'क्विआन-शी' (Quian-shi) नामेँ जानल जाइछ। सम्पूर्ण गाछकेँ सुखाकऽ जीवाणु रहित बनाओल जाइछ आ फेर चूर्णक रूपमे निर्वातरुद्ध (vaccum sealed) थैलामे पैकिंग कऽ ओकर विपणन कयल जाइछ। मखानक बीयाक खोइया (hard seed coat) सँ सम्बद्ध एक अन्य शोधमे चीनक वैज्ञानिक लोकनि एहिमे ग्लुकोजक चयापचय के नियन्त्रित करयवला जैवरसायनक पता लगौलनि अछि। खोइया केर निष्कर्ष यकृत एवं प्लीहाक बढ़ल भारकेँ नियन्त्रित करबामे गुणकारी पाओल गेल अछि। खोइयामे मधुमेह एवं वसाधिक्यक शमनकारी गुणक उपस्थितिसँ सम्बन्धित शोधपत्र 'मोलेक्यूल्स (Molecules)' नामक शोध-पत्रिकामे प्रकाशित भेल अछि। चीनी वैज्ञानिक लोकनि एक एहन हर्बल दस्तावर औषधि बनाकऽ ओहि पर पेटेन्ट प्राप्त कयलनि अछि जे एलर्जिक राइनाइटिस, साइनुसाइटिस, नेजल कन्जेशन, नेजल ड्रिपिंग, नेजल पौलीप्स आदिमे गुणकारी पाओल गेल अछि। चीनमे मखानक बीयाक अर्कसँ कानक दर्दक निवारण कयल जाइछ। पायोडर्मा, हर्निया एवं श्वेतप्रदरमे ई गुणकारी होइछ। मखानक पातक भस्मकेँ किण्वित चाउर (जकरा laut-sao कहल जाइछ) क संग प्रयोगकऽ स्त्री लोकनिक प्रसवबाधा दूर कयल जाइछ। वीर्यक्षय रोकबामे फूलक सेहो प्रयोग कयल जाइछ। चीनमे बच्चा सभक पौष्टिक औषधि Su-Shin मे कमल एवं मखानक प्रयोग कयल जाइछ। चीनमे 'बेरी-बेरी' रोगक निदानक उपाय तकबाक क्रममे कयल गेल वानस्पतिक सर्वेक्षणक क्रममे मखानमे Vitamin-B क उपस्थितिक पला चलल।

चीनक Shanxi Medical Universityमे वैज्ञानिक लोकनि ओतय उपलब्ध मखान सहित किछु अन्य शाकीय तृणक सम्मिश्रणसँ एक Yishen Capsule (यीशेन कैप्सूल) नामक औषधि बनौलनि अछि जे मधुमेह अपवृक्कता (diabetic nephropathy) मे गुणकारी पाओल गेल अछि। एहि प्रयोगमे पहिने मूसक शरीरमे रसायनक प्रयोगसँ मधुमेह उत्पन्न कराओल जाइछ। ई देखल गेल जे एहि क्रममे वृक्क (kidney) केर Glomerulus केर शोधक क्षमताकेँ सुस्थिर बनौने रखबाक हेतु आवश्यक प्रोटीन पोडोकैलिक्सिनक मात्रा घटि जाइछ। Yishen Capsule क उपयोगसँ Podocalyxind मात्रामे वृद्धि भऽ जाइछ।

ओम्हर कोरिया देशक Kyunynam University मे भेल एक शोधमे अल्जीमर ओ पार्किन्सन सदृश वार्द्धक्य जन्य रोगमे मखानकेँ प्रभावी पाओल गेल अछि। कोरियामे भेल एक अन्य शोधमे मखानक तना ओ पत्रवृन्तादिक प्रयोग ओतुक्का प्राकृतिक चिकित्सा व्यवस्थामे डिसेन्टरी, डायरिया, ल्यूकोरिया, अनियन्त्रित आवेग (incontinence) एवं जोड़क पक्षाघातमे कयल गेल। कोरियाक क्वदहहना न्दपअमतेपजल मे मखान पर कयल गेल एक अन्य शोधमे एहिमे एहन प्रतिआक्सीकारकक उपस्थितिक पता चलल अछि जे रक्त सम्वाहिकामे कोलेस्टेरोलक जमावक कारणेँ होमयवला Atherosclerosis सहित अन्य हृदयरोगमे गुणकारी होइछ। एहि शोधसँ Oxidative Stress एवं Athero sclerosis सदृश जड़िआयल क्षयकारी (chronic degenerative) रोग सभक निदान हेतु दबाइक खोजक रस्ता खुजि गेल अछि। अमेरिका केर University of Connecticut School of Medicine केर Cardio vascular Research Centre क वैज्ञानिक लोकनि मूसक शरीरमे कृत्रिम रूपसँ आक्सीजनक कमीक कारणेँ हृदयाघातकेँ रोकय वला रक्त संचरणमे कृत्रिम बाधा (ischemic reperfusion Injury) उत्पन्न कय ओहि पर मखानक बीयाक निष्कर्षक प्रभाव देखबाक हेतु प्रयोग कयलनि। एहि प्रयोगसँ मूसक हृदयमे Ischemia क उपरान्तक निलय क्रिया (Post ischemic ventricular function) मे सुधार देखल गेल ओ हृत्पेशीय रोध गलितांश (myocardial infarct size) मे कमी आयल। एहि प्रयोगमे हृतरक्षी प्रोटीन (cardioprotective

proteins)क मात्रामे सेहो वृद्धि देखल गेल।

अन्य फसिलक जैविक खेतीसँ प्रेरणा लऽ मखान उत्पादक कृषक लोकनि सेहो 'जैविक मखान'क उत्पादन दिस उन्मुख भऽ रहलाह अछि। अपेक्षाकृत अधिक पूजीवला कृषक एहि दिशामे उदाहरण प्रस्तुत कऽ सकैत छथि। सामान्यतः ई होइछ जे मखानक जलाशयक चारू कातक खेतमे प्रयुक्त जैवरसायन (रासायनिक उर्वरक ओ मारकनाशी आदि)क अवशिष्ट भागके ँ वर्षाक पानिक संग बहिकऽ अयबासँ नहि रोकल जा सकैछ। बजारमे उपलब्ध लाबाक रासायनिक विश्लेषणक क्रममे ई पाओल गेल अछि जे Organochlorine Pesticideक अवशिष्ट मात्रा निर्धारित मात्रासँ अधिक छल। विकसित देश सभमे 'जैविक मखान' (organic Makhana) केर निर्यातक संभावना बढ़यबाक हेतु एहू तथ्य पर ध्यान देबय पड़त।

मखानक उपयोग मुख्यतः भूजल लाबा (snacks) एवं खीर (dessert) के रूपमे होइछ। एकर अतिरिक्त मखानसँ हलुआ, कोफ्रता, दम आलू, दाल मखानी आदि सेहो बनाओल जाइछ। भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद केर तत्वावधानमे 'त्वरित मखाना खीर' (instant Makhana kheer mix) बनयवाक विधि पर पेटेन्ट प्राप्त कयल गेल अछि।

प्रकृति संरक्षणक प्रति समर्पित संस्था विज्ञान एवं पर्यावरण केन्द्र (Centre for Science & Environment) नई दिल्लीक दिससँ First Food (प्रथम/पहिलुक भोजन) नामक एक फस्तक प्रकाशित कयल गेल अछि जाहिमे कतिपय अन्य भोज्य पदार्थक संग मखानक जलपान (breakfast) केर रूपमे प्रयोगक विशद् चर्च कयल गेल अछि। भारतमे मखानक उपयोग एक हवन सामग्रीक रूपमे सेहो होइत आयल अछि। हालमे लखनउ स्थित राष्ट्रीय वनस्पति अनुसन्धान संस्थानक वैज्ञानिक लोकनि अन्य वानस्पतिक उत्पादक संग मखानक सुखायल गाछके ँ सेहो अपन प्रयोगमे सम्मिलित कयलनि आ पौलनि जे एहिसँ वायुमण्डलमे उपस्थित जीवाणु सघनतामे बेस कमी आयल। इण्डियन मेटेरिया मेडिकामे मखानक पातके ँ गठियामे उपयोगी कहल गेल अछि। रूसी वैज्ञानिक लोकनि मखानमे Sesquiterpene रसायन समूहक ड्रमिन नामक क्षाराभ (alkaloid)क पता लगौलनि अछि। मखानक बीयाक खोइया (seed coat) सँ सेहो भारतीय वैज्ञानिक लोकनि एक अभिनव लसगर जैवबहुलक (novel smart mucoadhesive biopolymer) बनौलनि अछि जकर उपयोग मानवक शरीरमे दबाइ केर समुचित निस्तरण (proper drug delivery) मे कयल जा सकत। मखानक उन्नत किस्मके ँ विकसित कऽ आ एकर खेतीक क्षेत्र विस्तार कऽ एकर उत्पादन बढ़यबाक लक्ष्यके ँ ध्यानमे राखि भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् (ICAR) द्वारा राष्ट्रीय मखाना अनुसंधान केन्द्रक स्थापना प्रायः दस वर्ष पूर्व कयल गेल। ई केन्द्र 'स्वर्ण वैदेही' नामक मखानक एक उन्नत प्रभेद विकसित कयलक अछि जे अधिक उपजा दैछ। मखानक उत्पादन बढ़यबाक हेतु एकर खेतीक क्षेत्र विस्तार करब आवश्यक अछि। एहि हेतु आन क्षेत्रक जलजमाव वला माटिक थोड़ेक मृदासंवर्द्धन करय पड़त।

दरभंगा-मधुबनी क्षेत्रमे मखानक खेती कम पानि वला जलाशयमे कयल जाइछ जखन कि पूर्णिया-कटिहार क्षेत्रमे ई काज जोतल खेतमे कयल जाइछ। एकर कारण अछि ओतय भूमिगत जलस्तरक ऊँच होयब। कटिहार-पूर्णियामे बास बोरिंगक सहायतासँ कम खर्चमे पटौनीक व्यवस्था भऽ जाइछ। दीर्घकालीन प्रयाससँ आब मखानक लाबा बनयबाक एहन मशीन आबि गेल अछि जकर उत्कृष्ट श्रेणीक लाबा निर्माणक क्षमता नब्बे प्रतिशत सँ अधिक भऽ गेल अछि। मखानक बीयाके ँ पोखरिक नीचाँसँ बहरिया (harvest) करबाक हेतु जल श्रमिक (मलाह लोकनि के ँ गोताखोरी किट (diving kit) सेहो उपलब्ध कराओल जा रहल अछि। केन्द्र ओ राज्य सरकारक विभिन्न एजेन्सी सभ एहिमे अपन योगदान कऽ रहल अछि। मखानपर देश-विदेशमे अनेक स्वत्वाधिकार (palent) प्राप्त कयल गेल अछि। एहि पर अनेक शोधपत्र चीन, कोरिया, अमेरिका एवं भारतीय वैज्ञानिक लोकनि द्वारा प्रकाशित कयल गेल अछि। मखान पर 2002 ई. मे A Process for Making Storage Edible Food Materials from Kernels of Gorgon Nuts (Indian National Patent 187500, 4 May, 2002) पेटेन्ट प्रदान कयल गेल।

दरभंगा स्थित मखान शोध केन्द्रक वैज्ञानिक लोकनि एकीकृत मत्स्य-सह मखान उत्पादनक एक नव तकनीक निकाललनि अछि। मखान उत्पादनसँ जुड़ल प्रगतिशील कृषक लोकनि सेहो एहि दिशामे नव विधि विकसित कऽ रहलाह अछि जाहिमे माछ ओ मखान दुनूक उपजामे वृद्धि होइछ। मखानक खेती, बहरिया ओ लाबा बनयबाक श्रमसाध्य प्रक्रियामे मिथिला क्षेत्रक मलाह लोकनिके ँ महारत हासिल छनि। हुनका लोकनिक 'बनपर' उपजाति पुश्तैनी रूपसँ मखानक खेती करैत आयल अछि। मिथिला एवं मिथिला क्षेत्रक बाहर जतय-कतहु मखान उपजाओल जाइछ ओतय दरभंगा-मधुबनी क्षेत्रक मलाह लोकनि लाबा बनयबाक काज करैत छथि। पूर्णियाक प्रसिद्ध मखान लावाक व्यावसायिक उत्पादन केन्द्र 'हरदा' वा फेर मालदह (पश्चिम बंगाल) मे वा असमक 'बील'मे सर्वत्र एहि क्षेत्रक मलाह लोकनिक अस्थायी प्रव्रजन होइत छनि, जनिका मखानसँ जुटल बौद्धिक सम्पदाक स्वाभाविक लाभ भेटबाक चाहियनि।



पिया मोरा बालक एकटा गूढ़ अर्थ के अर्थहीनक भाव दंश!

✍ अमर नाथ चौधरी

कोनो साहित्य सामजिक चेतनाक भावनात्मक, नैसर्गिक अभिव्यक्ति होति अछि। मैथिल कोकिल महाकवि बाबा विद्यापतिक रचना स मैथिल साहित्य अखिल भारतीय पटल पर समृद्ध रूप स स्थापित अछि। हुनक सब रचना लोक मानसक सूक्ष्म, गहन, सरल आ सहज भावना के निश्छल रूपें अभिव्यक्त करैत अछि। बाबा विद्यापतिक गीतिकाव्य जनश्रुति के रूप में अपन समाज में प्रचलित अछि। जनश्रुति साहित्यक सीमा अछि जाहि में समय-समय पर वाचक अपन मनोभावक अनुसार मूल रचना मे पाँति आ पद-अनुच्छेद करैत रहैत छथि। ताहि स, प्रायः संशोधित रचना मूल रचना सँ बहुत अलग भ जा सकैत अछि, आ दुर्भाग्य स एहि बदलाव के सोझे मूल रचयिता के माथे मढि देल जाति अछि। एहन परिस्थिती मे ई अति आवश्यक अछि जे कि कोनो रचना के ओहि कालखंड मे ओहि समाज में स्थापित सामाजिक मान्यता आ प्रचलन के तुला पर विवेचनात्मक ज्ञान स्थापित कैल जाय। हम एहि आलेख के माध्यम सँ मैथिल समाज के लक्षित करैत अपन सुधि पाठक गण के ध्यान बाबा विद्यापतिक एहन रचना के तरफ आकृष्ट करैत छी जे संभवतः मूल स्वरूप मे एहन नहि रहल होयत आ कालांतर मे एहि रचना के रूप विकृत भ गेल और ओहि संशोधित रचना के सेहो बाबा विद्यापतिक नाम स जोड़ि देल गेल। ई गीत अछि-

पिआ मोरा बालक हम तरुनी
कोन तप चूकि भेलहुँ जननी।।
पहिरि लेल सखि दछिनक चीर
पिआ के देखैत मोर दगध सरीर।।
पिया लेल गोद कए चललि बाजार।
हटिआक लोक पूछ के लागु तोहार।।
नहि मोर देओर कि नहि छोट भाइ
पुरब लिखल छल बालमु हमार।।
बाट रे बटोहिआ कि तुहु मोरा भाइ
हमरो समाद नैहर नेने जाइ।
कहिहुन बाबा के किनए धेनु गाइ
दुधबा पियाइकें पोसता जमाइ।।
नहि मोरा टाका अछि नहि धेनु गाइ
कोन बिधि पोसब बालक जमाइ।
भनइ विद्यापति सुनु ब्रजनारि।
धैरज धए रहु मिलत मुरारि।।

हम एहि गीत के पाँति, जे मिथिला समाज में ओहि कालखंडक व्याप्त बेमेल विवाह के उद्धृत कर लेल कैल जाति अछि, स असहमति व्यक्त करैत छी आ मूर्धन्य साहित्यकार और इतिहासकार सब से अनुरोध करैत छी जे एहि गीत के सामाजिक उद्धरण आदि के ध्यान में रखैत सम्यक् भाव सँ विवेचना करथि। बेमेल विवाह मे बहुधा बरक आयु कन्या सँ अब्यावहारिक रूपें ज्यादा होति छैन्ह जे कि सामाजिक विसंगति के रेखांकित करैत अछि। मुदा एहन एकहु टा दृष्टांत नहि अछि जाहि मे कन्याक आयु बरक माता तुल्य हो आ बर एकटा बालक होथि। हम एहि पाँति पर विशेष रूप सँ ध्यान आकर्षित कर चाहैत छी रू- "पिया लेल गोद कए चललि बाजार दुधवा पिया पोसता जमाइ" एहि पाँति में वर्णित वृत्तांत संभव अछि की? कदापि नहि, ई अकल्पनीय आ पूर्ण यथार्थहीन अछि।

हम एकटा आध्यात्मिक कथा के उद्धृत क रहल छी। माता सती अनुसुइया, जे महर्षि अत्रि के पत्नी छैथ, के पतिव्रता धर्म तीनहुँ लोक मे विख्यात छलैन्ह देव लोक मे त्रिदेवी जिज्ञासावश अपन-अपन पति के यथार्थ जानक लेल अनुसुइया जी के आश्रम में जयवाक लेल आग्रह करैत छथि। तीनू देव महर्षि अत्रि के आश्रम मे साधु भेष धरि एहन समय में पंहुच गेलैथ जखन महर्षि स्वयं आश्रम मे नहि छलाह। अनुसुइया जी हुनकर रहस्य जानि, अपन तप-बल सँ तीनू देव के छः मासक शिशु मे रूपांतर क इच्छा अनुसार क्षुधा शांत करा पलना मे सुतौलन्हि। तीनू देव एहि प्रकारें माता अनुसुइया केवात्सलय प्रेम स आनंदित होति छथि। जखन तीनू देवी अपन-अपन पति देव के ताकति माता अनुसुइयाक आश्रम मे पहुचलथि त एकहि पलना में खेलति तीनू शिशु मे सँ अपन-अपन पति के नहि चीन्हि सकलैथ। ई दृश्य देखि त्रिदेवी के पश्चाताप होति छैन्ह जे हुनका सब स भक्ति मे, तप मे वा कर्म मे एहन कोन चूक

भ गेल जे हुनकर पति आइ बाल अवस्था मे छैथ आ स्वयं हम जननीक सम आयुक अवस्था मे प्रतीत भ रहल छी। फलतः त्रिदेवी माता अनुसुइया स अपन धृष्टता के लेल क्षमा मंगलैथ आ माता अनुसुइया त्रिदेव के अपन वास्तविक स्वरूप में वापस क देलैथ। आब एहि कथाक सम्बन्ध में हमर अध्यात्म और सांसारिक मत एहन अछिः तीनू शिशु के साथ वात्सल्य प्रेम के बाद माता अनुसुइया आब मातृत्व बोध मे भाव-विस्वल छथि, और तीनू देवी ओहि परिस्थिति में ओ शिशु के जननी समान लागि रहल छथि, जखन की ओ हुनकर पत्नी छथिन। ई भाग सांसारिक अछि। पलना मे खेलैत तीनू शिशु त्रिदेव छैथ जे एहि ब्रह्माण्ड के आ समस्त जीवक उत्पत्ति आ गतिविधि के कारक छैथ, रचयिता छैथ और हुनक सामने ठार तीनू देवी के ईश्वर छैथ, स्वामी छैथ। यैह आध्यात्मिक भाव अछि।

मैथिल समाज पर लागल आक्षेपक विसंगतिः जखन महाकवि बाबा विद्यापति जी लिखैत छैथः ''पिया मोरा बालक हम तरुनी, कोन तप चूकि भेलहुँ जननी'' ई वस्तुतः त्रिदेवी के अपन अपन पति के शिशु अवस्था मे देखि पश्चातापक भाव अछि, कियैक त हुनके दुराग्रह सँ हुनकर पति आइ शिशु अवस्था में छथिन आ ओहि क्षण ओ सब हुनकर जननी सामान लागि रहल छैथ। एही कारणे ओ कहैत छथिनः ''पिया मोरा बालक हम तरुनी, कोन तप चूकि भेलहुँ जननी''। अगला पाँति ''पहिरि लेल सखि दछिनक चीर पिआ के देखैत मोर दगध सरीर।।'' तीनू देवी के अपन स्वामी के देखि ललित श्रृंगारिक सौंदर्य भाव के वर्णन अछि। त्रिदेवी के ई मिश्रित भावना के बाबा विद्यापति जी अद्भुत चित्रण केने छैथ।

एहि गीतिकाव्य में ई पाँति के अलावा दोसर पाँति सब हमर मत सँ सन्निविष्ट कैल गेल अछि जकर मूल गीतिकाव्य सँ कोनो सम्बन्ध नहि अछि। साहित्यिक सृजनात्मक नाम पर ई भौंडापन प्रयोग अछि। विद्यापति पदावली (उर्वशी प्रकाशन) के भूमिका मे गोविन्द झा जी एवं विद्यापति गीत संचय (सम्पादक रामदेव झा एवं मोहन भारद्वाज) के प्राकथ्थन में रामदेव झा जी सेहो एहने किछु संशय व्यक्त केने छथि। एहन एकौटा दृष्टांत कोनो काल मे, कोनो समाज मे उपलब्ध नहि अछि जाहि मे पत्नी अपन पति के, जे शिशु अवस्था मे होथि, कोरा मे ल क जननी सामान पालैत होथि आ हाट जाति होथि। असंभव। एहि रचना के अंतिम पाँति ''भनइ विद्यापति सुनु ब्रजनारि धैरज धए रहु मिलत मुरारि।।'' त बांकी पाँति के भाव स कोनो मेल नहि खघति अछि आ ने मिथिला वासी सँ सम्बंधित अछि। अतः सूक्ष्म विवेचना कैला सँ ई स्पष्ट भ जाति अछि जे ई सब पाँति मूल रचना के भाग नहि अछि।

हम महाकवि बाबा विद्यापतिक ई रचना जकर मूल स्वरूप अज्ञात अछि, के अनुपम, भक्ति संस्कृति के सर्वोच्च आदर्श आ विशिष्ट भावाभिव्यक्ति मानैत छी। अंत में हम अपन सब मैथिल जन मानस सँ प्रार्थना करैत छी जे एहि गीतिकाव्य के मूल रचना के शोधपूर्वक पुनः स्थापित केल जाय मैथिल समाज के गरिमा और मैथिल साहित्य के गौरवशाली परम्परा के सम्मान के रक्षार्थ आवश्यक अछि जे हम सब साहित्यिक, सामाजिक व आध्यात्मिक बोध सँ एहि रचना के व्याख्या करी। मिथिला मैथिल के सम्मान में,

जय मैथिल, जय मिथिला,





आभार

☙ प्रभाकर पाठक

ई दिव्य भूमि जानकी केर
अछि शुभ्र, विमल चंदन समान।
शत कोटि नमन अर्पित कैलहुँ
तद्यपि न होत संतोष मान।।

रसलहुँ बसलहुँ पींस वर्ष
सब आस पुरायल नित अघोर।
या प्रेम पुरस्सर मित्र सभहक
जीवन-ज्योति लहकय संजोर।।

लए ज्ञान मनीषी केर सकल
फुललहुँ फललहुँ भए बाग-बाग।
लए कवि कोकिल विद्यापति सँ
आशीष धन्य जागल सुभाग।।

दिनकरक पाबि वाणी प्रचंड
वक्तृता विमल पाओल प्रकाश।
पुनि चलल पद्य परिमल प्रवाह
गद्यक गंगा उमड़ल सहास।।

माता पुनीत ली नमस्कार
अविते कयलहुँ शुभ कृत्ति-दान।
बिन धौत परीक्षा के भएलहुँ
विद्वान सफल शिक्षक सुजान।।

कुटियाक वास 'पैलेस' मिलल,
नरगौना नृप केर वाणी धाम।
कमलाक अंक शरदक मंच
देखल निरखल अछि शुभ्र ठाम।।

हम छी न रत्न, मिथिला विभूति,
विद्यापति कवि केर चाकर छी!
चन्दाक अनुज राघवक मित्र
नामे टा मात्र प्रभाकर छी।। ❑❑❑

मिथिला-मैथिल-मैथिली-काव्य

☙ रमेश

1. हाय मिथिला
अहांक मरकओर.....?
केहेन-केहेन लगाम कें घोड़ा काटि दैत अछि।
केहेन-केन सिमटी-संखमलमल कें काटि क' मूस
अपन बिल बना लैत अछि।
केहेन-केहेन सिक्कड़ कें इतिहास तोड़ि देलक अछि।
आ हमरा सभक जीह पर निरन्तर गड़ि रहल
अछि बिरखीक काँट!
...आ हम सभ गलिया-गलिया क'
गिड़'ने जा रहल छी मरकओर...?
हाय मिथिला !.....

2. यौ मैथिल, अहाँक इतिहास....!
बर्फ मे गलबाक इतिहास मनुक्खक छै।
आगि मे झड़कबाक इतिहास मनुक्खक छै।
भरल कटोरा माहुर एक छाक मे पीबाक इतिहास मनुक्खक छै।
रेशमी तागक फाँस मुसुकीक संग,
गरदनि मे पहिरि लेबाक इतिहास मनुक्खक छै।
मुदा हारि मानबाक कोनोटा इतिहास
मनुक्खक नहि छै।
यौ मैथिल....!

3. वाह मैथिली, अहाँक संघर्ष - पथ....!
चुट्टी कें पीचि दिऔक,
मुँह बाबि क' हबक्का मारत.
मँछगिद्धी सांप कें थकूचि दिऔक,
नाङरि पटकि-पटकि क' विरोध देखाओत,
छागर घेंट कटेबा लेल कहियो कान नहि पटपटाबैत अछि।
परीक्षा नहि दैत अछि, गोसाउनिक पीड़ी लग ठाढ़ भ' क'
संघर्ष- पथ पर बीस पीढ़ीक मेटि जायब,
एक अनवरत, सार्थक जीवन थिक, वाह मैथिली....!
❑❑❑

मनोनुराग

☙ विद्या वाचस्पति
डॉ. जय नारायण यादव

जय हो जगमे जतय तरैत अछि,
निज मातृभाषाक ज्योति।।
से थल पावन नचथि नारायण,
बान्हि पैरमे पौटी।।1।।

अवध विराजथि मैथिली अम्बे,
रमा रामकेँ वाम।।
से विघ्न हरथु हमर सतत्,
भजु मोन सीताराम।।2।।

वन्दौ वर-वैदेही युगल,
भरत लक्ष्मण, अरिहंता।।
अंजनी पुत्र पवन सुत,
अष्टसिद्धि नव दाता।।3।।

भाव भावना भावुकता सङ,
सतत् शक्ति सेवा रत।।
वन्दौं सीताराम पद,
जिन्हहि परम प्रिय भक्त।।4।।

पद्‌म-पत्र, जल सम विमल,
जनक नन्दिनी माया।।
काम-ताप-मन चंचहारी,
वरदायीकर छाया।।5।।



महासम्मेलन जय जयकार

☙ विद्या वाचस्पति
डॉ. जय नारायण यादव

मचल अवधमे मैथिलीकेँ जयकार!
दूर देश सँ जुमल सिनेही,
देखय पाबि हकार।।1।। मचल......
प्रेम रसमे भेल सराबोर,
नेने मोन उद्‌गार।।
मिथिला सँ बनि जुमल पाहुन सभ,
लऽ कऽ रतनक भार।। 2।। मचल......
पियर पट पियरे धोती,
पाग-शाल सोलह सिंगार।।
अनुपम वर अनमोल धिया लेल,
पान-मखानक भार।।3।। मचल......
सदानीरा सरि नैहर बुझि,
उमड़ै सरयुग-धार।।
देखय उपहार बेवहार मनोहर,
घरे-घर दै छै वधु हमार।।4।। मचल......
अवधपति ''अयोनिजा'' आशीषय,
जिबथु वरख हजार।।
महाइन्द्र बनि ''बैजू'' गोर पाहुन,
रिमझिम बुचरूक प्रेम अछार।।5।। मचल......
शोभनि कर कमल अशोक केँ,
खनक अमल उपहार।।
भाव भावना भावुक भेल विचरय,
सजल अश्रुधार ।।6।। मचल......
साधुवाद धन्यवाद बरिसय,
इन्कलाब जिन्दावाज।।
नेना प्यार मे मगन भेल डुमल,
महासम्मेलन लाजबाव।।7।। मचल......
''देशील बयना सभ जन मिट्ठा,''
जय-जय युगल जोड़ी अवतार।।
स्वर्गादपि गरियसी निजभाषा,
जय मैथिली मिथिलाक मधुर वेवहार।।8।। मचल......



गङैठी-मोड़

✍ सिया राम झा 'सरस'

हलचला जाइछ दिशा
समवेत स्वर केर शोर पर
तलमला जाइछ धरा
जातिक अङैठी-मोड़ पर
जाति जूही-केतकी-
चम्पा गुलाबक हार छी
जाति सोन्हगर गंध माटिक
देह-नेह सिंगार छी।
जाति सुरभि दिगन्त धरि-
पसरल क्षितिज केर ओर पर। तलमला...
शक्ति केर जे स्रोत निर्झर
दिवा-निशि झरझर बहए
जागरण स्नदेश जे कहए
जाति झंझावत मे-
जीवय सदा हिलकोर पर।। तलमला....
शीश नत नहि हो जकर
नगरपतिक उन्नत भाल सन
नाद जय-जय भैरविक
कए सकय तांडव तालसन
जे सतत तैयर-सनिधा-
यज्ञ केर अङोर पर।। तलमला.....
जाति जे इतिहास सिरजय
बदलि दैछ भूगोलकेँ
रक्त सीचि दधीचि बनि
बँचबैछ माइक बोलकेँ
पलक पर जनी धरए-
से, हँसय स्वर्णिम भोर पर।।
तलमला जाइछ धरा
जाति अङैठी-मोर पर।।

❑❑❑

एगो ढेकुड़ी

✍ सिया राम झा 'सरस'

एगो ढेकुड़ी तँ फेकू-हेतैक हिलकोर
अहाँ लधियौ पराती अवश्य हैत भोर

आइ भोटे मे शक्ति, आइ नोटे मे शक्ति
कियो देखत सामर्थ्य, करत तखनेटा भक्ति
त्यागि टिटकारी, देखा दियौ ललकारक जोर

बाउ जागथि से नीक, दाइ जागथु-से नीक
देश हमरो ई थीक तखनी डरे कथीक!
किए जाबू हम मूह, किए तागू हम ठोर!

अहाँ हाथे मिलाउ-हैत दीर्घ शृंखला
पैर मिला चलू-डोलि जाएत पूर्ण मेखला
बान्हू मुट्ठी तँ बहुतो के उठतै मरोड़

आउ, सुमिर लै छी-सीताके गट्टाके जोर
बल-योद्धा सल्हेसक जुटाउ पोर-पोर
बहए सोनित से नीक, चूबय कथमपि ने नोर!

अहाँ जहि दिन सोचि लेब 'जाति-पाति अंत'
बुझू, तही दिन मैथिलीक अंगना बसंत!
तखन रंगो-अबीरो-जोगीड़ो के शोर!!
एगो ढेकुड़ी तँ फेकू-हेतैक हिलकोर!!

❑❑❑

शिक्षा

ॐ अजित आजाद

गंगा नहेला/जमुना नहेला
काशी-मथुरा, अयोध्या-उज्जैन सभठाम गेला
छुटलनि एकहुटा धाम नहि/तैयो मुदा आराम नहि
गहबर-गोसाँइ करैत/मनेरसँ अजमेरशरीफ धरि
धाँगि देलनि कबुला करैत
मुदा नहिकेँ नहिएँ भेलनि पुत्र-रत्न
बेटी रहनि चारि टा/सभटा काजुल, अकाजक एकहु टा नहि
भोरसँ साँझ धरि कुट्टी-सानी, गोबर-करसी करैत
रातिमे जाँति देल करनि नियमसँ
कियो ध' लैनि पीठ, कियो पाँखुर, कियो टाँग
कियो फोड़ि दैनि अँगुरी
पँचमासँ आगू नहि जाइ देलखिन ककरो
बहुत भेलै अक्षर-ज्ञान
जुग-जमाना खराप छैक, लाथ रहनि सेहो
बुढ़ारीमे ताकि लेलनि कर्त्तापुत्र
भातिजकेँ लिखि देलखिन खेत-पथार, डीह
बेटी सभ मुदा नहि कटलकनि छीह
टग हनलखिन पहिने उपाससँ काँटो-काँट भेल माय
कर्त्तापुत्र नोति देलखिन जयबार
आसिखमे बोरि देलखिन बूढ़ा
भातिज हो त' एहेन
फेर गेलाह बूढ़ा अपने/एहि बेर नोतल गेल टोल
कंठ ठेकल बेटी सभ लधने रहली गुम्मी
हिनके असरा आब
किछुए दिन बाद बियाहि देल गेली सभ
एकटाकेँ भेटलनि लुल्ह/दोसरकेँ नांगर
तेसरकेँ बौक/चारिमकेँ बताह
नहिराक आसमे चुप्पे रहली सभ
आस मुदा रहलनि आसे/फोक गेलनि भैयाक बियाह
भातिजक मूरन
चारू बहिन एकाएकी बनली माय
बेटिये भेलनि चारूकेँ
बेटा भरसबे बैसल पतिकेँ आँखि देखबैत
करबा लेलनि नियोजन/मोन रहनि सभकेँ अपन अभगदशा
बेटी सभ पढ़ैत गेलनि, बढ़ैत गेलनि
पबैत गेलनि डिग्रीपर डिग्री/चारू बनली चारि विभागक हाकिम
कि माम अयलनि दौगल/भगिनी सभ चीन्हैसँ नासकार गेलनि
गाम धरि छोड़बा लेल मुदा कार गेलनि! ❑❑❑

शिशिर आगमन

ॐ मणिकांत झा

शिशिर अयलनि ओढ़ने ओहार
संगहि अनलनि शीतल फुहार
नहि सूझि रहल किम्हरो किछुओ
दिनहुँ मे लागय गुज गुज अन्हार।
शिशिर..

पंछी के कलरब मंद पड़ल
निमूधन सिकुरल सिकुरल
घसमोरि बैसल श्वानो देखल
जनु ओकरो लागि रहल छै जाड़।
शिशिर..

पछबा सिहकल कनकनी नेने
पानियों जमकल अछि गश्र धेने
दिनकर नहि उगलनि बेर खसल
सीरक कंबल भेलय बहार।
शिशिर..

भोजन धरि भेटत नीक निकुत
गरमे गरमे तपते तपते
मणिकांतोक अत्मा तिरपित
धरि दिवस छोट रजनी पहाड़।
शिशिर..



अगहन

✍ मणिकांत झा

देवेशो दुबकथि जिनका देखने
से शरद ऋतुक आगम अखने
सतरंगी किरणक तेजहु झपने
दिन छोट कयल जीह के जतने। देवेशो दुबकथि..
मोती सम चमचम चमकय
चार उपर चढ़िकय दमकय
ओसक बून्नी सबतरि पसरय
गश्र पाबय जखने तखने। देवेशो दुबकथि..
जाड़े थरथर जन जन काँपय
सबल दोशाला तन झाँपय
अबला सब घूर सहटि तापय
गेन्हरी केथरी गोनरि ओढ़ने। देवेशो दुबकथि..
खेतक आड़िक फरके विवरण
कत दोकनदार करय विचरण
पानक खिल्ली गूआ कतरन
मुरही कचरी झिल्ली रखने। देवेशो दुबकथि..
शीश बीछि लोढ़ा बनबी
मुठिया सँ आंटी बन्हबी
मूसक बीयरि के कोरबी
मन चौन रहय बोनिक बटने। देवेशो दुबकथि..
धानक बोझा के माथ उठाय
बोनिहारिन देलक काँड़ लगाय
दाउन कयल प्रातहि फोचाय
कराम लगाय बरद हँकने। देवेशो दुबकथि..
सोमनी लोढ़ल ओलरी गोलरी
राखल कतिआय अगौं मोटरी
सूपे हौंकायल सबटा खखरी
गिरहत दुबकल बैसल अपने। देवेशो दुबकथि..
दूविक मूड़ी शीतहि लीबल
आँगन जनु हो टटके नीपल
मणिकांतो निज मन के लीखल
बचपन लागय जेना सपने। देवेशो दुबकथि..

❑❑❑

साँझ गीत

✍ मणिकांत झा

दीप लेसि देखाउ शीघ्रे/साँझ बीतल जाइए
गगन तरेगन देखाइए/सांझ बीतल जाइए।

तीलक तेल भरू/तूरक बाती धरू
लेसि लीय सबटा प्रदीप/साँझ बीतल जाइए।

बारि दियौ तुलसी चौरा/संगहि घर असौरा
आँगन मे पाँचटा दीप/साँझ बीतल जाइए।

सँझा माइ अपने औती/संग संग लछमी लौती
मणिकांत लिखलनि गीत/साँझ बीतल जाइए।

❑❑❑

पराती/महेशवाणी

✍ मणिकांत झा

भोरे उठिकय हर के सुमिरू/बम बम गाल बजाय यौ
बमभोला छथि शंकर दानी/सब दुख देथि भगाय यौ। भोरे..

काल कष्ट के क्षण मे हरथि/विपदा देथि मिटाय यौ
केहनो अबल दुबर जँ रहय/कोरा लेथि उठाय यौ। भोरे..

शीश गंग आ भाल चंद्रमा/नाग गला लपटाय यौ
नीलकंठ आ रहथि दिगंबर/सदिखन धुनी रमाय यौ। भोरे..

हिमनंदनि छथि संग विराजित/जगदंबा नाम कहाय यौ
मणिकांतो चरणन लपटायल/रहथि सदति सहाय यौ।

❑❑❑

उबडुब

✍ मणि आमारूपी

भोकारि पारि आइ कनैए मिथिला
अस्मितापर विमर्श कतौ नहि होइए
शतपथ ब्राह्मणसँ चर्च चलि आयल
आखिर हमरे जनमल हमरा बिसरैए।

कतेक चौहद्दी भेलै सभटा रद्दी
वर्चस्वक लड़ाई गद्दी लेल लड़ैए
स'र सोलहकन मियाँ सवर्णो
एक दोसरक देखू टाँग घिच्चौए।

जिला कतेक कते आरो बँचलै
मैथिल समाज कतेक बँटलैए
अहंक खेल आरो नहि किछो
पचपनिया आइ संघर्ष करैए।

टूटलै पुल कोसी क्षेत्रो छूटलै
लखनदेई गंडकके ँ के पूछैए
भागलपुरक कोनो चिन्ता नहि
कमला बलान बागमती बहैए।

लौरिक सलहेस की दीनाभद्री
विद्यापतिक नाम मंचेपर बसैए
दड़िभंगा मधुबनीके ँ अजबे लीला
समर्थन लेल कोना घमर्थन करैए।

उबडुब उबडुब क' रहलै मैथिली
सगर राति नहि दीप जरैए
नहि अस्तित्वक चिंता ककरो
परदेशमे मैथिल मगन रहैए।



कहूने

✍ मणि आमारूपी

स'र समाजक ताना बाना टूटलए
अपने समांग कोना अपनासँ रुसलए
आइ टोल टोलबैया फराके बैसल
कहूने फेरो घुरि घर आएब की.....

जाति धरमक केहेन कादो किच्चड़
सूखलेमे भटका कोना एते पिच्छड़
आँखिपर अन्हरजाली लागलए
आउरो हम छिटकी लगायब की
कहूने फेरो घुरि घर आएब की.....

गप कोनो नहि इरखा फुसियो
टोनै लेल बतंगर बीसियो
शकुनि आइ सुतारि रहलए
अपनेहिमे महाभारत करायब की
कहूने फेरो घुरि घर आएब की.....

माय मिथिलेके ँ कियो नहि सुनैए
आँखिसँ झरझर नोर बहैए
आहत संतान बिच युद्ध देखिके ँ
संतापमे प्रायश्चित करायब की
कहूने फेरो घुरि घर आएब की.....

अनहरिया राति जेतै भोरो हेतै
अहं अपन अपन छोडि संग एतै
राति गेलै त' बातो बिसरल
मिलि हम अलख जगायब की
कहूने फेरो घुरि घर आएब की.....



मैथिली पढ़ौनी

☙ मणि आमारूपी

समयक धाहसँ मारल
ई झुरकुट बुढ़बा गाछ
चिचिया चिचियाक
हक्कन कनैत
निहोरा करै छै सभसँ
अपन बेथा सुनाबै छै
जाइत अबैत रस्ता पर बटोहीक'
कुहरैत रहैत छै दिन- राति ओ
ककरा लग छैक एतै समय
जे ओकर गप पर कान पथतै-

पाग दोपटा माला पहिरने
ठाढ़ छै मिथिलाक कर्णधार
विद्यापतिक पर्वमे
बाबा पर श्रद्धा सुमन अर्पित
करबाक लेल पाँति बनाक' कर जोड़ने

सभ दिन राति लागल छै
समारोहक बेस ओरियानमे
भेटल छै नीक रोजगार
माछक कुट्टीक संगे
अपन प्रचार प्रसार
मिथिलाक ध्वजा उठाबैक'
पुरखासँ भेटलै अधिकार
मेनजनी करबाक ठकैतीकेँ ठेका।

अपन अपन राजनीति
चमकाबैमे लागल
सिद्धहस्त महारथि
रमल मगन देश दुनिया सँ कोसो दूर
बुझू एक पर एक
माँजल छाँटल कलाकार।

हौअ नजरि फिरौने सँ
काज नैं चलतह
हमर सुधि तू नहि लेभक
त' लेतै के'-?
समय निकालह
जड़िकेँ बड़का खोधड़िक' देखह
ओहि पर बाबाक फोटो सटने
काज नैं चलतह.
हौअ हमर जड़ि त'
तोरे सभक नेना भुटका छै ने।
ओकरे ने पहिले मजगूत करह
ओकरा खोराकी चाही
'मैथिली शिक्षाक'
मैथिली संस्.ति आ' संस्कारक
बड़बड़ाईत रहैत
अछि बुढ़बा राति दिन।

छिप्पीक' चिंता
जुनि करै जाह हौअ बाउ
जड़ि सँ त' हम
पहुँचाहिए देबै खाद पानि छिप्पी धरि
ओतै सामर्थ्यवान छी
हम अखनो।

हौअ जागह
अपन शक्तिकेँ चिनह
जुनि छिड़ियाबह
एम्हर ओम्हर
समगरदामे बड्ड तागत छै।
अबेर भ' रहल छह
नव जजातकेँ चाही आब पटौनी
ननकिरबा-ननकिरबीकेँ
मैथिलीक पाइठ धराबह
ओकरा चाही मैथिली पढ़ौनी।

जीते जी त' दहक छुछ्छो भात
मरलाह पर की'करबै हम दूध भात
हौअ बीए एमएमे काज नै औते खाद -?
बचाबह बेमारी सँ पहिले नेना पात? ❑❑❑

मैथिली शिक्षा

☙ मणि आमारूपी

हम मैथिलक' एकहि इच्छा
नेना भुटका मैथिली शिक्षा
इसकुल पढौनी पाठ प्रारम्भे
कतेक दिन धरि हमरे उपेक्षा ।।1।।

ह'यौ ककरोसँ हमरा द्वेष नहि
कियो बढ़ाए कनिको क्लेश नहि
मुदा लगा रहल अछि छिटकी
हम भदेस नहि बुझै छी मटकी ।।2।।

नबका नीति नब शिक्षा लेल आएल
सरकारो जागौ करौ निदान
संचमंच बैसल छी हम सभ
देखि रहलाह उगना भगवान ।।3।।

भीख नहि चाही चाही हिस्सा
आइ धरि सुनलहुँ अगबे खिस्सा
आरो कतेक हम करब जिआन
मैथिली थिक यौ हमर गुमान ।।4।।

सरकारो लागल केहेन प्रपंचमे
टैग हटल, नहि मिथिलाकेँ नाम
विश्व भरिमे प्रसिद्ध हमर अछि
फेर कोनाक नहि हमर मखान ।।5।।

कतेक करत ओ अस्मितासँ खेला
आकाशवाणीकेँ देखलहुँ झमेला
बदसँ नीक हम होए बदनाम
ठाढ हौ' समांग आइ एकठाम ।।6।।



मैथिल

☙ मणि आमारूपी

मैथिल शांत अशांत नहि कहियो
आइ धरि नहि ककरोसँ विवाद
उजड़ल मिथिला ई उपटल कोना
आउ मिलिक' हम करी आबाद।

बुद्धिगर धरगर हम सभ दिने रहलहुँ
मौनव्रत तोड़े जाउ भेलै शंखनाद
कते दिन धरि आरो चुप्पी
यज्ञ आहुति दियौ हेतै विजयनाद।

पेट पोसै लेल दहोदिस बौआए छी
कतौ हहाए छी कतौ उड़िआए छी
बैसिके घरे हम कते बजेबै गाल
विकासक नाम पर ठनठन गोपाल।

बड्ड आसाध्य एहि रोगकेँ बुझू
छहोछित भ' हम भेलहुँ बरबाद
सरकारो बुझैए कतेक फराक हम
देख रहलहुँ हम नेताक उन्माद।

बुद्धि संस्कारसँ सभ पर बीसे हम
गुमान हमर हम मिथिलावासी
बेबहार कुशल रहितौ आइ देखू
सगरो लोक कहैए हमरा प्रवासी।

सभठामक किसानक हाल देखू
मिथिला सरिपहुँ अछि काशी
मानलहुँ हम छी एते गेल गुजरल
तैयौ नहि हम लगेलहुँ फाँसी।



साक्षरता गीत

ꩦ **कुशेश्वर कश्यप**

बौआ बुचकुन मन सँ पढ़ियउ,/रखियउ मैथिल मान यौ
अहैं मेहनत सँ बनतै बौआ /मिथिला और महान यौ

पढु लिखु आगु बढु,/समय के आब पहिचानु
सगरो दुनिया सँ दोस्ती क'/सबकेँ अप्पन मानु
समय बदलि गेल अपनहुँ बदलु/करियौ जुनि गुमान यौ
अहैं मेहनत सँ बनतै बौआ/मिथिला और महान यौ

लम्पट झगड़ा फुसियो लफड़ा/मे नहि आहाँ पड़ियउ
निम्मन आदति नैतिक शिक्षा /केँ आहाँ अपनऽबियउ
बोली एहन मधुर बनबियउ/पाथर मे हुलसय प्राण यौ
अहैं मेहनत सँ बनतै बौआ /मिथिला और महान यौ

अडिग पथिक बनि सेवा करियउ /सब झंझा तूफान मे
किछुओ मोसकिल नै छै एतय/विश्व कर्म प्रधान मे
जखन अडिग भऽ सेवा करब'तँ/झुकत सगर आसमान यौ
अहैं मेहनत सँ बनतै बौआ /मिथिला और महान यौ

बुद्ध गाँधी केर देश अप्पन अछि /करु न एकरा गंदा
अपन कर्म सँ विषमता पर/हरदम चलबियउ रंदा
अहाँ सुधरबै तँ जग सुधरत/हम्मर ई अरमान यौ
अहैं मेहनत सँ बनतै बौआ /मिथिला और महान यौ

❑❑❑

मनसूबा

ꩦ **कुशेश्वर कश्यप**

दहेज केँ दानव, हम जे मानब/बेटा विवाह मे, हक्कन कानब
सभटा सपना रखले रहि जायत/सुखक समान, कोना के टानब

पढि-लिखि बेटा भऽ गेल अफसर/आब नहि फानब,कहिया फानब
लाखे- एकावन रुप्यम- द्रव्यम/आर बी आई केँ, घरे मे आनब

धनहि छजनता, सौख-सेहन्ता/सब दिन व्यंजन, घीये छानब
हमरा ईश्वर बेटा देलनि अछि/आहाँ कानु, हम किये कानब?

❑❑❑

जिनगी

ꩦ **कुशेश्वर कश्यप**

दुश्मनक हाथमे पड़ल जिनगी
कटारी गर्दनिमे गड़ल जिनगी
कली पुष्प भ्रमर ने छै बाग मे
छुच्छे अकटा सँ भरल जिनगी

मोनकेर उत्सव बेसाहल जकाँ
दुक्खक बुन्नीमे तीतल जिनगी
कहबै कोना भीतऽरिया व्यथा
कानमे गुज्जी पड़ल जिनगी

मोल न मोजर न अस्तित्व अपन
डारिक फूल सन झड़ल जिनगी
बचतै कोना आब गरीबक ईमान
निमकक करजासँ मरल जिनगी

❑❑❑

मुइल्

ꩦ **कुशेश्वर कश्यप**

ओ नै लिख सकैत अछि
कोनो टा इतिहास/ओ नै क' सकैत अछि
कोनो टा हलचल/ओ नै चला सकैत अछि
अपन जुमान/ओ नै हिला सकैत अछि
अपन कान/ओ नै देख सकैत अछि
नीक आ बेजाय

गाममे घरमे शहरमे/भ' रहल अत्याचार वा व्यभिचार
वा उत्पात वा घात वा बलात्/जँ नै हिला सकैत होइ
नै देखा सकैत होइ/आ नै आनि सकैत होइ कनेको स्पंदन अहाँमे
तँ बुझयमे कोनो भांगठ नै/जे अँहों जीवित नै छी मुइले छी!

❑❑❑

तीनगोट कविता

✍ दिलिप कुमार झा

गाछ-1

सुन्नर- सुन्नर ई हरियर गाछ
चाकर, नाम, करिछौंह एकर पात
सुरुज बाबा दै छथि ताप
जड़िक भरोसपर ठाढ़ हमर गाछ
धरती मैंया दै छथिन पानि
ओइ सँ अपने भोजन रान्हि
परसय सब केँ आक्सीजन आनि
सुन्नर गाछ हरियर गाछ।

गाछ-2

चलै चलू!सब रोपू गाछ
अकठ-मकठ सब अपने उगए
झाड़ - झंखार केँ जुनि करु साफ
आमक गाछ, लतामक गाछ
अनार, शरीफा, बड़हर रोपू
सीसो, सखुआ अछि बड़ उपयोगी
पिपर, पाकड़ि रोपि रहु निरोगी।

गाछ-3

चल चल बौआ! पात चिन्है लए
चाकर गोल होइछ पिपरक पात
खढ़िया कान सन बड़क पात
आमक पात नमछुडुकी
छोट -छोट अछि मुदा बड़ उपयोगी नीमक पात
दर्द हरय दर्दमेदाक पात/सभक आँगन तुलसी पात
पूजा पाठ सँ भोजन धरि लेल
बड़ पवित्र अछि केराक पात
दम फूलय त' करेजमे मैंया साटथि
पसिझक पात/अकौनक पात
जड़ छोड़ाबय बाकसक पात
झबड़ल झबड़ल अशोकक पात
पात -पात के अनमोल बात
गाछ -गाछ के चिन्हू पात।

गाछ-4

चाकर- चौड़गर पाकड़ि गाछ/बाट- बटोही के छाहरि परसय
ठाढ़ि पात लए मोन छै तरसय/उँचगर- उँचगर तारक गाछ
मोटका सीरपर झूली झूला/चतरल पसरल बड़क गाछ
माय नित दिन जल ढारै छथि/बड़ उपयोगी पिपरक गाछ
लाल -लाल फूल कतेक छै सुन्नर/हमर इसकूलक गुलमोहर गाछ।

❑❑❑

खेतक फूल

फूले सँ फ'र बनै छै/दाना सँ पहिने फूल धरै छै
देखने छी अहाँ खेतक फूल/चकमक बैगनी तीसी फूल
लील रंग खेसारी फूल/पियर- पियर सरिसों फूल
झिमनी फूल/उज्जर-उज्जर धनिक फूल
धानक फूल/पिरौंछ रंग खेरहीक फूल
राहरिक फूल/रामझिमनीक फूल कतेक अछि सुन्नर?
सपेत रंग कें सजमनि फूल/केशर रंग कदिमा फूल
खेत टहलियौ/ठिकिया क' देखियौ
खेतमे सेहो रंग - रंग के फूल रहै छै/
गप करैमे ओकरो सबके मोन लगै छै।

❑❑❑

साग

हमरा बाड़ी/साग गेन्हारी
रामू खेतक साग खेसारी/पारो टाटपर पोरो लत्ती
बथुआ, मेथी अपने खेती/अनका देती सरहच्ची
करमी साग च'र मे उपजय/बाड़ी बाउग भेल अछि पटुआ
ठढ़िया अब्दुल खेतमे उपजाबय/हाट चढ़ा क' पालक बेचय सुटुआ
साग- साग मे बड़ तागति छै/साग खाय सब नि

❑❑❑

विद्यापतिकेर बास बनौली

☙ कालीकान्त 'तृषित'

जनक जानकी रामायण के, नगर जनकपुर धाम रे।
सटले दक्षिण विद्वत विप्रक बास बनौली गाम रे।।

विद्यापति कवि जतऽ प्रवासी, बनल छलाह से गाम छै।
लखिमा रानी एतहि छली से, सुनिऔ कतेक प्रमाण छै।।
उगना प्रिय कवि बसल छला से डीह एतहि विद्यमान रे।
सटले दक्षिण विद्वत विप्रक बास बनौली गाम रे।।

एतहि लिपिर्मय भेल भागवत, दुर्गा भक्ति तरगिणी लिखलन्हि।
बोधगम्य भऽ गेल भागवत, पंडित जन से बचा कऽ रखलन्हि।।
गाम गाम एखनहु तक होइछै, बाचन कथा पुराण रे।
सटले दक्षिण विद्वत विप्रक बास बनौली गाम रे।।

राजमार्ग विद्यापति पवाडव, विद्यापति खुरपेरिया ओते।
विद्यापति स्मारक द्वारे, सोझे डीहक लग पहुचौतै।।
'ललिमे' सर छै लक्ष्मी सागर, सुनिऔ सकल सुजान रे।
सटले दक्षिण विद्वत विप्रक बास बनौली गाम रे।।

द्रोणवार बशी राजा के, कुलदेवी ससारी मईया।
जिनकर मूर्ति सुरक्षित एखनो, शीश नवाबथि बाबू भइया।।
अही राज्यमे लखिमा रानी, रहली ससम्मान रे।
सटले दक्षिण विद्वत विप्रक बास बनौली गाम रे।।

डीहक उत्तरपूर्व कोन्ह पर, विद्यापति पोखरि अछि एखनो।
हुनकर वास बनौली इएह अछि, तईमे नहि शंका अछि कखनो।।
शत शत नमर 'तृषित' इ नगरी, मैथिल तीर्थ समान रे।
सटले दक्षिण विद्वत विप्रक बास बनौली गाम रे।।

❑❑❑

मिथिला वर्णन

☙ राम सेवक ठाकुर

चाहत नहि इह लोकक हमरा,
चाहत नहि सुरलोक रही।
चाहत नहि सुख संपत्ति करे,
चाहत नहि सुखभोग करी।।

जनम अनेक कनेकहु जनमी,
जनमि जनमि सभ कोखिय आबी।
सेवक स्नेह जनम मिथिला मे,
मिथिला पूत जगत पद पाबी।।

❑❑❑

गीत

☙ राम सेवक ठाकुर

तीरथराज सकल तिरहुत मे, मिथिला सुयश महान हे।
धन्य सखी धरनी धर आँगन, सिया-धिया पहुँ राम हे।।

भृकुटि तनल सागर भय कंपित, तिनकर शीश लिबान हे।
दृष्टि वक्र डगमग कर अबनी, मोद मधुर मुसुकान हे।।

सागर भुवन वश मे सखि जिनकर, स्नेहक बंध बन्हान हे।
सकल चराचर स्वामी अपने, आँगन कूटथि धान हे।।

लाल-लली लखि रूप मनोहर, पलक, नयन अविराम हे।
युगल सरूप अनूप अलौकिक, जोड़ी सीताराम हे।।

जीवन धन्य-धन्य सखि मिथिला, धन्य जनकपुर धाम हे।
प्र2ति, पुरुष्ज्ञ मिलनक शुभ अवसर, 'सेवक' मंगल गान हे।।

❑❑❑

चाही मिथिला-राज

✍ हरिश्चन्द्र हरित

उत्तर मे गिरिराज -हिमालय/दक्षिण बैजू बम-बम बोल।
अइ बीचक छै मिथिला-राजक/अपन-गाम आ अप्पन-टोल
पुरुब-पुरनिया पच्छिम-गंडक/उफनि मचाबै गर्दम - गोल
संविधानकेर कोन खुशामद/बदलि देब भारत-भूगोल।।

जे नै सुनलक आ नै गुनलक हमरा मोनक बात
एतेक-साल मे तैं नै भेलै हम्मर एगो काज
से जे क्यो भेल शासक तकरो हमरे देलहा ताज
तैं हमरो कम किछु नै चाही चाही मिथिला -राज

कोसी बहय उदामे एखनो जहिना चलय सुनामी
नामो ले उद्योग ने लागल जे छल सेहो निलामी
अभिशापित रौदी-दाही सँ लोकक हाल-बेहाल
तैं हमरो कम किछु नै चाही, चाही मिथिला-राज

असम जराबै मुंबै मारै, हरियाणा - हड़काबय
पंजाबो मे ठेलम -ठेला, चोरा-नुका सब भागय
एखनो कत्ते बन्हकी लागय अही माटिकेर लाल
तैँ हमरो कम किछु नै चाही, चाही मिथिला-राज

सहलौं बहुते आब ने सहबै, सहबोकेर छै सीमा
कहलौं बहुते आब ने कहबै, कहतै भुखना-भीमा
अंतिम-काज लड़ब बाँकी छे, ठोकि देल अछि ताल
तैं हमरो कम किछु नै चाही, चाही मिथिला - राज

डेग-डेग पर पोखरि हमरा, माँछ-मखानक खान
आम फलक राजा से हमरे सभसँ पैघ बगान
हमरे लिच्ची शाही लिच्चीकेर बेजोड़-बजार
कतौ ने भेटत अप्पन देसी पानक अनुपम-स्वाद
तैँ हमरो कम किछु नै चाही, चाही मिथिला-राज'

निन्ने छलै निभेड़ आब से जागल अपन समाज
बूझि गेल जे राज बिना ने चलतै अप्पन काज
अड़तै-बढ़तै-लड़तै-मरतै करतै अप्पन-राज
तैँ हमरो कम किछु नै चाही, चाही मिथिला-राज
चाहे खसौ बज्र की ठनका, बहय मरुत-उनचास
दुमका सँ दमकत चतुरंगिनि पहुँचत राज-विराज



मिथिला गौरवक परिचायक

✍ डा. अनिल ठाकुर

भेल उद्भव माइयक भाषासं
मिथिलाक्षरमे लिखल जाइत छी
जुटल नाम हमर अस्मितासं
हम अष्टमसूचीमे कहबैत छी।

बन्हलौ सभके एकसूत्रमे
शब्द सुमनके बान्हि रखलहु
देसिल बयना सभजन मिट्ठा
देश-देशमे लहरायल परचम छी।

व्यक्तित्वक अभिव्यक्ति सं
चाहे हो भाषण ओ कविता
राष्ट्र चेतना जगबैत अबैत छी
मातृभाषा पदक अधिकारिणी छी।

समरसताक एहसास करेलौ
मैथिलीसं होइछ हमर पहिचान
मिथिलाक एकताक पोषण बनलहु
संस्.ति -संस्कारक-कल्याणी छी।

मिथिला देशक अछि शान-स्वाभिमान
निहित अछि मिथिला गौरव गान
जन बोनिहारक भाषामे
पाठशालामे मैथिली व्यवहृत हो
हम मिथिला गौरवक परिचायक छी।



इएह थीक नारी जीवन

✍ सोनी चौधरी

त्याग आ ममता केर मूरत
दयामयी करुणामयी सूरत
सकल सुमंगलदायिनी बनि
जिनगीक कयल समर्पण
इएह थीक नारी जीवन।

रामायणमे बनल सीता,
महाभारतमे बनल गीता
सभ युगमे बाट देखाबथि
हृदयमे भरल अपनापन
इएह थीक नारी जीवन।

प्रेमक मालामे तागा बनल
बंजरमे अविरल धारा बनल
सभ वन उपवनकें गमकाबी
रहि पिआसल भटकी रण वन
इएह थीक नारी जीवन।

रक्षकमे छथि मां अंबा
जगतारिणी मां जगदम्बा
अदिति बनि कलपि गेली
देखि अप्पनमे अनबन
इएह थीक नारी जीवन।

छथि तुलसी सभक आंगन
पतझड़मे बनली साओन
तथापि नहिं कोनो मूल्यांकन
कर्म पथमे रहि अंतिम अर्पण
इएह त थीक नारी जीवन।।

❑❑❑

हम नारी छी, मुदा...

✍ सोनी चौधरी

हम नारी छी, मुदा नादान नहिं
मां छी, मृगतृष्णा केर समान नहिं
करैत छी हमही जग केर रचना
पालन करैत छी अपन आंचरमे
पीबि नोर हरदम घोटैत छी हम
कोनो वेदना सं अंजान नहिं
हम नारी छी, मुदा नादान नहिं।

वसुधा बनि अंकुर दैत छी
वर्षा बनि हम पटबैत छी
गर्भक प्रहरी हम युग सं छी
तकर कोनो अति मान नहिं
हम नारी छी, मुदा नादान नहिंस
भक्तिमे मगन मीरा छी हम
शक्तिमे प्रखर दुर्गा छी हम
पवित्रतामे मां गंगा छी हम
आब ठहरब हमर शान नहिं
हम नारी छी, मुदा नादान नहिं।

हम सृष्टि केर कण कणमे छी
पाताल ओ नील गगन मे छी
सभट निशछल धड़कनमे छी
हमर बाटमे कहियो साँझ नहिं
हम नारी छी, मुदा नादान नहिं।

❑❑❑

मिथिला राजक सपना

✍ डा बुचरू पासवान

युग-युग सँ अपमान सहै छी
कोटि नमन कर जोड़ि कहै छी
मिथिला राज मंगै छी।

अमिट रहत इतिहासक पन्ना/मिथिला राजक हमर सपना
घूमा दिअ हमरा मिथिला क/कोटि नमन कर जोड़ि कहै छी
मिथिला राज मंगै छी।

बिहार खण्ड सँ बनल झारखण्ड
छत्तीस सँ उत्तरांचल तेसर खण्ड बिहारक बाँटू
बना दिअ मिथिलाञ्चल/हम तऽ सैएं-सैए बेरि कहै छी
मिथिला राज मंगै छी।

संविधानक आठम सूचिमे/आबि मैथिली जुड़ल
एकर बधाई अहींक दै छी/चारि कोटि मन जीतल

हम ते सैए-सैए नमन करै छी/आधा दऽ क सुति रहल छी
पूरा कियै ने करै छी/यशोगान यश अहींक करै छी

सब मैथिल केर कान कटै छी/मिथिला राज मंगै छी।
मिथिलावासी सब मैथिल छी/जे धरोहर बुझै छला
ओ अधर में लटकि गेला/भेद-भाव सब बिसरि गेल छी

शहर छोड़ि देहात घूमै छी/सब मैथिल कर कान भरै छी
मिथिला राज मंगै छी। /हम मैथिल जन जागि गेल छी
उदित पथ पर आबि गेल छी /मिथिला राजक सपना
अपना दिवा सपन सेहो देखैछ /मिथिला राज मंगै छी।।

जे मैथिल जन सुतल छला/समर भूमि में जूमि गेला
हम सैए-सैए बेर कहै छी/हम मिथिला राज मंगै छी।

कवि बुचरू हूँकार करै छी/सब मैथिल कर नमन करै छ
कूदि पडू सब समरभूमिमे/युद्ध बिगूल हम चूँकि रहल छी
मिथिला राज मंगै छी। ❑❑❑

गणना

✍ डॉ. सत्येंद्र कुमार झा

पानि, वायु, साँस, संवेदना
नपबाक यंत्र भने हो भिन्न-भिन्न
मुदा गणना सभमे रहैत अछि उपस्थित।
गणक जे-जे कहत सही
करैत जाउ ततबे, बनि सकब शतायु
सय बरख पूर हेबाक गणना सेहो करय पड़त कोनो गणकें सँ
पानि गणना करैत पियब त'
भितरका अनेक अंग रहत सुरक्षित
वायु अबाधित जाइत रहत अंदर
तश घूरिकश आबि सकब ओहनो अस्पतालसँ
जकरा भविष्य मे तोडि बजार बनेबाक योजना छैक।
साँस त' सरिपहुँ प्राण थिकैक
गणक ओकरो हिसाब जोडि क' सकैत अछि आश्वस्त
जे एखन बहुत रास गणित पढबाक- देखबाक अछि अहाँकें।
कतेक दूर धरि मुस्की नहि होयत मारूक
से बिनु हिसाबे कोना बुझि सकब
कतेक नोर यंत्र सँ हृदय धरि संचरित भ' सकत
बिनु गणनाक के बहाओत व्यर्थ मे नोर।
दूरी जे हमर अहाँक मध्य विद्यमान अछि
ओहो प्रतिफल थिक कोनो अर्थशास्त्रीक गणनाक।
प्रेम चद्दरि नहि छैक
बिछा दिऔ कतौ आ लुद्दसँ बैसि जाउ
आब त' तकिया खोलमे पयर हाथ समेटि घुसियबाक पर्याय थिक
गणना सैह कहैत अछि।
हम गणना करैत काटि रहल छी ई औंटाइत कालखण्ड
सभक भीतर एक-एकटा फराक-फराक चिकरैत
सूचना तंत्र सेहो छैक घोंसियायल
गणनाक गतिकें तीव्र करैत,
हम सभ अपन-अपन टीआरपीकें अकानैत छी
गणक पर पूर्ण भरोस रखैत।

❑❑❑

अपन भाषा

☙ भारती झा

पढ़ू मैथिली, बाजू मैथिली, मैथिली केर सम्मान करू
बाजू हिंदी-अंग्रेजी मुदा, मैथिली केर जुनि अपमान करू
हिंदी राष्ट्रक भाषा चाहे, मैथिली हमर मातृभाषा छी
पढ़ू मैथिली, बाजू मैथिली, मैथिली हमर निजभाषा छी

रही कतहु अन्यत्र बरू, मिथिला सं अपन पहचान अछि
अपन भाषा मैथिली अछि, एहि पर बहुत गुमान अछि
मिथिला रत्न लोकनि कें देखू, सब ठाम ध्वजा फहराबै छथि
मिथिला कें द' सम्मान, मिथिला के मान बढ़ाबै छथि

हम सब मिथिलावासी, ओहि जनकक संतान छी
राजा विदेह छलाह ओ मैथिल, सिया जिनक सम्मान थिक
अहि मिथिला के लाल कें देखू, कवि विद्यापति भान छलाह
जनकवि यात्री, सुमन, प्रदीप सन, कतेको मिथिलाक अभिमान छलाह

हर घर-आंगन, जतय सजल सजमनिक मचान अछि
डेग-डेग पर पोखरि खूनल, उपजय पान-मखान अछि
बाड़ी-झाड़ी लहरा सगरो, सुअदगर पोरो साग अछि
आभारी छी मां मिथिला केर माथ पर शोभय पाग अछि

सियाक जन्मभूमि पर देखू, कतेक सुंदर विध-व्यवहार अछि
कतेक रमणगर ई मिथिला, जतय जमाय बनल श्रीराम छथि
विद्वत प्रबुद्ध जन कें देखू, मैथिली के शान बढोने छथि
रहथि भले इंग्लैंड- अमेरिका, मंच पर मैथिली बाजै छथि

आजुक नेना-भुटका कें देखू, अंग्रेजीये बेसी छांटै अछि
छोड़ि अपन संस्.ति, मैथिली कें बिसराबै अछि
हमसब छी मिथिलावासी, बनल रही चाहे प्रवासी
काज करी संग आनो भाषा-भाषी, बनल रही मैथिली भाषी

❑❑❑

लभ कुश-प्रसंग

☙ अमरनाथ चौधरी

श्री राम अहाँ केर रामराज मे
आई दारा अछि लाचार।
प्रभू कही एकर की आधार।

कानन लीला पुरुषोत्तम कयलहूँ
कयलहुँ सीताक ब्यबहार।
प्रभू कही-----------

राजा धर्मक संग नहि कयलहूँ
प्रभू पति परमेश्वर बिचार।
प्रभू कही---------------

सब जनैत अनजान बनलहुँ अहाँ
राघब सर्वेश्वर सरकार ।
प्रभू कही------------

जाहि अबस्था भार्या सीता त्यागल
त्यागल सुंदर पति आचार।
प्रभू कही----------------

लभकुश केआई क्रंदन गायन सँ
उपलल सरयुग मायक धार।
प्रभू---------------

कहथिअमर जगतजननीछथिमैया
सीता लक्ष्मी के अबतार ।
प्रभू कही---------------

❑❑❑